महाराजवीनीक कविकोविदपदवंदिकिय
कविप्रियाकोटीक ६ आयनरायनसिष्य।
सोकहोयकविसरदार महाराजदीनोहुकुम
करौतिजकसुविचार ७ गुरूसिष्यमिलिकै
कियोयाकोतिलकअनूप जोकछुबिगस्यो
होयसोछमियोकविवरभूप ८ रसिकप्रिया
केतिलकमेप्रस्नअनेकविधान रामचंद्रकी
चंद्रिकाऐसोतिलकबषान ९॥ ॥
मू॰ गजमुषसनमुषहोतहीविघनविमुषहो।
जात ज्योंपगपरतप्रयागमगपापपहारविजात
१॥टी॰गजवतहैमुषजिनकोऐसेजोगनेसहैति
नकेसनमुषहोतहीविघनजोहैसोविमुषहोइजातहै
जैसेप्रयागकेमगएहमेपगपरतपापकेपहारविलाइजा
तनामनासहोजात॥ प्रस्न विघनकोविमुषकहोअ
रुपापकोविलातकहोतो यहमेगनपतिउपमेयको
न्यूनताभई अरुउपमेयउपमानमेविरोधहोतहै कै
पापबिलायजातविघनविमुषहोजात उत्तर विमुषको
अर्थविगतमुष तामेप्रस्नहै कैजोविमुषविगतमुषक
होतोबिलावोनआयो सूरमनकेरुंडभीलरैहै उत्तर त
हांऐसोकहोचाहिये विमुषहोतनजात यातेरुंडमुंडदोऊ
गिरगये तहांकेसवकोयहअभिप्रायनहीहै उनतो
यहकहीकेगजमुषकेयहजीवसनमुषजबहोतनामसुमि

रनकरतहै तवविघननाहीरहत जैसेप्रयागमेंपगके
परतपापबिलाइजात तोप्रयागमेंजबजायतबपाप
नासै इहांतोगनेसकेसुमिरनकरतई इहांदृष्टांतअलं
कारहै जहांबिंवप्रतिबिंवतसोदिष्टांतवषानि गजमु
षविघनप्रयागअघताहीभांतिप्रमानि औकहूंपाठ
प्रयागहैतोभीवहीअर्थ जबमगमेंपगदेयगो तबपा
पनासैगो अथवाविघनविमुषकेहोतअरुपापबिला
तवेचरनकेहोजात प्रस्न विघनविमुषकाहेपापबिला
तकाहे उत्तर विघनजोहैसोजबसुकर्म मे प्रवृत्तिहो
तहैतबपासआवैहै अर्थातसनमुषहोयहै अरुपा
पअनेकजन्मतैंसंगचलेआवत यातैंसन्मुषवारेवे
मुष संगचलनहारबेजात प्रस्न गनेसजीवकेअनेक
नामतहांगजमुषहीकाहेकहो उत्तर गजअतिबलीहो
तहैताते अथवा सिवसेजुद्धमेसिरकटायोपरकाजनि
मित्त यातैंपरोपकारि प्रस्न सनमुषहोतहीकाहेतहां
उत्तर सन्मुषहोतलक्षणमेविमुषहोयजातहै क्षणका
कहाहै क्षणलक्षन दोहा पूरबकेसंजोगकोनासमुत
वच्छिन उत्तर केसंजोगकोप्रागभाववयदच्छिन वार्त्ता क्र
याजन्यविभागप्रागभाववच्छिनकर्मसोप्रथमक्षण पू
र्वसंजोगावच्छिन्नजोविभागसोद्वतीयक्षण पूर्वसंजोगना
सावच्छिंनउत्तरसंजोगप्रागभावसोतृतीयक्षण उत्तरसंजोग
वच्छिंनजोकर्मसोचतुर्क्षणनचउत्तरसंजोगानंतरक्षणविव

हारनहोयगो जहांभीक्रियांजस्जानिये क्षणसमूहक
रिदीनो॥१॥मू· बानीजूकेवरनजुगसुवरनकनप
रिमान सुकविसुमुषकुरुषेतपरिहोतसु
मेरसमान २॥टी·॥बानीजोसरस्वतीतिनकेजुग
दोवरनसोसुवरनकनपरिमानहै इहांजुगसंष्या
लछन गणनाकेविवहारकोअसाधारणकारणसोसं
ष्या प्रश्न बानीजूकेजोवरनहैतिनकेअस्तुतिनाहीहो
तकुरषेतकोहोतिहै औदुसरेसुवरनकनबानीकेका
हेकहे उत्तर सुवरनश्रेषहैसुंदरहैवरनसुष्टुवरनसब
वरननमेश्रेष्ट अरुसुवरननामहेमजुगवरनतेंसब्द
संबंध अरुसुकविसंबोधनहै कैहेसुकविबानीजूकेव
रनजोहैतेसुवरनकनतेंपरेस्त्रेष्टहैंमानप्रमानहै काहेतें
श्रेष्टहैसोजोहैंवरनमुषपरकहामुषमुहमैंपरिकेसुमेर
समानहोतहै जोकोईवानीयहसब्दउच्चारनकरैसोअं
थकरताहोयजायहै सोवहीवानीविस्तारकोप्राप्तहोय
है औसुवरनकनतोकुरुषेतमात्रमेबढेहैं अरुजेस
बकेमुषमेबढतहैंयातेंश्रेष्टहैंयहमेवितरेकाअलंका
रहोतहै लछन दोहा वितरेकउपमानतेंउपमेयअधि
कोलेषि सुवरनकनतेंह्याकहेबनीवरनविसेषि तहां
अवप्रस्नहैकेअक्षरकढतमुषमेंपरतनाहीताकोउत्त
रकैगुरुजन्मसमेमैंजीभपरवरनलिषिदेतकालपायजैसे
सुवरनकुरुषेतमेबढैहैतैसेहीवरनबढैहैतातेबरनकोपरतो

सोजबरदस्तीहैकाहेकिकेसोकोअभिप्रायमहनाही
वहअर्थकोअभिप्रायदूसरोहै कैबानीजूके जोजुगवर
नसोसुबरनकनसेबढेविधातानेमुषमेबोयेतेकुरुषे
तकीरीतितेंसुवरनकनसेबडे औसबअंगबढेपरंतु
बहुतनबढे देषोबालककीबानीदूसरेघरनाहींसु
निपरतअरुवहीबानीतीनिलोकमेसुनिपरतहैजे
सेबालमीककीबानीतीनिलोकमेप्रसिद्ध अरुआ
नअंगनाहीअथवा बानीसुनामसुष्टभयेतेंसुकविसु
मुषकुरुषेतहोजातहैयामेंसमाधअलंकारसुगमहे
तओरमिलिहोयइहाँबानीसेसुमुषहोय ✤ अरु
कोईऐसोअर्थकरतहैंकेबानीजूकेबरनसुंदरबरन
ते तोसुमेरुसदृहोयजायगोसुकविहोयगोकैसोहै
सुमेरुकुपृथ्वी औषआकासलगजाकीदेंहहै ताही
तैंतेरीबानीप्रगटतकष्टहोहिगोसोअसप्टनाहीहै
अरुकोईकहतहैंकेबानीजूकुरषेतकविकेबरनसु
बरनकनसोभीकलेससौंहेतातेंनाहीलिषेअरुकोई
कहेकियामेदोप्रस्नहैएकतोबानीदोबरनकहेगिरा
आदिआननकहेअरुदूसरेगनेसकीअस्तुतिप्रथमभी
पाछेभीबीचमेबानीकाहेकोंकहीतोऐसीकहियेकी
यहगनेसहीकीअस्तुतिहैकेबानीजूकेदोबरनगुरु
लघुतेसुवरनकनतुल्लहैंसोसुंदरकविअरुसुंदरसुष
गनेसतिनकेमुषमेपरनेतेंसुमेरमेरुअरुमर्कटीमेरा

नसहितअर्थबहुतबढतप्रस्तारहै सुमुषश्चैकदंत
श्चकपिलोगजकर्णिकः लंबोदरश्चविकटोविघ्नना
शोविनायकः २ **मूल कवित्त सत्तसतोगुन
कोकिसत्यहूकोसत्तासुभसिद्धकीप्रसिद्ध
कैसुबुद्धिवृद्धमानिये ज्ञानहीकीगरिमा
किमहिमाविवेककीकिदरसनहीकोदर
सनउरआनिये प्रेमकोप्रकासवेदविद्या
कोबिलासकैधौंजसकोनेवासकेसोदास
जगजानिये मदनकदनसुतबदनरदनकै
धौंविघनविनासिबेकीविधिपहिचानि
ये ३** ॥टी० इहांसंदेहअलंकारकरिबरनतहैंसतो
गुनकोसत्तहैसत्तकहैंप्रानकिंवासत्तगुनदेषनेमे
नहीआवेहैताकोसत्तकहिये विद्यमानताहैसत्त
नामसत्ताकोऔप्रानको अथवासत्तकहियेब्रह्म
ताकीसत्ताहैकैसत्यताजोसांचताकीसत्ताहैकैसि
द्धताजोहैप्रसिद्धप्रत्यक्षहैकैसुद्धजोबुद्धिहैप्रसिद्धभ
ईहैकैताहीबुद्धिकीवृद्धिताहै किंवाबुद्धिकीवृद्धिता
करिकेउदरकेविषेनाहीरहिमकीअतएवमुषतेंनिक
सिबाहिरप्रगटभईहै इहांअधिकअलंकारहोतहैकै
ग्यानकीगरुवाईहै दोहा दोप्रकारकोग्यानहैप्रमाअ
प्रमाजान ताबिनतामतहोयजहं ताहिअप्रमामान
केविवेककीमहिमाहैकैदरसनजोहैसास्त्रताकोद

रसनवाषटदरसनकेप्रेमकोप्रकासहैकेवेदविद्या
कोविलासहैसुजसकोनिवासहैकेमदनजोकामता
कोकियोहैकदननासजेंननेसिवतिनकेसुतकेवदन
कोदसनहैकैविघनविनासिबेकोविधिहैजाहीतेंविघ
नकोनासहोतहैअरुइहाँकोईसंकाकरैकेजसको
निवाससेतकाहेतेंकहोतदगुनअलंकारतैंसंगतगुन
गायोअथवाजसहीकोघरहैअथवारामचंद्रकेकवित्तमें
शिवओशिवकोनिवासदोईसपेदहैंजैसेजसतैसेजसको
निवाससपेदअरुजोकहोकेघरमेतोकोईरहततोया
मेवेदविद्याकोविलासहैअरुकोईकहैकिमदनकी
प्रभुतावरननचाहियेयामेतोमदनकदनकहोहै
ताकोउत्तरमदननामधतूराकोअथवामदनहीहै
जिनकोंअरुकदननासकरिबेमेसमर्थहैअरुकोई
कहैयामैंविकल्पअलंकारकाहेनाहीहोयताकोस
माधानकैवल्लभविष्यमेहोतहैअथवामदनहीहैअ
रुकदनकरतासुत तहाप्रस्नजगतनासमेसबको
नासभयो उत्तर मदनहीअरुकदर्देहजिनकोनाही
तिनकेपुत्रअर्थासस्वयंसिद्धरामायनेसुरअनादिजिं
यजान ३॥मू० दोहा प्रगटपंचमीकौंभयोक
विप्रियाअवतार सोरहसैअठावनाफागु
नसुदिबुधवार ४ अथराजवंसवर्ननं॥ब्र
ह्मादिककीविनयतेंहरनसकलभूभार सू

रजवंसकरोंमगढरामचंद्रअवतार ५ तिन
केकुलकलिकालनृपकहिकेसबरनधीर
गहरवारविष्यातजगमगटभयेनृपवीर ६
करननृपतितिनिकेभएधरनीधर्मप्रकास
जीतिसबैजगजिनकियोबारानसीसुवास
७ मगटकरनतीरथभयेजिनकोजगमेना
म तिनकेअर्जुनपालनृपभयेमहोनीग्राम
८ गढकुंडारजिनकेभयेराजासाहनपाल
सहजकरनतिनकेभयेकहिकेसोअरिका
ल ९ राजानोनिकदेभयेतिनकेपूरनसाज
नोनिकदेकेसुतभयेपृथुज्योंपृथ्वीराज १०
रामसिंहराजाभयेतिनकेसूरसमान राजचं
द्रतिनकेभयेराजाचंद्रप्रवान ११ भयेमेदनी
मल्लसुततिनकेकेसोदास अरिमदमर्दन
मेदनीकीनोधरमप्रकास १२ राजाअर्जुन
देभयेतिनकेअर्जुनरूप श्रीनारायनकोस
षाभाषतजगकेभूप १३ महादानषोडसद
येजीतिजीतिदिसचार चारोवेदअठारहोसु
नेपुरानबिचार १४ रिपुषंडनतिनकेभयेरा
जाश्रीमलषान जुद्धजुरेनमुरेकहैजानतस
कलजहान १५ नृपप्रतापरुद्रसुभयेतिन
केजगरनरुद्र दयादानकोकल्पतरुगुननि

धिसीलसमुद्र १६ नगरओरछोजिनरचोज
गमेजागतकृत्त कृस्नदत्तमिस्रहिदई जिन
पुरानकीवृत्ति १७ भरतखंडमंडनभयेजि
नकेभारतिचंद देसरसातलजातजेहिफेरो
जिमिहरिचंद १८ सेरसाहिअसलेमकेडर
सालीसमसेर एकचतुर्भुजह्वनयोजाकोसि
रतिहिबेर १९ उपजनपायोपुत्रतिहिगयोसु
प्रभुपरलोक सोदरमधुकरसाहितबभूपभ
येभूलोक २० जिनकेराजरसावसेकेसवकु
सलकुसान सिंधुदिसाजेहिचारहूमारबजा
इनिसान २१ तिनपरचढिआयेजुनृपकेस
वगयेसुहार जिनपरचढिआपुनगयेआये
तिन्हैंसँहार २२ सबलसाहिअकबरअव
निजीतिलईदिसिचार मधुकरसाहिनरे
सगढतिनकेलीन्हेमार २३ षानगनेसुल
तानकेराजारावतवादि हारेमधुकरसा
हिसौंआपुनसाहिमुरादि २४ साधोस्वार
थसाथहूँपरमारथसोनेह गयोसुप्रभुवैकुं
ठकोंब्रह्मरंध्रतजिदेह २५ तिनकेदूलह
रामसुतलहुरेहोरिलराय रिपुषंडनमहि
मंडनोपूरनपहुमिप्रभाय २६ रनरूरोदल
सिंघपुनिरतनसेनसुतईस बांधोआ

लालदीवानेजाकेसीस २७ इंदूजीतरन
जीतपुनसत्रुजीतवलवीर विरसिंहदेव
प्रसिद्धपुनिहरिसिंहभोरनधीर २९ मधु
करसाहिनरेसकेइतनेभयेकुमार रामसा
हिराजाभयेतिनमेबुद्धिउदार २९ घरबा
हिरजहंईतहांकेसवदेसविदेस सबको
ईयेहीकहोजोतोरामनरेस ३० रामसाहि
सेसूरताधरमनदूजोआन जाहिसराहत
सबेदाअकबरसोसुलतान ३१ करजोरेठा
ढेरहेंआठोदिसकेईस ताहितहांबैठकद
ईअकबरसेअवनीस ३२ जाकेदरसनको
गयेउघरेदेवकिवार उपजीदीपतिदीपकी
केसवपेकहिवार ३३ ताराजाकोराजअब
राजतुजगतीमांहं राजारानाराउसबसोवत
जाकीछांह ३४ तिनकेसुतग्यारहभयेजेठे
साहिसंग्राम दच्छिनदच्छिनराजसोंजिन
जीत्योसंग्राम ३५ भरतषंडभूषनभयेलि
नकेभारथसाहि भरतभगीरथपारथहिउ
नमानतसबताहि ३६ सुतसोदरनृपराम
केजद्यपिबहुपरिवार तदपिसबेइंद्रजीत
सिरराजलाजकोभार ३७ कल्पवृक्षसोदा
निदिनसागरसोगंभीर केसौसूरोसूरसोअ

र्गुनसोरनधीर ३८ ताहिकछोवाकमल सोंगढुदीनोनन्दराम विधिज्योंसाधतवैठि तहँभूपतिवामअवाम ३९ कह्योअपारो राजकोसासनुसबसंगीतु जाकोंदेषतइंद्रु ज्योइंद्रुजीतरनजीतु ४० बालवयक्रमबा लसबरूपसीलगुनवृद्धु जदिपबरोअवरो धषटपातरुपरमप्रसिद्धु ४१ टी०बालवयक्र मकी बालासबहैंअरुरूपतेंसीलतेंगुनतेंवृद्धहैं रूपकोलछन दोहा चक्षुकरिकेंग्राह्यहैरूपकहाव तसोय द्रव्यादिककोरामजूसोउपलंभकहोय १ ऐसीनितेंजद्यपिअंतःपुरभल्योहैतथापिषटपातुर प्रसिद्धहैंतहां प्रश्न यहअर्थतेंसुकियाभीसामान्या होयगी तहाँऐसोअर्थकेंरूपसीलगुनइनकोसमूह बिनविरोधजद्यपिसब पातुरमेंहै तथापिषटपा तुरपरमप्रसिद्धहैं प्रश्न रूपकहासीलकहोतब गुनकहनेकोक्याप्रयोजनकाहेकेंरूपसीलगुन हे गुनल० दोहा रहनसुआश्रयद्रव्यकेनिर्गुनक मेंसुहीन ताहीकोगुनकहतहैंरामसुनोपरवीन सोगुनचौवीसहैताकोनामकवित्त रूपरसगंधस परसअरुसंख्याजानपुनपरमान औएथकत्वचि तराषिये बहुरसँजोगहैविभाग औपरत्वअपरत्व जोगुरुत्वत्योंद्रवत्वअभिलाषिये जानियेसनेहस

द्ववुद्धिसुषदुषइच्छाद्वेषहैप्रयत्नधर्मऔअधर्मना
षिये संसकारसहितसुहायेसरदारामएतेगुनचा
रवीसईसईसभाषिये उत्तर रूपसीलहैरूपसील
वारीहैंजेसेधर्मसीलअरुआनगुनकीबहुतबुद्धि
हैं ४१॥ **मू० रायप्रवीनप्रवीनअतिनवरँगरा
यसुवेस अतिविचित्रनयनानिपुनिलोच
नललितसुदेस ४२** टी० प्रवीनरायअतिप्र
वीन वाकोनामहैनवरंग २ विचित्र ३ लोचन
ललित ४ रंगराय ५ अरु ताननतरंग ६ अरुकोईलो
चनललिततानतरंगहीकोकहत ४२॥ **मू० सो
हतसागररागकोताननतरंगतरंग रंगरा
यरँगवलितगतिरँगमूरतिअँगअंग ४३**
टी० सोताननतरंगकेसीहै रागकीसमुद्रहैअरुगा
यबेकीजोतानहैसोईतरंगहैजामे अरुरंगरायजो
हैवाकेरंगकीकहातारीफकरौंअंगअंगमेरंगकी
मूरतिहै ४३॥ **मू० तंत्रीतुंबरुसारिकासससु
रनसोंलीन देवसभासीदेषियेरायप्रवी
नप्रवीन ४४** टी० देवसभापक्ष तंत्रीनारद अ
थवावृहस्पति तुंबरगंधर्वसारिकानामअपसरा
ससरिषी स्वर स्वरदेव अथवासातअपसराघृता
चीमेनकारंभाउरवसीचतिलोतमा५सुकेसीमंजु
षाद्याइत्यमरः इनआदिसुरदेवतनमेजेहैलीन

प्रवीनरायकेबीनापक्ष तंत्रीतंत्रधारैसोतंत्रीतुंबर लू
मासारिकासुंदरीसातसुरमेहोरहीहैलीनसातसुरना
म षरज१रिषब२मद्धिम३गंधार४पंचम५धैवट६नि
षाद७ सोंलीनहैऐसीरायप्रवीनकीबीना ४४॥ ॥

मू० सत्यारायप्रवीनजुतसुरतरुसुरतरुगेह ॥इंद्रजीततासोंवध्योकेसवसदासनेह ४५

टी० सत्यारायप्रवीनपक्ष सत्याकैसीहैरायप्रवीनकी
सुरतजोहैरुकहियेअरुसुरगादवेकोअथवासुरति
कीसुसुंदरघरहैअथवातरुवृक्षहै अथवासत्यवच
नहैसुरतजोहैताकीसुतरुहै सत्यभामापक्ष अरुस
त्यभामाकैसीहैरायप्रवीनजोस्यामहैंतिनसोंजुक्तहै
सुरतसुदेसजाकीरतिहै सुरतरुकल्पवृक्षजाकेघर
हैं अथवासुरदेवताजाकेघरमेहैं प्रस्न स्यामकृष्मदो
वारकाहेतहांऐसोअर्थ रायरतनहैप्रवीनजाकेघर
मेतिनकीमालिकहैअथवाएकरायसबकेऊपरराष
तहैअरुसुसुंदरहैरतिजाकीप्रीति इंद्रकोजीतिकेसु
रतरुलेआयेहैंऐसेइंद्रजीत॥ कहियेकृस्नजासोंब
धेहैं अथवाआपनेविभवसोंजिननेइंद्रकोजीतोऐ
सेजानिये ४५॥ **मू० नरीकिंनरीआसुरीसुरीरह
तसिरनाय नवरसनवधाभक्तिसोंजोजितन
वरंगराय ४६** टी० नवरंगरायकैसीहैजिनकोंनर
कीइस्त्रीकिंनरकीइस्त्रीआसुरीओसुरदेवताकीइस्त्री

एसबसिरनवावतीहैं नवरससौं नरीऔकिन्नरीआदि
नवधाभक्तिसौं नवोरसोकोनाम सिंगार१बीर२करुना
३अदभुत४हास्य५भयानक६विभत्स७रौद्र८सांत९
एनवरसनवधाभक्तिनामरामायनेप्रथमभक्तिसंतनक
रसंगा१दूसरिममहरिकथाप्रसंगा२गुरसेवा३हरिगु
नगान४ पंचमभजनमंत्रजाप५ दमसील६सर्वेमई
राम७संतोस८दिढभरोस९ तहाँप्रस्न अरुकोईकहै
कीसांतनवनैगो सोनाहीयहअदभुतरूपधारनकर
तजबजबजौनतवतबतौनरस४६ **मू०हावभाव**
संभावनादोलासमसुषदाय पियमनदेति
फुलायगतिनवरंगनवरंगराय ४७ टी०हाव
विलासादिभावकटाक्षादिसंभावनाआपनीसक्ति
कीउत्कर्षनादोलानामफूलानवरंगरायकीनवीनरंग
कीजोगतिहैतौतेपियकेमनकोंफुलादेतीहैकिंवाम
नकीगतिकोंअस्थिरकरदेतीहैताफूलापेपियमनई
स्थितिचाहीमूलतकाहेलालचबसते४७ **मू०भैरोजु**
तगौरीसुजुतसुतरंगिनीलेषि चंद्रकलासी
सोहियेनयनविचित्रापेषि ४८ ॥ टी०चंद्र
कलाप्रतक्षशिवभालमें चंद्रकलाकैसीहैभैरोजुत
हैगौरीकेईसमहादेवतिनजुतहैसुरतरंगिनीजोगंगा
तिनजुतहैऐसीचंद्रकलासिवभालमोहैनैनविचित्रहैंस
बकेनयनमैअग्निनाहीपातुरपक्ष भैरोगौरीराग

जाननसुरतमेरंगिनीहैअथवासुरतिकीतरंगिनीहै
नदीहैचंद्रकलासीहै प्रश्न भैरोगौरीसकहैअन्यरा
गनाहीजाननिअरुसुंदरभीनाहींहैगायनसुरतरं
गिनीमात्रहै उत्तर गौरीसकहैश्रीश्रीकहैसोभा भै
रोकहैसर्वरागजाननहारी४८ **मू॰नागरिनागरि
रागकीसागरितानतरंग पतिपूरनससि
दरसदिनबाढततानतरंग ४९॥** टी॰नाग
रिप्रवीनरागकीसागरहैसमुद्रहैसमुद्रमेतरंगउठै
हैंयामेतानकीतरंगहैअरुपतिप्रतिष्ठापूरनहो
नेतेंसोईससिहैताकेदरसतेंबढतहैताननाम
षैंचतहैरंगअर्थातरसकोबाहुल्लकरतहै४९**मू॰
नैनबैनरतिसैनसमनैनविचित्रानाम जै
नसीलपतिमैनमनसदांकरतिविश्राम
५०॥** टी॰ नेत्रबैनबचनरतिसैनसमानहै अर्थात
चितवतमेंऐसीजानीजायहैमानोरतिकोइसाराक
रैहैऐसीनैनविचित्रनामाअरुपतिसेजैसीलनाहि
अरुमैनकंदर्परहतहैजाकेमनमेविश्रामकरकें
अथवापतिमैनमनमेआपविश्रामकरतहैकिंवा
पतिमनबसकरवेमेजैसीलहैपतिकोमनवाहीमें
बसतयातें ५०॥**मू॰ तानैंताननतरंगकीतनम
नवेधकप्रान कलाकुसुमसरसरनकी
अतिअयानतनत्रान ५१॥** टी॰ताननतरंगना

माकैसीहैताकीतातैंतनमनप्रानवेधकहैंजैसेअ
समसरसंवरारितकेसरनकीकलाहैंतामैंअतिअया
नमूर्षपनसोईननत्रानकचचहैप्रश्नजोमूरषवसनभये
तोरागकीन्यूनताअरुरूपकीभीन्यूनताउत्तरइहाँअति
अयानतैंदेहाध्यासछूटिजायहैयातैंतनवेधेहैफेरमन
वेधैहैतबप्रानवेधवोकहोहै ५१ **मू० रंगरायकी**
आंगुरीसकलगुननकीमूर लागतमूठमृ
दंगमुषसब्दरहतभरिपूर ५२ टी० रंगराय
कीअंगुरीजोहैसोतिनकीकलाअपारहैं अथवास
कलगुननकोमूलजडहैसोआंगुरीलागतहैमृदंग
केमुषतातैंसब्दभरपूरहोतहै प्रश्न इहांअंगुरीकी
कोनतारीफभई उत्तर यामूठतैंअंगुरीनकोकाम
करत ५२ **मू० रंगरायकरमुरजमुषरंगमूरति**
मतिचारु मनोपढोहैसाथहीसबसंगीतबि
चारु ५३ टी० रंगरायकीजोमूरचंगहैसोरंगकीमूर
तिहैमतिसोचारुकहियेसुंदरअरु कहूंउपचारपाठ
हैतहाँउपचारनामकरनहारमानोमुषकेसाथकरि
केसंगीतसास्त्रकोसवविचारपढोहै ५३ **मू० अंग**
जितेसंगीतकेगावतगुनीअनंत रंगमूरति
अंगअंगप्रतिराजतिमूरतिवंत ५४ टी० जेसं
गीतकेअंगहैंतेसवगुनीगावतहैंपरंतुरंगमूरतिजो
हैवेस्यासोअंगअंगप्रतिरंगकीमूर्तिदेहै ५४ **मू० नाच**

तिगावतिहैसबैसबैवजावनिबीन तिनमेक
रतकवित्तद्करायप्रवीनप्रवीन ५५ टी० श्री
रवेस्याजेहैंकोइनाचतीकोइगावतीश्रोरकोईबी
नबजावतिहैतिनसबोमेंएकरायप्रवीनजोहैसो
कवित्तकरतहै सबवेस्याकोरायसोंप्रवीनहैयातें
रायप्रवीननामराषोहैमवनेश्रोरसबजिनकेश्राज्ञा
मेहैं ५५ मू० रायप्रवीनप्रवीनसोंपरवीनन
नकोंसुष्षअपरवीनकेसबकहापरवी
ननमनदुष्ष ५६ टी० रायप्रवीनकैसीहैपरवी
नजेवीनकेगुनतिहिकेजोपारपहुचेहैंसोपरवी
ननकोंसुषदेनहारीहैअरुअपरवीनमूर्षतेकहा
हैंअथवावीनतैंअपरसितारादितेकहाहैंपरवी
नजेपंडितरागकेअथवावीनानमेपरनारदसरस्व
तीतिनकोदुषहोतकेहमऐसोनाहीबजावत ५६
मू० रत्ननाकरलालितसदांपरमानंदहिली
न अमलकमलकमनीयकररमाकिराय
प्रवीन ५७ टी० रमापक्ष रतनाकरसमुद्रतिनने
लालितकरीहैदुलारीहैअरुपरमानंदजोविस्नुतिन
मेंलीनहैकमलधारनकरेहैऐसीप्रवीनताकोमालि
कहैदेषोअबैजाकेघरधनसोप्रवीननकोमालिक
होतकातिनकेबहुतप्रवीननोकरहोजातप्रवीनरा
यपक्षअरुप्रवीनरायकैसीहैरतिजोहैसोनाकरके

लोलतहै अथ बारतना करजो रागरूपीसागरताही
मैजाकोलालितकरीहै अरु परमआनंदमेलीनहै अ
मलकमलजाकेकरमेराजत कासामुद्र कमेजाके
हाथमेकमलसोधनी होतहै ऐसीहैरायप्रवीन ५७
मू॰ रायप्रवीनकीसारदासुचिरुचिराजत
अंग बीनापुस्तकधारिनीराजहंससुतसं
ग ५८ टी॰ प्रवीनरायपक्ष रायप्रवीनकीजोसा
रदाहैताकेअंगनमेसुचरुचराजतहै अर्थात् पति
ब्रताहैबीनासबसेउत्तमजोपुस्तकहैताकोधार
नहारीहै अर्थात् अनुत्तमग्रंथनाहीदेषतसुनतअ
रुराजहंस. हंसजोसूजेतिनकेवंसवारेदुजीनति
नकेसंगमेहै सारदापक्ष सुचिजोहैपवित्रतामे
जाकीरुचिहै अर्थात्सुक्लबस्त्रादिधारनअरुबी
नाकेगुनहैजाविषैऐसेपुस्तककिंवाविनापुस्त
कराजहंससुतवाहन ५८ मू॰ ब्रिषभवाहिनी
अंगउरवासुकिलसतनवीन सिवसंग
सोहतसर्वदासिवाकिरायप्रवीन ५९॥
टी॰ सिवापक्ष वृषभबैलहैवाहनजाकोअरुवा
सुकीजोसर्पहैअरुसिवकेअंगसोंभावतऐसीसि
वा॥ रायप्रवीनपक्ष राइप्रवीनकैसीहैवृषभधर्म
ताहीकेअंगवाहतहैआचरतहैउरमेवासुकीसु
वासधारनकरतहैसिवकल्यानताकेसंगसोहत

है ऐसीरायप्रवीनहै ५९ मू॰ सविताजूकविता
दईताकहँपरमप्रकास ताकेकाजकवि
प्रियाकीनीकेसवदास ६० इतिश्रीहृवि
धभूषनभूषितायांकविप्रियायांराजवंस
वरननोनामप्रथमःप्रभावः१॥ टी॰ सविता
जोसूर्जतिननेदईहैकविताजाकौंताकोपरमप्र
कासभयोहैतोसूर्जवंसकेसनाढ्यपूजेहैंताकेका
जकेसबकविप्रियाकरीहै ६० स्वस्तिश्रीमन्महारा
जाधिराजकासिराजश्रीमदीस्वरीप्रसादनारायण
स्याज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवी
स्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीस्वरेणविरचितेका
शिराजप्रकाशिकायांकविप्रियायांटीकायांप्रथम
मरीचिः१॥ ॥अथकविवंसवरननं॥ दोहा
ब्रह्माजूकेचित्ततेंप्रगटभयेसनकादि उ
पजेतिनकेचित्ततेंसबसनोडियाआदि
१ परसरामभृगुनंदनबतिनकेपाइपषा
र दयेबहत्तरग्रामममनउत्तमविप्रविचा
र २ जगपावनवैकुंठपतिरामचंदइहि
नाम मथुरामंडलमैंदयेतिनेसातसेग्राम
३ सोमवंसजदुकुलकलसत्रिभुवनपाल
नरेस फेरदयेकलिकालपुरतेईतिनैसुदे
स ४ कुंभवारउद्देसकुलप्रगटेतिनकेबस

तिनकेदेवानंदसुतप्रगटेकुलअवतंस ५ तिनकेः तजगदेवजगथापेपृथ्वीराज तिन केदिनकरसुतकूसुतभगटेपंडितराज ६ दिल्लीपतिअल्लावदीकीनीकृपाअपार ती र्थगयासमेतजिनअकरकरेकैवार ७ गयागजाधरसुतभयेतिनकेआनंदकंद जयानंदतिनकेभयेविद्याजुतजगवंद ८ भयेत्रिविक्रममिश्रतवतिनकेपंडितराय गोपाचलगढदुर्गपतितिनकेपूजेपाय ९ भावसर्मतिनकेभयेतिनकीवुद्धिअपार भयेसिरोमनमिश्रतबषटदरसनअवतार १० मानसिंहसोरोसकरिजिनजीतीदिसचार ग्रामवीसतिनकोदयेरानापायपषार ११ तिनकेपुत्रप्रसिद्धजगकीनोहरिहरनाथ सोपुरपतितजिओरसेभूलिनओढोहाथ १२ पुत्रभयेहरिनाथकेकृष्णदत्तसुभवेस सभासाहिसंग्रामकीजीतीगढअविसेस १३ तिनकोवृत्तपुरानकीदीनीराजारुद्र तिनकेकासीदाससुतसोहतवुद्धिसमुद्र १४ तिनकोमधुकरसाहिनृपबहुतकियोसनमान तिनकेसुतबलभद्रजगप्रगटेवुद्धिनिधान १५ बालकतेमधुसाहिनृपजिनतेसुनोपुरान तिन

केसोदरदोभयेकेसवदासकल्यान १६
भाषाबोलनजानहीजिनकेकुलकोदास
उपजोतिनकेमंदमतिसुतकविकेसवदा
स १७ इंद्रजीततिनसेकहीमागोमध्यप्र
याग मागोसबदिनएकरसकोजेकृपास
भाग १८ बहुरकहीजोबारबरमांगहुजो
मनहोय मागोतोदरबारमेमोहिनरोकै
कोय १९ गुरकरिमानोइंद्रजितजनमन
कृपाविचार ग्रामदयेइकईसतबताके
पांयपरवार २० इंद्रजीतकेहेतनबराजा
रामसुजान मानोमंत्रीमित्रकेकेसवदा
ससुजान २१ इतिश्रीदुविधभूषनभूषित
यांकविप्रियायांकविकेसवनेनामद्वि
तीयप्र भा वः॥ २॥ मू. समुझैबालाबालक
नबरननपंथअगाध कविप्रियाकेसबक
रीछमियोकविअपराध १ टी० समुझैहैंयहकविप्रि
याकोबालाइस्त्रीबालकतोबरनेहैंअगाधपंथतातें
हेकविहोमेरीजोकविप्रियाहैताकोअपराधछ
माकरो यहमेप्रश्न कैअपराधकहाताकोउत्तरकै
जोकविसमुझतसोबालाअरुबालकसमुझकेबर
ननकरिहैं सोनाहीकेसवकोअभिप्राय अरुकोई
कहेहैकेबालाजोहैतेबालकनकीबातसमुझैहैं

तौदोऊअर्थमेंअपराधनाहीहैकाहेकेबालाकवि नकीबालककविनकेसमुझेहैंतोअधिकसुगम काव्यहोगई तहाँऐसोकह्योचाहियेकैजोकविलो गसास्त्रमेंपरिश्रमकरकाव्यकरतरहैसोजवान कीबालाअरुबालकसमुझेकैकहैंकीकाव्यहम हूँजानतहैं तहांकेसवकोअभिप्राययहहैकेकवि प्रियाकविनकीबालाहै केसवकहतहैंमेंबाल कहौंकविनकोताकोकविअपराधक्षमाकरैंगे यामेंदोषजोहैसोनदेषैंगे अथवाबालबुद्धिवारे अरुबालकवयक्रमवारेइसकोक्यासमुझैंगे अ र्थोसवबडेमहात्मासमुझैंगेयामेंजोबिगरोहोयसो सुधारदेहिगें कैबालाकोजोजोबनत्वकोसुषहै सोबालकनहीसमुझेहैं काहेवरश्रेष्ठनहीहैं जो श्रेष्ठवरहैंसोईसमुझैंगे तिसीतरहकविप्रियाजो बालाहैतिसकाजोजोबनकासुषसोअच्छेउत्तमक विसमुझैंगेकिंवाबालाबुद्धिबालककविजोकाव्य करेहैंसोयाकेदोषगुनजानफेरनकाव्यकरेंगे॥ किं वाबालाबालकनहीसमुझेहैंनवीनरनजुहुऐसीक विप्रियाहै १॥ अलंकारकवितानकेसुनिसु निविविधविचार कविप्रियाकेसवक रीकविताकोसिंगार २॥टी॰ कवितानकेअलं कारसुनिसुनिकेविविधविचारकरिकैसवकविअ

लंकारनामजोकाव्यकेभूषनहैं तिनतैंसृंगारकुचाहीं
ताकेलियेकबिताकोश्रृंगारकविप्रियाकेसवकरी
है २॥ मू॰ सगुनपदारथअर्थजुतसुबरन
मयसुषसाज कंठमालज्यौंकविप्रियाकं
ठकरोकविराज ३॥ टीका॥मालपक्ष जोमाल
सोगुनसूत्रसहितपदारथमुक्तासोभाकेअर्थजुतक
हानबग्रहनवरतनतैंसुबरनहेमसुषसाजउत्तमसु
हूतेकीसाजी॥ कविप्रियापक्ष॥ ओजमाधुर्जेप्रसाद
युक्तहैपदार्थवाचिकलक्षिकविंजकपदमेअर्थहेसुं
दरबरनअक्षरअनुप्रासमयसुषसाजयाकेसुनेजोसु
षहोतसोईसाजहैकंठकीमालसमकविप्रियाकवि
तानकौंप्रीय ३मू॰राजतरंचकदोषजुतकविता
वनितामित्र बुंद कहालापरतज्यौंगंगाघ
टअपवित्र ४॥टी॰ राजेहैंरंचकनामथोरेहूं दोषतैं
कविताअरुवनिताइस्त्रीऔमित्रताजैसेगंगाजलवुं
दभरहालामदिरापरेतैंअपवित्रहोत तहां प्रश्न र
सरहस्यमेलिषीहैकेऐसोकवित्तजगतमेनाहीजामेदू
षननहोय दोहा हैसबगुनभूषनजहांओसबदूषन
नाहिं ऐसोकवितनजगतमेंजोयालच्छनमाहिं उत्त
र सुहिदयजाकोनहिलषैंदूषनहेनहिसोय जहांदो
षसुहिदयलषैंसोपुनिकवितनहोय ५ मू॰विप्रन
नेगीकीजियेमूढनकीजेमित्त प्रभुनकृत-

औ ते रु [illegible] नरकौ॰ त ५ टी॰ विप्रजो
ब्राह्मनतिनकोकामदारनकरियेमूढजोमूर्षहैंति
नकोमित्रनकरियेकृतघ्नीराजानसेइयेजाकवित्त
मेंदोषहोयसोनपढियेकाहेनाहीपढियेवाकोऔर
दोषैंगेयाते ५॥ मू॰ अथकाव्यदोष॥ अंधव
धिरअरुपंगुतजिनग्नमृतकमतिसुद्ध अं
धविरोधीपंथकोबधिरतिसब्दविरुद्ध ६
टी॰ येकाव्यकेदोषहैं अंधबधिरपंगुनग्नमृतकहे
मतिसुद्धकाव्यकोजोपंथहैतामैं अंधविरोधहैअरु
सब्दजोहैतामेबधिरविरोधहै ६॥ मू॰ दोहा॥ छं
दविरोधीपंगुगननग्नजुभूषनहीन मृत
कहावैअर्थविनुकेसवसुनहुप्रवीन ७
टी॰ एकछंदविरोधपंगुनग्नअलंकारहीनजाकोअ
र्थनहीसोमृतककेसोदासकहतहैंहेप्रवीनतुमसु
नो ७॥ मू॰ अथपंथविरोधीअंधवरननं क
वित्त॥ कोमिलकंजसेफूलिरहेकुचदेषत
हींपतिचंदविमोहै वानरसेचलचारुवि
लोचनकोयरचैरुचिरोचनकोहै माषन
सोमधुरोअधरामृतकेसबकोउपमाकु
हैरोहै ठाडीहैकामिनिदामिनिसीमृगभा
मिनिसीगजगामिनसोहै ८॥ टी॰ यहकवि
त्तमेकोमलकंजसेफूलिरहेकुचकविलोगौंकापंथ

हैकिकमलकेसमानकुचकोबरननकरत॥ फूले कमलसेनहीबरनतयातैंअंधकुचकोकठोरनबरननचाहियै॥ इहाँकोमिलबरननहै यातैंपंथविरोधअथवाफूलरहनोयहअंध॥संपुटितचाहीअकारमात्रउपमानहै कमलकेपतिसूर्जइहाँचंद्रमापतिहैं॥यातैंपंथविरोधसोईअंधहै सूर्जचंद्रमानहीमालुमहोतहैं॥ कविलोगौंकापंथहैनेत्रकोचंचलबरनन॥सोबानरकेसमाननहीबरननकरत॥यातैंपंथविरोधअंधहैवानरकोसरूपनहीजानतहै कैवानरकैसोहै॥ नेत्रकेकोयजोहैसोलालबरननकरनो॥पैरोरीकेसमाननही॥ याते पंथविरोधहै॥ देषनहीहैकैसेनेत्रहोतहैंयातैंअंधहै अधरकोमिष्टबरननहैअमृतकेसमान॥ इहामाषनकेसमान है यातैंपंथविरोध॥अधरको बिंब के समानलालबरननहै इहाँ माषनसेसपेदबरनतहैं माषनसेअधरकुष्टकोहोतहै यातैंअंध॥ केसवनेयहउपमाकहीकोटोहै किठाढीहैकामिनिदासिनिकेसमान॥मृगभामिनिकेसमानगजगामिनिनायकासोहतहै दामिनिचंचलहोतहै ८ मू

अथसब्दबिरोधीबधिरबर्ननं कवित्त सिद्धसिरोमनिसंकरसृष्टिसंहारतसाधुसमूहभरीहै सुंदरमूरतिआतमभूतकीजारघरीकमैंछा

रकरीहै सुभ्रविरूपविलोचनसोमतिकेसवदा
सकेध्यानअरीहै वंदतदेवअदेवसबैमुनिगो
त्रसुताअरधंगधरीहै ९॥ टी॰सिद्धकेसिरोमनहैंसंक
रसाधुसमूहभरीस्रष्टकेसंहारकरता संकरसंहारकहैं
तथापिसाधुसमूहभरीस्रिष्टिनही यातेंसब्दविरोधीसि
द्धसिरोमनसंकरआनंदकरनहारे अरुसाधुभरीस्रि
ष्टसंहारकरनहार वाकेकानसेनाहीसुनपरत
कोईकालमैंसुनेरहोहैसंकरस्रिष्टिसंहारकरता
हैं अरुसुंदरजोआलभूतकोमूरतिकामदेवकी
॥सोघरीकहीमैंजरायकेछारकरी आत्मभूतना
मपुत्रकोभीहै यातेंसब्दविरोधीबधिर अरुसु
भ्रहैं अरुविरूपहैं यहमेंजबसुभ्रसपेदविरू
पकहोतबसुपेदकुष्टकोभासहोयहै विलोच
नमेंअंध अरुमतध्यानमेंअरीहै तहाँध्यानमेंअ
रोविरोधहै पगीचाहिये वंदतहैंदेवअदेवगो
त्रसुतागोत्रकहियेपर्वततांकीसुतापार्वती प्र
मान आद्रिगोत्रगिरिग्रावासलचैलसिलोच्चया
इत्यमरः अरधंगमेंधारनकरैहैं यहभीसब्दवि
रोधहै यातेंबधिर गोत्रआपनकुल नागपर्वत
अचलकहैंदोषनाही ९॥ मू॰ तौलततूलरहैन
हीं कनकतुलानिलआधु त्योंहींकंदोभं
गकोसहिनसकैंअतिसाधु १०॥ टी॰ तौलत

मेकनकजोसोबरनताकीजोतुलातेराजू सोतिल भरभीअधिकनहीरहतहै तेईतरहछंदोभंगहो नेतैंजोश्रुतिकेजाननहारजोसाधुहैं अथवाजेम हाप्रवीनकाव्यजाननहारकविसोनहीसहिस कतहैंछंदोभंगकाव्यको १०॥ मू॰ अथछंदवि

रोधीपंगुवरननं कवित्त धीरजमोचन लोचनलालविलोकिकेलोककीलीक तिछूटी फूटगयेश्रुतिज्ञानकेकेसवआं षअनेकविवेककीफूटी छोडिदईस रितासवकामनोरथकेरथकीगतिछू टी स्योंनकरेकरतारऊवारकजोचितवै वहवारवधूटी ११॥ टी॰ उक्तनाइककीस षाप्रतिकेएसीकरतारनकरेएकेवारवाजोवार वधूटीसोकाहूकीवोरचितवेकेसीहैवारवधू टी धीरजछोडावनहारजाकेलोलचंचललोच नहैं अरुविलोकिकरकेलोककीमजादछूटी ज्ञानकेकानफूटे विवेककीआंषफूटी औसरि तातीरंदाजीकामनेछोडदई अरुमनोरथकेर थकीगतिषोटीहोगई याकवित्तमेंसातभगन चाहीसोनाहीनिबहतयातैंछंदोभंग ११॥ मू॰ अ

थअलंकारहीननग्नवरननं॥ तोरितनीट कटोलिकपोलनिजोरिरहेकरत्योंनरहोंगी

पानषवायेसुधाधरपानकैपायगहेतैसैं हौंनगहौंगी कैसबचूकसबैसहिहौंमुष चूमिचलेयहतोनसहौंगी कैफिरिचूम नदैमुषमोहि कैआपनोधाइसोंजाइक हौंगी १२॥ टी० इहांभूषनहीनकोनग्नकहो तामैंकोईप्रस्नकरैहै कैअर्थोअलंकारतेंहीनहो यसोनग्नकाहेकहावे यामैंसुभावोक्तिअलंका रहोतहे तोनग्नकहिबोव्यर्थ तहांकोईऐसीक हेहै कैभूषनबसनहीननायकासोनग्नकहावै रसरहस्ये व्यंगजीवहैकवितमेसब्दअर्थसोंदेह ॥गुनगनभूषनभूषनैंदूषनदूषनपेह तोसुभा वोक्तिवारीप्रस्नयाकोउत्तरनाहीभयो तब ऐ सोकहोचाहियेकैयहसुभावोक्तिनाहीहै प्रथ मसबकामकलाकरीअरुपाछेभीमुषचूमवे कीइछ्याकरतिहैसोधाइकेत्रासतेंसिद्धकरी तातेंमुगधानाही अर्थातकविनकहीकैनग्न भूषनहीननाहीसोरसरहस्यसौंपुष्टकियोओमु गधाप्रगल्भाकेवचनतेंस्वभावोक्तिअलंकारन हीं १२॥मू० अथमृतकवर्ननं कवित्त का लकमालकरालकरालनसालविहालन चालचलीहै हालविहालनतालतमाल प्रवालकेवालकलालललीहै लोलविलो

लकपोलनिचोलकलोलकलोलकबोल
कलीहै बोलनबोलकपोलनडोलगलो
लगलोलगलोलगलीहै १३॥टी०वहकालकमा
लअच्छोरहो कमालफारसीमेउत्तमकोकहैंहैं अरुक
रालनामविकालवहनइकभीविकालकहैंविसेषका
लतैंकालदेहतैंजीवजुदोकरदेइहैं यहजीवनहींजुदो
मनकरेहैं अरुसालजोजुदाईकोहतोताकोविहालकर
तचालचलीहालजोहमारीताकीबिहालकरनहार अरु
हालनकरनहारीतालकीलोकोक्तिकेहमारोतालनाही
बैठतमाकीलगावनतमानामतृस्नाताकीलकलगाव
नहारीअरुप्रवालमूँगाताकेसोलालहैजाकेअंगमोरस
रतनाकरे मूँगानमुषवारीमुगलनकीकुमारिकाअ
रुलोलचंचलहैविलोलहैकपोलअमोलजाकेकचो
लकांचीहैकलोलजाकीसोंककोलकहीकाँचीकली
हैबोलनहीषोलतकपोलनपैचोलरंगवस्त्रसोलगो
लोलचंचलगलीमेहमदेषीअरुयाकवित्तको जोग्र
तककेसवनैंअर्थरहितकहोतातैंकोईतिलककार
नाहीलिषतयहसंकाकरतहैं केजोवव्यंगकहावेहै
भरतमतमैंअरुरीतीबावनमतमेसब्दार्थ देहहैकेजामैं
व्यंगनाहीसोग्रतककहावैतोअवरकाव्यमेव्यंगना
हीरहतयहकोईकहैतहांयहकहीकेवस्तुजाकवित्त
मैंनहीरहैसोग्रतककही यहकवित्तमैंअर्थनहीज

बर्जस्तीहै १३॥ मू॰ अथद्वादसदोषवर्नन दोहा
अगननकोजैहीनरसअरुकेसबजतिभंग व्य
र्थअपारथहीनक्रमइनकेतजोप्रसंग १४॥
टी॰ अगनकाव्य१ हीनरसं२ औजतिभंग३ व्यर्थ४ अपा
रथ ५ हीनक्रम६ इनकोजोप्रसंगहैसोतजदेव १४॥
मू॰ वर्नप्रयोगीकर्णकटुसुनहुसकलकविरा
ज सबैअर्थपुनरुक्तकेछाडहुसिगरेसाज१५॥
टी॰ वर्नप्रयोगी७ औकर्नकटु८ हेसकलकविराजसुनो
सबअर्थपुनरुक्तिके९ सोसब कोसाजछाडदेव १५॥
मू॰ देसविरोधनवरनियेकालविरोधनिहार
॥लोकन्यायआगमनकेतजोविरोधविचार
१६॥ टी॰ देसविरोध१० औकालविरोध११ लोक न्या
य१२ आगमनके इनकाविरोधविचारकेतजो १६॥
मू॰ अथगनागनवरनन केसवगनसुभसर्व
दाअगनअसुभउरआनि चारिचारविधिचा
रुमतिगनअरुअगनबषानि १७॥ टी॰ केसव
कहतहैंगनसुभहैं सर्वदाअगनअसुभहैं सोहृदय
मेजानौं चारप्रकारकेसुभहैं अरु चारप्रकारकेअसु
भहैं तिनकेचारचारप्रकारकीमतिहैं गनकोभी अरु
अगनकोभी ऐसोबषानहै १७॥ मू॰ मगननगन
भनभगनअरुयगनसदासुभजानि जगनर
गनअरुसगनपुनितगनहिअसुभबषानि।

१८॥ टी० मगन नगन भगन यगन येचारोसुभहैं॥ज गन रगन सगन तगन येचारोअसुभहैं १८॥ मू०म गनत्रगुरुजुतत्रिलघुमयकेसवनगनप्रवा न भगनआदिगुरुआदिलघुयगनबषानसु जान १९॥ टी० तीनगुरुसंजुक्तमगन ऽऽऽ तीनलघु संजुत्तनगन॥ ऐसो केसवने गनकोप्रमानकियोहै ॥जाकेआदिमेंगुरुहोयसोभगनऽ॥ हेसुंदरमतिके जाननहारयगनकेआदिमेलघुहै॥ऽऽ॥१९॥ मू० ज गनमध्यगुरुजानियेरगनमध्यलघुहोइ॥ सगनअंतगुरुअंतलघुतगनकहैंसबकोइ २०॥ टी० जगनकेमध्यमेंगुरुजानो।ऽ।रगनकेम ध्यमेलघुजानोऽ।ऽ सगनकेअंतमेंगुरुहोइहै॥ऽ त गनकेअंतमेलघुहोयहैऽऽ।यहमतपिंगलकोहै॥ २०॥ मू० अथगनागनदेवतावरननं॥ महीदे वतामगनकोनागनगनकोदेषि जलजीजा नोयगनकोचंदभगनकोलेषि २१॥ टी० मग नकोपृथ्वी नगनकोसेस जगनकोसूर्ज भगनको चंद्रमा २१॥ मू० सूरजानहुजगनकोरगनसी षीमयमान कालसमुझियेसगनकोनगन अकासबषान २२॥ टी० यगनकोवरुण रगन कोअग्नि सगनकोकाल नगनकोदेवता आका स २२॥ मू० अथगनागनजातिवर्ननं॥दो०॥

मगननगनकोमित्रगनियगनभगनदोदा
स उदासीनजतिजानियेरसरिपुकेसवदा
स २३॥ टी० मगन अरुनगन इनदोकोमित्रसं
ज्ञाहै अरुभगनयगनयेदोईदासहैं अरुजकहेंज
गन तकहैंतगनयेउदासीन रकहेंरगन सकहेंसग
न येसत्रुहैं २३॥ मू० अथगनागनफलाफल
छप्पै॥ भूमिभूरिसुषदेइनीरनितआनंदका
री अगिनअंगदिनहैसूरसुषसोषैभारी के
सवअफलअकासकालकुलदेसउदासै
मंगलचंदअनेकनागबहुबुद्धिप्रकासै इ
हिविधिकवित्तसबजानियहकर्त्ताअरुजा
केकरै तजिप्रबंधसबदेवगनसदासुभासु
भफलकरै २४॥ टी० भूमिसुषदाता नीरआनंद
कर्त्ता अगिनदाहकर्त्तासूर्जेसुषहर्त्ता आकासफल
हीन कालदेसतेंउदासकरता चंदमंगलकर्त्ता नाग
बुद्धिप्रकासकयाविधितेंआठगनकोफलजाको ब
नावैहै अरुजोबनावैताकोंफलदेतहैंप्रबंधदेवादि
तजकैं तहाँप्रस्न यामैं क्रमभंगहोयहै उत्तर इहाँ
प्रस्तारकोक्रमहै पुः प्रस्न प्रथमसोक्रमकाहेनराषो
उत्तर प्रथमसुभासुभक्रमहै प्रस्तारलछन वरवा दै
हप्रथमगुरतरलघुसमकरपाँत॥ गुरतैं पूरो सब
लघुलौंयाभाँत [illegible] यहतीनिवरनकै

प्रस्तारमैंआठौगनहैं॥ २४॥ ॥ मूल॥ अथदुगनविचार दोहा कहूँजुआदिकवित्तकेअगनहोयबडभाग तातेंदुगुनविचारचितकीनोवासुकिनाग २५॥ टी० कहूँजोआदिकवित्तकेअगनहोइतौदुगुनविचारिये यहसेससंमतहै दोहाआदिकुगनकेपरतहीँकरियेदुगुनविचार॥ तौपाछेकाहेकहेमित्रसत्रुउपचार ताकोउत्तर पहिलेपदमेकुगनतोदूजेपदगनदेहु यहविचारकेदुगुनवरकविजनफलभललेहु॥ आदिकवितकेकुगनमेदुगनदिषायोहोत दोदोगनसबपदनमेकविकुलकरोउदोत सिद्धांत यहमेजेहहैकेतीनिबरन॥मेंगनविचारहै सोजोकुगनपरैतो तीनबरनछोडकेषटबरनमैंदुगुनविचारिये केसत्रुयेदोनोजबरपरैतेंदबजातहैं २५॥ अथगनागनजातिकवित्त॥ मित्रतेंजुहोयमित्रबाढैबहुबुद्धिसिद्धिमित्रतेंजुदासआसुजुद्धतेंनजानियें मित्रतेंउदासगनहोतगोतदुषउदौमित्रतेंजुसत्रुहोयमित्रबंधुहानिये दासतेंजुमित्रगनकाजसिद्धकेसोदासदातेंजुदासबसजीवसबमानिये दासतेंउदासहोतधननासआसपास दासतेंजुसत्रुमित्रसत्रुसौंबषानिये २६॥ टी० मित्रतें

मित्रपरैतोबहुतबुद्धिसिद्धिबाढतहैमित्रतैंजोदा
सपरैतोआसजुद्धतेंनजानैजयहोयहै मित्रतेंउदा
सगनपरैतोगोतमेंदुषउदयहोयहै मित्रतैंजोसत्रुप
रैतोमित्रभाईकोनासकरै दासतैंजोमित्रगनपरैतो
कैसबकहतहैंसकलकारजसिद्धहोयहै दासतैंजो
दासगनपरैतोसबजीववस्यहोयहैं दासतैंजोउदास
होयतोधनकोनासहोय आसपासकोजोधनहैता
कोदासतैंजोसत्रुहोयतोमित्रसत्रुहोइ २६॥ मू॰॥

जानिजेउदासतैंजोमित्रगनतुच्छफलप्र
गटउदासतैंजुदासप्रभुनाइए होइजोउ
दासतैंउदासतौनफलाफलजोउदासही
तैंसत्रुतौनसुषपाइए सत्रुतैंजुमित्रगनता
हितौअफलगनसत्रुतैंजुदासुआसुवनिता
नसाइए सत्रुतैंउदासकुलनासहोनकैसो
दासदासतैंजुसत्रुनासनाइककौंगाइ
ए २७॥ टी॰जोउदासमित्रगनहोयतोतुच्छफल॥ प्र
गटउदासतैंजोदाहोयतोउदासप्रभुहोयजाइ उदा
सतैंजोउदासगनहोयतोनफलहोयनअफलहोय
जोसत्रुतैंउदासहोयतोसुषकोनहीपावैहै सत्रुतैं
जोमित्रगनपरैताकोअफलगनकहनौं सत्रुगनतैं
जोदासगनपरैतोवनिताकोनासहोय सत्रुगनतै
जोउदासगनपरैतोकैसोदासकहत हैं कुलकोना

सहोयदासगनतेंजोसत्तुगनपरैतोनासनायककों जानिये २७॥ मू० अथगनोदाहरन राधाराधारमनकेमनपठयोहैसात ऊधवस्योंतुमकौनसोंकहोजोगकीबात २८॥ टी० उक्तिगोपीकीऊधोप्रतिराधाकेजोरमनहैंश्रीकृस्नतिनकेसाथहीं मनको राधा नेपठायोहैहेऊधवइहांतुमकौनसोंजोगकीबातकहतहो यहमेंगनहैंराधारा मगन रमन नगन उद्धवभगनकहोजो यगन २८॥ मू० कहैंकहातुमपाहुनेप्राननाथकेमित्त फिरिपाछेपछिताहुगेऊधोसमुझोचित्त २९॥ टी० उक्तिगोपीकीऊधवसों तुमहमसोंकहोपाहुनेहोकिप्राननाथकेमित्रहोतुमपाछेफिरिपछिताहुगेहेउद्धवसोतुमचित्तमेंसमुझोयाकोउपायहमजानतहैंहमकोठगेतैसेहींतुमकोभीठगैंगे अरुयामेंभीचारगनहैं कहैंक जगनपाहुने रगन फिरपी सगन ऊधोस तगन २९॥ मू० दोहा दुहूँउदाहरनआठोआठहुँपाइ केसवगनअरुअगनकेसमुझोसबैसुभाइ ३०॥ टी० आठोपाददो दोहातें आगे गनजानिये दोहामें ३०॥ मू० अथगुरलघुभेदवर्नन॥ संजोगीकोआदिगुरबिंदुजुदीरघहोइ सोहैगुरुलघुऔरसबकहैंसयानेलोइ ३१

टी० संजोगीकोआदिदीरघबिंदुगुरमानिये प्रस्ल बिंदुजुतदीरघकाहैऔरनकही उ० बिंदुदोरीत कौंअर्धपूरन ३१॥ **मू० दीरघलघुकरकैंपढैंसु षहीमुषजिहिंठार तेईलघुकरिलेषियेकै सबकबिसिरमोर ३२॥** टी० दीरघबरनजोहै सोलघुकरिकेपढैसुषमुषतैं॥ जोठारमेसोऊब रनजोहैसोलघुकहावै ३२॥ **मू० पहिलेसुषदेस बहीकोसषीहरिहोहितुकैजुहरीमतिमी ठी दूजैंलैजीवनमूरअक्रूरगयोअंगअंग लगायअंगीठी अबधोंकेहिकारनएउठि धायेहैंउद्धवलेकरकूठवसीठी माथुरलोग नकेढिगकोअबहबैठकतोहिअजानउबी ठी ३३॥** टी० उक्तिनायकापतिसषीकी केपहि लेसुषदेसबकौंहैसषीहरिने मतिहरी फेरकू रअक्रूरनेअंगअँगीठीलगाई अर्थासजराई अ बकौनकारनसोयेउठकेधायेहैंउधवकूठकी ब सीठीलेकैं अबहींलौंमाथुरसब्द्असलीलकरि गारीदेइहैं केतोकोंअबहूनाहीबेठकउबीठीहे इहांउद्धवपदसंजोगीधकारकेवलतैंउकारकोऊ कारजानिये अंगअंगमैंअनुस्वारलघु ३३॥ मू०॥ **अथहीनरसवर्नन॥ दोहा॥ बरनतकेसो दासरसजहांविरसहोजाइ ताकबित्तसौं**

हीनरसकहतसकलकविराइ ३४॥ टी०
जहाँरसबरननकरतबिरसहोयजायहैताहीक
बित्तकोहीनरसकहतहैं ३४॥ मू० जथा दैद
धिदीनोउधारहोकेसबदानीकहाजब
मोललैरवैहै दीनेबिनातोगईजुगईनग
ईनगईघरहीफिरिजैहै गोहितबैराकि
याकबकोहितबैरुकियेबरनोकेहीरैहैं
बैरकोगोरसबेचहुगीअहोबेचैनबेचै
तोढारनदैहै ३५॥टी० उत्तरालंकारहैनायकवचन
केदैदधितबनायकाकहतकाउधारदेहिंनायकदानि
कहाजबमोललेहिंगे नायकदीनैंबिनातोगईजानदेहि
नायकानहीघरजैहैं॥नायकहमतुमतेंहितगयेनाय
काकबहितरहीनायकबैरकरिनीकेरहिहैगोरसबे
चिहौनायकानबिकिहैतोढारनदेहैं नायकबचनसें
हितहमसोतुमसौंटूटोअरुनायकाबचनकबकोहि
तहैयहरसहीनसबकहतहैं सोकेसवकोअभिप्राय
नाहीहीनरसविभावअनुभावसचारीअस्थाईतेंही
तहैयाकबित्तविषैअनुभावविरोधीरसकोहै बचन
तेंअरुसंचारीभीनाहीकहोकैआलंबनहै तोआलंब
नदेषियहबातकहिबोअनुचितथाईकीप्रतीतिहैता
तेंहीनरस अरुकोईकहैकियाकोअभिप्रायऔरहैना
हिवचनमात्रकठोरहै तोयहकहोकेरसतीनितरहको

होतहैअविमुषविमुषपरामुषजहांविभावअनुभाव
संचारीअस्थाईरहैसोअविमुष अरुजहाँविभावादिक
छसोंहोंहितहाँविमुषजहाँअलंकारमुख्यहै तहांपरामु
षसोयहमैं तीनोनाहीं अरुकोईकहैकैअलंकारउत्तर
है तहाँदानीकहाजबमोल्लैपैहैं याकेआगेनायकाब
चनचाहीसोनाहीहैयहतेंतीनमेएकहूनाही ३५॥

**मू॰ अथजतिभंगवर्ननं दोहा ओरचरन
केबरनजहँओरचरनसोलीन सोजतिभं
गकविचकहिकेसवपरमप्रवीन ३६ ॥**

टी॰ दूसरेचरनको बरनदूसरेचरनमेमिलिजाइ
सोजतिभंगकविचकहावै ३६ ॥ **मू॰ जथा हरि
हरिकेसवमदनमोहनघनस्यामसुजान
योब्रजबालाहारकानाथरटतदिनमान॥
३७ ॥** टी॰ यादोहामैंप्रथमचरनमेतेरहमात्रानही
है अरुदुतीयमे इग्यारहनहीहै यातेंजतिभंग॥ अ
र्थउक्तिउद्धवकीकेहरिआदितुम्हारेनामव्रिजबा
सीरटतहैंयाकोनामवृत्त हतहै ३७॥ **मू॰ अथ
व्यर्थल॰ एककवित्तप्रबंधमैं अर्थविरोधजु
होइ पूरबपरअनमिलसदाँ व्यर्थकहैंकविलो
इ ३८॥** टी॰ जहांएककवित्तकेप्रबंधमे अर्थविरो
धपरै पूरबअरुपरमे अनमिलरहैसोव्यर्थकहावै
३८॥ **मू॰ जथा मरहट्टाछंद॥ सबसत्रुसंहार**

हूजीजिनमारहूसजजोधाउमराऊ बहुव सुमतिलीजैमोमतकोजैलीजैअपनोदाऊ कोईनरिपुतेरोसबजगहैरोतुमकहियतसब साधु कछुदेहुमगावहुभूषभगावहुहोपुनिध र्मअगाधु ४०॥ टी॰ पहिलेकह्यो सबसत्रुसंहारो फेरक ह्योजीवकोजिनिमारोताकेपाछेसजेहैंजोधाउमराव व हुवसुमतिलेहुसोसंमतकरो अपनादावालेहुसत्रु पै फेरकह्यो तुमारोरिपुकोईनहीहै सबजगमैंतुमब डेसाधुहो कछुमोकोमँगायदेव मेरीभूषभगायदेव तुमधर्मकेअगाधगहिरेहो सोसबपदअर्थविरोधी है प्रथमकहोसबसत्रुसंहारो पाछेकह्योजीजिनिमा रो यातैंवदतोव्याघातभयोयाकोनामव्याहतकहत हैं ४०॥ मू॰ अथअपारथलच्छन॥ अर्थनजा कोसमुझिएताहिअपारथजान मतबारेउ नमत्तसिसुकैसेबचनबषान ४१॥ टी॰ जा कोअर्थनसमुझियेसोअपारथकहावै वारुनीपा नवारेउनमत्तमतिभ्रमवारेअरुबालककेसेव चनबषानकरैं ४१॥ मू॰ जथा पियेलेतनर सिंधुकोहैअतिसेजुरदेह ऐरावतहरिभा वतोदेषोगरजतमेह ४२॥ टी॰ मनुष्यसमु द्रकोपियेलेतज्वरसहितदेहहोनेतैं ऐरावति ह रीइंद्रकोभावतोहै अरुमेघगर्जत यादोहामैं ए

कभावकोऊनाहीँबनतयातैंअपारथयाकोनाम
कष्टार्थकहतहैं ४२॥मू· अथक्रमहीनवर्ननं
॥दो· क्रमहीगुननबषानियेगुनीगनैंक्रम
हीन सोकहियेक्रमहीनजगकेसवकहत
प्रवीन ४३॥टी· जाकोजोक्रमप्रथमबांधियेसो
ननिबाहियेसोक्रमहीन ४३॥मू· जथा जगकी
रचनाकहिकौनकरी किहिंराषनकीजिय
पैजधरी अतिकोपकेकौनसंहारकरैं ह
रिजूहरजूबिधिबुद्धिररैं ४४॥टी· जगकिनर
चो अरुपालोकिन संहारकिनकियो हरीविस्नुम
ध्यमेंचाहिये सोप्रथमकहे हरसिवअंतमेंचाहिये
सोमध्यमेंकिये अरुब्रह्मा प्रथमचाहीसोअंतमेंकि
ये ४४॥मू· अथकर्नकटुल कहतननीको
लागईसोकहियेकटुकर्न केसोदासकवि
नमैंभूलिनताकोवर्न ४५॥टी· जोकहतनी
कोनलागैसोकर्नकटुकहावै ४५॥मू· जथाब
रनबन्यो बनावतनसुवरनबलीविसाल
चढ़िबेराजमँगाइकैमानोराजतकाल ४६
टी· गजसज्योहै अरुतनकोभीअच्छोहै सुंदरबर
नअरुबलविसालहै॥हेराजनमगायकेचढ़ियेमा
नोंकालहै इहाँकालसब्दकर्नकटुहै मल कर्नक
टुतौसब्ददोषहै अरुइहाँअर्थदोषहोत अरुयह

दोषस्रिंगारमेंहोयहै इननीरसमेकीयोसोकाहे प्रमान कहूंदोषहैउचितकरकहूंदोषगुनहोय कहूंदोष नहिंगुननहींऐसेकेतूंजोय॥स्रंगारमें दोष वीरादि में गुन नीरसमेंउदासीन उत्तर कनेकटुकोअर्थकानकोजोकटुलगै नोइहाकालसब्द काननकोकटुलगैहै अरुसब्दसुनकरअर्थबोधहोयहैयातैंइन तीनोमेंमानोहै ४६॥ **मू॰ अथपुनरुक्तलक्षन**

एकबारकहियेकछुबहुरिजुकहियेसोइ॥अर्थहोइकेसब्दपुनसोपुनरुक्तसुहोइ॥४७॥ टी॰ एकबारकहिकेफेरवहीबातकहियेसो अर्थतैं होयकिंवासब्दतैंहोयसोपुनरुक्तिकहावै॥ ४७॥ **मू॰ सोरठा मघवाघनआरूढइंद्रआजु अतिसोहियैं ब्रिजपरकोप्योमूढमेघदसोदिसदेषियें ४८॥** टी॰ मघवाइंद्रघनपै आरूढहैअरुफेरकहोइंद्रअतिसोहतहै अरुब्रिजपैमूढकोप्योहै मेघदसोदिसासोभतहैं यातैंपुनरुक्त ४८॥ **मूल दोषनहीपुनरुक्तिकोएककहतकविराज छोडअर्थपुनरुक्तिकोसब्दकहेइहिसाज॥४९॥** टी॰ पुनरुक्तमेंसब्दफेरवहीपरै अरुअर्थभिंन होयतोदोषनहीं ४९॥ **मू॰ लोचनपैनेसरनतैंहै कछुतोकहंसुद्ध तनवेधोमनवेधवोवेधीमनकीबुद्धि ५०॥** टी॰ लोचननेत्र वानतैंतीक्ष्नहैं प

रतौकौंकलुषहैकौनाही काहेनायककौतनवेधी फेरमनकौबुद्धिवेधी इहांवेधवसब्दतीनिवारआयो ताकोअन्वयंभिंनभिंनहै यातैंदोषनाही ५०॥ मू॰ अथदेसविरोधबर्ननं॥ मलयानिलमनहरतह ठिसुषदनर्मदाकूल सुवनसघनघनसारम यतरवरतरलसुफूल ५१॥ टी॰ यहदोषदोदोहा करकह्यो केमलयको पवनमनकौंहठकरकैंहरैहै अरुसुषदहैनर्मदाकोतट औसुंदरवनकपूरमय इ हांउपादानलच्छनातैं कपूरकोअर्थ कदलीसहि तवनहै अरुवृक्षचंचलफूलसहितहैंजामैं ५१॥ मू॰ मरुतदेसमोहनमहादेषहुसकलसभाग अम लकमलकुलकलितजहंपूरनसलिलतडाग ५२॥ टी॰ मरुतमाडवारदेसमहामोहनहैसोभाग्यवानपुरुष देषोअमलकमलकमलकुललितहैंजामेंअरुजलसहिततडा गहैं सोमरुतमैंएकोनाहीं यातैंदेसविरोध ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ ॥ मूल ॥❀॥ अथकालविरोधवर्ननं॥ प्रफु लितनवनीरजरजनिवासरकुमुदविसाल को किलसरदमयूरमधुवरषामुदितमराल ५३ ॥ टी॰ प्रफुलितहै नवीन नीरजकमलरात्रीमैंअरुदि नमेंकुमुदिनीरसालरसकोआलघर सरदमैंकोकि लावसंतमेंमयूरबरषामेंहंस यहकालविरोधहै ५३॥ मू॰ अथलोकविरोधन्यायविरोधएकउदाहरन

मे॥ दो॰ स्याईवीरसिंगारकेकरुणाघृणाप्रमा
न तारात्र्प्ररुमंदोदरीकहतसतीसममान ५४
॥ टी॰ वीरकोकरुना सिंगारकोघृणायहलोकवि
रोध तारामंदोदरीसतीसमान बरनोयहन्यायविरो
ध ५४॥ मू॰ अथआगमविरोध॥ पूजिमती
नोवरनवरकरिविप्रनसोंभेद पुनलीवोउप
वीतहमपढलीजेसबवेद ५५॥ टी॰ अबआ
गमविरोधकहेहैं कैतीनिबरनकोंपूजिये ब्राह्मन
कौंछोडिकैंअहपहिलेवेदपढलीजे पाछेजनेऊक
रैंगे यहवेदविरोध ५५॥ मू॰ इहिविधिऔरोजा
नियेकविकुलसकलविरोध केसवकहे
कछूकयहमूढनकेअविरोध ५६॥ टी॰ यावि
धितेंऔरोविरोधजानलीजिये केसवकछूककहे
हैं जेमूर्षहैं तेयतनेजानकेअविरोधीहोयजायँगे॥
५६॥ मू॰ केसवनीरसविरसअरुदुःसंधान
विधान पात्रादुष्टादिकनकौंरसिकप्रियातें
जान ५७॥ टी॰॥ नीरसविरस ३ दुसंधान ४ अरुपात्रा
दुष्ट ५ इनको विधानरसिकप्रियातैंजानिये ५७॥
इतिश्रीमद्विविधिभूषनभूषितायांकविप्रि
यायांकविलदूषनवर्ननंनामतृतीयप्रभा
वः॥ ३॥ ॥स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजका
सिराजश्रीमदीस्वरीप्रसादनारायणस्याज्ञाभिगामी

ललितपुरनिवासीहरिजनकवीस्वरात्मजेनसरदारा
ख्यकवीस्वरेणकृतेकासिराजप्रकासिकायांकविप्रि
यायांटीकायांत्रितीयमरीचीः ३॥ ॥मू· अथकवि
भेदवर्ननं॥ दो· केसवतीनोलोकमेंत्रिविधि
कविनकेराय मतिपुनितीनप्रकारकीवरन
तसबसुषदाय १॥ टी· तीनलोकमेतीनकविनके
रायहैं अरुमतिभीतीनिप्रकारकीहै सोतीनोसुषपाय
केबरनतहैं १॥ मू· उत्तममद्धिमअधमकहिउत्त
महरिरसलीन मद्धिममानतमानुषनदोषनअ
धमअधीन २॥ टी· उत्तिममद्धिमअधम हरिरस
लीनसोउत्तिम अरुमनुषवरनैंसोमद्धिम दोषवर
नैसोअधम तहाँप्रस्न तीनिलोकमेअधमनवनिहै
उत्तर परमारथीउत्तिम स्वारथीमद्धिम स्वारथपरमार
थहीनअधम प्रश्न तहांप्रस्नआनउत्तरआन प्रस्नलो
कमैंउत्तरकविमैं काहेस्वारथपरमारथ स्वारथवारे
तीनलोकमेनाहीहैं ब्रहस्पतिस्वर्गमेपरमारथी॥ से
सपातालमेपरमारथी उत्तर सत्तवक्ताउत्तिम सत्तअ
सत्तवक्तामद्धिम असत्तवक्ताअधम किंवाआनको
दोषदेषगुनकथनकरैं तेउत्तम जैसोदेषैंतैसोकहैंतेम
द्धिम अरुगुनदेषदोषकथनकरैंसोअधम प्रस्न देवत
नकोनामसुमनहै गुनदेषदोषबरनैतेसुमनकैसेकहा
वैंगे अरुसेसकोभीनामछमाधरकैसेबनैंगो तहाँप्रस्नो

अर्थकेहरिजसविंगकोंवरननकरैंतेउत्तिम॥ अरुमद्धि
ममानुषनमात्रबरनैं अर्थमद्धिमकाव्यकर्त्ता अरुदो
षनदोईकोंषनडारैं उत्तिमअरुमद्धिमको तेअधम॥ अ
र्थसब्दचित्रमात्रबरननकरैं तोयामैंतीनलोककेक
वि तीनतीनिरीतिकेकाव्यकरैंहैं प्रश्न तहाँहरिविंग
केसेकहावैगी उत्तर विंगकाव्यकोजीवहै रसरह
स्ये विंगजीवहैकवित्तमेंसब्दअर्थसोंदेह अरुजीव
ईस्वरहै रामायणे ईस्वरअंसजीवअविनासी २॥

मू॰ उत्तममद्धिमअधमवर्नेनं कवित्त हैंअ
तिउत्तमतेंपुरषारथजेपरमारथकेपथसोहैं
॥केसवदासअनुत्तमतेनरसंततस्वारथसं
जुतजोहैं॥स्वारथहूपरमारथभोगनमध्य
मलोगनकेमनमोहैं॥भारथपारथमित्तक
हैंपरमारथस्वारथहीनतेंकोहैं॥३॥ टी॰ पर
मारथकेपथमेरहैंतेउत्तिम अर्थविंगधुनिकथन
करैं॥ अरुअनुत्तिमतेहैंकेस्वारथमात्रअविंगकवि
ताकरैं अरुस्वारथपरमारथदोईकथैंतेमद्धिम अर्थ
विंगअविंग अरुस्वार्थपरमार्थदोईनाहीजानत तेन
जानैकोहैं अर्थमुग्ध रामायनादिउत्तमकाव्य अरु
व्यंगअव्यंगसहितकाव्यमद्धिम अरुकूटादिकाव्यअ
धम अरुकोईकहैकेयामे क्रमहीनसोनाहीं इहाँ उ
त्तिमअनुत्तिमयहक्रमराषो ३॥ मू॰ कविरीतिव

नेन सांचीबातनबरनहींझूठीबरनैबान॥ ए
कनकरनैंनियमकौंकविमतित्रिविधबषान
॥४॥ टी॰ एकैसाँचीबातबरनैहैं एकेझूठी औएकेनेम
कोबरनैहैं प्रस्न तीनिलोककेकविआगेंकहे॥ तहाँ
सुरसेसझूठकरक्यौंबरनैंगे उत्तर इहाँकविकीतीनि
रीतिकेसवदिषावत सुतःसंभवी कविप्रौढोक्तिकवि
निबद्धवक्ताकीउक्ति तहाँसाँचीबातबरनैहैं जेतेसु
तःसंभवीलच्छन जगतप्रसिद्धजुअर्थतैंउचितअर्थ
व्यंगहोय वहीअर्थकोकहतहैंसुतःसंभवीजोय क
विप्रौढोतिल॰ कविकल्पित जोअर्थतैंनहींउचितकरि
जान कविप्रौढोक्तिसुसिद्धजहँबरननसबसुग्यान
॥कविनिबद्धल॰ वक्ताश्रोताआदिजहँकल्पैसुकवि
बनाय ताकीजहँप्रौढोक्तितहँकविनिबद्धठहरा
य यहतीनसोतीनईलोककेकविबरननकरैहैं ४॥
मू॰ सत्तवरननं॥ केसवदासप्रकासबहु चं
दनकेफलफूल॥ कृस्नपक्षकीजोन्हज्यौंसु
क्लपक्षतमतूल ५॥ टी॰ चंदनविषैंफूलनाहीं
तोफलकहाँतैंहोय कृस्नपक्षमैंदोयघरीअंधेरीहै
आगेफेरचांदनीहै सोआननहीकहत जेसत्तवक्ता
हैं तेईकहतहैं अभिप्रायपहजोसुतःसंभवीबरन
नसोईबातसत्तहै किंवाचंदप्रकासबसमैंफलफूल
नतैंलाँघेहैंजितनीकृस्नपक्षचांदनीजितने सुक्लपक्ष

कौतमअंधकार यहसुतःसंभवीतैनायकाकहीहैं कृस्नपक्षमेचलिहों सोसुनसषीकहीजितनी चांदनी कृस्नपक्षमेंहैतितनीसुक्कुपक्षमैंहै अविसारकरोय हदुतीयव्यंग ५॥ मू॰ अथमूठवरननं जहंज हंबरनतसिंधुसबतहंतहंरतननदेषि स क्षमसरबरहूकहैंकेसवहंसबिसेषि ६॥ टी॰ जहांजहांसमुद्रतहांतहांरत्नलघुसरोवरमैंहं स ६॥ मू॰ लेनकहेभरिमूठतमसुजनीसिव नबनाइ अंजुलभरिपीवनकहैचारुचंद्रि कापाइ ७॥ टी॰ उक्तरावनदूतकीरामदलवरन न केसेजोधाहैं जेतमअंधकारमूठमैंभरेचाहत अ रुसुईतैंसीयोचाहत अरुअंजुलीमैंभरकैंचांदनीपि येचाहत वस्तुयहरात्रिनरहनदेहैं तातैंदूसरीवस्तु रजनीचरकेसेजीतिहैं यहकविप्रौढोक्तिहै ७॥ मू॰ सबकेकहेउदाहरनबाढैग्रंथअपार कहूं कहूंतातैंकहौंकविकुलचतुरबिचार ८॥ टी॰ कहूंकहूंदिषायोसोकविचतुरबिचारकरैंगे ते कहैंगेकैकविनकीमूठेकरनिंदाकरीहै ८॥ मू॰ तम कोउदाहरन कवित्त कंटकतैंअटकेनफा टतचरनचपिवाततैंनजातउडिअंगनउघा रिए नेकहूनभींजतमुसलधारबरषतकी चनरचतिरंचचितमैंबिचारिए केसोदास

सावकास परमप्रकासन ॥ [illegible] ॥ येपसारिये नपियपैविसारिये ॥ चलियेजूओढपटत महीकोगाढोपटपातरोपिछौरासेतपाटको उतारिए ९ ॥ टी॰ अबकविनिबद्धवक्ताकीउक्तिदे षावततमबिषैं उक्तिसषीकीनायकाप्रति कैपातरो पिछौरावस्त्र पाटकोउतारिये अरुतमकोओढकेच लिये ताहीतमकेसबविसेषनहैं केकंटकतैंनअटकै नचरनमैंचपकेफाटैनपवनतैं उडैनजलतैं भींजैन कीचतैं बिगरैसावकासयाकोकोईरोकनवारोनाही जहाँचाहोतहींमिले ९ ॥ मू॰ चंद्रिकाकोउदाह रन भूषनसकलघनसारहीकेघनस्यामकु सुमकलितकेसरहीछबिछाईसी मोतिन कीलरीसिरकंठकंठमालहारओररूपजोति जातिहेरतहराईसी चंदनचढायैंचारुसुंद रसरीरसबराषीजनुसुभ्रसोभावसनबनाई सी सारदासीदेषियतदेषोजाइकेसोराइठा ढीवहकुँवरिजुन्हाईमेअन्हाईसी १० ॥ टी॰ उक्तिसषीकीनायकप्रति केहेघनस्यामवानैंभूषन घनसारकपूरकेधारनकरेहैं अरुकुसुमकीकलि नछबिसोकेसनमैंछाईसीहे मोतिनकीजोलरीमा ला अरुकंठमेकंठमाल अरुहारओरइनआदि और भीरूपकीजोतिमेहेरानीऐसीजातिहै तिनभूषनकीसो

भा अरुचंदनचढायोहैचारुअरु सुंदरहैजाकोसबै सरीर सोकैसोजान्योजातिकैमानोराषीहैसबैसोभा बसनमेबनायकै अरुदेषतमैंसारदाऐसीहै सोवह राधाकुँवरिजुन्हाईमैंन्हाईसी स्नानकरेऐसीठाढी है प्रस्न तोयामेकूंढकहा उत्तर भूषनसबकपूरके हैं अरुकुसुमभी प्रस्न तोयामे सबैकविकीनिंदा अरुनायकाबिवस्त्रहै उत्तर यामैंकविनिबद्धकेसब देषावतकैंरूंढऐसोबरनी तहाँप्रथमअंगकोसुवास कैसीहैकैजाकरकैंभूषनघनसारकेसेजानेजात देह सुवासऐसीबरननकरोचाहीं प्रमान डगरडगरबग रावत अगरअंगजगरमगरआपआवतदेवारीसी इ त्यादि अरुअंगजोतिकैसीबरननकोजे कोजामेमोति नकीजोतिहेरायजात अरुकैसोनिपुनबरनिमे कैचंद नजोचढायोहै सोमानोबसनपहिरायोहै बुद्धिकैसीसार दासीप्रकासितचांदनीमे अस्नानऐसेकरे यहकवि निबद्धवक्तासषीकहतहैं जुन्हाईमे अन्हाईयहमि थ्याबरननकविप्रौढोक्तिहेमिलितअलंकारकरिकैंरू पकोअधिकाई विंग्यदिषावत १०॥ अथकविनि

यमवर्नेनं दोहा बरनतचंदनमलयहीहि मगिरिहीभुजपात बरनतदेवनचरनतेंसिर तैंमानुषगात ११॥ टी० चंदनकोमलयाचलमैं बरनैं हैं हिमगिरिमैंभोजपत्रकोनेम ११॥मू० अतिलज्जा

जुतकुलवधूगनिकागननिरलज्ज कुलटन
कौंकोविदकहतअंगअलज्जसलज्ज १२॥
टी·कुलवधूकोलज्याजुतवरनियेगनिकाको निरलज्ज
वरनियेकुलटाकोअंगअलज्जसलज्ज १२॥ मू·॥
बरनतनारिननरनतैंलाजचौगुनीचित्त भू
षदुगुनसाहसछगुनकामअष्टगुनमित्त १३
॥ टी· नरतैंनारीमैं इतनोबिसेष भूषदुगुन साहस
छगुन औकामअष्टगुनहेहेमित्त १३॥ मू· कोकि
लकोकलबोलिबोबरनतहैंमधुमास बरषा
हीबरननकरैंकेकीकेसोदास १४॥ टी· कोकि
लकोबोलिबोमधुमासमैंबरनैहैइत्यादि १४॥ मू· द
नुजनसौंदितिसुतनसौंअसुरीकहतबषान
॥ईससीससमिवृद्धकीबरननबालकवान
१५॥ टी· दनुजकस्यपकीइस्त्रीतातैंजेउपजैं तिन
कौंदानवकहतहैं अरुदितीतैंजेउपजैंताकौंदैत्य
अरुईसकेसीसमैंससी बहुकालकोहै तथापिबाल
चंदकहैहैं १५॥मू· सहजसिंगारतसुंदरीजद
पिसिंगारअपार तदपिबषानतसकलक
बिसोरहईसिंगार १६॥ टी· नायकाथोरोसिंगा
रकरै अथवाबहुतसिंगारकरै तथापिकविलोगसो
रहईसिंगारबरननकरतहैं ॥१६॥ ॥ मूल जथा
क· प्रथमसकलसुचिमंजनअमलवासजा

वकसुदेसकेसपासनिसुधारिबो अंगराग
भूषनविविधिमुषबासरागकज्जलकलित
लोललोचननिहारिबो॥ बोलनहसनमृदु
चातुरीचलनचारुपलपलप्रतिव्रतप्रीतिप्र
तिपारिबो केसोदाससाविलासकरहुकुँव
रिराधेइहिविधिसोरहसिँगारनिसिँगारिबो
१७॥टी॰प्र॰सोरहमैं बोलनादिकजोगनायेतोपटफ
हरानादिकक्रियाकाहेनाहीसिंगार उत्तर प्रथमसक
लसुचिलौंएकयामैंउपटनभीआयगयो१ फेरमंज
नस्नान२ फेरअमलपट३ पुनजावकसोनषरँगनो
४ फेरबेनीगूँदनो५ अरुअंगराममैंपाँच एकअं
गरागतोमाँगसिंदूर१ दुतीयललाटादिमैंषोर २ ति
लबनाइबोकपोलमैं ३ केसरअंगमैंलगावनो ४ मैं
हँदीएपाँचअंगराग १० प्रश्न जावककहोतोमेहँदी
नकहनोचाही उ॰ जावकनषयेडीमेलगतहै अरु
आगेलगायेतेसोभा यहतरवामैंलेकरआधेपाँय
मैंलगतहै अरुयाकोजबचाहेतबलगावै वाकोना
इनदेतहै भूषनद्विविधएकपुष्पको ११॥दुतीयस्वर
णादि१२ मुषबासमेतीनि लवंगादिभक्षणएक१३
दंतमंजनदुतिय१४ अधररागतांबूलादियहतीनि
१५ नेत्रसिंगारकज्जललगावनो यहसोरह१६ प्रश्न
निहारिबोआदिक्योंकहो उत्तर तहाँपलपलपतिव्र

तपालिबो इनविलाससहितशृंगारकरायहअर्थहै १७॥ मू॰ कुलटाकोपतिप्रेमबसवारवधूधन जान जाहिदईपितुमातसोकुलजाकोपति मान १८॥ टी॰ परकीयाकोप्रेमकोपतिपालन करनोपरकीयाकोलक्षनबहुतग्रंथनमेंहै जोप तिपरकीयाकोहैसोअप्रगटहै ल॰ अप्रगटपरपुरु षानुरागसापरकीया इतिरसमंजरी प्रेमकेबसकु लटाकोपति अरुधनतेंवारवधूको अरुजाकोमा तापितानेंसौंपीसोकुलजाकोपति यादोहाबहुतपो थिनमेंनहींहै १८॥ मू॰ महापुरुषकोप्रगटहीं बरनतवृषभसमान दीपथंभगिरिगजक लससागरसिंहप्रमान १९॥ टी॰ महापुरुष कौंवृषभसमानकहतहैं कुलदीपकहतहैं कुलथंभ कहतहैं गिरिसदृसगजसदृससमुद्रसमानबरनि येअरुसिंहसमान १९॥ मू॰ जथा क॰ गुनमनवै रागरधीरजकोसागरउजागरधवलधरध मैंधुरधारियेजू खलनरूतोरिबेकौंराजेग जराजसमअरिगजराजनकौंसिंहसमगा येजू वामनकोवामदेवकामिनिकोका मदेवरनजयथंभरामदेवमनभायेजू कासी कुलकलसजंबूदीपदीपतकेसोदासकोक लपतरुइंद्रजीतिआयेजू २०॥ टी॰ गुनकोपा

निहैं अथवा गुनकोमनिहैं तथापि वैराग्यवान हैं अ
रु धीरजकोसमुद्र हैं अरु उजागरसबदेसमेंप्रसिद्ध
हैं धवलवृषभहैं धर्मकोधुरभारधरिकैंस्वर्गतेंधा
येहैं आयेहैं धवलवृषभकोकहत हैं प्रमान सोनित
सरिततीरगौराकैंगोसाईंढरैधोयेबहिचलैत्यौंजहाँ
पावथरनाचहै किंवाधवलउज्वलनिर्मलजोधर्म
ताकोधुरभारधरिकै ध्वनिमें वृषभ षलरूपीजोत
रुहैताकोगजराजरूपहोयकेतोरैहै अरुबैरीजेगज
राजहैं तिनकोसिंहसमानहैं वामजेवक्रआपनेधर्म
मेंनहीचलैंताकेमारिबेकोंवामदेव वामदेवोमहा
देवोविरूपाक्षस्त्रिलोचनः इत्यमरः कामिनीकोकाम
देवबरनोहैजयकीथंभरामदेवजाकेमनमेंभायेहैं का
सीपतिकेकुलकोकलसजंबूदीपमेंदीप्तहै केसोदास
कोकल्पतरुहै ऐसोइंद्रजीतिहैं २०॥मू॰दो॰ वृषभकंधसुर
मेघसमभुजधुजअहिपरमान उरसमसिलाकपाटअँ
गअवरत्रियानसमान २१॥टी॰पुरुषकोमेघसोस्वरबरनि
ये भुजाकोंध्वजासमसर्पसमकहिये उरछातीकपाटसमसि
लासमकहिये औरअंगनेत्रादिइस्त्रीकेपुरुषकेसमबरनि
ये २१॥मू॰ जथा कवित्त मेघज्यौंगम्भीरबा
नीसुनतसरवासिषीनसुषअरिउरनजवासेज्यौं
जरतहै जाकेभुजदंडभुवलोककोंअभयधु
जदेषिदेषिदुर्जनभुजंगज्यौंडरतहै तोरिबे

कोगढउरहोतहैंसिलासरूपराषिवेकोद्वा
रनिकेवारज्योंअरतहैं भूतलकोइंद्रइंद्र
जीतराजैजुगजुगजाकेराजकेसोदासराज
सोकरतहैं २२॥ इतिश्रीदृविधभूषनभू
षितायांकविप्रियायांकविव्यवस्थाबर्ननं
नामचतुर्थःप्रभावः ४॥ ॥टी॰ मेघसीहै
गंभीरवानीसोसुनकैंसीषीनाममयूररूपीजोसषा
हैंतेसुषीहोतहैं मयूरोबर्हिणोबर्हीनीलकंठो
भुजंगभुक् सिषावलःसिषाकेकीमेघनादानुला
स्यपी इत्यमरः॥ अरुवैरीतिनकोउरजवासासेज
रतहै अरुजाकेभुजदंडभूलोकमें अभयकोघु
जाहै अरुभुजकोसर्पकेसमानदेषदुरजनडरत
हैं अरुगढतोरिवेकौंसिलासरूपउरवक्षस्थलहो
तहैं अरुआपनोद्वारराषिबेकौंकपाटसदसभूप
थ्वीतलकोजोइंद्रइंद्रजीतहैसोजुगजुगराजकरै
२२॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराज श्री
मदीश्वरीप्रसादनारायणस्याज्ञाभिगामीललितपु
रनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यक
वीश्वरेणकृतेकाशिराजप्रकाशिकायांकविप्रिया
यांटीकायांचतुर्थमरीचीः ४॥ ॥मू॰ अथक
वितालंकारवर्ननं दो॰ जदपिसुजातसुल
च्छनीसुवरनसरससुवृत्त भूषनविनुनवि

राजहोकवितावनितामित्त १॥ टी॰ कवितापक्ष
स्त जदपिसुजातकहेंसुंदरजातकाउत्तमहें ...
गनाहीसुलक्षणे काव्यकेजेलच्छनकहेंतिनमें
मिलतसुबरनमयसुंदरवरनअक्षरअनुप्रासमय
सरसनवोरसमय सुवृत्तओजमाधुर्जेप्रसादवैद
र्भीगौडीपांचालीयहजथपिहैंतथापिभूषनजोअ
लंकारहैंताबिनानाहीसोहतकवितारूपीजोवनि
ताहैहेमित्र कहांप्रश्न ...कविताजोकहीकि ...
नअलंकारनाहींसोहततोजहांवस्तुओरसमुख्य
हैहैतहांकवितानाहीसोभितहैहैसमाधानकि तहां
हूं अ ...गोभावतेंअलंकारहैं वनितापक्ष
ज ...पिसुजातकहैपदमिनीहैसुलच्छनसोस ...
ककेसुवरनमयगोरवरनमयसरसलक्षपति ...ता
दिआदितयापिभूषनविननाहीसोहतहै ...
हैं ...पदमिनिकहेंचारोलच्छनहोयत्त्वकेफेरसु
लच्छनोअधिकपदहै उत्तर केसुजातजोपदमि
मिहैंसुलच्छनदारिद्रनाही सुवरनकोकादिपद
निहार केवाजाकेसंदरअंतहैं कुचसरसरसहि
तषोडसबरसकावयक्रमसुताजसुदरसाजश्रह
सेजआदिआठोतयापिभूषनगहना विनानाही
सोहत प्रश्न नायकाविनागहनाभीसोभापावत
है बिहारी पहिरनभूषनकनकके कहिआवेन

हिश्रान दर्पनकेसेमोरचादेंहुदिसाद्देजान उत्तर नामकाकोभूषनपतिहैतिनबिनानहीसोभाकोपा वत मित्रपक्ष जद्यपिसुजातहै ब्रासनक्षत्रीसुंद रलक्षनहैजुपादिकुलक्षनजामैंनाहीहैं सुवरनम मबहुतधनमयसुंदरव्रतकपटहीनतथापिभूष नजेसुहृदहैंतिनबिननहींराजतमित्त अथवाक वितारूपीवनिताजिनकेकंठसोंनाहीलगी अथवा भूपृथ्वीपनबनमात्रजोछूटैतोसोभाहीनहोतहै॥ १॥ ॥मू॰ कविनकहेकवितानकेअलंकार दोरूप एककहैंसाधारनेएकविसिष्टअनू प २॥ टी॰ कविलोगकविताकोदोरूपअलंका रकहेहैं सोदोरीतिकोएकसामान्यएकविसिष्ट॥ २॥ मू॰ अथसामान्यालंकारवर्ननं सामान्या लंकारकेचारिप्रकारप्रकास बरनबर्नेभूरा जश्रीभूषनकेसवदास ३॥ टी॰ सामान्यालं कारकेचारिप्रकारहैं वर्नेअवर्ने भूमिभूषनऔ राजश्रीभूषन ३॥ मू॰ अथवरनालंकारवर्ननं सेतपीतकारेअरुनलीलेधूमरवर्ने मिश्रि तकेसोदासकहिसातभांतिसुभकर्ने ४॥ टी॰ सातनौरकेबरननहैंयामैं स्वेतपीतकारेलाल नील धूम्रमिश्रितनाममिलेहुए ४॥ मू॰ सेतव र्ननं कीरतिहरिहयसरदघनजोन्हजरामंरा

र हरिहरहरगिरिसूरससिसुधासौंधघनसार ५॥ टी॰ कीरतसपेद हरिविस्नु प्रमान सुक्लोरक्तस्तथापीतः इदानींकृस्नतांगतः हयसपेद सरदकालकेघनसपेद जोन्हकहैंतैं चंद्रमाचांदनी जराअवस्थासपेद मंदारकेपुस्पसपेद हरिसिंहयेभी स्वेतहैं महादेवतिनकोअस्थान कैलास सूरकहियेसूर्जसेतहैं चंद्रमा सुधा सौंधनोन कपूरएसबसपेदहैं ५॥ मू॰ बलिबकहीराकेवरोकौडीकरकाकाँस कुंदकैंचुरीकमलहिमसिकताभस्मकपास ६॥ टी॰ बलबलदेव बकबकुला हीरा केवराकोफूल कौडीवराटिका करकाहिम उपलकाँस धातु कोईघासकोभीकहेहैं कुंदकेफूल कैंचुरीसर्पकी कमलस्वेतकंज हिमपाला सिकताबालू भस्मविभूत कपासरुई ६॥ मू॰ षाँडहाडनिरझरचँवरचंदनहंसमुरार छत्रसत्तजुगदूधबुधसंषसिंहउडमार॥७॥ टी॰ षांडचीनी हाडअस्ति निरझरझरना चँवर चंदनमलय हंसमराल कमलकीजड छत्रस्वेतकोहोतहे सतजुग दूध बुधचंद्रमाकोपुत्र संखपांचजन्यादि सिंह उडमारतारागनकीमाला ७॥ मू॰ सेषसुकृतिसुचिसत्तगुनसंतनकेमनहाँस॥सीपचूनभोडरफटिकषरिकाफेनप्रकास॥८॥ टी॰ सेषसेस सुकृत सुचिपवित्र सतोगुन सा

धुकेमन हाँस सीप चूना भोडरअभ्रक फटिकसपेद पासान षटिकासेलपरी फेनसमुद्रफेनादि अरुप्रकास ८॥ मू॰ सुक्रसुदरसनसुरसरितवारुनबाजि समेत नारदपारदअमलजलसारदादिसबसेत ९॥ टी॰ सुक्रभृगु सुदरसनचक्र सुरसरितगंगा वारुनऐरावत बाजिउच्चैश्रवा नारदरिषी पारदपारा वेमलकोजल सारदासरस्वती एसबस्वेत हैं ॥९॥ मू॰ कवित्त कीनोछत्रछितिपतिकेतोदसगनपति दसनवसनवसुमतीकरोचारुहै विधिकीनोआसनसरासनअसमसरआसनकोकीनोपाकसासनतुषारहै॥ हरिकरीसेजहरिप्रियाकरीनाकमोतीहरकरीतिलकहराहूकरीहारुहै राजादसरथसुतसुनोराजारामचंद्रावरीसुजससबजगकोसिंगारुहै १० ॥ टी॰ हेरामतिहारोजोसुजसहै ताकोछितिपतिराजाननेंछत्रकियोअर्थकेसिरपैरहै अथवारामजसकीछायातरनिरभयरहैंगे अरुगनपतिनेदसनकियो केहरबारनेत्रकेविषयपररहैदरसनीयमानके॥ अरुवसुमती पृथ्वी . नेंवसनकियो काहेकेसागरांवराभूमिकोनामहै अर्थलज्यानजायगीरामजस बसनकरैतें अरुविधिब्रह्मानेआसनकमलकीवामरालअर्थरामजसपैबैठेतेंअभयरहि

हैं असमसरकामनेसरासनकीनौं अर्थात फेरकोई
नजरावै अरुपाकसासनइंद्रतुषार अर्थसंग्राम
मैंजयहेतु हरीविस्नुनेसेजकरी अर्थ अतिसुषद
अरु हरिप्रियालच्छिमीनेनासिकामोतीकरो अर्थ
इस्त्रीनासिकाकोबहुतउत्तममानती याहीतैंगोसा
ईंलिषी तुलसीरघुनाथकीभक्तिविनामनौंसुंदर
नारिकीनाककटी हरमहादेवनेतिलकभस्म अ
थवाचंद्रमायातैंजन्ममरननाहीं हरापार्वतीनेह
रकियोकैफेरदुरबुद्दिनहोयगी सतीरूपवत यातैं
जगतश्रृंगार १०॥ मू· देंहदुतिहलधरकीनौंनि
सिकरकरजगकरवानीवरविमलबिहारहैं
॥मुनिगनमनमानदुजनजनेऊजान संषसंष
पानपानसुषदअपारहैं केसोदाससोविला
सविलसोविलासनोनसुषसुषमदुहाँसउद
यउदारहैं राजादसरथसुतसुनोराजारामचं
द्रावरोसुजससबजगकोसिंगारहैं ११॥ टी·
हलधरबलिरामनेदेंहकीदुतिकरी अर्थ अनेकइ
स्त्रीमोहहेतु निसिकरचंद्रमानेकरकिरनकीनी ज
गतसीतलहेतु जगकरब्रह्मानेबानीसरस्वतीकरी
विमलविचारहेतु मुनिगनसमूहनेमनमनौं विस
यमैंनजाययहहेतु अन्यदुजननेजनेऊमानौं महा
पवित्रहेतु संषपानविस्नुनेंसंषसुषदअपारहेतु

विलासिनीजोइस्त्री जासमयपतिकेसंगविलास करती तासमयकोसुषसोंमुषहास्यकीनों ताकोउ दयउदारहै अथवानिपुनहैंविलासमेंप्रवीनहैं हे मकोसमेंउदारबडेदाताप्रवीनकोकहैहैं तहांअ स्त्र केमुनिननेमनमानौंदुज्जननेजनेऊजानौं दोबा रदुज्जकाहेकहो उत्तर मुनिअनेकबरनहोतहैं वि लामित्रक्षत्री सरवनवैस्यपुत्र ११॥ मू० नारायन कीनीमनिउरअवदातगुनकमलाकोवीना भनसोभासुषसारहै केसवसुरभिकेससार दासुदेसभेसनारदकोउपदेसविसदविचार है ॥सौनकरिषीविसेषसीरषसिपानलेषगंगा केतरंगदेषविमलविहारहै राजादसरथसुत सुनोराजारामचंद्ररावरोसुजससबजगकोसिं गारहै १२॥ टी० नारायननेमनिमानी उरछातीता कोअवदातगौरवरनमानिके मनिछातीकोएकब नैजानो इहांविस्नुकूजानिये अरुकौस्तुभभीपीत है तहांमुक्तादिअन्यजानिये कमलालक्ष्मीताकीवी नाप्रसिद्धनाहींतहांऐसेकही वीनाकीभनकसब्द नातैंउत्पत्तिहोयसोबानी कहूंकमलाकी वीना भीपाठहै तहांबानीसरस्वती अथवाकमलाकीवी नाईवनाइताकीभनकबानीताकीसोभा सुभेउज लताताकोसारांस सुरभीकामधेननेकेस करेसा

रदादीजोदेसअरुभेस हाआदिपदतेवचनभीना
रदउपदेसलिषो सबकेउरउज्जलहेतु अगुविसव
विचारभी अरुसौनकआदिजोरिषीविसेषहैंतिन
सिषाजानो अरुगंगानेतरंगलहरकरी १२॥मू० वृ
हवननं० सवैया॥विलोकिसिरोरुहसेतसमे
ततनो रुहकेसबयौंजसगायो छकियौंआ
पुकीओधकेअंकुरमूलकोतूलनमूलनसा
यो लिषोकिधौंरूपकेपानिपराजपरूपके
भूपकरूपलिषायो जराजरपंजरजोवजरो
किजरासरकेबरसोपहिरायो १३ ॥टी० कोई
केसिरोरुहसिरकेकेस तनकेलोमसबहि तवउसे
तासंदेहकरिके तिनकोकेसवकविबिसेसगुनगाव
तहै केउठेहैं आवेलकीअवधके अंकुर कैसूल
जानैंदुषकोमूलनष्टहोयगयो सूलजोहैसोमूलद
षकेनिकरोहै अर्थदुषगयोदुषआयो किधौं
रूपनेंरूपकेभूपपैपराजयलिषाईसोतानैंरूपकेपा
नीमैंलिषदई अर्थरूपगयोकुरूपआये। केजराजो
हैतानेंअपनेसरपंजरमेंजिनकोबांधोहैकिजराजो
बुढापाहैतानेंजरदबरकसेपनकोबरपहिरायोहै
अर्थेखजानाहूहुतानसौंप्यो किबाजराकीजोजरद
लताहीकोकंवरपहिरायोहै अरुकोईज्वरकोभीअ
र्थकरततहांजरतेज्वरकरनेपरतहै [illegible]

रामसु चक्कनस्यामसुगंधकेधामकुतेजेसुभा
यकके प्रतिकूलभयेदुषसूलसबैकिधौंसाल
सिंगारकेघायकके निजदूतअभूतजराकेकि
धौंअफतालीजराजनुलायकके सितकेसहि
येइहिबेसलसैंजनुसायकअंतकनायकके
१४॥ टी० अभिरामरमनीयसचिक्कनअरुस्याम मे
चकसुगंधकेघररहेसुभावतें तेप्रतिकूलह्वैगये
रमनीयअरमनीयइत्यादि द्रिगकेसूलहोयगयेअ
र्थदेषतें जीवकोसूलसेलगतहैं केसालसत्रुश्रिं
गारमारनहारकेहैं घायककहियेश्रिंगारकोघात
क कैजराकेनिजदूतहैं किंवानिजहैंतो आपनपरं
तुजराकेदूतहोयगये कैअफतालीअहदीजोसा
हिकेहुकुमसुनावत प्रथमसोजराकोजोजरषजा
नाताकेहैंअर्थजराको खजानाइहांरहैगो सितके
सहितमेंऐसेदेषिपरतमानोसायकअंतकनामज
मराजकेहैं १४॥मू०लसेसितिलोमसरीरसबै
किजराजसरूपकेपानलिषायो सुरूपकोदे
सउदासकीकोलनिकोलनकेकिकुरूपन
सायो जरैकिधौंकेसवव्याधिनकीकिधौंओ
धकेअंकुरअंतनपायो जराजरकंबरजीवज
र्योकिजरासरकंबरसोपहिरायो १५॥ टी० ल
सैहैसितलोमसरीरमैंकैजरानेअपनोजसरूपके

पाँनीतैंलिषायोहै कैरूपकोजोदेससोउदासकीकी
लनतैंकीलितकरिकैं कीलमंत्रत्तैंगाडतहैं सोकुरू
पनैंनसायद्योहै व्याधिरोगकोजरेमूल किअव
धकेअंकुरत्तैं अंतनपायोहै १५ ॥ मू॰ अथपीतव
र्णनं॥ दो॰ हरिवाहनविधिहरजटा हराहरदि
हरताल चंपकदीपकवीररसुरगुरुसुरमधु
पाल १६ ॥ टी॰ हरिवाहनगरुड विधिब्रह्मा सिव
कोजटा हरापारवती हरकीइस्त्री कहूँहरीभीपाठ
हैतहाँभीहरीपार्वती हरदी हरताल चंपक अरु
दीपक वीररस ब्रहस्पत सुरदेवता मधूमहुवा म
धुकपांडुरघुवंसमैंहै सुरपालइंद्र अथवाजोपाल
मैंरहैसामैंपालआमादिकभी १६ ॥ मू॰ सुरगिरिभू
गोरोचनागंधकगोधनमूत चक्रवाकमनसि
लसदाँद्वापरवानरपूत १७ ॥ टी॰ सुमेरपृथिवी
गोरोचन गंधक गोमूत्र चक्रवाककोक मनसिल
पथ्थर द्वापरजुग वानरपूतश्रीहनुमानजी १७ ॥ मू॰
कमलकोसकेसववसनकेसरिकनकसभाग
॥ सारोमुषचपलादिसवपीतरिपीतपराग १८
॥ टी॰ कमलकोकोससिपाकंद श्रीकृस्नकोवस्त्र के
सरकुसुम कनकसोना हेसभागकविकोसंबोधनहै
सारोनाममैनाताकोमुष चपलादिऔर पीतरिधातु
औपराग १८ ॥ मू॰ सवैया मंगलहीजुकरीरज

नीविधियाहीतेंमंगलीनामधरोहै दूसरदामि
निदेंहंसवारउडायदईघनजायवरोहै॥रोचन
केरुचिकेतकीचंपकफूलनमेंअँगवासभरोहै
॥गोरीगोराईकोमेंलमिलैकरहाटककोकरि
हाटकरोहै १९॥ टी॰ ब्रह्मानेअपनेचित्तमेंविचारी
॥कैहमारीनिंदाकोनहै तबयहचित्तमेंआई कैसो
नासुगंधएकत्रनाहीहै यानिमित्तप्रथममंगलमैं
प्रथमरात्रिमेंरजनीनामहरदी केहरिद्रा रजनीस्त्र
पी इत्यमरः यातेंमंगलीनामधरो अरुप्रथममंगल
मैं ताहीकोंग्रहनहै फेरदूसरेदामिनीबनाईताकों
चंचलजानकेउढायदई वानेघनमेघ ताकोंवरो
॥फेरगोरोचन चंपक अरुकेतकीनाम केतनेंफू
लमैंताकोअंगवासभरो अर्थपराग परागःसुम
नोरजः इत्यमरः परंतुनकनों तबगोरीपार्वतीके
अंगकोमेलमिलाइके करहाटकसोनामयकरो
हाटसिफाकंदबनायो करहाटःसिफाकंदःकिंज
ल्कःकेसरोस्त्रियां इत्यमरः सोनातेजस गोरीकेगो
राईकोमेलपृथ्वीदोईमिलाए प्रमान वन्हिसुवर्ने
विषयरघुनंदन इहांहेतोत्प्रेक्षाअलंकारहै अहे
तकोंहेतपायो दूसरेदामिनि रोचनकेतकीचंप
क अंगऐसीवासहेतु प्रतीपअलंकारभीहोतहै
गोरीजूनेंआपनेंमेलमैंहाटकसोनाकरहाटकेसं

र अथवा हाटजोसोवने ताकोहाटबजारनमेंकर
द्यो दोअलंकारषीरनीरकीरीति तेंमिलेयातेंसंक
र १९ ॥ मू॰ अथकृस्नवर्नन ॥ दो॰ विंध्यब्रिक्ष
आकासअसिअर्जुनषंजनसांप नीलकं
ठकोकंठसनिव्यासविस्वासीपाप २० ॥ टी॰
विंध्याचलपर्वत ब्रिक्षतमालादि आकासगग
न असिकृपान अर्जुनपारथ षंजन औरसर्प
नीलकंठमयूर मयूरोबर्हिणोबर्हीनीलकंठोभु
जंगभुक् इत्यमरः किंवासिवकंठ सनिश्चरग्र
ह व्यासदेव विस्वासघाती पाप २० ॥ मू॰ राक
सअगरलंगूरमुषराहुछांहमदरोर राम
चंद्रघनद्रौपदीसिंधुअसुरतमचोर २१ ॥
टी॰ राकसकोसरीर लंगूरकोमुष राहुग्रह छायाराहु
माता अथवाछांह मदमदिरा रोरदरिद्र सुरीरके
जोरतेंसोरधरनीकियो चोरजिमिरोरप्रकासिय
श्रीरामचंद्र घनमेघ द्रौपदीपांचाली सिंधुकीमू
र्तिजलनाही क्षीरसमुद्रभीनाही असुरअंधका
र चोरइनसबकोंकृस्नबरनहै २१ ॥ मू॰ जंबूज
मुनातेलतिलषलमनसरसिजचीर भील
करीवननरकमसिमृगमदकज्जलनीर ॥
२२ ॥ टी॰ जामुनकोफल कालिंदीजमुना तैल ति
लकारोस्वेतनहीं खलदुःष्टकोमन नीलोसलक

मल नीर स्यामरंगवारो भीलकोल करीहाथी वन जंगल नरकविष्ठा मसमसाजोसरीरमेंहोतहैं किंवामसिस्याही किंवाजोमसिभीनतहै अथवामच्छ र मृगमदकस्तूरी काजरजुतजल २२ ॥ मू० मधुपनिसाश्रिंगाररसकालीकृत्याकोल अपजसरिक्षकलंककलिलोचनतारेलोल २३ ॥ टी० मधुपभौंरा निसाराची निशानिशीथिनीरात्रीस्त्रियामाक्षणदाक्षपाश्रिंगाररस कालीदेवी कृत्यामारनमंत्रतेंजोहोय कोलसूकर अपजस ऋक्षभालू कलंक लोचननेत्रकेतारे २३ ॥ मू० मारगअग्निकृसाननरलोभछोभदुषमोह ॥ विरहजसोदागोपिकाकोकिलमहिषीलोह २४ ॥ टी० जहाँअग्निलगततौनमारगपाछेसामहोजात षेतीकर्तापुरुष लोभलालच छोभक्रोधादि दुषव्यथाआदि मोहमाया वियोगजसोदाको गोपीकोभी कोकिलपिक महिषीभैंस लोह लोहाताकोकहतहैं सोकारोहै २४ ॥ मू० कांचकौंचकचकामभलकेकीकाककरूप ॥ कलहकुहूछलआदिदैकारे कृस्नसरूप ॥ २५ ॥ टी० कांच कौंचचहलाकोकहतहैं कचनमबारकोहै कामसंदनकोकहतहैं मल ॥ गलीजादि केकीमयूरकोनामहै सिषावलःशिषाकेकी

मेघनादानुलस्यपो इत्यमरः ॥ काककुरूप कलह लराई क्षुद्रजन अथवाछेद छलकपट अरु छिद्र इत्यादि औरभीजानिलीजियो श्रीकृस्नकोसरूप २५॥ मू॰ कवित्त वैरिनकेबहुभांतदेषतहीं लागजातकालिमाकमलमुषसबजगजानीहै जतनअनेककरिजदपिजनमभरिधोवतहीं छूटतनकेसबबषानीहै निजदलजागैजोतिपरदलदूनीहोतिअचलाचलतियहअकहकहानीहै पूरनप्रतापदीपअंजनकीराजैरेषराजतश्रीरामचंद्रपाननिकृपानीहै २६॥ टी॰ रामचंद्रकेहाथमैंक्रिपानीकैसीराजत कैजाकेदेषतबैरिनकेजेमुषकमलसेप्रफुल्लितहैं तिनमेंकलंकलगजातहै सोबहुतउपायकरेभीनाहीं छूटतहै निजअपनेदलमैंजाकीजोतजगतहै ॥परसत्रुकेदलमैंदूनीहोतहै काबहुतहनतहै ॥आपअचलहैअथवाजेअचलबैरीतिनकोंचलायदेतहै यहअकथहै पूरनजोप्रतापदीपतातैं उपजोजोअंजनताहीकोकियोहैजाने अंजनप्रतापदीपअंजनबाढ ऐसीरामचंद्रकेहाथमैंक्रिपानसोहतहै इहांअसंगतिअलंकार २६॥ मू॰ अथस्वेतकृस्नबनेनं क॰ हंसनकेअवतंसरचेरंचकींचकारिसुधासोंसुधारेमठकों

चकेकलससों गंगाजूकेअंगसंगजमुनातं
रंगबलदेवकोबदनरचोवारूनीकेरससों के
सवकपालीकंठफूलकालकूटजेसोअमलक
मलअलिसोहैससिससिसों राजारामचंद्रजू
केत्रासस बैभारेभूपभूमिछोडिभागेफिरैऐसे
अपजससों २७॥ टी॰ रामकेवैरीविनाजुद्धऐसे
अपजससोंभागेजातहैं हंसनकेअवतंसपक्षजेसे
कौंचलगेतेंसुधाचूनासोंसुधारिकेदेवमंदिरपैजैसे
कॉंचकेकलसधरेजाहिंजैसे गंगाजीकेसंगजमु
नाकीलहर अरुबलदेवजूकोमुषमदिरासहित
कपालीसिवकेकंठमैंकटुकालकूटविष कहूंकू
लकालकूटभीपाठहै तहांनिकट अमलकमलमैं
अलीभ्रमर ससिचंद्रमांजेसोससमों नामकलंक
सोंसोहत इहांसोभितकोअर्थ ऐसोभावनाहील
गत इहांएकसित॥ विषैदुतीयस्यामजानिये इ
हांमालोपमाअलंकारहै एक उपमेय अनेकउप
मान यातैंमालोपमा २७॥ मू॰॥ अथरक्तवर्ननं
॥दोहा॥ इंद्रगोपषद्योतकुंजकेसरकुसुम
विसेष मदिरागजमुषबिंबरवितामीतक्षक
लेष २८॥ टी॰ इंद्रगोप वीरवहूटी॥ बुंदेलषंड
मैं पाटमहादेव कहतहैं षद्योत जुगनू कुंज मंग
ल केसरि कुसुम बिसेष बंधूक आदि मदिरा

याको स्याममैं भी कह्यो तहाँ साधारन दूहाँ अगु री आदि गजमुषगनेसको बिंदु तिलक समान सि रसिरसिंदूरसोहत कहूँकेसबगजमुषभीपाठहैत मेभीवहीअर्थ अथवागजमुषबिंदतैंगजमदतो जोमानुषीमदकरेतैहोयसोस्यामअरुदैवीजोमद सोअरुन उदैकालकेसूर्ज तामा धातु तक्षकसर्प बिलेष २८॥ मू॰ रसनाअधरद्विगंतपलकु

कुटसिषासमान मानिकसारससीससुक बानरबदनप्रवान २९॥ टी॰ रसनाजिह्वा अध रओष्ठ नेत्रकेअंतकोपलक पलमांस मुरगाकी सि षा मानिकअरुन सारसकोसीस सुकअरुनरंगको बानरकोबदन॥ २९॥ मू॰ कोकिलचारुचको

रपिकपारावतनषनैन चंचुचरनकलहंस केपंकीकूं दुरूऐन ३०॥ टी॰ पिक चकोर पि कपपिहाकोभी कहतहैं पारावतकबूतर इन कोनषअरुनेत्र चोंचओचरनकलहंकोहोतहैं पकीकूंदुरू ऐननामगऊकोअस्यन ३०॥ मू॰

जपाकुसुमदाडिमकुसुमकिंसुककंजअसो क पावकपल्लवचौंटिकारंगरुचिरसंबलो क ३१॥ टी॰ जपाकुसुम ओढउलकोफूल ओ डपुष्पंजपापुष्पंवज्रपुष्पंतिलस्ययत् इत्यमरः॥ दाडिमअनारपुष्पकुसुमअन्यफूल किंसुकपलासको

पुष्प कंजकमल असोक पावकअगिन पल्लवदृक्ष
कोनवीनपत्र चिटिका पंपीलिकारंगलाल रुचि हैस
बलोगऐसेजानो येतनेलालहैं ३१॥ मू० रातोचंद
नरौद्रसछत्रीधर्ममजीठ अरुनमहावररु
धिरनषगेरूसंध्याईठ ३२॥ टी० लालचंदन
रौद्ररस छत्रीनकोधर्म मजीठ महावरअरुन रुधि
रलोहू नषआँगुरीआदिके गेरूमट्टी ईठचेष्टा ३२
॥ मू० सवैया फूलेपलासविलासथलीबहु
केसवदासहुलासनथोरे सेसअसेसमुषान
लकीजनुज्वालबिसालचलीदिवओरे॥ किं
सुकश्रीसुकतुंडनकीरुचिराचैंरसालनमैंचि
तचोरे चुंचनचाँपिचहैदिसिडोलतचारच
कोरअँगारनभोरे ३३॥ टी० नायकाविदग्धा
कोवचन नायकप्रतिनिर्जनअस्थानबतावतहै के
याअस्थानमैंफूलेहैं पलासअरुविलासवारी थ
लीहैबहुतहुलाससो मानोसेसजूतिनकेअसेषब
हुतमुषकोअग्निज्वाला दिवआकासओरचली
है योदिवोहूलियामअंव्योमपुष्करमंबरं इत्यम
रः तिनपैकिंसुककोश्रीसोभासमान सुकसुवाता
कीरुचिराजतहै अथवाकिंसुकश्रीजोहै सोई सुक
तिनकीतुंडनकी सोभाराजतहै रसातल भूतलमैं चि
त्तचोरावनहारताकोचाँचनतैं दाबकैंचारोवोरडोलतहैं

चकोरअँगारकेधोषेतें प्रश्न प्रथमपलासकहो फेरकिंसुकयातेंपुनरुक्ति उत्तर इहाँसुककेरूपक मैंहैयातैंदोषनाहीं इहाँभ्रम अलंकारचकोरादि भ्रमसौंअँगारचुंगत ३३॥ मू० अथधूम्रवर्ननं ॥दो०॥ काककंठषरमूषिकाग्रहगोधाभनभू र करभकपोतनआदिदैधूमधूमलीधूर ३४ ॥टी० काककोकंठ षरगदहा मूषिकामूस ग्रहगोधा पल्लीजाकोबिस्तुय्याकहत करभऊँट कपोतकबूतरइनआदि धूम्र धूमरीजाकोलोमरीकहतहैं औधूर ३४ ॥मू० राघवकोचतुरंगचमू बसधूरिउडीजलहूथलछाई मानोप्रतापहुतासनधूमसुकेसवरासअकासनमाई मेटिकैपंचप्रभूतमनोविधिरेनमईनवरीतिचलाई दुःषनिवेदनकेभवभारकोंभूमिकिधौंसुरलोकसिधाई ३५॥ टी० राघवकीजोचतुरंगिनी चमूसेनाँ हाथी घोडा रथ पेदल ताकेबसतेंनामचलेतें इहाँउपादानलच्छनातैं गमनबसजोधूरउडीहै सोजलथलमैंछाईहै ताकीउत्प्रेक्षाकविकरतहैं मानौंप्रतापहुतासनको धूमहैसोआकासमैंनाहीं अमात फेरकहतहैंविधिनेपाँचभूतमिलायसृष्ट करीरहीसोमिटायअबरेनुमईनवीनरीतिकरीहै फेरकहतहैंदुषीहोकरभवसंसारकोभारकहिबे

हैतुभूमिमानोस्वर्गकेलोकआईहै यामैंमानौंरैनम दे
रीतिचलाई तातैंवस्तुउत्प्रेक्षाअलंकार अनुक्तविष
या किधौंभूमिसुरलोकसिधाई यामैंसंदेहाअलंकार
यातैंप्रधानसंकरहै तथापिवरनाअलंकारमानैंहैं॥
३५॥ मू· अथनीलवर्नेनं॥दो·॥ दूबबंसकुव
लयनलिनअनिलव्योमत्रिनबाल मरकत
मनिहयसुरनकेनीलवर्नसेवाल ३६॥ टी·
दूबघास बंसबाँस कुवलयनीलोत्पल कुमुदि नी
लकुमुदिनी अनिलपवन व्योमआकास त्रिन बा
लक अथवात्रिनघासादि मरकतमनी सूर्जकेघो
डेउच्चैश्रवा औसिवार ३६॥ ॥ मू· जथा सवैया
॥ कंठदुकूलसुओरदुहूंदिसपौंउरमेंबलके
बलदाई केसवसूरजअंसुनमंडिमनोजमु
नाजलधारधसाई संकरसैलसिलातलमध्य
किधौंसुककीअवलीफिरिआई नारदबुद्धि
विसारदहीयकिधौंतुलसीदलमालसुहाई
३७॥टी० कंठमेंदुकूलवस्त्रबलिरामजीकेकैसोरा
जत बरदाईवरश्रेष्टता देनहारउरछातीपरआइ
कैं ताकीउत्प्रेक्षाकविकरतकै मानौंसूर्जकी किरन
तैं मंडितहोयकै आपनीधारसूर्जमंडलमैं धसाईहै
इहाँ बलिरामजीकी सुक्लकांति पटस्यामविषैं प्रथ
मवरनफेरपटवरनौं फेरकहतकैसंकरसैल के

लासतासोसिलातलमध्यमेमानोसुक कीरकोश्रवली
पंगतिआईहै कैना तुरु कीजोविसारद उज्जल
हिहैतातें अपनेउरमेंतुलसीकीमालाधारनकरीहै
अथवानारदजोबुद्धिविसारदहै किंवा हनुमिनि सा
रदयहसर्वो २८ ॥ मू० अथस्वेतश्याम
वर्ननं॥ दो० ।सिंहकुलह सिवगानिचंद्रवि
भविधुसिंक अभ्रकधातुअकासघनकृस
स्यामासितलेख २८ ॥ टी० स्वेतस्यामनोईकोक
है ऐसोसब्दहरीहै स्वेतमेंसिंह कुलमें छीरअ
जी अरुविधुसब्दमें चंद्रमास्वेत विसस्याम अ
रुअभ्रकसब्दमे स्वेतमेंअभ्रकधातु स्याममें आ
कास ऐसेस्यामस्वेतजानो २८ ॥ मू० घनकपूर
घनमेघअरुनागराजगजलेख पयोरासि
कहिसिंधुसोंअरुहरिकीरहिलेख २९ ॥ टी०
घनमेघस्याम कपूरस्वेत प्रथम कपूरकोनाम घ
नसारहै सोबाधघनतेकोरहोयगो उत्तर जैसे
अधिकअध्यारोहोत जगमिलिमावसरावचंदुती
होअमावसकोमावसकहे सत्तभामाको सत्ता
रायप्रवीनजुतपूर्वकहोतेसतो ऐसेहीनागराज
गज अरुसेषकोकहतहैंपयोरासिसमुद्रकीमूर्ति
अरुहरिपै जु छीरवारेछीरसागरादि २९ ॥ मू०
राहुसिंहसिंहीजुमनिहारवलमेंअनंत॥

अर्जुनकहियेसेतसौंअरुपारथबलवंत॥४०

॥टी॰ सिंहीराहुस्याम अरुसिंहस्वेत हरीकृस्नस्याम बलभद्रसपेद अनंतसब्ददोईकोवाचकहै अर्जुनस्वेतसो अरुपांडवपुत्र ४०॥ मू॰ हरिगजतुरगजसमुभिए हरिहरिगजगजजान कोकिलसौंकलिकंठकहिअरुकलहंसवषान ४१

॥ टी॰ हरिगजऐरावत अरुरामकृस्नकेस्याम किंवा हरिगजकोभीकहतहैं कलकंठकोकिलस्याम कलहंसस्वेत ४१॥मू॰ क्रिस्नदीबरसब्दसोगंगासिंधुबषान नीरदनिकसेदंतसोअरुजुनीरकोदान ४२॥टी॰ कृस्नदीवरसब्दसोगंगाजी अर्थश्रीकृस्नदीहै सोकैसीहैंवरश्रेष्ठहैविस्नुपदीनामहै अरुकृस्नदीवरसमुद्रकोभीनामहै सरितपतिसमुद्रकोनामहै नीरदनिकसेदांत ताकोनामनीरद नीकोअर्थनिकसेरदको अर्थदांतअरु नीरजलकोजोदेयसोनीरदमेघ दांतस्वेत मेघस्याम ४२॥ मू॰ अथस्वेतपीतसब्दकथनं॥ सिवबिरंचिसोसंभुभनरजतरजतअरुहेम स्वर्णसरभसोकहतहैंअष्टपादकरिनेम ४३॥टी॰ संभुसब्दब्रह्मासिवकोकहतहैं सिवस्वेत ब्रह्मापीत रजतसब्दचांदीसोनावाचक चांदीस्वेत सुवर्णपीत शरभपक्षीवि

सेषस्वेतहै अष्टपादनाम सुवर्णसोपीत ४३॥मू०
ल॥ सोमस्वर्नकहिचंद्रकलिधौतरजतअ
रुहेम तारकूटरूपोहचिरपीतरकहिकरप्रे
म ४४॥टी० सोमसब्दसोनाचंद्रवाचक सोनापी
त औचंद्रमास्वेत कलधौतसब्दरूपासोनावाचक
रूपास्वेत सोनापीत तारकूटसब्दरूपापीतरकोक
हतहैं रूपास्वेत पीतरपीत ४४॥मू० अथस्वेत
रक्तबर्ननं स्वेतवस्तुअरुअग्निसुचिसूरसो
महरिहोय पुस्करतीरथसोकहैंपंकजसोस
बकोय ४५॥टी० सुचिसब्दस्वेतरक्तकोकह
तहैं स्वेतवस्तुकोनामसुचिहै अरुअग्निकोनाम
सुचिसोरक्त हरिसब्दचंद्रसूर्जवाचक सूर्जरक्त
चंद्रस्वेत पुस्करसब्दस्वेतरक्तवाचक पुस्करनी
तीरथसोस्वेत पंकजकमलरक्त ४५॥मू० हंसहं
सरबिबरनियअर्कफटिकरविमान अब्ज
संषसरसिजदुवोकमलकमलजलजान॥
४६॥ इतिश्रीद्विविधविधभूषनभूषितायां
कविप्रियायांवर्णाख्यायांपंचमःप्रभावः ५॥
टी० हंससब्दसूर्जअरुहंसपक्षीकोकहतहैं हंस
पक्षीस्वेत अरुसूर्जरक्त अर्कसब्दफटिक अर्कसू
र्जअरुन अर्ककोकहतहैं अर्कनामफटिकसोस्वे
त अर्कअरुन अब्ज संषस्वेत कमलरक्त जलस्वेत

कमलरक्त कमलसब्दकमलफूलको अरुकमल जलकोकहतहैं ४६॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज कासिराजश्रीमदीस्वरीप्रसादनारायणस्याज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदाराख्यकवीश्वरेणकृतेकाशिराजप्रकाशिकायां कविप्रियायांटीकायांपंचममरीचीः ५॥ ॥*॥

मू॰ अथवर्णभूषनवर्नेनं॥ संपूरण१ आवसे२ औकुटिल३ त्रिकोन४ सुवृत्त५॥ तीक्षन६ गुरु७ कोमिल८ कठिन९ निश्चल१० चंचल११ चित्त॥१॥ ॥सुषद१२ दुषद१३ अरु मंदगति१४ सीतल१५ तप्त१६ सुरूप१७॥ क्रूरस्वर१८ सुस्वर१९ मधुर२० अबल२१ बलिष्ट२२ कुरूप२३॥ २॥ ॥सत्य२४ झूँठ२५ मंडल२६ बरनिअगति२७ सदागति२८ जानि॥ अष्टाविंसतमैंकहे बरनअनेकबषान॥३॥

टी॰ अथवर्नभूषनवर्नेनं॥ बरनाअलंकारपाछे पंचमप्रभावमेंकहिआये सामान्याअलंकारचारप्रकारकोहै तामैंप्रथमवरनाअलंकार स्वेतपीतकारे इत्यादिएवरनाअलंकार वरनकहियेरंग अरु अवर्नेकहियेआकृत सोअठ्ठाईसरीतको तीनदोहामैं ३॥*॥ अथसंपूरनवर्नेनं॥ * ॥ मूल दोहा॥ इतनेसंपूरनसदाबरनहुकेसव

दास अंबुजआननआरसीसंततप्रेमप्र
कास ४॥ टी० संपूरनसुगम १ सुषदसुगम २ स
त्तसुगम ३ इतनेइति अंबुजकमल आननमुष
आरसीदर्पन प्रेमअस्नेहकोप्रकास किंवाप्रका
स ४॥ मू० जथा कवित्त हरिकरमंडनस
कलदुषषंडनमुकुरमहिमंडलकेकहत
अषंडमति परमसुवासवोपयूषमेनेवा
सपरिपूरनप्रकासकेसोदासभूअकासग
ति वदनमदनकेसेश्रीजूकेसदनयदसो
दरसहोदरदिनेसजूकेमित्रअति सीताजू
केसुषसुषमाकीउपमाकोसषिकोमिलक
मलनअमलरजनीपति ५॥ टी० कमलचंद्र
मासोश्लेष कमलपक्ष हरिजोहैविष्णुतिनकेक
रमेमंडनहोरहोहे संषचक्रगदापद्मसहितमंडन
है अरुसकलदुषषंडनहारहे जाकेहाथमेचिन्ह
होहिअरु पदमेहोहि ताकोदुषनाहीहोतहै अरु
जेमहिमंडलकेमुकुरनामदर्पन हेमकोस कोर
कोदर्शयोरपीः मुकुरनामकोरककलीको आआ
दर्शको किंवामहिमंडलकेमुकुरजनकादिकहैं
जिनकीमतिषंडनाहीहोततेकहतहैं अथवाम
हीतेहैंमुकुरनामनहीहैजलमेंहोतहैं अरुबरन
नषंडहै अरुपरमउत्तमसुवासहै जिनविषैं अ

रूपियूषजोमधुताकेनिवासहैं अथवापियूष
नामजलजहांरहैंलहांकमलरहतपानीजलतिनमें
निवासहैजिनको अर्थयहपूरनजलमेंरहत पा
नीभयेसूषजात अरुभूतेहै आकासकोगति
जिनकीपरिपूरनहैजाको प्रकास अथवाभूक
मलआकासगंगामेंभीकमलहैं संपूरन प्र
फुल्लितहै भूप्टथ्वीमें रहत आकासकीवोरमुष
करिके वदनमदन वदतनाहीहैं मदकेहम ब
हुतउत्तमहैं श्रीजोलक्ष्मीताके ॥ सदनग्रह॥
अरुसोदरबारेहैं किंवादरजोहै संपताकेसहो
दरभाईहैं किंवासुभहै उदरजिनको दिनेससूर्ज
केमित्रहैं अतिकोअर्थ सूर्जहीकों देषिफूलत
अरुचंद्रदेषिनाही चंद्रपक्ष हरिसिंधुताकरके
मंडितहैं अर्थोसउतपतहैं किंवा हरिजोकाम
देवताके मंडनकरनहार प्रमान कुसुमकोकि
लषट्पदक्षितिजलेचंद्रमृगेवायसे सूर्जेरात्रिच
रेतथामलयजेमेघार्कभेकेकपो सिंहेदंडधरेगि
रौचविहुरेभार्गेकुचेमन्मथे स्वर्गेवायुगजेपुरंद
रहयेसैयाविहंगेहरिः॥ अरुकलासहित अथवा
सकलमहादेवतिनमेंहैकलाजिनकी तिनको
अगिनविषकोदुषदूरकियोहैजिनने किंवा स
कलहैसूर्जतेजोभयोतापतादुषकेषंडनकर्त्ता म

हिमुंडलमुक्कर पृथ्वीकी छांह जिनमें परी है जोतिसमें सू
र्यग्रहन चंद्रमातें होयहै चंद्रग्रहनभूमिकी छायातें
याअषंडमतिवारेकहतहैं परमजोउत्तिमस्वसुंदर
वासहै जिनकोमहादेवकेभालमें अरुपियूषअमृ
तकेहैनिवास परउत्कृष्टपूरनहैप्रकास जिनकोभूस
आकासमें वदनमदनकैसेअर्थोसउद्दीपनविभा
व जदयोभीलक्ष्मीजीकेभाईहैंतोभीलक्ष्मीजीकोसु
भावचंचलनाहीलेत किंवाजदयोभीसुंदरउदरहैं
सुंदरभा कहियेकांतिप्रकासजाउदरमध्यहै अ
रुदिनेसजूकेमित्रहैंअति प्रबल मित्रअतिकाहे उत्त
र सूर्जअपनोतेजइनमेंराषतयातेंमित्र अरुअतिमि
त्रकोउदयदेषिअपनोरूपछपायलेत जामेंमित्रकी
अस्तुतिहोयहै ऐसेहैंतोभीजानकीजीकेमुषसुषमाकी
उपमालायकनाहीं मुषपक्ष हरिरामतिनकेकरहाथ
तेंमंडनभयोहै अर्थोसभूषनतें अरुश्रीरामकेसक
लदुषषंडन अर्थवनमेंभीसंगी मुक्करमहिमंडलके
महिमंडलकेमुक्करजिनतें श्रिष्टउत्पत्तिहोयहै याअ
षंडमतिवारेसिवादिककहतहैं उ त्तमसुगंधहै
जामें अरुदिनरातिमेंप्रकासपृथ्वी आकासमेंगति
जाप्रकासकी वदतनहीहैमदकेहमबहुतसुंदर
हैं सोभाकेघरहैं सोदरसुंदरहैउदरजिनको अर्थ
दंतआदिअतिसुंदर दिनेसत्वंसरामतिनकेअति

मित्र किंवादिनेसकेजेसहोदर्देंबतिनके अनिमि
त्रहैं आपदुषसहिरावनादिककोनासकियो इहाँ
अश्लेषअलंकार अरुपंचमप्रतीपअलंकारको
संकरहै तथापिवर्णभूषनमानिये ५॥ **मू० अथ
आवृत्तवर्ननं दोहा येआवृत्तिबषानिये
केसवदाससुजान चकरीचक्रअलातअ
रुआतपत्रपरसान ६॥** टी० एतनेआवर्त्तहैं च
करी अरुचक्रसुदरसनआदि अलातनामबनेठी
आतपत्रछत्र अरुपरसान ६॥ **मू० यथा कवित्त
॥दुहूँरूपमुषमानोंपलटनजानीजातिदेषि
कैंअलातजातिजोतिहोतिमंदलाज केसोदा
सकुसलकुलालचक्रचक्रमनचातुरीबिवेकेंअ
रुआतुरीचलतभाज॥ चंदजूकेचहूँवोरवे
षपरवेषऐसोदेषतहींरहिंयेनकहियेबच
नसाज धापछाडिआपनिधिजानदिसिदि
सिरघुनाथजूकेछत्रतरभ्रमतभ्रमीनवाज
७॥** टी० रामजूकोघोडाकैसोहै दुहूँरूपमुषजानप
रतऐसेशीघ्रहींपलटतहै ताकोंदेषिकै अलातको
जोजोतिहैसोमंदहोइजातहै अरुकोईकहैकिजो
तिकाहैंमंद घोडेमेंजोतिनाहीं तोजराउसाजहै ता
कीजोति औकुलालचक्रकोचातुरी चकितहोतहै
ताकोंदेषिकेचंद्रकेपरवेषदेषतरहियेहै धापछा

डि दई है आपनिधिसमुद्रदिसदिसमैंजानकै याहीते
रघुनाथजूकेछत्रनरभ्रमतहै इहाँकविप्रौढोक्ति मैं
घोडाकीचंचलताई वस्तुतैं व्यतिरेकाअलंकार प्र
ल तहाँघोडाकोनिंदा कीजलपैनाहीँचलतजलदे
षि डरजात गोसाँईजीऐसोलिख्यो जे जलचलइ
यलइकीनाई बुडहिनदापवेगअधिकाई उत्तर
पिताकेछातीपरपगकोसंका तातैंहेतुत्प्रेक्षाअलं
कार दूसरोप्रतीप अरुको इकहै सरजूमैंपगधरत
हैंजलपानकेहेतु औलंघनभीकरतहैं तहाँऐसो
कीमाताकेछातीपैबालकपगधरकेस्तनपानकर
त ७ ॥ मू० अथकुटिलवर्ननं दो० अलकअ
लिकुभ्रूकुंचिकाकिंसुकसुकमुषलेष
अहिकटाक्षधनुबीजुरीकंकनभग्नविसे
ष ८ ॥ टी० अलकनामकेससोटेढो अलिकमस्त
कको भावटेढोहैषोरकोभाँति भ्रकुटी कुंचिकाकूं
ची किंसुकपलासकोपुष्पटेढो सूगाकोमुष सर्प
कटाक्ष धनुष बिजुरीकंकन भग्न ८ ॥ मू० बाल
चंद्रिकाबालससिहरिनषसूकरदंत ॥ कु
दालादिकबरनियेकपटीकुटिलअनंत ९
॥ टी० बालकेस चंद्रिकागहना बालक चंद्रमा हरि
सिंहकोनष वराहको दाँत कुद्दालकुदारी कपटीज
न कुटिलनामटेढो सेसजी ९ ॥ मू० जथा क० भो

रजगीवृषभानसुताअलसीविलसीनिसिकुंज बिहारी केसवपोंछतअंचलओरनपीक सुलीकगईमिटिकारी वंकुलगेकुचबीच नषच्छददेषिभईद्रिगदूनलजारी मानोवि योगवराहहनोजुगसैलकीसंधिमेइंगवेडा री १० ॥ टी० उक्तिसषीप्रतिसषीकी सुरतांतस मैबरनन॥ भोरप्रभातजगीहैव्रिषभानसुता अलि सानविलसीहै निसिरात्रीमें कुंजविहारीसहित सोअं चलकेछोरतेंपोंछतजोपीकअरु काजरकीरेषमि टगई प्रस्न इहांमिटीबनावनेहीसो ॥ पोंछेतें नाहींबनत उत्तर पोछनेकोअभिप्राययहकै ने त्रचुंबनमें काजरमिटोसोसंपूरनपोंछडारोतो को ईनाहींताकहै अथवापीकपोंछत अरुलीककका रीकाजरकी नाहीसमे उरकीओरदेषोतो कुचके बीच वंकुनषकेछतहैंताहिदेषिदूनीलजानी प्र स्न दूनीकाहेइहातीगुनीहोतहै प्रथमपीककाज रकीरेषदेषी फेरनषछतदेषी यातेंतिगुनीकहो पीककाजरमें दोयनषमें तीनहोतहै उत्तर कैपी कपोछेतेंपुछजैहैकाजरभी परंतुनषछतकोकाक री मानोवियोगरूपीवाराहहनोताकी दृगवेदसनदां त एकसोजुगसैलकीसंधिमेपरीहै प्रस्न कानाय कमूंपेरहो किजुगसैलकेसंधिमें नषछातीमेमा

री उत्तर याकेकुचअतिसघनहैं अर्थात्सजुटेहैं पुनः प्रश्न इहाँवाराहकोमारनहार कर्त्तानहीजानोजात उ॰ जुगदंपतिकर्त्तादोनो अरुसंधितेंहूपहारकोबोधहोतहै १०॥ मू॰ अथत्रिकोनवर्ननं दो॰
सकटसिंगारेवज्रहलहरकेनैननिहार केसवदासत्रिकोनमहिपावककुंडबिचार ११॥ टी॰सकटनामगाडीसोत्रिकोन सिंगाराफलत्रिकोनहै वज्रत्रिकोन हल हरमहादेवताकेनेत्र पृथ्वीत्रिकोनहै अगिनकोकुंड ११॥ मू॰ लोचनत्रिलोचनकेकेसवबिलोकिविधिपावककेकुंडसीत्रिकोनकीनीधरनी सोधीहैसुधारदृथुपरमप्रनीतनृपकरिकरिपूरनदिसाहूदसकरनी ज्वालसीजगतजगसुभगसुमेरतामेंजाकीजोतहोतलोकलोकमनहरनी थिरचरजीवहविहोमियतजुगजुगहोताहोतकालनाजुगनजातबरनी १२॥ टी॰ लोचननेत्रत्रिलोचन सिवजूकेदेषिकैंब्रह्मानैं पावककुंडमाह्रिस त्रि[illegible] इहाँ अनेकपुराननकीअनेककथायाकवित्तमैंसिवअनादिजानिये काहेसीपदतेंजानिपरत प्रश्न सिवनेत्रसीकाहेतेंकरी उत्तर यामैंनासकोरूपकहै सोसिवनेत्रज्वालातैंसिष्टजरत प्रश्न सिवनेत्रतैंप्रलयरहोई तबब्रह्मानेफेरप्रलयकोविचार

काहेकोंकियो उत्तर सिवनासकरततबसर्वेनास
होंजातयातैंजुगजुगमैंनासभीरहै किंवाजुगथिरअ
रुचरजीव तैंजुगदिनरात्रीमैं सोष्टपुपरमपुनीतजो
नृपहैतिननैं सोधीपूरनकरनीतैं ज्वालसदसजगम
गतहै जाविषैंसुमेर जाकीजोतिलोकलोकवरनीजा
त नामैंथिरअरुचरजेजीवहैं तेद्दहवहैंसाकिला अ
रुहोताकाल याकीजुगतिनाहींवरनीजाति प्रश्न जु
गतिनाहींबरनीजातसोकाहे उत्तर जोजीवहोम
होत तेनासनाहीं होतफेरजनमतहैं प्रमान जीवनि
त्त तुमकिहिंलगरोवा इहांसांतरसको वरननहै तथा
पि कविनिबद्धवक्ताकीउक्तिमैंनिरवेद वस्तुतैंरूप
कअलंकारहै १२ ॥ मू॰ अथसुव्रित्तवर्नन दो॰
व्रित्तबेलभनगुच्छअरुककुभसाधुकेअंग॥
कुंभकुंभकुचअंडुमनिकंदुककलससुरंग
१३ ॥ टी॰ व्रित्तगोल बेलश्रीफल गुच्छाफूलको क
कुभजोवृषभकेउपररहत साधुसाधेसुंदरअंगभु
जजंघा किंवासाधुकेअंग प्रमान मौनीविविगंग
बीच करततपस्याकिधौं हाथीकेकुंभस्थल कुच
अंडाकिंवाब्रंस्लांड मनी कंदुकगेंद कलसमंदिर
वारो १३ ॥ मू॰ यथा क॰ परमप्रवीनअतिको
मलकिपालतेरेउरतैंउदितनितचितहितका
रीहै केसोरायकोसौंअतिसुंदरउदारसुभस

तजऽ सीलविधिमरदिसंवारीहै काहूसोंन
जानैहसबोलनविलोकिजानैकंचुकीसहित
साधुसुधवेसवारीहै ऐसेहोकुचनसकुचनन
सकतिवूझिहरिहियहरनकुप्रकृतिकोनधारीहै
॥४५॥ टी० अंतसखीकीनायकाप्रतिदूतीमात
नोदूतीकोहायतानायकसोंमिलापकरायाचा
हतमातेपरकीया कैहेनायके ए जोतेरेकुचहैं ति
नकोंहरिहियहरनकीप्रकृतिधारीहै तिनकुच
नकेसबविसेषनहैं कैसेहैं कैपरमप्रवीन अति
कोमलकृपालजोतेराउदारतातेउदितभयेहैं प्रवी
नहितअनहितदेषनहार अतिकोमलद्रवनहार प्र
द अतिकाहे उत्तर सीघ्रद्रवत नितचितकेहितका
र अर्थजोदेषैसोबसहोयजाय अतिसुंदरहैं जिनकी
उपमानाहींमिलत उदारवडे सुभदरसनजोग्य सल
जकचुकीभीतररहत सीलमर्दनमे मनैंनाहींकरत ना
सीलकीमानोंविधिनेमृजिनाईहै काहूसौंहँसनही
जानत नबोलजानत अरुदेषिभीनहींजानत कंचुकी
सहितरहत ऐसीबसइनकीवारीहै इहाँवारीबेसना
यकाकीनाहींकुचनकी ऐसेजोकुचहैं वाभोरे तिन
कोहैं सकुचबसतेंनाहींवूझत कैहरिकेहियकोहरने
कीकोननेप्रकृतिधारीहै याहेंपरकीयाकोअर्थनाहींमा
नतकाहेकिपालउरउरमेंकुलटाव्हैजायगी हरिनेके

सेदेषे यातेंमानिनीजानिये इहांविषमअलंकारतेंना
यकअतिआसक्तहै तेरेऊपरयहवस्तु किंवामानको
डदूसरीवस्तु १४॥ मू॰ अथतीक्षनवर्नन दोहा
नषकटाक्षसरदुरवचनसैलादिकषरसान
॥कुचनितंबगुनलाजमतिरतिअतिगुरकर
मान १५॥ टी॰ नषअँगुरीआदिके कटाक्षनेत्रके
सरवान तीव्रवचन सैलपर्वतआदि खरसान कु
चनितंब गुन लाज मति रति एगरूहैं १५॥ मू॰ जथा क॰
सेंहतीहथ्यारऐनअनियारेअनेककामसरहू
तेंतीषेषलवचनविसेषिये चोटनबचतओ
टकीनेंहूकपाटकोटभौनभोहरेहूंभारेभयअ
बरेषिये केसोदासमंत्रगदजंत्रहूनप्रतिप
क्षरक्षलक्षलक्षत्रिजरक्षकनलेषिये भेदि
यतमर्मबर्मऊपरकसेईरहैंपीरघनीघाइल
नघाऊघनेदेषिये १६॥ टी॰ सेंहत्तीनामबरछी
कहेहैं कोईसनभी तोपकहतहैं सोहतहथ्यारको
ऐसोभीअर्थहै केसोहतनाहींहैं औरहथ्यारजिनकी
समताको अरुकामकेजेसरहैं ताहूतेंतीक्षनहैंषल
केवचन कामसरकी उपमायातेंहैके ऊपरघाउनहीं
देषिपरत अथवादेषतफूलहियेमें थूलसूलउपरा
जैंऐसहींखलवचनमीहै सुननकामूल विपत्तिके रो
पनहारकरतहैं कपाटकीओटतेंचोटनाहींबचत॥

अरु कोटकिलामें भी नाहीं सकत भवनभवनमें ...रकै
किंवाभीहराजोभूमिमें गाढ़ घरबनाइएतहषानादिमें को
ईछपैतोढूंढलेहिं अर्थतहांभीभारीभयकरैं ...
जंत्रहूतिनके प्रतिपक्षनाहींकरसकत लाषलाष
...समूह अर्थसेनारक्षाकरैं तोरक्षानहोसके ...
...भेदहैंमर्मकोवर्म जोकवचऊपरकसे ...होतोभी
पोरघनोकरैंहैं अरुघाउनाहींदेषिपरत ...तो
यअरुप्रथमविभावनाकोसंकर तथापि...
है १६॥ मू० अथगुरलाजवर्ननं दो० ...
...लाजतनतें ... लाज ...
लाजबरनतहैंकविराज ७॥ टी० ...
... सवैया ... आरसी
षिघरीक ... ति ...
तिलौं ... अंगोछैमें आछेअंगोछनिके
... सबमें ...
जनदे ... दुरादुरदेषौं तो देषौं कहां ... लाज
तें ... १८॥ टी० नायकावचनअंत
रंगसषीसों मैंनेनायकको देषिबेकेलियेदूरकै भीके
त ... पायकै परमेरेनैनलाजमेंलगरहे ...
स्पतजिकै आरसीदर्पनदेषौ वाकोनामआदर्सहै
ताकोअभिप्रायपह ...
... नैन ... तैसेंनायकके उरमें ...

इहाँसंकोचनचाहो घनसारघसेको अभिप्रायमहकोघ
नमर्द्दं बहुतसारलोहातुमघनेसारमेहो तोलोहाबांधनहा
रकेलाजनचाही प्रमान वरुनीबलभद्रकामकेकिसारन
की आईसषीको नीवारकमानभूधरीहै बानदृगदोऊप्र
सिद्धहैं अरुफेरगुलाबतैंपोछे ताकोअभिप्रायठंढेकिये ति
लौंछफुलेलकोअभिप्रायसचिक्कनकिये किंवातेलकोना
मनेहतुमनेहीहो अँगोछावस्त्रतेंअँगोछे अभिप्राय चु
चुकारे मेदसुगंधकोछे जाति मेदकस्तूरी जवादके
सरादि जवादकस्तुरीमें कोईप्रश्नकरे केकस्तूरीको
नेत्रमैंकहाँबरनन उत्तर अंगरागतासौं मांजेमुष
पहिलेमैदेषोआलसमैं कस्तूरीकोअभिमायमद
वारेहो तोलाजनचाही फेरअंजनतैंआँजे ताको
अभिप्रायकविकाजरकोहथ्यारवरनतहैं प्रमान
ओबोरीकतदेतहैमनवारिनहथियार परद्दननेला
जनछोडी इहाँलाजछोडाइबेको कारनकियोकार
जनभयो यातैंविसेषोक्तिअलंकार जहाँहेतहैतोभी
कारजनाहीहोत अरुऐसोकहियेकेनायकाउपाय
लाजछोडायबेकोकियो परंतु नछुट्योतोविभावना
अलंकार वरनातोमुष्यहै १८ ॥ मू॰ कोमलबनेनं
॥ दो॰ ॥ पल्लवकुसुमदयालमनमाषनमृदुल
मुरार पाटपामरीजीभपद प्रेमसुपुत्रविचार
१९ ॥ टी॰ पल्लवपत्र कुसुमफूल दयालवारोमन

अरुमाषन मुरारकमलकोजर पाटरेसम पामरी
विसेषवस्त्र जिह्वा चरन अरुप्रेम औपुन्य १९॥मू०
यथा क० मैंनऐसोमनमृदुमृदुलमृनालका
केसूतकैसेसुरधुनिमननिहरतहै दार्योकै
सैबीजदांतपांतसेअरुनओठकेसोरायदे
षिद्रिगआनंदभरतहै एरीमेरीतेरीमोहि
भावतभलाईतातैंबूझतिहौंतोहिऔरबुझ
तिडरतिहै माषनसीजीभमुषकंजसोकुमि
लतामैंकाठसीकठेठीबातकैसेनिकरतिहै
॥२०॥ टी० मैननाममोमसोहैमनजानायकाकोमृ
दुलकोमल मृनालकानामकमलकोजर ताकेसूत
केसोस्वरधुनिकंठकोमनकौंहरतहै मल इहां
सब्द मृनालकासोकाहूनाहीबरनौं अरुमृनाल
कामैंसब्दकहां उत्तर सुरकहियेकंठकेभीतरको
राह सूतऐसीमहीनधुनिसब्द सोमनकोहरिलेत
दारोअनारकेबीजसेदांतकोपांत पत्रसेअरुनहै
ओठ अरुद्रिगनकौंदेषतहीं आनंदभरजात एरी
सषीमेरीतोकौं भलाईभावतहै यातैंमैबूझतिहौं
आनबूझतमैंडरमानतहै माषनसद्रिसजीभमुष
कमलसो कोमिल तातैंकाठऐसीकठेठी बातैंके
सेनिकरतिहै इहांचतुर्थविभावनाअलंकारहै
२०॥ मू० कठोरवर्ननं दोहा कुचकठोरभुज

मूलमनिवरनवज्रकहिमित्त धातुहाडहीराहियोविरहीजनकोचित्त २१॥ टी० कुचभजमूल मनिजवाहिरादि वज्र धातुलोहादि हाडअस्त हीराहृदय अरुविरहीजनकोचित्त कहूंवज्रहलभीपाठहै तहांभीवहीअर्थजानलीजिये २१॥ मू०

सूरनकेतनसूमनकाटकमठकीपीठ केसवसूधोचर्मअरुसठबहठदुर्जनडीठ २२॥ टी० सूरनकेतन सूमकोमन काष्ट कमठकीपीठ रुपीच में सठकोहठ दुष्टनकीडीठएकठोरहै २२॥ मू० जथा केसोदासदीरघउसासनकोसदागतिअस्रुकोअकासहैप्रकासपापभोगीको देहगोतिजातरूपहाडनकोरूपोरूपरूपकोकुरूपविधुवासरसंजोगीको चुहिनकीचीनुगीहै नैननकोधाराधरछातीकोपत्थरघनथादलपयोगीको उदरकोचाडचाअगिनगेहमाननकोंजानतहौंहीराहियोकाहूपुत्रसोगीको २३॥ टी० जाननकोंमाननकों जिसमत्कैसेउपमा जानिये केसोदासकहतकै दीरघउसासकोसदागतिपवनठौरहैअथवा दीरघउसासकीगभगति है गतिपाठभीहै यातें क्रिटपआसु आंचलकोआकासमूलहै अचआसुनाहींरहै अथवाबडीआपुहै किंवा आकहिये थोरीकासकहियेदासि प्रकासहै

पापभोगिनवारेकौं किंवाप्रउत्कर्ष कासकहियेकासः स्वाँसरोगकोभोगहै देंहँकीजोजोनिसोचलीजात सौ नहोजात अरुरूपभीजात हाडनकेरूपहोरहोहै जाकोरूप दुषमेंअंगसपेदहोजात विधुनामराक्षसदिनहीमें राक्षसऐसो देषिपरत किंवाविधुवासरसंजोगीको संजोगीकोवासरनाहींघटतनेसहीयाकों अरुबुद्धिनको बीजुरीहै अर्थस्थिरनाहींरहत नेत्रको धाराधरमेघहै छातीकोघरयारघनें घाउसहत अर्थछातीकोघाउमारतरहत उदरकोबाडवाअग्निहै जरतरहत यातेंहीराहियो काहूपुत्रसोगीकोहै अर्थवज्रहिदय द्वितियलेषअलंकार २३॥ मू॰ अथ निश्चलबर्नेनं दोहा सतीसमरभटसंतमन धर्मअधर्मनिमित्त जहाँतहाँएबरनिएकेस वनिश्चलचित्त २४॥ टी॰ सतीपतिव्रता समर संग्राम भटजोधा संतनकेमन धर्म अरुअधर्मके जोचितहैं २४॥ मू॰ जथा क॰ काइमनोवचकामनलोभनमोहनमोहैमहाभयजेता केसव बालवयक्रमवृद्धविपत्तनहूँअतिधीरजचेता हैंकलिमेंकरुनावरुनालयकौनगनेंक्रितद्वापरत्रेता यहीतेंसूरजमंडलभेदतसूरसतीअरुऊरधरेता २५॥ टी॰ कायामनसावाचाकर्मनामेंजिनकोकामादिकनाहीं अरुमहाभयतेंमोह

नाहीहोतहै बालअवस्थावयक्रमतेज्वानीजानिये वृद्धतिनमें अरुविपक्षमें भीधीरजनाहीजात कलिमें करुनारसकोवरुनालयसमुद्र सतजुग त्रेताद्वापरकोकोकहै कलिमें भीपाककरत आतेंसूर्यमंडलभेदतहैं सरमा सतीअरुजेऊर्धरेतबारेहैं ते सम अलंकार २५॥ मूल अथचंचलवर्नन दो० तरलतुरंगकुरंगगनवानरचलदलपान॥ लोभिनकेमनस्यारजनबालककालविधान॥ २६॥ टी० तुरंगघोडा कुरंगमृगा वानरमर्कट पीपरकेपत्र लोभिनकेमन स्यारकायरपुरुष किंवास्यार गीदड बालकलरिका काल किंवा प्रातदुपहरसंझ्यादि इनकोविधान २६॥ मू० कुलटाकुटिलकटाक्षमनसपनोजोबनमीन पंजनअलिगजश्रवनश्रीदामिनपवनप्रवीन २७॥ टी० कुलमें अटैसोकुलटा नाके कटाक्ष मन स्वप्न जोबनअवस्था पंजनपक्षी अलिभंवर हाथीकेकान श्रीलक्ष्मीअथवा सोभा दामिनिबिजुरी पवनवायु २७॥ मू० यथा भौरज्योंभ्रमतलोललननालनानप्रति पंजनसेथलीमीनमानोंजहांजलहैं सपनोनहोहिंकहूंआपनोनआपनेंगभूलियनऐनचैनआकचैसोफलहै गहिपैधाकोनगुनदेपतहींरहिएरीकहिएकछुनरूपमोहकोमह

लहै चपला [illegible] सोहै चारुचहूँदिसि कान्हकोसनेहचलदलकैसोदलहै २८ ॥

टी० उक्तिसखीप्रति नायकाकी भौँरकी रीतितैँएलोल चंचलललना नायकातिनके प्रतिफिरतहैं अरुषंजनकेरीततैं थलभूमिमैंफिरत अरुमीनकीरीततैं जलमैं अर्थजलकेलकरतहैं अरुहंसषीजथास्वप्न आपनोंनाहींहोत तथाएअपनैंनहीं अर्थयहकै देषनेकोसुषहै इनकेवचन मीठेसुनन भूलियें आँककैसेफलहै देषतकेनीकेहैं वाकोतोरैतोरुई निकसतहै इनकेकौनगुनगहिये बिनगुनकी उरमैं मालापहिरैंहैं एगुनदेषतहीं रहिए काहेकेइनकोरूपमोहकोघरहै चपलाबीजुरीऐसी चमकचारहीओर चमकतयातैं कान्हकोनेह चलदलपीपरपत्रसोहै अर्थइस्थिरनाहीं उत्प्रेक्षाअलंकार चलदलउपमान सोवाचक तातैंधर्मलुप्ताअलंकार कोईउपमाभीकहतहैं यामैं यातैंसंकर २८ ॥ मू० अथसुषदानवर्ननं दो० पंडितपुत्रपतिव्रता विद्यावपुविनरोग सुषहीफलअभिलाष केसंपतिमित्रसँजोग २९ ॥ टी० पंडितपिता होय पंडितपुत्रभीहोय किंवाआपपंडितकुलजीवनबारी विद्याजाननहारपुत्र पतिव्रताइस्त्री विद्यावान औवपुसरीरमैंरोगनहोय प्रस्न पंडितकही

नबबिद्याकहा उत्तर प्रथममेंअपनीजीवका हिती
यमेंचतुर्दसविद्या तामेंजलतरनेभीहैं राजाहैं अरु
भैदगंगादिकमें तरनैंनहींजानततौ दुषीहोयगो अ
रुसुषदेतें अभिलाषजाकीकरैसोप्राप्तिहोय संप
तिवानअरु मित्रकोसंजोग २९॥ मू० दानमान
धनजोगजपरागबागग्रहरूप मुक्तसोम
सर्वज्ञताएसुषदानअनूप ३०॥ टी० दानीमा
नी धनी जोगी जपी रागअनुरागकिंवागान बाग
आराम ग्रहघर रूपसौंदर्य मुक्तिसायुज्य सारूप्य
सामीप्य सालोक्य सोमचंद्रमा किंवासौम्यता अर्थ
क्रोधादिकतैंरहित सर्वज्ञसर्वकोज्ञान ३०॥ मू०
जथा पंडितपुत्रसुधीपतिनिजपतिव्रतप्रेम
परादनभारी जानैंसबैगुनमानैंसबैजगदा
नविधानदयाउरधारी कैंसबरोगनदोंमौंवि
योगसंजोगसुभोगनसौंसुषकारी सोचकहैं
अगमाहलहैंजसमुक्तयहैंचहुवेदविचारी
३१॥ टी० पंडितपिताहोय अथवापंडितपुत्रहोय
सुंदरधीबुद्धी पतिनीपतिविषैजाकोप्रेमजानतहैं
मानतहैंसबजन दानविधानकेसाथ दयाउरमैं प्र
स्न जबदानकहोतबदयाबिनदाननाहीं उत्तर वि
धानवारोदान अरुदयामेंसत्रुआदिभी किंवासर्वजीव
पर रोगतैंवियोग भोगसौंसंजोग सत्तभावैं जसपावै

तेईजीवनमुक्तवेदमैंविचारो इहांसंभावनाअलंकार ३१॥ मू० अथदुषदवर्ननं॥ दोहा पापपराजयझूंठहठसठतामूरषमित्त ब्राह्मननेगीरूपविनअसहनसीलचरित्त ३२॥ टी० पापपराजयहार झूंठवचन हठरगरा सठमूढ मूरष मित्रहोय ब्राह्मननेगी कामदारमैंदोस पश्चातदंडनदैसकैंगे असहनसीलमैं राजागुरादिकौं जवाबलैंप्रायश्चित्तहोहिगो यहजोचरितहैसो दुषदहै ३२ ॥मू० आधिव्याधिअपमानरिनपरघरभोजनवास ॥कंन्यासंततवृद्धतावरषाकालप्रवास ३३ ॥ टी० आधिमनकी व्याधि व्याधिसरीरकी अपमानरिनकर्ज परायेघरभोजनकरनोअरुरहनो कंन्यापुत्रीकीसंततबहुत वृद्धअवस्था वर्षासमयकोप्रवास ३३॥ मू० कुजनकुस्वामीकुगतिहयकुपुरनिवासकुनारि परबसदारिदआदिदैएदुषदानविचारि३४॥टी० दासआज्ञाभंगकरै कुस्वामीराजान्यावनबूझै कुगतिवारोअस्व कुतसितपुरमैंनिवास कुनारिकलहीपरबस दारिद्र इनआदि औरज्ञानलीजिए ३४॥मू० जथा वाहनकुचालचोरचाकरचपलचितमित्तमतिहीनसूमस्वामीउरआनियेपरबसभोजननिवासवासकुपुरनवर्षाप्रवासकेसोदासदुषदानिये पापिनकेअंगसं

गअंगनाअनंगवसअपजसजुतसु नचिन
हितहानियेमूढताबुढाईव्याधिदारिद्रता
ईआधियहईनरकनरलोकनबषानिये ३५
॥टी॰ वाहनकीजेसीचालचाहीतेसीनचलैकुचा
लचलतहै चाकरचोरदुष्टकोदेनहारो चपलचित्त
मित्रमतिकोहीन मूर्ष स्वामीसम पराये कैवसको
भोजन कुतसित पुरकोनिवास वर्षाकालकोप्रवा
सदुषदेनहारहै पापीजनकोसंग इस्त्रीस्वानकेव
स अपजसकलंकजुत सुतबेटा [illegible] कोहितमें
हान मूढता वृद्धता व्याधि दरिद्र [illegible] इनआदि
नरलोगयाहीकोनरकवषानैहै ३५ ॥ मू॰ अथमं
दगतिवर्ननं दो॰ कुलतियहासविलासबु
धकामक्रोधमदमान मनिगुरसारसहंस
गतिनियगतिमंदवषान ३६ ॥ टी॰ कुलीन
तियाकोहाँस सुंदरविलासभोगादि अथवाबुध
वानकोविलास काम अरुक्रोध अरुमद अभिमा
नजेसीघनाहीजान सनिश्चरग्रह गुरवृहस्पति
सारसपक्षी हंसकीगति तियाकीगतिचालएमंद
हैं ३६ ॥ मू॰ जथा कोमलविमलमनविमना
सीमषीसायकमलाज्योंलीनेहाथकमलस
नालके नूपुरकीधुनिसुनिभोरकलहंसनके
चौंकिचौंकिपरैचारुचेटवामरालके कचनके

भारकुचभारनसकुचभारलचकलचकजा
तकटितटवालके हरैहरैबोलतविलोकन
हरैईहरैहरैहरैचलतहरतमनलालके ३७

॥ टी० उक्तिसषीसों सषीकीनाइकाकेरूपकीअधि
काई सुकुमारनिर्मलविमलासरस्वतीसीसषीहैसं
गमैं आपुलक्ष्मीकीरीतितें नालसहित कमल हा
थमैंलिएहैं नूपुर॥ घुंघुरूकीधुनिसुनि मराल हं
सकेबालचौंकत प्रश्न एकबारहंसकही फेरमरा
लकेचेटुवाकाहेकहें उत्तर बालकमात्रकहेतें स
बेवालकआवतैं पूरनउपमाअलंकारकोमिलथ
मेकमलउपमानसीवाचकसषीउपमेय कमला
उपमानऔंवाचकतातैंउपमानधर्मलुप्ता मरालके
चौंकबेमैं भ्रमतातैंभ्रमाअलंकार यातैंसंकर बरना
मुख्यहै अरुकोईकहैकै कमलसनालकेमैं बहुवच
नअरुसुकुमारतामैंकचकुचकेभारतें कटिलचकत
॥अरुनालकेकंटकनाहीगडत यहअसमंजस अ
रुजोकहोकै हाथलिएहुएहैं सनालकेकमलवत
तहांअंगीअरुअंगको समवायसंबंधहै समवाय
संबंधनित्यसंबंध अरुलीनेहैयामैंसंजोगसंबंध
होतहै सोसंजोगसंबंधदोद्रव्यकोहोइहै अरुनाइ
काजोअंगीहै तामैंहाथअंगलीनेनाहीसंभवत तहाँ
ऐसोअर्थ कैविमलासीसषींसाथहैं अरुकमलासी

जेहैं तेसनालकमलहाथमेंलियेहै किंवासनालकमल वतनायकाकेकरलीनेहैं अरुलचकलचकजातक टिवालकेद्दाभीवकुवचनहै तोकटिअनेकहै न हांऐसोअर्थ कैकचकुचकेभारतेंलचककेकटिबा लअनवालकेतटनजीकजातहै अरुचारुचंदुचाम रालमेंअ सुंदरनारीचौंकके तहांसुंदरपक्षनमनैनै होहिहैं ३७॥मू० अथसीतलवर्नन दो० मलय जुदापकलिंदसुप ओरा मिश्रीमीत प्रियसंगम घनसारससिजलजलरुहहिमसीत ३८॥टी० मलयचंदन दापमृनका कलिंदतरवूजा ओराहिम उपल मिश्री प्रम्म मित्रकोहांप्रियसंगमकाहे उत्तर बाहरकोप्रिय गेहकेमित्र जलरुहकमल हिमपालासीत प्रश्न हिमकाहि सीतकाहे उत्तर ॥सीतलहैं तानैंइस्त्रीकोसंगम कपूर चंद्रमादूनआदि ३८॥मू० जथा सीतलसमीरदा रिचंदुचंद्रिकानिवारिकैसादासपैसहीनोहर षहिरातुहै फूलनफैलाइसारमारडारपनसा रचंदनकेढारेंचित्तचौगुनोचिरातहै सीरहीन मीनमुरझाइजौजैनीरहीतेंनीरछिरकेनैकहा धीरजधिरातुहै पाइदेतेंपीरकेधौंयोहीउपचा रकैआगहीकोदाढोअंगआगहीसिरातहै॥ ३९॥टी० सीतलपवनटारिंदअरुचंद्रमाओचंद्रिका निवारिदैमेरोतोहरषऐसहीहिरायजातहै फूलनकौं

फैलाइदे घनसारकपूरहारडार चंदनजोतूँडारत चित्तमेरो चौगुनपीडितहोत नीरहीनजोमीनमुरझानीसोनीरहीतैंजीवत क्षीरदूधकेछिरकेतैं धीरजनाहीहोततूँनेपीरपाईहै केऐसहीं उपचारकरत औरआगकोजरो अंगआगहीकेसेकनेतैंसिरात अर्थयहकैनायकविगरतैंजोभयोदुष नायकहीकेमिलेछूटहै यामैंचारप्रश्न एकचंद्र चंद्रिकामैंचंद्रसबअधिकहै चंद्रिकाचाही हरषहिराइबो हरषविरहमेनाहीं तीसरीचौगुनकोभाव चौथीसषीअजान तहाँउत्तर चंद्रिकाचंद्रकोएक अथवाचंद्रिकानामसषी सोसषीकहैहै बाहिरचंद्रदिषावहु दूसरीचंद्रमामात्र नायकाकहैहै दोइनिवारहु तहाँचंद्रबिनचंद्रिकानहीं होत तहाँचंद्रिकाभूषन चंद्रससिमहकहेचाहिये हरष उत्तर बिरहमें सुमिरनदसाभई तहासुमिरनछूटेतौविरहनरहैगो तहाँयहकहो केतुम्हारे उपायतैंमेरोहरषहरातहै हरषमरनसो हराइजात बिहारी मरनभलोवरुविरहतैं केजबप्राननिकसतततबप्राननाथकेरूपकौंलालचलगजातहै चौगुनोउत्तर नायकाविरह१ दूजोध्यान २ तीसरोउद्दीपन ३ चौथो सखीअजान ४ सोनाहीबिरहध्यानभयेछूटबपहिलकहिचुकैं तहाँयहहै केचंदनमेचारवस्तुहै नीर सुवास सीतलता सूक्षमता तातैंचारगुनचंदनमैं होइजा

नहै अथवा चंदनकोनामश्रीखंडहै श्रीकाखंडउनहार
अथवाश्रीलक्ष्मीताकोखंडइहूका श्री जोहै सपकीताके
खंडहै यहचौगुनी नीलकंठ राधेकहैमुखदेखिगि चंद
रीकाकोहै तुमयासोतिकोभेया अहसखीयविरंगने
नादी काहै सखीको धर्मयहके उपायकरें इकोवि
षमालंकार अरुकोईयामेंव्याघातअलंकारकहतहैं
अरुवरनालंकार सर्वविषैंके सत्वगुणगयौ ५९ ॥मू॰
अथतसवर्नन दो॰ रिपुप्रताप दुरवचनताता
विरहसंताप सरजआगिवडवागिदुपतताप
पविताप ४०॥ टी॰ रिपुवैरीकोप्रताप किंवावैरीको
रुप्रतापहोई कुर बचन॥ताप॥ वस्तु विरहसंताप
सरजकोअगिन किंवा मगे आगिनहोइ औवारवाग्नि
दुष्प तृस्ना अरु पाप अलीअलापकहत ५०॥मू॰रामचंद्र
का केसोदासनीदभूषवासउपहासप्यासदुष
कोनिवासविषमुषहूगहीपरै वापकोवहनवन
नदानाकोदहनबडीवाडवाअनलज्वालजाल
मेंरहोपरै जीवनजनमजालजोरजुरघोरपरिपूर
नप्रगटपरतापक्योंकहोपरै सहिहोंतपनताप
परिकेप्रतापरघुवीरकोविरहवीरमोपैनासहोप
रै ४१॥ टी॰ जानकीकेवचनहनूमानप्रति निद्रानाहीं
आवत क्षुधानाहींलगत पियासाभीनाहींलगत उ
पहाससबकहैंगे कैरावनकेग्रहमेंरही दुषनिवास

असोकवाटिकाकोरहिबो विषभषन वायुकौंवह्
नतेहेमंतरितु दाबादहनतेंग्रीषम किंवाबनकोआ
गिबंसअग्नि केकईकोकरनी बडवाअग्निसमुद्रकी
जीरनजनमजातहूअवस्था अरुजोरजुकोघोरपरि
पूरनप्रताप पररावनताकोप्रतापतामेंभयोजोपरता
पदुषसोकैसेकहोजाय तपनसूजेकोतापकोंन पर
उतकर्षहूषकेतिनकोप्रतापपरंतु रघुबीरकोविर
ह हेवीरमोतेंनाहीसहोजात किंवापरवैरीसर्वको
काल नाहीकोप्रताप काव्यलिंगअलंकार ४१॥मू०
सरूपवर्ननं दो० नलनलकूवरसुरभिषजहरि
सुतमदननिहार दमयंतीसीतादितिय सुंदररू
पविचार ४२॥टी० नलराजा नलकूबरकुबेरसुत
सुरभिखजअश्विनीकुमार हरिसुतप्रद्युम्न किंवाज
यंतपरंतुजयंतएकाक्ष यातेंलवकुस मदनकामदे
व दमयंतीनलकोभार्या श्रीजानकीजूएसबस्वरूपवान
हैं४२॥मू०रामचंद्रिका॥ कोहेदमयंती इंदुमतीर
तिरातदिनहोहिनछबीलीछबिजोन्हजोसिंगा
रिये केसवलजातजलजातजातवेदओपेजातरूप
बापुरोबिरूपसोनिहारिये मदननिरूपबहुरूप
तेंनिरूपभयोचंदबहुरूपअनरूपकोंबिचारिये
॥सीताजूकेरूपपरदेवताकुरूपसेहैंरूपहीके
रूपकतोबारबारडारिये ४३॥टी० उक्तिसुमित्रा

कौअथवासषीकीसषीप्रति केसीताजूकोजोरूपहै ता
हिदेषिदेवताकुरूपसेहोतहैं अरूरूपजोहैताको रू
पकतोबारबारडारियतहै प्रस्न देवताकहोसोदूनी
पतिअताआदिसक्तिजानकी ताकेपरदेवताकुरूप
नचाहीदेवीचाही उत्तर जैसेप्रथमदोहामेंगुरूपर
ली दोईवरनें तैसेईदूहांजानिये जहांपुरूषनकोभी
राम जहांइस्त्रीतहांजानकीजो जैसेंदानविषेपावेंतौ
केदानमेंसिवजूकोबरननदमयंती अरूदमती र
तिदूनकोकहाकहौं छबीलीछविजोहै सोजोनाहींहो
ति जोसिंगारियेतोकौनजानीपरै किंवाछनछनजोसिं
गारोतोभीछबीलीनहोय इहांअसुकअलंकारहै
जोन्हजोन्हाईकोछविकोगहनोपहिरावु नोभी सी
ताजूकेमुषसमछबीलीनहोय निरूपमउपमानेहीन
ने उपमासदृसनाहीं अरूजलजातहैंतिनकेरूपकौं
देषिकेजलजानकननजु जानचेदअग्निकोअपअ
रुजातरूपहेम बापुरोविरूपसोदेषिपरत किंवाअ
गिनकोतपायोकंचन मदननिरूपन गहनकोकानि
रूपनकथनकारिए वननिरूपहै किंवामदननिरू
पपदकोअर्थ निरूपकोअर्थनिरूपनठहरावनो म
दनकामजबानिरूपैहै निरूपनकरैहै ठहरावनो सी
ताजूकीउपमालाइककोईठहरावे ततनिरूपमजे
पदार्थउपमारहितहैं तेनिरूपमउपमालायकन

हीं अर्थपंचमप्रतीपअलंकारंकरिके उपमालायक
नरहैं अरुकहूं वदननिरूपभीपाठहै तहांमुषक
रिकेचंद्रमाबहुरूपहै ताकेअनरूपसीताजूकोमुष
परदेवताभीकुरूपहोयजात कहूंरूपहूकेरूपऐसो
भीपाटहै तबरूपकहिये चित्रताकेरूपकोबारडा
रिये प्रश्न इहांरामचंद्रकोवर्नननाहीं होसकत का
हेनलक्षनमेहै नलक्षमेहै तहांदेवताकुरूपसेलाग
त यहसीताजीपतिव्रतामैं विरोध उत्तर तहांऐसोअ
र्थ मदनसीताजूकेरूपको निरूपनलगोतातैं आपअ
नरूपहोगयो अरुचंद्रमाबहुरूपवारोरहोसोभीनि
रूपनमैंअनरूपभयो कलंकित अरुकलाघटतबढत किं
वा सोरूपतैंलज्जितभयोयह दोई देवताकुरूपसेहैं
॥४३॥मू॰ अथक्रूरस्वरवर्ननं॥ दो॰ झींगुरसां
पउलूकअजमहिषीकोलबषान कालकाक
वृककरभषरस्वानक्रूरस्वरजान ४४॥टी॰ क
ठोरअर्थउतकटजानिए झींगुर सांपसर्प उलूकप
क्षी अजबकरा महिषीभैंस कोलसूकर कालसब
भीक्रूर काकवायस व्रिकविगना कहूंभेडिया. क
हूंल्यारिकहतहैं करभऊंट किंवाहाथीकोबालक
षरगदहा स्वानकुत्ता इनसबकोसब्दक्रूरस्वर ४४
॥मू॰ जथा छिलोतैंरसीलीजीलीराटेहूंकीरट
लीलीस्यारतैंसवाईभूतभामिनतैं आगरी के

सोदास भैसनकी भामिन तैंभासैं भामपरी नैंष
शसी धुनि ऊँटतैं उजागरी भेडनकी मेडी मेड
ग्रेंडन्योरनारिनकी वो कहू तैं बाकीबानी का
गनतैं कागरी सूकरी सकुच संक कूकरी यों मृ
कुभई घुघूकी घरनकोहै मो है नागनागरी ४४
टी॰ कवि कूरस्वर बषानकरतयालेग्रस्वक्षद्गिवत
केषहजो हमारी परोसिन है ताकी बानी सुनी सैं गुर
तैंरसीली है अरुजीली रीनी रादां हुं टलनं डमें चोर आ
पनी बोली बोलततां को नाम रादो किंवा टिटहरी आ
को टिटई कहत कोदें टिटहरी भी कहत रामायने
जिमि टिटई षगसुतेउताना स्यारतें मवाई अरुभूत
भामिनी चुरेलनैं आगरी है भेडी जो है तिन की बानी
कोंग्रजादजानेमोडजारी अरुगोंडन्यारनकुत्तनारि
की थाकनाम वडेच करको है तानें वाकी दें बानी
अरु काक जे हैं तिनकी कादालगरी किंवा कागकी
नाजो धुनि सूकरी कोलिनी सुनि संकोचमान है अ
रु संकामानकर कूकरी भी मौन होय गई घघू कीनत
नाकहा है मो है हैं नागजो है तिनको मदनागरी मो हत
है प्रस्न नागरी सब्द का है क है उत्तर कूरस्वर मेंप्रवी
न प्रमान सुधासरग ही अभरनागरतमगरही मीच ४५
मू॰ अथ सुस्वरवर्ननं दो॰ कलरव केकी कोकिला
सुकसारो कलहंस तंत्री कंठन आदिदैं सुभसुर

दुंदुभिबस ४६॥टी॰सुस्वर कलरवमधुरध्वनि के
कीमयूर अथवाकलरवकेकीको प्रश्न केकीकोकलर
वयामेकलअधिक उ॰आषाढ़कीध्वनिबहुतउत्तमहोत किंवा
कलरवइतनेचातकमयूर कोईल सूगा मैनाकलहंस
तंत्रीवीना किंवातंत्रीबजावन वोकंठइनआदि सुंद
रसुर दुंदुभीनगारा बंसबाँसुरीआदि ४६॥मू॰ ज
था॥केकिनकीकेकासुनिकाकेनमथतमनमद
नमनोरथकेरथपथसोहिए कोकिलाकीका
कलीनकलितललितबागदेषतहीँअनुरागउ
रअवरोहिए कोकनकीकारिकाकहतसुक
सारिकानिकेसोदासनारिकाकुमारिकाहूमो
हिए हंसमालबोलतनमानकोउतारेमालवो
लैनंदलालासोनऐसीबालाकोहिए ४७॥टी॰
प्रश्न इहाँकोनरितुजो पावसतोहंसकहाँ वसंत
तोकेकीकहातेँ रितुसरदमैँनायकावचनसषीप्र
ति कैऐसीबालाकोनहै जोमानकोमालउतार नं
दलालसोनबोलै तहाँप्रथमउद्दीपनभावदिषावत
कैकेकीमयूरकी केका बानीसुनके काकोमननहीँ
मथनहोत कैसीहैकेमयूरवानी केमदनकंदर्प
ताकोमनोरथताकेरथकोपंथसोहतहै अरुकोकि
लाकीजोकाकबानीसो लीनहोरहीहै कलितललित
आरामविषैँ ताकोँदेषतबागकोउरमैँ अनुरागअवि

रोहिनहोतहै उपजतहै अमकोक सावा॥ को कारिकोकी
मैनाभाषत नानैंनारिकानाश्रुवतीकी॥ कोकहैकमा
रिकाभी मोहितहोइजानहूँ यानैं दंमगानवोलन मा
त्रसबकेमननैंमानकोमाना उनागतहै यानैंआप
नोबोलिबोसूचितकियो काकोक्तिअलंकार ४७॥
मू॰ अथमधुरवर्ननं॥ दो॰ मधुरप्रियाधरसोम
करभाषनदोपसमान बालकवानैंतोतरीक
विकुलउक्तिप्रमान ४८॥ टी॰ प्रियाकेअधर सो
मचंद्रमा कविकुलउक्ति इतोनेत्रकरनेंमना भान
खचामन इनसबकोजानिये काहेप्रियाधरमें मना
अरुनेत्र खकुभीलीनको मानकिरननैं नचानेत्र
बालकवचनमें कविउक्तिमेंअरुन भाषन दोषमें
रसनामात्र ४८॥ मू॰ मधुवाणिश्रीतृष ष्टनआति
सिंगाररसमिष्ट केसवकूपगगूपगनकेवलमी
चेइष्ट ४९॥ टी॰ मधुवाणिश्री तृष पानसंगार
रसचर्तेंमधुर कूप मयूषमधु मानोकष्टतनमोद
४९॥ मू॰ रसिकप्रियाधोपारदपाननदारोउदाम
नभाषनकूँ सहमेदिदहाहे केसवकमपिय
पहूंदूपलआइहोतोपैदकाठगिठाहे तोरद
नछतकोरमरंचककचापिगम्रकोरकेहीहिहाहे
॥तादिनतेंऊनरापीउठायरमनमुधानमुधा
कोमिठाई ५०॥ टी॰ नायकामानकोनोमाकुडाबनहै

तुसषीवचन केस्वारकछोहारा दारोअनार दाषमुन
क्का माषननयनू ताहूमेंईठाई कसाव अरुऊषम
यूषहूकोदूषत यातेंजिठाईछोड मैं आईहौं तेरेर
दछदअधरकाहूतरहतेंनवतेंउनचाषो तबतेंसुधा
अमृतसहित वसुधाभरकीमिठाईछाडदई इहाँ
सबमधुरतात्यागएकरदनछदकीमिठाई अधिक
करी आनवर्जकेएकराषे यातेंपरसंख्याअलंकार
अरुफेरमिलाइबोचाहतहै तातेंयहव्यंगपू॰॥ मू॰अ
थअबलवर्नेनं दो॰ पंगुगुंगरोगीवनिकमीत
भूषजुतजान अंधअनाथअजादिसिसुअब
लाअबलबषान ५१॥ टी॰ पंगुगूंगा रोगी वनिक
बनिया मीतमित्रभूषजुत अधमंधरा अनाथ अज
बकरी आदि सिसुबालक अबलाइस्त्री एअबलहैं
॥५१॥ मू॰ कवित्त षातनअघातसबजगतषवा
वतहैद्रौपदीकोसाकपातषातनअघानेहौ
केसोदासनृपतिसुताकेसत्तभायभयेचोरतें
चतुरभुजसबजगजानेहौ माँगनेऊँद्वारपाल
हासहितसूलसुनौंकाठमाँ दकौनपाठवेदन
बषानेहौ औरहैअनाथनकोनाथकोऊरघु
नाथतुमतोअनाथनकेहाथहीबिकानेहौ ॥
५२॥ टी॰ षातनहीअघातअरु द्रौपदीकोसाककोे
पत्तषायकरअघायगयेभारथमें दुरवासाजबजु

तोहितहोतहै उपजतहै अरुकोक सास्त्र॥ कौ कारिकाकी रसेनाभाषत तातैं नारिकानाम्नि बनी की॥ कोक है कुमा रिकाभी मोहितहोइजातहैं यातैं हंसमानबोलत मा त्रसबकेमनतैं मानकीमाला उतारतहै यातैं आप नोबोलिबोसूचितकियो काकोक्तिअलंकार ४७॥
मू॰ अथमधुरवर्ननं॥ दो॰ मधुरप्रियाधरसोम कर मोषनदीपसमान बालकबातैं तोतरी कविकुलउक्तिप्रमान ४८॥ टी॰ प्रियाकेअधर सो मचंद्रमा कविकुलउक्ति इक्षो नेत्रकनैंरसना घ्रान त्वचामन इनमनकोजानिये काहैप्रियाधरमें रसना अरुनेत्र त्वकभीतीनको सोमाकानतैं त्वचानेत्र बालकवचनमैं कविउक्तिमैंश्रवन माषन दीपमैं रसनामात्र ४८॥ मू॰ महुवामिश्री दूध घृत अति सिंगाररसमिष्ट केसव रूपअनूपगन केबानरसों चेइए ४९॥ टी॰ महुवा मिश्री दूध घृतसिंगार रससबतैंमधुर रूप मयूपमधु मीनादष्टबताहि ४९॥ मू॰ रसिकप्रियायां पारदपानतसारोउद्दाप नमापनहूं सहमेंदिदृठाई केमवरूपपियू षहूं दूषतआईहोतापैहकाउजिठाई तारद नछतकोरसरंचकचापिगयेकरिकेहुटिठाई ॥तादिनतैंउनरापोउठायलमतसुधानसुधा कीमिठाई ५०॥ टी॰ नायकामानकीनोसोकहूउबनरे

तुमषीवचन केवारकन्होहारा दारोअनार दाषमुन
का माषननयनू ताहूमैंहेढाई कसाव अरुऊषम
यूषहूकोदूषत यातैंजिठाईछोड मैं आईहौं तेरेर
दछदअधरकाहूतरहतैंजवतैंउनचाषो तबतैंसुधा
अमृतसहित वसुधाभरकीमिठाईछाडदई इहां
सबमधुरतात्यागएकरदनछदकीमिठाई अधिक
करी आनवर्जकेएकराषे यातैंपरसंख्याअलंकार
अरुफेरमिलाइबोचाहतहैतातैंयहव्यंग५०॥ मू॰अ
थअबलवर्ननं दो॰ पंगुगुंगरोगीवनिकमीत
भूषजुतजान अंधअनाथअजादिसिसुअब
लाअबलबषान ५१॥ टी॰ पंगुगूंगा रोगी वनिक
बनिया मीतमित्रभूषजुत अधमंधरा अनाथ अज
बकरी आदि सिसुबालक अबलाइस्त्री एअबलहैं
॥५१॥ मू॰ कवित्त षातनअघातसबजगतषवा
वतहैद्रौपदीकोसाकपातषातनअघानेहो
केसोदासनृपतिसुताकेसत्तभायभयेचोरतें
चतुरभुजसबजगजानैंहो मांगनेऊंद्वारपाल
हासहितसूलसुनौंकाठमांदढौनपाठवेदन
बषानेहो औरहैअनाथनकोनाथकोऊरघु
नाथतुमतोअनाथनकेहाथहीबिकानेहो ॥
५२॥ टी॰ षातनहीअघातअरु द्रौपदीकोसाककौ
पत्रषायकरअघायगयेभारथमें दुरवासाजबजु

धिष्ठिरकेपासगयेतबभगवानसोकद्रोपदीसोमांगो
सोभीनरह्योकहूंभाजनमेंलेसमात्रपायोतासोंआ
पत्रिप्तभयेयातेंतीनोलोकत्रिप्तभयेअरुनृपसुनाए
ककहीहोंचतुर्भुजसोंवरोंगीतानिमित्तराकराजा
आयोतबकंन्याकहीचारभुजदिषावोसोसुनिरा
जानेंध्यानकियोतबआपुवाकोंचारभुजकोवरदयो
यातेंचोरतेंचतुर्भुज वलिकेद्वारमंगनहोकेद्वारपा
लकभए दासपारथकेहितसारथीभये प्रहलादहि
तषंभतेकढे यातेंअनाथकोनाथकोदअन्यहूहैं तु
मतोअनाथकेदायहीचिकेहो यहअस्तुनिनिंदाके
मिसतेंहैयातेंव्याजनिंदाअलंकार ५२॥मू० अथव
लिष्टवर्ननं दो० पवनपवनकोपुत्रअरुपरमे
स्वरसुरपाल कामभीमवालीहलीवलिराजा
पृथुकाल ५३॥टी० पवनअरुपवनपुत्रश्रीहनु
मानजूपरमेस्वरसुरपालइंद्र कामदेव भीमसेन
वाली हलीबलिराम बलिदैत्यपृथुअरुकाल ५३॥
मू० सिंहवराहगयंदगुरुसेषसतीसवनारि
गरुडवेदमातापितावलीअद्रिप्रचिचार ५४
॥टी०सिंहवराहसूकरगयंदहाथीगुरुवृहस्पतिस
सेसजीसतीऔरजेनारिहैंगरुड वेदशास्त्रकिंघावेद
मातापिताअरुपितागुरुवस्तुगरुकोकहतहैंगुरुत्वलक्ष॥
दो०॥ ४१ ॥कहतअतेंद्रिगुरुत्वकोपृथिवीजलमेंव

ति नित्यजहाँ तहँ नित्य है कहुँ अनित्यसमकित्त सम
वाई कारनवही होत पतनमेराम इतनीरीतिगुरुत्वकी
समुझोसुषकेधाम यातैंगुरवस्तुबली सतीपतिकौंन
एकतैंनिकासत सबनारिचरित्रकरिबली अद्रिष्टसं
चितकर्मजनित ५४॥ मू· जथा वालिवँधोबलि
राउवँध्योकरसूलीकेसूलकपालथलीहै का
मुजरोजरकालपरोबँधसेतधरोविषहालह
लीहै सिंधुमथोकिलकालीनथोकहिकेसब
इंद्रकुचालचलीहै रामहूकोहरीरावनवाम
चहूँजुगएकअद्रिष्टबलीहै ५५॥ टी· वालिम
हाबलीसोभीराममारो राजाबलिभीबांधेगए सूली
महादेवजेतीनिलोकनासकरत तिनकेहाथमैंत्रि
सूल औकपालथलीमसानवासी किंवाषपरोईक
पालकीराषत कामजरो कालजरो सेतबँधोसमुद्र
मे सेसनेहालाहलविषधरो समुद्रमथो निश्चैकाली
सर्पनथो इंद्रनेकुचालचलीगौतमकीइस्त्रीसौं रा
मकीभार्जोरावनहरी चारोजुगमैं एकअद्रिष्टबली
है परसंष्याअलंकार ५५॥ मू· सत्यझूठवर्नन॥
दो· केसवचारौवेदकोमनक्रमवचनविचा
र· सांचोएकअद्रिष्टहरिझूठोसबसंसार ५६॥
टी· अद्रिष्टकर्मसत्तहै संसारसबझूठोहै ५६॥मू·
जथा हाथीनसाथीनघोरेनचेरेनगाउनठाँउ

कोनाउबिलेहै नातनमातनपुत्रनमित्रनवित्त
नअंगसुसंगरहैहै॥ केसवकामकोरामबिसा
रतऔरनिकामनिकामनएहै चेतरेचेतअजौ
चितचेतजुअंतकऔकअकेलहूजेहै ५७॥टी
का उक्तिउपदेसकरनहारकी हाथीआदिकतेरसं
गमैं कोईनहीजाहिंगेअंतकजमराजकेओकघरमैं
अकेलाईजाइगो ५७॥॥मूल विग्यानगीता॥
अनहीठगकोठगजानेनकुठौरठौरनाहीपैठ
गावैठलजाहीनैंठगतहै याकेतोडरनिडरडग
नडगतडरिडरिकेडरनिडरऔडीज्यौंडगतहै
एसेवसोवासतेंउदासहोहुकेसोदासकेसोन
भगतमनकाहेकोपगतहै कुठौरठौरकुठौरजगरा
मकीदोहाईकाहूसाँचेकोचनामोतातेंसाँचोसौ
लगतहै ५८॥ टी॰ उक्तिगुरुकीसिष्यप्रति किं
वा उक्तिकविकीसांतरसमैंअपनेमनसौंकहतहै
केतूंअनहीठिकठकठकोठगहैठौरकुठौरनहीं
जानत तोहिठगवेकोठीकनाही अपनोवस्तुबच
यआनकोवस्तुऔपटेपनलैलेहिसोठग किंवाअ
ल्पद्रव्यदेकरबहुतवस्तुलैलेहिसोठग कुठौरका
मादिकअरुठौरभगवानसोतूनाहीजानत किंवा
बारानसीआदिजोतीर्थहै गुरुसेवादिसज्जनसतसं
ग एठौरनिनकोत्याग कुग्राममैंवासकरतहै ताही

पैठगावैफेरसास्त्रवचनठेलकेंजातेंठगोजात जाकों
तूँठगतजन्मजन्मतें तेतोंकोठगलेतकहावाकोतू
ठगो तुच्छकर्मकरिके तातेंदूसरजन्ममेदूनोचौगुनो
लयो किंवानरककोठेलभोगकरनाहीनरककीसा
मग्रीफेरकरी यापापकेडरनतें डरडगतडगपैंड
भीनाहीदेत किंवायाकेतोडरयहको अर्थ याड
गबेकीक्रियासों अघसोंनिडरडगनिडिगतडर नि
डरहै तूँडरकोएकडगत नहीडिगैहैनहीचलेहै
पापमेंतूनिडरहै जहाँडरआनपरततहाँडरकेडों
डोडोंगी छोटीतरनीकीरीततेंडगनलागत किंवा
याकेडरनतें डरडरानसोडिगतडरियकेजाडरके
डरनितें सबकोडगडोंडीडोंगीकीनाईडगतहै
अरुइहिमेंबहुतअर्थहै सोग्रंथविस्तारभयतेंना
हींलिषे ऐसेवसोवासतेंउदासहोउ अर्थछोडिदै
केसोकोंनाहीभजत सुमिरतकाहेको षगतहै टकका
हेकोधरैहै झूठोहैयहमायाचरित्र परंतुकाहूसांचो
कोबनायोहै ईस्वरसत्ताताकोबनायोहै यातेंसत्त
जानोंजात यामेश्लेषभीहै कैजेसोसांचाहोयतैसही
वस्तुबनावत ५८॥ मू. अथमंडलवर्नेनं दोहा
केसवकुंडलमुद्रिकावलयावलयबषान आल
बालपरवेषरविमंडलमंडलजान ५९॥ टी०॥
चहूँओरगोलहोयसोमंडल आवर्त्तकोभेद मुद्रि

कामुंदरी वलयाचूरी वलयकडा किंवा कंकन आ
लवालकियारी किंवाथाला परवेपजो मजे चंद्रमा
कोलगे है मंडलवस्तु केचारदिसाविषें रहें आ
लसोसवमंडलजानिये ५९॥ मू॰ कवित्त मनिम
यआलवालथलजजलजरविमंडलमेंनैसम
तिमोहेकवितानको जैसेसविसेपपारवेषमें
असेषरेषसोहनाविसेषसोमगीमामुषदानको
॥जैसेवंकलोचनिकलितकरकंकननिचलित
ललितदुतिव्रगटप्रभानको केसोदासएसोए
जेरासमेरसिकलालआसपासमंडलीविर
जेगोपिकानको ६०॥ टी॰ उक्तिमषीकोसषीसों
गोपिकानकेरासमंडलमें कृष्णकोदेषिकहतहैं
केरासमंडलमेरसिकलालकेसेराजेहैं जैसेमनि
मईआलवालकियारी ताकेमध्यमें थलजलमाल
वृक्षकिंवाथलजजलज कमलराजे किंवाथलजजल
जगुलावकोफूल प्रसंग रसिकलाल एकउपमेयञ्र
रुउपमानदो आगेएकउपमेयप्रतिएकरीउपमा
न उत्तरतहांएसोमनिमई आलवालमेंथलजगु
लाब रविमंडलमें जलजकमल अरुरविमंजैसे
मंडलमेंराजे ताकोदेषिकवितकोमतिमोहिजा
त किंवाकविजैसेअपनीमतिकमध्यमेमोहितरहे
तहै सविसेपकहैं चंद्रमाविसेषसरदपूनंगाको सो

परवेषअसेषरेषमेंजेसोराजे किंवासविसेषअसे
षरेषजोपरिवेषतामैं असेषरेषजोसोम सविसेषको
अर्थ सदांकोनहीं सरदको जोअसेषरेषपरिवेष
असेषअसेषरेषातैंपरिपूर्णअसेष सबओरबहु
कोननाहीं ऐसोजोपरिवेषमंडल तामेंजैसेसुवेष
षोडसकलाकरपरिपूर्णचंद्रमासोहतहै सोमाम्र
जादसुषदानकी इहामंडलगोपिकाकस्मसोम जें
सवंकलोचनीनायकाको करकलितकंकनमें
सोभतहै वंकलोचनीकेकरकोविसेषनकहतहै
॥प्रगटजोप्रभातेजताकीजोललितसुंदरदुतिसोभा
तासोवलितजुक्तहै किंवाअरुनमनिकेलगेकंकन
कोविसेषनकीजिये तहांप्रस्न केतेजतसवर्नेन
करोचाहिए ताकीललितदुतिकैसे ॥ उत्तर ॥
प्रथम तेजलक्षन ॥ दोहा ॥ तेजसपरससु
उस्नहैभास्वररूपसुजान भाषतहैंजेमुनिसदा रा
षततर्कविधान त्रिधाहोतसोरामजूइकसरीरगो
वीर विषयसहितइमकहतहैंहेसबगुनगंभीर
जोसरीरतेजससुतोकहैंअजोनिजराम मारतंडके
लोकसोरहतसर्वसुषधाम चौपाई चक्षूइंद्रीते
जसदेषो वन्हिसुवर्णविषयइमिलेषो यातेंसोवर
नजोहैसोभीतेजसहै यातेंद्दृांतसनलीजिए सो
भामाम्रलीजिए काहेभास्वररूपतेजकोगुनहै ते

नकेगुन दोहा सपरसादिसुचित्रादगौत्रगद्रचन्द्र
सरूप एकादसगुननेजकेसमुगैभूपनभूप इति
नकेप्रकासे एसौरसिकलालनगोपिकानचौ मंड
लीमैराजनहै इहांमालोपमाअलंकार ८०॥मू०
अथअगतिसदागतिवर्ननं दो० अगतिसिं
धुगिरितालतरुवापीकूपबखान सदागती
नदपंथकोपवनसदागतिजान ८१॥ टी० सिं
धुसमुद्र गिरपर्वत तालनडागादि नरुवृक्ष वा
पीवाउली कूपकूवा येअगति सदानदीगंगाआ
दि नदसोनभद्रादि पंथमार्ग पवनएसदागति ८१॥
मू० रसिकप्रिया क० पंथनथकतमनमनोर
थरथनकेकैसोदासजगमगजैसेगाइगीतमें
॥पवनविचारचक्रचक्रमनचितचाढिभूतल
अकासभ्रमैघामजलसीतमें कौलोगथोपिर
त्रपुवापीकूपसरसमनारिविनकोनैबहुबात
रवितीतमें स्यानगिरिफोरिलोरिलाजतरुजाय
मिलैआपुहीतैआपुगामीज्योंआपुनिधिप्रीतिमें
॥८२॥ टी० उनिकहतनायककांसखीसोंनि केपंथ
मेंमनोरथकेरथनाहींथकत नहांपंथअगनिहैम
नोरथसदागति केसाकहनजैसेजगमगमारकोम
गराहजनममरनलगोहै कहत किंचांगैमजगनमें
मगकिंचाजगमगलोकांतिहै प्रमानजगमगमगि

बनजवाहिरअनूपतेरो सोजगमगरहतजैसंगी
तनमैंगायोहै तहाँरथकोरूपक पवनविचारच
क्र पवनजोचंचलसोई हैचक्र तापैकुलालचक्र
कीरीतितैंमनचढिकैं भ्रमतहै रथअरुरथीदोई
किंवाचक्रदीवेकेलिये भूतलआकासमैंफिर
त तीनोकालघामजलसीतविषैं यहवपुसरी
रकबलौंथिरराषे॥ वापीकूपसरतलावसमान
अर्थबांधकैं हरिकरूविगरबहुवासरनामदि
नवितीतकिये ग्यानरूपोगिरपर्वततांकोंफोर
लाजरूपीतरुवृक्षतोरकैं आपनेतैंजायकरमिले
हैं आपगानामनदीकीरीतितैं आयुनिधिजोसमु
द्रहैप्रीतमतामैं ६२॥ मू० अथदानबर्ननं॥ दो०
हा गौरिगिरीसगनेसविधिगिराग्रहनको
ईस चिंतामनिसुरवृक्षगोजगमाताजगदी
स ६३॥ टी० गौरीपार्वती गिरीसमहादेव गनेस
विधिब्रह्मा गिरासरस्वती ग्रहईससूर्ज गोकाम
धेनु जगमाताजानकी जगदीसईस्वर किंवाजगर
नाथ ६३॥ मू० रामचंद्रहरिचंद्रनलपरसरामदु
षहर्न केसोदासदधीचपृथुवलिसिविभीस
मकर्न ६४॥ टी० प्रथमदोहामैंदिव्यदिषाए दु
तीयदिव्यादिव्य ६४॥ मू० भोजविक्रमादित्यनृप
जगदेवरनधीर दानिनहूकेदानदिनदंद्रजो

तबलवीर ८५॥ टी० यादोहामें आदिअप्रकृत
ज्ञारै ८५॥ मू० गौरीकोदानवर्नन॥ पावकफ
निविषभस्मसुपहर पवर्गमयपमान देतजु
हैं अपवर्गकोपारबतीपतिजान ८६॥ टी०
हरपवर्गमयदेहैं पवर्गमैं पकारादिपावकअग्नि
फनीसर्प विषजहर भस्मविभूत सुपर्य्यंकमाला
पहनेशिवकेपासमेंहै देतहैं अपवर्गमोक्ष पार
बतीकेपति प्रश्न इहांगौरीजकेदानमैं महादेव
कोवर्ननकहैं उत्तर अर्द्धांगीहैं यातैं प्रश्न पार्व
ज्ञानकोकहाअर्थ उत्तर तुतान प्रश्न यामैं महा
देवकीनिंदाभई अरुगौरीकोदानभीनहीं नहीं
ऐसोअर्थ बैठेमैंजोमहादेवहैं तिनकोपार्वतीनें
शनिआदिअनेकसुपदप तिनानकोकियापार्व
तीकैआपपतिहोकर अपवर्गमुक्तिदेतहैं गनि
मेंपवर्गनाहीं अथवापार्वतीजो अर्द्धांगीहैं यातैं
तैंमोक्षदेतहैं ८६॥ मू० महादेवकोदानवर्नन॥
क० कौंपउठोआपपतितपनहीनापचढा
सीरीयोसगिरगतिभई रजनीसकौ अनहून
ऊचोचाहैअनिलमलिनमुपलागरहीलाजम
नमानीदसबीसकौ छविसौछवीनौनलका
तीमैंछपाईहरिछूटगईदानछबिकोटहूनै
तीसकी केसोदासनैकोकालकारोहैहू आपा

कालसुनतश्रवनबकसीसएकईसकी ॥ ६७॥टी· यहमहादेवकोदानहै महादेवकाहूरा वनादिसौंकही कैएकवस्तुमांगलेहु सोसुनके समुद्रकाँपउठो अर्थमेरो सूषबोनजाने माँगले यगो अथवामेरोरत्नलैलेगो तपनजोसूर्जेताको तापचढी कैयह रजनीश्वरहै हमारोश्रंनउदयन माँगे किंवाअस्वमांगेगो किंवाजलकषेनवषेन सोरोसरीरकीगतिरजनीसचंद्रमाकीव्हैगई कै हमारोसुधा किंवालोकनलेलेय किंवाश्रौसधी सबहनकहावे इत्यादिजानिए वेदसास्त्रपुरा नादिकमैंअग्निमुषनीचोहै अर्थमलिनमुषधू ममलिनहै किंवामुषनीचोसोचमेंहोजात यज्ञ मेहमारोअधिकारमिटाय आपनमांगलेय ला गरहीहैलज्यामानोबीसमनकी लक्ष्मीकोहरि नैं छातीमैंछपाई लक्ष्मीनमांगै तैंतीसकोटदेव तातिनकी दाननाममदसोताकीगतिछुटगई अर्थइंद्रासननमांगे अरुकालजोहैसोभीस्याम व्हैगयो हमैंबंदीषानेमें डारनोनमाँगे यहएक बकसीसतैंऐसेदानीहैं याकवित्तमें आनकोदा नहोयतोअत्युक्तकहिए महादेवकेदानमैंतोसु भावोक्तिहै यामैंउत्प्रेक्षाअलंकारभीहै ६७ ॥मू· गनेसकोदानवर्नन क· बालकमृनालनज्यों

ारडारेसब कालकठिनकरालजेअकालदं
दुषकों विपतहरतहठपद्मिनीकेपात
मपंकज्यौंपतालपीतपठवेकलुषकों दूर
कलंकअंकभवसीससतिसमराषतहैके
दासदासकेवपुषकों सांकरेंकीसांकर
सनमुषहोतहीतेंदसमुषमुषजोवेंगजमु
मुंषकों ६८॥टी० कठिनकरालजोअकालदंड
हैताकोगनपति तोरडारतहैं कैसे जैसेहाथी
बालकमृनालतोरडारतहै जैसेहाथीकोवाल
पद्मिनिकेपातकोंफारडारै तैसेहीविपत्तिको
रडारतहैं अर्थातदरलेतहैं कीचकोहाथीने
पातालमेंपठवैतैसहींकलुषजोपापनिनकोंप
तहैं दूरकरैहैंकलंक अंककमरीरकोकैसे जो
भवजोमहादेव ताकेसीसकोजोससि अर्थात
लंकित किंवादुरकेकलंकअंकभरसंभारको
पनेसीसकेससिसमान राषतहैंदासकोवपु
रताकों संकटकीजोजंजीरहै ताकेसनमुष
तहीदसमुषनामदसाननरावन ताकेमुषकिं
दसमुषब्रह्माविष्णुमहेसतिनकेमुष ब्रह्म
विष्णुयामेंकाहेमेंजानेंजाय दसमुषरावन
रूढहै अरुइनमेंनरूढनजोगरूढ आहरावन
यौगिकहै उत्तर बालकमृनालनज्यों मृनाल

बालक ब्रह्मासर्बकालमैंजैसेंअकालदीहदुष
कौंतोरडारत तैसहींगनेस अरुबीनामपक्षीता
केपतिविस्नुजेसैं हरतहैंपदमिनीकेपातसमान
कलुषकौं अरुपंकजैसेंगजपातालकौंपठावैहै
तैसेंइहांकुलुषमैं द्वैद्रिष्टांतजानिए अरुभवसि
वससिको कलंकदूरकरभालमैंराषत ऐसेंदास
केवपुषसरीरकौंराषत यहदसमुष प्रस्न याही
मैंदसमुषकोअर्थभयो एकमुषसब्द अधिक अ
रुगजमुषमैंगनेसकोमुष इहांएकमुषअधिक
तहांऐसोअर्थ दसमुषमुषजोश्रीरामतेजोहत
हैं गजमुष मुषकौंकेगनेसकोमुषसबकोईमानि
हैअहममानिहैंतो इहांमुषमुषकोभावभिंनहै
यातैंलाटानुप्रास ६८॥ मू॰ विधिकोदानबर्ने
नं॥ क॰ आसीबिषराकसनदैयतनदैपता
लसुरननरननदियोदिब्यभूनिकेतहै थिरचर
जीवनकोदीनोवृत्तकेसोदासदैवकहैंऔर
काहूकोऊकहाहेतहैं सीततोइतेजवाय
आवतसमयपायकाहूपेननांघोजायऐसो
बांधोसेतहै अबतजबकबजहांतहांजा
नियतविधिहीकोदीनोसबसबहीकोदेतहै
॥६९॥ टी॰ याकवित्तमैंत्रिकालमैंविधातादानी
हैं औरनाहीसोदेषावतहैं आसीविषसर्प प्रमा

न आसीविषोविषधरश्चक्रीव्यालसरीसृपः इत्य
मरः औराकसऔदैत्यदनुकोपातालदियो जी
विकाकेहेतु सुरदेवता ताकोदिवआकासदि
यो प्रमान योदिवोद्भूस्त्रियामभ्रंव्योमपुष्करमं
बरं इत्यमरः नरमनुष्पताकोभूमि दई याम
निकेतघरदियो अन्यथिरचरकोजीवनवृत्तिद
ई थिरवृक्षादि चरजीवपक्षीआदि सीत तोयज
लादिक समयपायआवत आनसमयमैंनाहीं
ऐसीमजोदवांधी औरकोईकहादैयगो तीन
कालमैंविधाताकोदियोमेव सबकौदेतहैं भा
विकअलंकार ६९॥मू॰ गिराकोदानवर्नै॥
वानीजगरानीकीउदारताबपानीजाइ ऐसी
मतिउदितउदारकौनकीभई देवताप्रसि
द्धसिद्धरिषराजतपवृद्धकहिकहिहारेसब
कहिकाहूनालई भाभीभूतवर्तमानजगत
वपानतहैंकैसोदासकैहूंनवपानीकाहूपै
गई बरनैपितुचारमुषपूतबरनैपांचमुषना
तीबरनैषटमुषतदपिनईनई ७०॥टी॰॥बा
नीजोब्रह्माकीवेटी गनेसकीपत्नी कहूंपुराननमैं
विस्नुपत्नीभीहै परंतुगिराकोदानदैताकोकह
त कैवानीजगतकेराजाकीरानी ताकोउदारता
बपानबेकोउदितकौनकीमतिभईहै देवताआ

दिकभीहारेयहप्रसिद्धजाहिरहै नकहिलई तीन
कालसबबषानतहैं पैयाकोबषाननभयो पितुब्र
ह्मा पुत्रसिव नातीषडानन इनसबबरनी तथापिन
ईनवीनरही बिसेषोक्तिअलंकार ७० ॥ मू० सूर्जेको
दानवर्नेनम् ॥ क० बाधकविविधिव्याधित्रि
विधआधिकआधिवेदउपवेदविधिवंदनवि
धानहैं जगपारावारपारकरतअपारनरपूज
कपरमपदपावतप्रमानहैं ॥ पुरुषपुरानकहैं
पुरुषपुरानेसबपूरनपुरानधुनिनिगमनिदान
हैं भोगवानभागवानभगतनभगवानकरि
बेकौं केसोदाससाँचेएकभानहैं ७१ ॥ टी० बा
धकइति विविधतहाँव्याधिसरीरसौंहोय सोआ
धिभौतिक आधिदैविक अध्यात्मिक एव्याधि आ
धिमानसीव्यथा ताकेनासकर्त्ता वेदअरुउपवेद
वंदनविधानहै वेदमैंअरुउपवेदमैं इनकीवंदना
कोविधानहै अर्थगायत्रीमैंसूर्जेकीअस्तुतिहै किं
वासंसाररूपजोमनुष्यकोबंधनहै ताकोबधनास
ताकीजोविधानक्रयाहै जिनकौं भाषावारेदकार
धकारकोअनेकअस्थलमैंएकमानत अरुजगपा
रावारसमुद्रताको पारकरत अरुपूजकपरम
पद अर्थपरमपदकोप्रातकरतहैं अरुपुरुषपुरा
नेहैं यहपुरानेप्राचीनपुरुषकहतहैं अरुपूरन

पुरानभीकहत निगमवेदभीकहत हैंभागमुचचा
नहैं अरुभागवानभी भागनामहैमकोसमैंज्ञानको
महात्मानामजसरूवपराक्रम श्रीधमैईस्वर इननैं
नामहैं एसवजाकोहोंहिंभगतनको भगवानक
हिवेकोएस्वजे चानकरिवेकोंमूलेभगवानहैं य
हपहिलाभगवानकोअर्थ ज्ञानमैज्ञानमहात्म्य
पराक्रमरहैसोदूसरोभगवान ईस्वरकह्यो भाग
वानुभानुएसोभीपाठहै भानुकिरन इहांकाव्यलिं
गअलंकार ७१॥ ॥मू० श्रीरामजीकोदानव
र्नन पूरनपुरानअरुपुरुषपुरानपरिपूरनव
तावैनवतावैऔरउक्तिको दरसनदेतजि
न्हैंदरसनसमुझैननेतिनेतिकहैंवेदछोडिभे
दयुक्तिको॥जानियहकेसोदासअनुदिनरा
मरामरटतरहतनडरतपुनरुक्तिको रूपदे
हिअणमाहिगुनदेहगरिमाहिभक्तिदेइम
हिमाहिनामदेइमुक्तिको ७२॥ ॥टी० श्री
रामजीकोदानवर्नन॥संपूरनगननेंश्रीरामजीप
रिपूरनहैं नहांगुननलक्षन दोहा रहतसुभाव्य
यदुव्यक्तनिर्गुनकर्मसुहीन॥ताहीकोंगुनकहत
हैंरामसुनोपरवीन॥पूरुषपुरानजोब्रह्मादिकमा
रकंडेआदिकबतावतहैं सचैचराचरमैव्यापक
सहरूअर्थ ताकोलक्षण अधिकदेसमैहोनसेआ

पककहिएसोय न्यूनदेसमैंव्याप्यभूज्यौंद्रव्यत्वक
विलोय रमतीतिरामः स्याईउक्तिनैंकहतहैं आन
उक्तितैंनाहीं किंवा नाहीवतावतदूसरीउक्तिकौं
जिन्हैंदरसनश्रीरामदेतसोदरसनसास्त्रकौंनाही
समुझत किंवाआनदरसननाहींसमुझत रामही
मयदेखतहैं हेमकोसमैंदरसननामसास्त्रश्राध
मैकोहै अरुनेतनेतयहनहीयहनही भेदजुक्ति
कौंछांडिकैरामकैसेहैं प्रमान द्रव्यसुगुनकहिक
मेपुनहैसामान्यविसेष वोसमवायअभावजोसा
तपदारथलेष द्रव्यनहीगुननहीकर्मनहीइत्यादि
यहकोईआनहैं किंवाद्वैतअद्वैतविसिष्टाद्वैत य
हभेदजुक्तिकौंछाडतहैं यहज्ञानकेकेसोदासरा
मरामरटतरहतहैंपुनरुक्तिदोषकौंनाहीडरत॥
अंन्यमैंपुनरुक्तिदोषराममेगुन फेररामकैसोहैं
कैजाकोरूपपासानादिदेषिजोध्यानकरैतोअणि
मासिद्धीकीप्राप्तिहोय अणिमासिद्धीवारेकौंको
ईदेखतनाही गुनजोहैंसोगरिमाकौंदेय वाल
मीकादिरामायणपाठकरैतोगरिमासिद्धिप्राप्ति
होय बहुतगरूहोय अरुनामजोहैसोमोक्षदेय
जोजपैसोमुक्तिहोयजाय पुरानपुरानतैंजमकअ
लंकार ७२॥ ॥मू० पुनः जोसतजहकरैक
रिइंद्रसौंसोप्रियताकथिपुंजसोकीनी ईस

दईजुदसपदससीससुलंकविभीषनपैसहीं दीनी ॥ दानकथारघुनाथकीकेसवकोव रनैंअसअद्भुतभीनी जोगतिऊरधरेतन कोसुतोऔधकेकूकरसूकरलीनी ७३ ॥

टी० जोप्रियतादुलार सोजनकरैइंद्रकौकरी ॥ सोईप्रियताकपिवानरसौंकरी ईसमहादेवजो रावनकौंदससिरदयेतैंदई सोइंलंकाविभीषन कौंएसहींदई एसोअद्भुतदानरघुनाथजीको ॥ जोगतिऊरधरेतानकोमोक्षचयवाभीसूकरादि कननेपाई ७३ ॥ ॥मू० परसरामजीकोदा नवर्ननं ॥जोधरनीद्विजनाक्षत्रीवरजत्रव रादछिडायलईज जाकेलियेमनभागयभे भवपारयजीवनवीजवदेज ॥मानवदानव देवनकेजुतयोवनकेहूंनहाथभईज सातो समुद्रनमुद्रितरामसुविप्रनवाअनेकद ईज ७४ ॥टी० नाभमिकोद्विजन्यासनवहूंरान ववरश्रेष्ठजोयज्ञचागदजूनेंनिनसोछीनलई॥अ रुजाकेनिमित्तसबसनजुगादिनेंअनेकभागयभ ये भवसंसारमें अरुपारथराजा वाअर्जुनेनेंजीव नकेवीजनेंवोडेंदे अर्थबहुतजीवमारे प्रस्न जो वनोअरुदेवदानवगोदिकमेंगए इहांजीवनसी वोजतेंकलोबोडे उत्तर बहुतजीवमारधमेंआये

किंवाजे मृतहैंतिनविषैं अनेकजीवउत्पन्नभये॥
मानवमनुष्यादिके जोबसतैंहायनभई सातसमुद्र
तैंमुद्रित सोश्रीपरसरामजूनेकईबारविप्रनको
दईमहादानीदृढकियो यातैंकाव्यलिंगअलंका
रहै ७४॥ ॥मू॰ बलिकोदानवर्ननं॥ कैटभसो
नरकासुरसौंपलमैंमधुसोमुरसोजिनमारो॥
लोकचतुर्दसकेसबरक्षकपूरनवेदपुरान
बिचारो॥श्रीकमलाकुचकुमकुममंडितपं
डितदेवअदेवनिहारो॥सोकरमांगनकौंब
लिपैकरतारहूकेकरतारपसारो ७५॥ टी॰ब
लिकोदान कैटभकौंनरकासुरको मधुकौंमुरकौं
इनकोपलमैंमारो फेरकैसोहै चौदहलोकरक्षक
हैं पुरानगावतहैं अर्थासवंदनाकरतहैं श्रीलक्ष्मी
जीकेकुचकी केसरिजासौंलगीपंडितदेवअदेवदे
षेहै सोईकरभिक्षामांगनहेतुकरतारब्रह्माकेब
नावनहारनेपसारे ७५॥ ॥मू॰ इंद्रजीतको
दानवर्ननं॥ कारेकारेतमकेसेप्रीतमसुधा
रेविधिबारबारडारेगिरिकेसोदासभाषैंहैं
॥थोरेथोरेमदनकपोलअतिफूलेफूलेडोलैं
जलथलबलथानसुतोनाषेहैं॥ घंटाघनना
तरुननातघनेघूंघुरनभोंरभननातभूमप
तिअभिलाषेहैं॥दुर्जनदरिद्रदीहदलनवि

दारिदै कौं इंद्रजीत हाथी पै हथ्यार करता पै है॥
७६॥ टी० इंद्रजीतकोदान याकवित्तमैंकहूं इंद्र
जीत पाठहै कोई पोथीमैंअमरसिंहपाठहै कारिका
रेवीपसाहै तमअंधकारकैसेप्रीतम मालिकमृ
धारेहैंविधाताने प्रस्त तमअंधकारकीउपमाके
सैं काहैकैजोतमहैसोद्रव्यनाहीं यहतोतेजको
अभावहै औरगजजोहैसोतेजअछितस्याम रहत
है यातैंउपमानहीन प्रमान दोहा छितिअपतेज
सुवायुनभकाल अहुरदिकराम कहतआतमाम
नसहितनएनवद्रव्यसुधाम द्रव्यकहीनवआपवर
दसमतुकिमतमनाहि नीलरूपपुनगमनजोक्रिया
रहतदहिमाहि गगनादिकनपंचहैंतिनमेंरूपन
होय वायुपरसगतिरूपहैभास्वरतेजनयोय वारन
सुक्लनसीतहैगंधपरसनिनभून यातैंनमजुतद्रव्यम
वकहीपाँचकरहून अबसुनियेनवद्रव्यहैंदसमन
कनहूंहोय हैअभावजोतेजकोतमकहियततहैसो
य उत्तर यहमतन्यायसास्त्रको अरुदहांकवि
प्रौढोक्तिहै सोहाथी केसबने आगेकहेहैं अंजनगि
रतम गजवरननमें किंवातमनाम राहुकेर्थातम
मित्र गिरपर्वततताकोवारवारडारेहै पोरियोरमद
वारेहै अर्थप्रथममदआयेहैं डोलैहैंजलयलमभा
नखहा रूनरसो तिनकोनाथैंहैं किंवाथानमामम

हादेव स्थाणू रुद्र उमापतिः इत्यमरः तिनकेसुतगने
सतिननेअपनेबलनाखेहैं नामडारेहैंजिनमें भूष
नादिजुक्तिदेषिकें भूपराजनकौंजिनअविलाषेना
मचाहवारेकरे कविकोजोदारिद्रदुरजनवैरीताको
जोदलताकेदलबेकौं नासकरिबेकौं हाथीजोहैसो
ईहथ्यारबनायराषेहैं इहांअकारनतैंकारजप्रगट
कियोयातैंचतुर्थविभावनाअलंकार औवरनातो
मुष्यहीहै ७६॥ ॥मू० वीरबलकोदानवरन
नं॥पापकेपुंजपषावजकेसबसोककेसंष
सुनेसुषमामें झूठकेझालरझांझअलोककै
आवतजुथ्थनजातजमामें॥भेदकेभेरबडेड
रकेडफकौतुकभोकलिकेकुरमामें जूझतही
बलवीरबजेबहुदारिदकेदरबारदमामें ७७
॥ इतिश्रीहिविधभूषनभूषितायांकविप्रिय
यांटीकायांसामान्याअलंकारवर्ननंनामष
ष्ठमःप्रभावः ६॥ ॥श्री॥टी० इहांमरसियामें
रूपककरतहैं कैवीरवरकेजूझतदारिद्रकेदरबा
जेदमामेंबजे पापकेपषावजसोकरूपजोसंषहैं
सोअच्छीतरह बाजेनेसुनेअरु मिथ्याकेझालरअ
लोककेझांझअलोकनामकलंकआयबजेजुथ्थन
तेनजानेजमाबहुतमें भेदकाहूसौंविरोधकरदे
नो भेदकेभेरबजे भेरनामनगाडाडरकेडफबजे

ऐसेकौतुकयोकलिमें ७७॥ ॥स्वस्तिश्रीमहाराजाधि
राजकासिराजश्रीमहाराजईश्वरीप्रसादनारायणस्य
आज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीस्वरात्मजे
नसरदाराख्यकवीस्वरेणविरचितेकासिराजप्रकासिकायांक
विप्रियायांटीकायांसामान्याअलंकारवर्ननंनामअष्टमःप्र
भावः॥ ८॥ ॥ श्री ॥ मू॰ अथभूमिभूषनव
र्ननं॥ दो॰॥ देसनगरवनवागगिरिआश्रमस
रितानाल॥रविससिसागरभूमकेभूषनरितुस
बकाल १॥ टी॰ अथभूमिभूषनवर्ननं॥ देस नग
र वनजंगल बागबगीचा गिरिपरबत आश्रमग्र
ह सरितानदी तालतालाब किंवाताल रविसूर्जस
सिचंद्रमा सागरसमुद्र रितुषटरितु अरुसबकाल
तहाँभूमिलक्षणं॥कवित्त॥सोहैभूमिकारनसरीर
त्रैपसरीर दंडीतिषयसरीरदोष जोनिनअजोनिराम
जोनिजसीदोषकैं जरायुज औअंडजादि प्रथमअल
प्य दुती नागादिकमुख्यधाम सुर्कायअजोनिन
मैंस्वेदज औउद्भिजादिकसदेस आदि तरुगुल्मादिक
रूपकाम नारकीअजोनिगंधनरमेंप्रमान कूदकम
मादिसंकरकीभयमैंनभाषीस्याम यहजोभूमिदी
नाकेयेभूषनहैं यहहमारीक्रियोन्यायनामसबदै १॥
मू॰ अथदेसवर्ननं रतनपानपसुपक्षिवसुव
सनसुगंधसुदेस॥नदीनगरगढवरनियेभाषा

भूषनदेस २॥टी० अथदेसबर्नेनं रतनजवाहिरताकी षान देसमेनाहीहैतथापिबरनिये पसुगऊआदि पसु पक्षी किंवाकृष्नसुक्लपक्ष वसु धन किंवाजल किंवाम नि वसुआठ प्रमान वसुतोयेधनमढी वसनवस्त्र सुगंध अतरआदि सुंदरदेस नदीनगर गढइत्यादि कहूंदान मानभीपाठहै २॥मू० आछेआछेअसनवसनवसु वासपसुदानसनमानजानवाहनबषानिये लोगजोगभोगभागबागरागरूपजुतभूषननभूषितसुभाषा मुषजानिये सातपुरीतीरथसरितसबगंगादिककेसोदासपूरनपुरानगुनगानिये गोपाचलऐसोगढ राजामानसिंहजूसेदेसनकीमनिमह्रू देसमहिमानिये ३॥टी० आछेआछेभोजन वसनवस्त्र वासब्राह्मणादिकनको वसुधनकोदान जनपालकीआदि वाहनअस्वादि योगसंजोग भोगतियादिकनकोसंजोग संजोगलक्षन दो० अप्राप्तनिकोप्राप्तिताताही कहतसंजोग त्रिधाताहिबरनन करतजेजानतमुनिलोग सेलसेनसंजोगजोप्रथमकर्मतेएक मेषउभयकेजुद्धमें दुतीदुकर्मजनेक जोकपालतरुयोगतें घटपटकोसंजोग ताहित्रिसीमसबकहतहैं जेजानतकविलोग किंवायोगबहुतसाधतहैं भूषनगहनाताकरकेभूषितहैं सुंदरवार्त्ता पुरीआदिकनकेपुरानगुनगावतहैं किंवाजोपुरानबाँचतहैं सोगावतहैं यह सातपुरी प्रमान अजोध्यामथुरामायाकासीकांचिअवं

तिका पुरीद्वारावतीचैवसप्तैतेमोक्षदायकः सरितगंगा
दि गोपाचलग्वालियरऐसोगढराजामानसिंहसोंहैवा
सर्वदेसजोहैतिनकोमनमध्यदेसमहीप्रथ्वीमेमानियै
३॥मू० अथनगरवर्ननं॥दो०॥पाईकोटअटापु
जावापीकूपतडाग वारनारिअसतीसनौवरनौं
नगरसभाग ४॥टी० पाईपरिपा कोटसहरपनाह अ
टाछत धुजापताका वापीबावली कूपइनारा तडाग
तलाव वारनारवेस्या प्रमान वारस्त्रीगनिकावेस्याह
पाजीवाम्मसाज्ञै असती कुलटा सतीसुकिया ऐसोनग
रबरनौं ४॥मू० जथा कवित्त चहूँवोरबागबनमान
हुसघनघनसोभाकैसीसालाहंसमालासीसरितब
रऊंचेऊंचेअटनपताकाअतिऊंचीमानोकौसक
कीकीनीगंगपेलनतरलतर॥आपनेंसुपनआगेनिं
दतनरिंदऔरघरघरदेषियतदेवतासेनारिनरकै
सोदासत्रासजहाँकेवलअद्रिष्टहीकोवारोएनग
रओरओडछेनगरपर ५॥टी० चारोवोरबागकैसेहैं
मानोसघनअनिमेघहैं अरुनदीकैसीहैमानोसोभाको
सालाहै किंवाहंससालासी अटनपरऊंचीपताकाऐसीसो
हैमानोकौसकविस्वामित्रकोलियाहैगंगापेलनहैपेलत
रलचंचल अरुद्वितीयपाठमेंष आकासतामेंपेलत त्राप
जामेंअद्रिष्टकमेंहीकोहैं अर्थसबसुषजोहैं सोअद्रिष्ट
आवत सुषकाकहावै दुषकाकहावै ताकोलक्षन दो०

काम्यधर्मतेहोतहैसुषसबजगअनुकूल अधरमजन्य
सुदुष्यहैचेतनकोप्रतिकूल त्रासअद्रिष्टतेंसबधर्महो
करतइहाँव्यंग ५॥मू० अथबनबर्नेनं दो०॥सुरभोइ
भवनजीवबहुभूतप्रेतबहुभीर भिल्लभवनव
ल्लीविटपदववनबरनहुधीर ६॥टी० बनबर्नेनं
सुरभी गऊ इभहाथीकेबालक भूतप्रेतबहुतभयकारी
कोलभिल्लकेघर बल्लीवेलि विटपवृक्ष दवदवारि ६॥मू०
जथा कवित्त केसोदासओडछेकेआसपासती
सकोसतुंगारननामबनबैरीकोअजीतुहै बिंदुकैसो
बंधुबरवारुनवलितआघकरभबराहुबहु भिल्ल
केअभीतहै ॥ जमकीजमातसीकजामवं
तजूकोदलमहिषसुषदसुच्छरिच्छनकोमी
तहै अचलअनलवतसिंधुसोसरितजुतसंभुकै
सेजटाजूटपरमहुनीतहै ७॥ टी० तुंगारननाम
जोबनहैसोताकोबैरीनहीजीतिसकत बिंधाचलप
र्वतकैभाइवरश्रेष्ठबारनहाथी बाघ करभऊंटइ
त्यादिबहुततरहके वराहसूकर भिल्लकोलकीभ
यहरत जमकीजमातहैकेजामवंतकोदलहै का
हेमहिषनामभैसारिच्छभालुजामेबहुतहैं फेरकैसो
हैअचलअनलवतयातैंसिंधुसोहै सिंधुकैसोहै अ
चलपहार अनलबाडवाअग्नि सोयोभीहै अचलच
लनाही अरुबंसअग्नि फेरसरितसहितहै यातैं

संभुकेजटाजूटसोहैपरमपुनीनहै ७॥ ॥मू० गिर
वर्नन दोहा तुंगशृंगदीरघदरीसिद्धसुंदरी
धात सुरनरजुतगिरवरनिथ्यैओषधनिर्झरपा
त ८॥ टी० तुंगऊंचीहैशृंगसिषर बडीहैदरीकं
दरा सिद्धहै सुंदरीअपसराहै धातुलोहाआदि सु
रदेवता नरमनुष्य जुत ओषध औषधी निर्झ
रझरनापात नामपतनहोतहै ८॥ मू० जथा क०
रामचंद्रकीनोतेरोअरिकुलअकुलाइमेरके
समानआनअचलधरीनमे सारोसुकहंसपि
ककेकीओकपोतमृगकेसोदासकहूंहयक
लभकरीममेडरेकहूंहाटटेगनेपीरपटछूटेफू
टेहैंसुगंधघटअवतनरीनमें देषियतसिषरसि
रप्रतिदेवतासेसुंदरकैसरूपहसुंदरीदरीनमे
॥९॥ ॥टी० रामचंद्रनेतेरोकुलअकुलकीनाअर्थम
वेराक्षसमारे यातेमेरकेसमानहै आनउपमामें
नाहीधरी सारोआदिपक्षीबहुतहैं मृगाहैं यांहै
जामे करभहाथीकेबालकहैं नरीपहारकेनीचेकी
भूमि अरुकहूंहाटटेपरेहैं अरुरातेपीरेपटछूटे
परेहैं अर्थजेजीकेदरनआदिकमारेतिनके फिया
संभोगवासतियनके सुगंधकेघटफूटगयेहैं कहो
लुप्तोत्प्रेक्षाअलंकार वृक्षनतेमनचारहाथिननें
मदनाहीचुवतमानोंकाहूनेंसुगंधकेघटफूटगये

हैं गंधकाकहावे गंधलक्षन सोरठा घ्रानग्रास्तजो गंधसोउपकारकघ्रानको सुरभअसुरभितसंध दोप्रकारकोजानिये यातैंइहाँसुरभितजानिये अरुदरीनकंदरानमैंसुंदरअपसराकुंवरसहितहैंसो देवताकेसमानमालुमहोतहै ॥९॥ मू॰॥ आश्रम वर्नन॥ दो॰॥ होमधूमजुतबरनियेब्रह्मघोष मुनिवास सिंहादिकमृगमोरअहिइभसुभ वैरिनिवास १०॥ टी॰ आश्रमवर्ननं॥ होमजुतधूमजुत ब्रह्मघोष बेदघोषसब्द मुनिनकोवाससिंहआदि मृग मोर अहिसर्प प्रमान सर्पःप्रदाकुर भुजगोभुजंगोअहिभुजंगमः इभमरः इभहाथी सुभसुंदरहैं किंवासुभसपेदहैं एसबअविरोध १०॥ मू॰ जथा कवित्त केसोदासमृगजबछेरूचोषैंबाघनिनचाटतसुरभबाघबालकवदन है सिंहनकीसटाऐंचेकरभकरनिकरसिंहनकेआसनगयंदकोरदनहै॥ फनीकेफननपरनाचतमुदितमोरक्रोधनविरोधजहाँ मदनकदनहै बानरफिरतडोरेडोरेअंधतापसिनरिषिकोनेवासकैधौंसिवकोसदनहै ११॥ टी॰ इहाँसंदेहाअलंकारतेंश्लेषकरतहैंकैरिषिकोनेवासजहाँरहै कैसिवकोघरहै रिषनेवासपक्ष मृगजमृगकेबालक बाघिनकोदूधपियतहैं

सुरभीगऊ व्याघकेबालककोबदनचाटतहै सिं
हिनकेसटानकेसरनाकोपेचतहै कलभकरहा
थतैंनिकरसमूह अरुसिंहकेआसनपरगयंद
हाथीकेदाँतपरेहैं फनीसर्पनाकेफनपेमुदित
आनंदहोयकेमयूरनाचतहै जहाँकोधविरोध
नाहीहै अरुमदनाही अरुमदनकामदेवसोभी
नाही वानरकपितेफिरतहैंडारे एकरेअंधनप
सिनकों ग्रसोरियकोनवासदेसिवसदनपक्ष मृ
गनामपसुमात्रको नाकेबालकबाधिनकोचोष
नहैं अरुसुरभीनांदिया व्याघसोपरसपरवदन
चाटतहे गयंदगनेसकेदमननिकरकेदेषीके
वाहनको आसनपरहैफनीसिवकोसर्पनाकेफनपर
षडाननकोमोरनाचतहै जहाँकोधविरोधनहीं
है अरुमदनधतूराकोमदनाही किंवाकाममद
नाही वानरनामदरी हरीनामजलगंगाजलरूप
डोलतहै अधतापसीनदीहै समयहअर्थकि
योपरंतुइहाँवाच्यसिद्धांगव्यंगहै एकतैंदोइम्र
र्थजानिये ११॥ ॥मू॰ नदीवर्ननं॥ दो॰ जल
चरजलजुतजलजतटजजकुंडमुनिवास न्हा
नदानपावननदीचरनोकेसोदास १२॥ टी॰
नदीवर्ननं जलचरनकादि जलजुत-जलकुंड मु
निनकोवास स्नान दानतैंजुतपावनवरनोश्री

नदीबरनो १२॥ ॥मू० ओडछेतीरतरंगिनिबेत
बेताहितरेरिपुकेसबकोहै अर्जुनबाँहुप्र
बाहुप्रबोधतरैबाज्यौंराजनकोरजमोहै॥
जोतजगैजमुनासीलगैजगलोचनलालित
पापविपोहै सूरसुतासुभसंगमतुंगतरंगत
रंगिनिगंगसीसोहै १३॥टी० ओडछेकेतीरन
जीक किंवाओडछो हैजाकेतीरमे ऐसीतरंगिनी
नदीवेत्रवतीताकोतरै ऐसोरिपुसत्रुकौनहै कै
सोहैरेवासीहै रेवानर्मदा अर्जुनसहस्रवाहु ता
कीबाँहतेंताकोप्रवाहप्रबोधितहै अर्जुननामपार
थपारथनामराजा अधिकजगायो जलकोलक्ष
न बरनसुक्करसमधुरहैसरससीतसुषधाम॥
साँसिद्दकसुद्रवत्त्वहैजलमेजानोराम॥चौपाई
गोरसनाजुअजोनिसरीरा ॥ विषयसरितपति
आदिगम्भीरा जलियसरीरअजोनिजजानो र
हतबरुनकेलोकप्रमानो॥ सोअर्जुनकेसोहेरा
जाजेहैं तिनकीरजमोहनहार अर्थरावनादिक
जातेहारगयेहैं नदी अर्जुनपालकेवंसकेराजा
तिनकीवाँहुतेप्रवाहप्रबोधितहै जोतिदीप्तिजा
कीजागतहैयहलोकोक्तिहै जमुनासीजागतहै
जमुनाजगलोचनदिवाकरतातेंलालितदुलारी
नदीसवेजलकीसोभादेषतदेरहत फेरगंगासी

गंगातुंगऊंचीतरंगहैजामें अरुअरसुताजमुना
कोभयोहैसंगम सोनदीकोभी किंवाहरचीरजो
बुंदेलातिनकीमुताजामेंअस्नानकरतीहै १३॥ ॥
मू० बागवर्ननं॥ दोहा॥ललितलतानरु
वरकुसुमदौ॥किलकलरवमोर॥ बरनबा
गअनुरागमयभ्रमनभ्रमरचहुंवोर १४॥ ॥
टी० अथबागवर्ननं॥ललितलताइति ललित
लताजामेंफुकिरहीहै तरुवृक्षचरश्रेष्ठहैं यमान
वृक्षो महीरुहः सखी विटपो पादपस्तरुः॥ रु
लमरः कुसुमपुष्पादि कोकिल कलरव मयूर
अनुरागमयबरनो फिरतहैभवरचहुंवोरमें १४
॥मू० सहितसुदरसनकरुनाकलितकम
लासनविलासमधुवनमीनमानिये सोहै
जेअपानरूपमंजरीओनीलकंठके सारस
प्रगटअसोकउरआनिये॥ रंभासोनदंभबो
लेमेनुघोषाउरवसीहंसफलेसुमनसमव
सुपहानिये देवकेटिमानसोप्रवीनरायज
कोबागइंद्रकेसमानतहांइंद्रनीनजानिये
॥१५ ॥टी० देवसभापक्ष सुदरसनचक्रतिनस
हितहैंकरुनासोकलिततसेकमलासनवेठेहैंजा
विषैंब्रह्मा यमान धाताब्जयोनिर्द्रुहिणोविरिंचः
कमलासनःइत्यमरः मधुजोवनताकेमीतकामहै

जहां सोहै हैं अपर्णानाम पार्वती रूपकीमंजरी प्र
मान अपर्णापार्वतीदुर्गामृडानीचंडिकांबिका इत्य
मरः किंवारूपमंजरी अपसरा नीलकंठमहादेवते
कैसेहैं असोकजिनकेहृदयमेसोकनाहीं औरंभा
सोसदंभहोकेबोलैहैंमंजुघोषाअरुउरवसी प्रमान
घृताचीमेनकारंभाउर्वशीचतिलोत्तमा इत्यमरः हंस
सूजेफूलेहैंसुमनकमल किंवाजिनकेसुंदरमनहैं
किंवाहंसकोदेषकैंसुमनदेवताफूलेहैं प्रमान भा
नुर्हंसःसहस्रांशुस्तपनःसवितारविः सुरदेवताकोना
मकहा प्रमान सुपर्वाणःसुमनसस्त्रिदशाविबुधासुराः
इत्यमरःबागपक्षसुदर्सनवृक्षसहितहै किंवाफूलसहि
तगुलाबकोनामस्थलकमलस्थलकमलभीहै करुनावृक्ष
कलितललितहै अर्थासंजुक्तहै औकमलासनतडा
गमधुनाममधुरहैजाकोवननामजल किंवाकमल
हैंजाविषैं औआसननामकोईवृक्षहैताकोविलास
है किंवामधुवनमथुराकोवन ताकोमोतपहवन
है सोहतहैपत्रहीनरूपमंजरीऐसेफूललगेहैं कैप
त्रनाहीदेषिपरत तापैनीलकंठपक्षीअथवा मयूर
सोहतहैं किंवा अपनो अमरलताकोरूपसोभितहै
हेमकोसमैंमंजरीतिलकवृक्षकोनामहै प्रमान तिलको
इस्त्रीरूपभेदइत्यादि॥ सुमन किंवारूपमंजरीसदासु
हागिनफूलहैतापैनीलकंठमोरसोहतहैं प्रस्न॥सदा

सुहागिनमोरकोमारनहीसहत उत्तर तहाँनीलकं ठपक्षी अरुतिलकरक्षपै अरुप्रगटभयोहै अशोक वृक्षजाविषैं प्रसू रक्षप्रगटेकहिबोकाहे वहनी सदाकलितहै उत्तर तहाँप्रगटजामेंपुष्पभयेहैं सोपुष्पउरमेंवसोहै रंभाकेराहै प्रमान रंभामोचांसु गतफलाइत्यमरः कदंववृक्षसोहैहै हंसकोासमेरंभा नामवाँसकोहैतासोंवाँसुरीलीजिये अनुनासिकनि रनुनासिकस्वरकोधर्महै इहागुरुलघुहोनहैं हंस नामपटकोकहैहैं इहाँकारनकाजैनानिये प्रमान चौपाई कारनवाकारजकेसाथ एकसंदारथमध्य सुगाथे जथातंतुसंजोगसुपटमें तंतुरूपपटरूपसु ठटमें पक्षीकोनामसगवैहै मेधहूनमें चातकसैस गर्वः वासुरीसोमधुरगर्भनामसन्दतेंतुधोयाकोकिल बोलतिहै सोउरमेंवसीहै॥ किंवाकोहै काहूकोदेपाय तहै रंभाकेराकेपासमंजुघोषाकोहंसहंगकेसाहंस बोलतहै अच्छीनरह हंसपक्षीहैंगदाँसुदरनारहके जहाँसुमनपुष्पफूलेहैं सोसबकेसुभदेनदारहैं ॥ सोदेवकेदेमानसोप्रवीनरायजूकोवागहै तहाँइं द्रकेसमानइंद्रजीतविराजमानहैं १५॥ ॥मू॰ ता लवनैनं॥दो॰॥ललितलहरपगपुहुपपसुगं रभिसमीरतमाल करभकेलपंथीप्रगटजलच रवरनहतताल १६॥ टी॰ तालवनेनं॥ ललितहैल

हरजामे षगपक्षीहैं पुष्पकमलादि पसुसुरभीइत्या
दि समीरआछेपवनहैं तमालवृक्षउपलक्षनहै औ
रवृक्षभीजानिये करभहाथीके बालककेलकरतहैं
किंवापंथीमनुष्यकेलकरतहैंप्रगटजलचरजुक्त
१६॥ ॥मू० क० आपुधरैमलऔरनकेसब
निर्मलकायकरैचहुवोरै पंथिनकेपरितापह
रैहटिजेतरुतूलतनूरुहतौरै देषहुएकसुभा
वबडोबडभागतडागनिकोविधिधोरै ज्यावत
जीवनहारिनकोनिजबंधनकैजगबंधनछो
रै १७॥ ॥टी० कोईकाहूसौंकहतहै आपुकेदो
यअर्थ आपुजलधरेहैं यातेंऔरनकेनिर्मलकरदे
त किंवाआनकोमलआपुधारनकरिलेत वाकोनि
मलकरिदेतहैं पंथिनकेपरितापथकेदुंषकोहरत
हैं सोतीनितरहको अध्यात्मक भौतिक. दैविक सूर्ज
अग्निइत्यादिसौंहोय .सो आधि· दैविककोईके
कटुवचनअनादरइत्यादिसौंहोयसोभौतिक रोगा
दिकसौंहोयसोअध्यात्मिक जेतनूरुहफूल किंवा
निकटतरुफल अरुहेबडभागीहेधनी बडभागस
ब्दोअर्थकोदिषावतहै एकधनी दूसरोबडगयोहै
घटगयोहैजिनकोभागहेधनीअभागेएकसुभावब
डोदेषहु तडागनको जीवनहारिनज्यावत ज्यावतजी
वंनकोदोअर्थ जोजीवनदूजोजल जोअपनेकोवां

धेताकोभवबंधनछोडदेत १७॥ ॥मू० अथस
मुद्रवर्ननं॥दोहा॥तुंगतरंगगम्हीरनारतनज
लजबहुजंतु॥गंगासंगमदेवानयजानादिम
नअनंत १८॥ ॥टी० समुद्रवर्ननं॥ तुंगऊंची
तरंगहैजाविषैं औजाविषैंगंभीरताहै किंवागहि
राहै रत्नादिबहुतहैं जलजमीनादि किंवाजलजम
छरी इत्यादिबहुतहैं गंगाकोसंगमभयोहै जाविषैं
देवतियाहैंजाविषैं देवतामंदिर जानवाहनइन
केऔविमान पुनअनंतहैं किंवाअनंतनारायनसो
वतहैं १८॥ ॥ ॥मू० दो० गिरिवडवानलवृक्ष
बहुचंद्रोदयतेंजान पन्नगदेवअदेवग्रह ऐ
सोसिंधुवखान १९ ॥टी० गिरिपर्वत वडवान
लअग्नि अरुबहुतवृक्ष पहैंजानें पुनचंद्रोदयनेबढ
तहैं पन्नगसर्प देवता अदेवादानव किंवामनुष्य
दनकोग्रहहैजाविषैं १९॥ ॥मू० जथा भूमधरै
धरनीधरनीमहकेसवजीवरचेविधिजेते॥
चौदहलोकसमेततिन्हेंहरिकेप्रतिरोमनमैं
चितचेते॥सोवततेजसुनेइनहीमैंअनादि
अनंतअगाधहैएते॥अद्भुतसागरकीगतदे
पहुसागरहीमाहसागरकेते २०॥टी० सब
नागभूमिधरैहैं भूमिभूमिधरपहार औब्रह्मानेंजि
तनेजीवविरचेहैं तिनसहितऔचौदहलोकसमे

तहरिविस्नुकेएकएकरोममेंबंधेहैं तेइनमेंनिद्रा
लेत फेरकैसेहैं अनादिहैं अनंतहैं अगाधहैं जि
नकीथाहनहीहै तौसागरकीगतिअद्भुतहै तौकि
तनेसागरमेंसागरहै विस्नुके रोमवारेतेनाहीगने
जात सेसधरनीधरे धरनीअनेकधरे यातेंकारन
मालाअलंकार बरनातोमुषहै २०॥ ॥मू० पुनः
भूतविभूषितअम्रतहूविषईससरीरकोपा
षविषोहै हैकिधोकेसबकस्यपकोघरदेव
अदेवनिकोमनमोहै॥ संतहियोकिबसेह
रिसंततसोभअनंतकहैकविकोहै चंदननी
रतरंग तरंगितनागरिकोऊकिसागरसोहै
२१ ॥टी० पुनः यहसमुद्रहैकेईसमहादेवकोस
रीरहै सिवकोसरीरकैसोहै विभूतिभस्मजिनकेत
नमेहै पियूषअमृतविषभीपानकियो ग्रुदोकरि
देत समुद्रकैसोहैविभूतिऐस्वर्यरत्नादिजामेहै॥
पियूषनामअमृत अमृतमोक्षदेनहारजिनकोवि
षजलहैअंगनिकासेतेंग्रंथवृद्धि बहुतहोत पाप
कोभीदूरकरैहै कस्यपकोघरहैकिसमुद्रहै कस्य
पकेघरमेंदेवतारहत अदेवदैत्यराक्षसादिरहत
ऐसहीसमुद्रभीजानिये संतकोहृदयहैकिसमुद्र
है संतकेहृदयमेंभगवानरहतहैं समुद्रमेंसैनक
रतहै संतकेहृदयमेंअनंतलक्षिमन समुद्रमेसेस

जू कौ है नागर अर्थात् है कैसो नागर अर्थात चंदनवृक्ष
ऐता के सुगंधकी तरंग उठत है समुद्र कैसो है जा
के तटमे चंदनवृक्ष है किंवा हरिचंदन सो उज्ज्व
ल जाको नीर है क्षीरसमुद्र को व्याकर्ममें पूर्वपद
उत्तरपद कोलोपभी होत है हरिकोलोप भयोचं
दन रह्यो औ नीर न रंग सो लरंगिन कुरुत है २१॥ ॥
मू० अथ सूर्जोदयवर्ननं॥ दो०॥ सूर उदयतें
अरुनता पयपावनता होय॥ संपवेद धुनि
मुनिकरैं पंथचलैं सबकोय २२॥ टी० सूर्ज उ
दयकालमें अरुन होत है जल पवित्र होत है सं
पवेद द्विजनको धुनि मुनि लोगकरत हैं पंथमें लोगच
लत हैं २२॥ ॥मू० कोककोकनदसोकहत
दुषकुवलयकुलटानि॥ तारा औषधि दीपस
सि घू घु चोर तमहानि २३॥ टी० कोक चकवाकौ
कोकनद कमलनिनको मोद आनंद होत है कुव
लयकोई कुलटा इन्हें आदिनको दुष प्राप्त होत हैं औ
ईस कुचजात है तारागण तारा औषधी चंद्रमा
घुघू उलूक औ चोर तमअंधकार इनको नाम होत है
॥२३॥ ॥मू० कोकनदमोदकरवदनमदनाकि
पोद समुषमुपकुवलयदुषदाई है रोषकअ
साधुजन साधनत मोगनकी उदित प्रबोध बु
द्धि केसोदास पाई है॥ पावनकरनपयहरिप

दपंकजकीजगतमेमनुजगमगदरसाईहै
तारापतितेजहरतारकाकोतारककिप्रगट
प्रभाकरहीकीप्रभुताईहै २४॥ टी० यहमद
नकामदेवताकोवदनहै कैप्रभातकरसूर्जेहैं म
दनकोवदनकैसोहै कोकजोसास्त्रताकोनदस
ब्दताकोमोदआनंदकरनहारहै सूर्जेकैसेहैं को
कनंदजोकमलताकोमोदआनंदकारीहैं दसमु
षरावनहैकैसूर्जेहैं रावनकैसोहै कूजोपृथ्वीता
कोदुषदाईहै किंवाकूपृथ्वीताकोवलयमंडलता
कोवेष्टितकरैहैं किंवाकुवलयसमुद्रताकोदुषदा
ईहै तिनकेनिकटमेबसोहैअनेकदुषदेतहै किं
वाताकेप्रसंगसोसमुद्रबांध्योगयो सूर्जेकैसेहैं सू
र्जेकुवलयनिसमैंफूलनहारेकमलकोदुषदेतकिंवा
दसमुषकुवलयदसदिसनकुवलयजोसत्रुहैतिन
कोदुषदातासूर्जे किप्रबोधबुद्धिहै कैसूर्जेहैं बुद्धि
कैसीहै असाधुजनकीरोधकहै असतमेगुनसोध
न किंवाजाहिबुद्धिकेरोकनहार असाधुजनहैंफेर
सूर्जेकैसेहैं असाधुचोरविभिचारीनकेरोधकहैं त
मअंधकारताकेगुनजोहैंताकेनासकर्ताउदयसमय
मे यहकैसोदासनेजानोहै हरिकोपदपंकजहै किं
वासूर्जेहैं हरिकोपदपंकजकैसोहै जाहिचरनकम
लकोपयगंगातिनसबकोपावनपवित्रकरतहै सूर्जे

कैसे हैं जलकोपावनपवित्रकरतहैं सूर्जकेउदयका
लमेंजलपवित्रहोतहै यहपुराणवचनहै जगतसंसा
रमेंराजामनुहैकोसूर्जेहैं जगतमेंमनुराजा हरगाइ
याकोअर्थ मनुराजाभयेहैं ताकोपुत्रयहमनुष्यहैं
तिननेमनुस्मृतिकरीहै जगतकेपथकोगनिदेषा
ईहै सूर्जेकैसेहैं कैजगकेजेमगराहताकोदेषावन
हार किंवाजगमगराह कहूजगमेमानिये कहूंए
भीपाठहैसोअच्छोनाही रामचंद्रहैंकिसूर्जेहैं राम
चंद्रकैसेहैं तारापतिबालीताकोनेजहर्ता अरुता
रिकाराक्षसीताकोतारेमोक्षदियो ।। सेरामचंद्रके
हाथकोप्रभुताहै है हांकमभंगदोषहोतहै अथ
मतारिकापाठवालीचाही तहांतारकतारनहार
हुस्त्रीपुरुषदोउंको यहक्रमसुर्जेकैसेहैं तारापति
चंद्रमाताकोतेजहरनवाले अरुतारिकाजोताराग
णताकोतारकोसोकरकिरनकोप्रभुताहै २४॥
मू० चंद्रोदयवर्ननं ॥ दोहा ॥ कोककोकनदवि
रहतमभानिनिकुलटानदुष्य चंद्रोदयतेंकुव
लयनिजलधचकोरनसुष्य २५॥ टी० चंद्रोदय
वर्ननं ॥ कोकचक्रवाक कोकनदकमल इनको दु
षहोतहै तमअंधकारकोनास मानिनीनायका अ
रुकुलटाइनकोदुष चंद्रकेउदयतें कुमुदनीको समु
द्रको चकोरको इनसबकोसुषप्रापतहोतहै २५॥

मू० केसोदास है उदास करकमला करसौं सोष कप्रदोषतापतमोगुनतारिये अमृत असेष के बिसेष भाव बरषत कोकनद मोद चंड षंडनबिचारिए॥ परमपुरुषपद्विमुषपरुषरुषसुषद समूह बिदुषन उरधारिये हरि हैंरी हियेमैंन हरन हरनि नैंनी चंद्रमानचंदमुषीनारदनिहारिए २६॥ ॥टी० नायकाविरहिनी तासौं सषी पूछै है कै हे नायके तेरे ह्रिदयमे हरि हैंन हीहैं तेरे ह्रिदयमे हरन हैंन हीहैं नायका हैनहीहै चंद्रमाहैनहीहै हेचंदमुषीनारदहैनहीहै हरिपक्ष केसोदास कहत हैं रामचंद्रको जो कर है सो उदास है कमला जो लक्ष्मी ताकी आकरषा न समुद्र तिनतैं काहे वास्ते सोषक सोषनेके वास्ते समुद्रको जो उतकर्ष दोष ताको जो तापताको सोषनेके वास्ते तमोगुन राक्षसादि तिनको तारो है अमृत जो देवता असेष कहिये बहुत ताके ऊपर विसेष भाव बरषत हैं प्रमान अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा बिबुधा सुराः कोकनद सो मोद है कमल को चिन्ह जाके करमैं है जाके करमैं कमल को चिन्ह सो चक्रवर्ती यह सामुद्रिकमे लिषो है चंड कहिये प्रचंड किंवा समुद्र प्रचंड ताको खंडन हार हैं फेर रामचंद्र केसे हैं परमपुरुष हैं तिनके पदतैं जो विमुष भयो है समुद्र

किंवा रावन ताके ऊपर रूप है रामचंद्र को रूप काके उरगुं
जे समूह है तिन पै सुग्रीवादि प्रमुख दहै केरराम चंद्र कैसे
हैं जिनको उर वेदूषन को है किंवा नीक है दोष पर
दूषन ताको उरभेधारन कियो है ऐसे हैं हरि हरिनप
श०५ हरिन कैसे हैं केसोदास कहत हैं जिनकोकर
उदास है कमलाको आकरषान सदर मे अर्थासम
हरमेनहीजाते हैं दोषी जे उनको मारेंहैं तिनको भु
धाजनित ताप दूरकरनहारे तमकहिये कोधला
के गुनलरत इत्यादि जिनतारेंहैं अमृतअसपजो
चंद है ताके ऊपर विसेषभाव चरपनहारहैं का
विसेषभाव चंदवाहन हैं जहाँ इच्छा सोतहैं नहीं जा
त हैं किंवा रापनहार यह अर्थ कोकना दओ गान
ताहीतें है मोद आनंद जिनको चंडओ पचंड ताके
षंडन हारहैं परम पुरुष केपद तें हैं विमुष कापुरु
प दे पतनभागजात हैं परुषरूप के परषनहार हैं किं
वा परम प्रुरुष कोंदे साधुता के पदतें जो विमुष भये
हैं असाधुताको परपत हैं साधु केपास जात हैं अभा
धु केदेपत भागजात हैं कालेमारिगो समृहन हर
हैं तोगुष पावें विदूषन पंडित लोग हैं ते उरमे धारेंहैं
तिनके गुन अथवा चर्म ऐसे हरन है हरनिर्मीको
का पद्ध केसोजो विस्नु सो राधाके दास हैं कर
जो हैं सो कमलको आकरषान जवाहि राहि हरन तेउ

हासहै अर्थासबहुतमोलकेगहनापहिरेतेंसोभा बहुतनाही होत ॥ वे० आपसोभामानहैं गहना तैंभलेनाहींलागत विहारी पहिरनभूषनकनक केकहिआवेइहिआन दर्पनकैसेमोरचादेंहदि षाईजान अरुउतकरषजोकामतापहै तामदको अंधकारताकोनासनहारीहै किंवाक्रोधादिक कोनासकरनहारीहै अरुअसेषजोअमृत तासहस हावभावबरषावतीहै अथवाजाकेअधरमेंअमृ तहैसोवहअमृततेंविसेषहै तातेंराषतिहै फेरा धाकैसीहै कोकजोकामसास्त्रहै ताकेनादजोसब्द है ताहीमेहैमोदजिनको चंडजोहैप्रचंडताताको षंडनहारहै अर्थासक्रोधनहीजानति परमपुरुष जोअपनोपतितातें विमुषभईहैंजोनायकाविभि चारिनीआदि तिनपैरहतिहैपरुषरुष प्रस्न इहां एकजागाक्रोधनहीहै दूसरीपरुषरुषमहाविरोध कोदेकहैसोनाही उत्तर उनसेआपुउदासीनरह तहैकिंवाजे अपनेपुरुषकेपदतेंविमुषभईहैं ति नकेऊपरपरुषहै जेनायका अपनेपतिके रुषतें किंवापासहैं ताकेऊपरसुषकोसमूह बरषतहै अ र्थात्तिनकेऊपरबहुतसुखहोतहै किंवाआनसुष दहै समूहहै वेहूषनपतिव्रतकोजानतीहै किंवा जेनायकापतिव्रतकोजानतीहैंतिनकोआपउरमे पा

रनकरतहे ऐसोहरननेनीनागवाहे चंद्रमापक्ष ॥केसोदासकहतहैं जाकेकरजोकिरनहैंतासोंकमलकोआकरषानउदासरहैहें फेरचंद्रमाकेसेहैं प्रदोषजोसंध्याकालताकेजोदीपनाकोसोपनहारहै अर्थात ताकेतापकोनासकारदेतहे तमजो अंधकारताकेजोगुनताकोनासकरनहारहैं गुनकाकहावे दोहा रहतसुआश्रयद्रव्यकेनिर्गुनकर्मसुहीन ॥ताहीकोंगुनकहतहैंसुनोरामपरवीन द्रव्यकाकहावे भू अप तेजसु वायु नभ काल चहुरदिक रामकहत आतमा मनसहित सुनवद्रव्यसुधाम प्रश्न द्रव्यकहीनवआपवरदसमसुकिमननना हि नीलरूपपुनिगमनजोक्रियारहतदाहिमाहि गगनादिकजेपंचहेंतिनमेंरूपनहोइ वायुपरसगति उस्न हे भास्वरतेजनपोइ वारनमकूनरूपहे गंधपरसविनभून यातेंतमजुतद्रव्यअबकहीपांचकर दून उत्तर अबसुनियेनवद्रव्यहेंदसमनकाचहोइ है अभावजोतेजकोतमकाहियतुहेसोइ विनातेजकेचसुनेग्राह्यहोततमराम अमपहगमनक्रियानकोदीपकपसरतधाम अमृतकेअसेपजोभावहे सोविसेषवरषनहारहै प्रमान विधुःसुधांशुःशुभ्रांशुरोषधीशोनिशापतिः कोकजोचक्रवाकाननकोनादसक्तताकोजोमोद आनंदचंद्रकाइप्रकनपच्चंद्र

ताकेषंडनहार किंवाकोकनदरक्तकमलताकोजो
मोदप्रफुल्लितहोनोचंडभयोहै ताकोषंडनहारहैं
अर्थासमुदितकरदेतहैं परमपुरुषजोमहादेव
तिनविषैंहैपदजिनको तिनकेपदतेंजोविमुषभ
एहैंपुरुषताकेऊपरपरुष अरुजेविमुषनाहीहैं
ताकेऊपर रुषहैं किंवाअपनेपुरुषसेजे विमु
षहोतिनायकामानिनीतिनपैपरुषरुषहै जेअप
नेपतिकेसनमुषहैंतिनपैसुषहै फेरचंद्रमाकैसे
हैं समूहहै तारागनपरिवारसहितउदयभयेहैं
वीकहियेदोयदूषनहैजाको एकघटनोबढनो ए
ककलंक किंवाविदुषपंडितउरमेधारनकियोहै
एकसषीकहीहरिहैं दूसरीबोलीहीनहै तीसरीहर
ननैनीनायका चौथीबोलीकिचंद्रमा पैंचईबोली
किहैनायकेनादनिहार नारदपक्ष॥केसोदासक
हतहैं जिनकेकरहाथकमलाजोलक्ष्मीतिनतेंउदास
है धनवालेकेपासजातधनकीइछानाहीकरतहैं
किंवाजाकोकरकमलाजोवारांगनाताकेकरसोउ
दासहै वारांगनाकोपानीग्रहननाहींकरतहैं हेम
मेआकर नामसमूहको औषानिको किंवाजाको
करकमलके आकर समूहसेउदासहैलक्ष्मीको
निवासजानके नहीछुवतहैं उतकर्षजोतापहैपा
पअपराध तासोंभयोहैजोतापदुषताकोसोषनहार

हैं औगुनसतोगुनतमोगुनकोदूरकरैहैं तमोगुनो
जोअज्ञानीहैताकोतारैहैं असेषकहिये संपूरनजो
अमृतमोक्षसालोक्यादिपाँच प्रकारतामें अविसे
षभाववरषतहैं जाकेकरेमोक्षहोयताकोंप्रिया
वतहैं जैसेध्रुवकोंप्रियायो कोकनादजोगानता
सोहै मोद किंवाकोकजोकामशास्त्रताकोजोनादस
ब्दतासोंउपजैजोमोदआनंदताकोचंडकहियेउग्र
पंडनकोअर्थपंडनकरनवालोतासकर्नोहियद्
विचारियेकुबेरकेपुत्रकोश्रापदियोहै फेरकैसेहैं
परमपुरुषजोपरमेस्वरताकेजोपदचरन तिनसो
जोविमुषभयेहैंपुरुषतिनसोंपरुपकठोरहैं ता
कोश्रारकूपीनजरदेषतहैं भगवानकेजोसन्मुषहैं
ताकेरूपरमुपकेसम्हहैं अरुभगवानसेजोसन्मु
षविदुषपंडितलोगहैंताकोउरमेंधारनकियेहैं
किंवापंडितनारदकेगुनधारनकियेहैं अथवाना
रदकेधारैहैं किंवाभगवानसोजोसन्मुषहैंसोहै
विदुषहैं औरअज्ञानहैं सबवानजानिकेउनविषै
उरकोमनकोधारैहैं एसेंजानिये ७८॥ ॥५०॥

अथवसंतवर्नन दो० वरनिवसंतसुपुष्प
अलिविरहिविदारनवीर॥ कोकिलकलर
वकलितवनकोमलसुरभिसमीर ७७॥ ॥
दो० अथवसंतवर्नन वसंतोमोवरनिये सुंद

रपुष्पकेसहित अरुअलिभवराकेसंजुक्त विरही
जेनायकाहैंतिनकेविदारिबेकौंवीरहैसमर्थहै
किंवाविरहीविदारिबेकौंजाकेवीरसुभटजोधापु
ष्पअलिभौरा औकोकिलादिको कलसब्द अ
व्यक्तसोमधुरध्वनिसोकलितजुक्तहै किंवा को
किलऔकलरव कपोततासौं वनकलितहै जु
क्तहै कोमलमंदसुगंधसीतल समीरजोपवनहै
सो फैलिरहोहै २७॥ ॥मू० सीतलसमीरसु
भगंगाकेतरंगजुतअंबरविहीनवपुवासु
किलसंतुहै सेवतमधुपगनगजमुषपरभृ
तबोलसुनिहोतसुषीसंतऔअसंतहै॥ अ
मलअदलरूपमंजरीसुपदरजरंजितअसो
कदुषदेषतनसंतुहै जाकेराजदिसिदिसिफूलेहैं
सुमनसबशिवकोसमाजकिधौंकेसववसं
तहै २८॥ ॥टी० सिबकोसमाजहैकेधोबसंत
है सिवसमाजपक्ष सीतलहैसमीरसुभगंगाकेत
रंगसौं किंवासिवकेमाथेपैगंगाजीहैं सुभकहिये
आछोगंगाके तरंगसोजुक्तसीतलमंदसुगंधसमी
रपवनव हतहैं फेरसिवसहितसमाजकेसोहै
अंबरवस्त्रता करिकेहीनगात सिवकोवपुसरीर
जामैंवासुकीसर्पलसतहै सेवतहैंगजमुषगनेसकौं
मधुपभृंगीआदिगण तिनगनेसकेवचनसुनतसु

धीसंतहोतहैं किंवामधुनामक्षेममेंक्षीरको औ
जलको सिवसमाजक्षीरपानकरतहैं किंवाजल
पानकरतहैं ऐसेजेतपस्वीताकेगनसम्रहसेवत
हैं किंवामधुपदेवतासेवतहैं किंवागनेसपरभृ
तकार्तिकेयसिवकोसेवतहैं सिवकेचचनमुनि
संतसुरअसंतरावनादिरासम गदोहैसुर्गाहोत
हैं किंवाजेअसंतहैंते फेरकेसेहैं अमलअनव
हैं अदलपारवतीजुक्त अरूपमंजरीअपसरा
ताकेपदकीरजतें असोकहोयगयोहैसमाज किं
वाअमलनिर्मलहैं फेरिअदलकोहये अपर्नापार
वती प्रमान अपर्नापार्वतीदुर्गाम्रडाणीचंडिकां
बिका इत्यमरः सिवकेलियेतपस्याकरीतापवर
ससूपेपातपायकेपानकोभीत्यागकियोयातें अ
पर्नोनामभयो अथवारूपमंजरीकोईसपी किंवा
अपनोजोहैरूपकीमंजरीजाकेपदकोरजतेंरंजित
रंगेहैं असोकचोतगयोहैजाकोसोकऐसेसंतअ
संतहैं अपर्नोकोदेपै किंवा सर्गाकोदेपैदुपना
सहोइजाय सिवकेसमाजकेराजमेंदिसादिसामें
सुमनदेवताफूलेहैं गजोहैं वसंतपक्ष सीतलस
मीरपवनसीतलहैसुभसपेद गंगाकोकेतुधुजारं
ग ताके॥सुपेद॥अथवा रंग   जैसीपवित्रतागं
गाकेकेतकीहै हेमकोसमेंसीतलनामचंदनको

सीतलचंदनताकोजोपवनसोसुभअच्छोगंगाके
लहरिसोंजुक्तहै तैसहीअंबजोहै सोबौरसंजुक्तहै
रविहीनहै रविजोसूर्यहै तासोहीनहैं जिनकेतरे
अतिसघनपत्रवौरहै वपुजोहैसरीरवाससुवासु
कीलसतहै कापुष्पकोहारसबकेसरीरमेहै सेव
तहैंभ्रमरकेगनगजहाथीताकेमुषकोवसंतमें बहु
धाहाथीमत्तहोतहैं ताकेकपोलसोमदचुवतहै
औपरभृतजो कोकिलहैतिनकेबोलसुनिसुखीसं
तअसंतहोतहैं अमलतैंनिर्मलरूपमंजरी अदलप
त्रहीनसुसुंदर जेनायकातिनकेपाँवकेरजसों रं
जितजहाँअसोकवृक्षहै इस्त्रीपाँवसोमारैतबअ
सोकरंजितफूलतहै परंतुदेषेदुषनसेहै वसंत
केराजमें दिसादिसामेंसुमनफूलफूलतहैं २८॥॥
मू० ग्रीषमवर्नेनं दोहा तालेनरलसमीरसु
षसूषैंसरितातालाजीवअवलजलथलवि
कलग्रीषमसफलरसाल २९॥ ॥टी० ग्रीष
मवर्नेनं तातेगरमतरलचंचलसमीरपवनतासों
सुषसुषेहै सरितानदीओतालावसूषेहैं किंवाधा
नकोताल जीवअवलहोयरहेहैं जलथलके थोरेज
लदेषके ग्रीषममेरसालआमफलसहितहोयर
हेहैं २९॥ ॥मू० चंडकरकलितवलितवरस
दागतिकंदमूलफूलफलदलनकोनासहै॥

कीचबीचबचेमीनव्यालबिलकोलकुलदु
रदरीनदिनकृतकोविलासहै॥थिरचरजीव
नहरनवनवनप्रतिकैसोदासमृगमित्रव
तनिवासहै धावनवलितधनुसोहतनिपानि
सरसवरसमूहकिधौंग्रीषमप्रकासहै ३०॥
टी॰ कोलभीलकोसमूहहैकिधौंग्रीषमकोप्रका
सहै सबरपक्ष चंडहैकरहाथ किंवाचंडकोपभर
हैं वलितकोअर्थबलीहैंवनमेकरग अर्थजोचनमेच
लेताकोमारलेतहैं वलिनबलीहै रोक नहैंसदाग
तिको किंवावनमेफिरतरहतहैं किंवाकोईऐसो
अर्थकरत हैमकोसमें चंडनामजमदूतको प्रमान
कालोदंडधरश्राद्धोसमोचंडकमेचको इत्यमरः॥
चंडहैंदूत करकृत्तिनहैंकृपान सदाएभोचलनहै
बलसोंयुक्तहैं कंदमनीकंदताकोमृतननिफूलफ
लदलपत्रदनकोभीलश्रौदूनहोनोनासकरतहैं काक
सुरसोंसर्वत्रहोहैं अर्थजानिये कीचकोहैनानेकोन
वचनहैंअर्थोसजलसूपजातहै व्यालसर्पबीलमें
बचैहैं कोलसूकरताकोकुलसमूहदुरदरीयाघदरी
कंदरानिवचनहैं चातुरनिकसेनोमारजारहैंनकोल
ये ऐसोदिनमेंकरनहैविलास किंवादिननामभाण
मैंविपनिकोभीहैविपनिकोकरनेकोगाकोविलासहै के
रकैसेहैंकोल थिर वृक्षादि चर चलनवालेजिनने

जीवताकोहरलेतहैं मारडारतहैं अनेकार्थ हेमको
समैं वननामजलकोऔघरकोभीहै केसोदासकह
तहैं वनवनप्रतिघरमैं मृगकेसिरस्रवतहैं वाहधि
रचुवतहै ऐसोजाकोनिवासहै धनुषकेबरजोरधा
वतहै औरकेमारिवेकेलिये हाथमैं धनुषबानसो
हतहै ऐसोसबरसमूह ग्रीषमपक्ष चंडनामतीव्र
कोभीहै तीव्रहैकरकिरनसूर्जकोग्रीषमसोंकलि
तजुक्तहै जामैंवलितहैसदागतिपवन कंदमूल
नामहेमकोसमैंनिकुंजको औहरिततृणकोफूल
फलनकोनासकरनहारो अरुकीचजोहैतामैंमीन
रहेहै तसजलमैंनाहीरहिसकतहै व्यालसर्प बि
लमैंबचैहै कोलभीलएदलकंदरामेबचैहै दुरदहा
थीएभी दरीकंदरामैंबचैहे ऐसोदिनकृतसूर्जको
विलासहै थिरकूपतालाव वृक्षताकेजीवनजलह
रैहैं अर्थात्सपजातहैं चरनदीनद अरुपसुऔ
पक्षिआदिताकेजीवनजलहरैहैं मनुष्यकेमुषसु
षावैहै वनवनप्रतिमृगसिरनछत्रश्रवैहै अवेब
रसनेकोअर्थनही मृगसिरतपैहैऐसोअर्थ धनुष
नामगेंडा सोधावतहैजलकीओर निपानभयेहैंस
र्त,डागजामैं धामवलितहै ऐसोग्रीषमहै ३०॥ ॥

मू० अथबर्षारितु दो० बरषाहंसपयानबक
बादरदादुरमोर॥ केतिककंजकदंबजलसो

दामिनिघनघोर ३१॥ ॥टी० अपचरपारनु
वरपाचरनहूहंसकेऐसोभीपाठहै तहांहंसकल
हंसयादेसकेजानिये चरपाहूसपयानएपाठहैसो
दामिनीविजुरी ३१॥ ॥मू० जथा भौहैंसुरचाप
चारुप्रमुदितपयोधरभूषनजरायजोतितडि
तडिलाईहै दूरिकरीसुष सुपसुषमासमैनैनैं
नअमलकमलदल दलितनिकाईहै॥ के
सोदासप्रवलकरेनुकागमनहरमुकुतसुहंस
कसवदसुपदाईहै अंचरवलितमतिमोहै
नीलकंठजूकोकालिकाकिवरपाहरषहिय
आईहै ३२॥ ॥टी०॥यहकालिकाहैकीवरपा
है कालिकापक्ष भौंहकैसीहैसुरजोजियकानना
कोचाँपकेसमान चारुकहियेसुंदरहैंप्रमुदितजु
देहैंकंचुकीकेभीतरहैंपयोधरकुच किंवाप्रमुदित
हैंमोदआनंदभरेहैं जडाऊकेजभूषनहैंताकोजो
तितडितासद्रिसहै कहूंतडितरलाईहै एकेतका
रपरयोहैतहांऐसोअर्थ जडाऊकोजोतिमैंतडिता
कोजोतिरलाईहै मिलाईहै सुषकेशमुषताकोता
सुषमाताकोदूरकरदईहैं किंवादूरकरतदई है मुष
तंसमीकीसोभा नैनकैसेहैं अमलजोकमलहैंमल
कोताकीनिकाईसुंदरताताकोदलीहै करेनुकाहा
थिनीताकेगमनहरनहारीहै अर्थातसद थिनीसेभी

मंदचलतहै हंसकहैंबिछियातिनतेंमुक्तभयेहैंजो
सब्दताकोसुषदाईहै प्रमान हंसकःपादकष्टकः इ
त्यमरः फेरकैसीहै अंबरवस्त्रतासोंवलितजुक्तहैं
श्रीनीलकंठमहादेवताकीमतिकोमोहतहैंऐसी
कालिकाहै बरषापक्ष भयोदैसुरइंद्रकोचाँप॥
भौहैंयाकोअर्थभूकीओरलग्योहै चारुसुंदरहैंमु
दितराजीभयेहैंपयोधरमेघ भूपृथ्वीताकोषनिकै
निकसेहैंवृक्षउद्भिजनामवृक्षकोहै भूमफोरिकैनि
करैहैं किंवाभूपृथ्वी ख आकास एनजरकवआव
तहैं जबबिजुरीदमकत अर्थबहुतअँधेरीहै किंवा
भूपृथ्वीताकोषनडारतहैओजरायडारतहै तडि
तरलाईयापाठमे चलिबेपरहै बरषानेतडितको
रलाईहैचलाईहै अरुससिकेमुषकीसोभादूरिभ
ईहै अर्थांससिचंद्रमाछिपगयोहै जामेनयजोनदी
सोनाहीहैमलरहित काजोजलसोमलसहितहै
नदीबरषामेंरजस्वलाहोतीहै दलदलहैपथरदब
जातत्रिनघासकाईबहुतजमीहै किंवादलफौज
ताकीजो निकाईसोभाताकोदलितकियोहै बरषा
मेंफौजषराबहोतहै काजोजलदासोंरेनुकाजोधुरि
प्रबलभईहैताकोगमननासभयोहै राजहंसकेस
ब्दमुक्तभएहैंनहीहैं बादरकोऔदादुरादिसब्द
सुषदाईहै अंबरआकासवलितवलीहै नीलकंठ

मयूरकीमतिमोहनहारीहै ३२॥ ॥मू० सरदरि
तुवर्नेनं दोहा अमलअकासप्रकाससमिमुदि
तकमलकुलकास॥पंथीपितरपयानन्टप
सरदसुकेसोदास ३३॥ ॥टी० सरदरितुवर्न
नं वेमलकोआकासहै ससिचंद्रमाताकोप्रकासभ
योहै मुदितभयेहैंकमल किंवाकमलजलकोभीना
महैसोस्वच्छकुसलसव किंवाहेममेंकुसलनामदेस
कोभीदेसप्रसन्नहैं कासकहियेघास पंथीराहच
लनवारे पितरपुरषा नृपराजापसवचलतहैं ३३॥
मू० विज्ञानगीता॥सोभाकोसदनससिवदन
मदनकरवंदेनरदेवकुवलमवलदाईहै
पावनपदउदारलसतिहैहंसमालदीपतिज
लजहारदिसिदिसिधाईहै॥तिलकचिलक०
चारुलोचनकमलरुचिचतुरचतुरमुपजगनि
सभाईहै अमलअंवरमध्यनीलपीनपयोध
रकेसोदाससारदाकिसरदसुहाईहै ३४ ॥ टी०
सारदासरस्वतीहैकिधौंसरदरितुहै सारदापक्ष॥
सोभाजोकविताकोसदनघरहै ससिवदनमदन
कोहै किंवाससिसोजाकोवदनहै हेममेंमदनाम
हर्षकोभीहै मदनकोअनेकनरदर्पनघोकोहै
किंवासोधेजोससिनेसहै वदनजाको पावनरमनु
पदेवजाकोवंदनहैं कुत्रेपथ्वीनाकेवलपगेहस्ता

ताकोवलदाता सुषदाता जोध्यावतहैतिनकोपाव
नपदउदारकरतीहै अर्थासकाव्यकरताहोतहैकिं
वाजोचरनपवित्रहैऔउदारहैसबकामकेदाताल
सतहैहंकजोबिछियाहैसोसोहतहैताकीमालापं
गति अथवाहंसजाकोवाहनहै मालाधारनकिये
हैपुस्पादिको ताकोदीप्तिफैलीहै जलजजोमुकता
है ताकोहारसोभतहै दिसदिसधाईहै कासबदिस
नमैंप्राप्तभईहै तिलकजोहैताकीचिलकदीसचाम्र
सुंदरहैं लोचननेत्रतामैंकमलकीरुचिहैकांतिहै
किंवासुंदरजाकेलोचनहैं स्वेतकमलपुंडरीकता
केसमानहै किंवाकमलआसनहैयातैं स्वेतकमल
मैंकांतिफैलीहै चतुरनामहेममैंचाटुकारकोभीहै
जोप्रियवचनकोकहैताकोनामहै ऐसेभक्तवचन
कहतहैं किंवाचतुरमुषब्रह्माताकीपुत्रीहै औजग
जीवभगवान तिनकेमनमैंसुहाईहै किंवाजगतके
जीवनकोजानिये एकसरस्वतीभगवानकीभीइस्त्री
है प्रमान एकाभार्याप्रकृतिमुखराचंचलाचद्वितीं
या इत्यादिकयोअमल वेमलको अबरवस्त्रतामे
लीनछपीहै नीलस्यामजुक्तपीनपुष्टपयोधरकुचकु
चकोअग्रभागनीलहै औअमलअंवरषीनलीनपी
नपयोधरएसोकहूँपाढहै तहाँऐसोअर्थकरिये अ
मलनिर्मलजोअंबर वस्त्रषीनमेहैतामैंलीनछपेहै

सामताजुक्तपीनपुष्टपयोधरकुच सरदारितपक्ष
सोभाकोसदनजोहैससिसोअपनोवदनसोभाया
नकीनोहै किंवामदनकामदेवताकेसमानताको
बदनहै मदनउद्दीपनकरैहै किरनजिनकीचंदैहैं
नरदेवराजाविजयहेतुवंदनाकरैहैं पचानकोलिये
कुवलयजोकमलिनीताकोसुपदाताहै पावनपद्
दारसुक्खहै हंसनकीमालाकिंवाकमलकोझारदिस
दिसमेंफैलीहै अथवाकमलजल तिनकोजोदसना
कोदैदीप लोचननेत्रकीरुचिहैकमलमें किंवाक
मललोचनकेउपजावनवारहैं जेचतुरहैंतिनके
मुषमेंभईहैनिर्मलकिंवाजगनेंचतुरजेप्रवीनहैं
लोगहैंतिनकोनिर्मलभईहै जोचारोदिसानाकेनृप
औरनाकरिकेरितुभाईहै फोरअमलअंबरआका
सहै फोरिनीलहैस्यामहैतामैलीनभयेहैघिलायग
येहैं पीनपुष्टपयोधरमेघजाहिसरदमें ३४॥ ॥
मू० हेमंतवर्ननं दोहा तेलतूलताम्बोलतिय
तापहरनरतिवंत दोहरनतिलघुद्योसगुन
सीतसहितहेमंत ३५॥ ॥टी० हेमंतवर्ननं तै
लतूलरूई तामोलपान तियद्वीतातापतोआगिन
कोसउंकोतापनोराजीवकी ओढोदिनसीतगातास
हितहेमंत ३५॥ ॥मू० जथा अमलकमलदल
लोचनललितगतिजरनमयोरसीलभीमदोरद

षकी चंद्रकनषायोजायचंदननला योजायचंद्र
निहारोजायप्रकितवपुषकी घटकोघटनजातघटनाघ
रीहूघरीछनछनछीनछविरविमुषमुषकी॥सीक
रतुषारसीतसोहतहेमंतरितुकिधौंकेसोदा
सतियाप्रीतमविमुषकी ३६॥ ॥टी० हेमंतरि
तुहै किधोप्रीतमसोविमुषभई हैनायका हेमंतकै
सीहै अमलजेकमलहैं ताकोदलकहियेपत्र तेजर
तहैं सीतकीभीततें लोचनकहियेरोचन स्त्रीको
नामहैताकीजोललितगतिगमन ताकौंजारत है क
मलआदिकौंदीहकहियेबडोदुषताभीरस हासमसी
तलसमीरहै चंद्रककपूरतैंसुगंधितजोभोजनसोना
हीषायोजात अरुचंदननहीलगायोजात चंद्रमान
हीनिहारोजात ऐसीप्रकितिवपुषसरीरकीहोगईहै
घटजोकलसताकीघटनारचनासोघटजातहै अ
र्थोसघटनाकुलालपरघटतजातहै घरीजोघरीहैसोघट
तजातदिनकी रविकीजोदुतिहैसोछनछनछीनहो
तहै सीकरजलकोकना जाकोओसकतहैंताको
तुषारबरफऐसोहेमंतरितुहै नायकापक्ष अमल
कमलजोहैताको दलपत्रतेसेलोचनहैंजाको औल
लितहैगतिजाकी बहुतउद्दीपनविभावकेहैं जा
सोजरतहैदेषके अथैइस्त्रीकेसंगसोबनेसोसीत
नाहीलगत जाकोदीहबडेदुषकीभीरसमृद्धिहै वि

रहिनीकोभीचंद्रकादिउद्दीपनभावतैंदुषदाईहै वि
रहिनीकीसषीसषीसौंकहतिहै जबसोविरहभयो
तबसोयाने वपुसरीरविषैऐसोप्रकितसुभावकियो
है यासौंचंद्रननलायोजानहै चंद्रमानहोनिहारोजा
नहै घटसरीरताकीघटना चेष्टाकियासोघरीघरी
मे घटतजातहै भोजनपानसयनइत्यादिघटेहै छ
नछनमेयाकोछबिछीनहोतहैरविमुषसुवर्णकोया
अर्थकीकोअर्थ कियोंसुषदनीवस्तुरही आछीवस्त्र
भूषनसुगंधसोयाकोरविसुषहै याकेओरदेषोनहीं
जातहैजेसरविकेमुषकीओरदेषोनहींजातहै आंषि
बरतिहैकिंवाजोकोचितरह्योसुषदाईथोसोगवि
मुषभईदेषिनहींजातिहै कहाहींसोकरैहैसीत्कार
करिकेतुषारबरफहोतिहै तुषारबरफसेहै इअंगहो
तहै असकहांस्वेदपसीनाहोयआवतहै सोसोह
तिहैऐसेयहअर्थ किंवाभीकजोस्वेदयंकासोस्वेद
मात्र देषिपरतसुषनहूतनाहीं किंवास्वेदसौंया
कीहतिहैमृत्युहै ठंढोपैंगरमहोयस्वेदमृत्युदसाहै
३६॥ ॥मू० सिसिरबर्ननं॥ दो०॥ सिसिरसरस
मनबरनिसबकेसबराजारंक नाचतगावत
रैनिदिनपेलतरहतनिसंक ३७॥ टी० अथसि
सिरवर्ननं सिसिरमेंराजाकिंवारंकतिनसबकेम
नसरसअनुरागजुक्तबरनिये नाचतेगावतेगा

त्रिभेदिनमें ३७॥ ॥मू० सरसअसमसरसरसि
जलोचनविलोकलोकलाजलोकलाधिवेको
आगरी ललितलतासुबाहुजानिजूनज्वानव
लविटपउरनिलगेउमगउजागरी॥ पल्लव
अधरमधुमधुपनिपीवनहीरचितरुचिरपि
करुतसुषसागरी एहीबिधिसदागतिवास
विगलितजालसिसिरकीसोभाकिधौंबारना
रनागरी ३८॥ ॥इतिश्रीकविप्रियायांभूमि
भूषनबर्ननंनामसप्तमःप्रभावः ७॥ ॥ ॥
टी० सिसिररितुकीसोभाहैकैधौंवारनागरीवेस्या
है सिसिरकेसोहै सरसरससहित असमसमना
हीं ओसरसिजकमलनैनीकोविलोकतहैं देषतहैं
सरसिजलोचनिकेसीहैलोककीजोलीकमर्जादा
औलाजयाकेमेटिबेकोआगरीनिपुनहै अर्थात्
सबकोईफा गकहतहै ललितभयेहैं जामेलता
सुबाहुतैंजानोसुबाहुपसारिचलेहैं वृक्षजूनपुराने
ज्वानप्रौढतें अर्थात्विटपनवीननवीनपत्रधारन
कीनेवृक्षनसेलतालपटीहैउत्साहसों उजागरीजा
हिरहै अरुपल्लवकेअधारमधुलगीहै जाने॥ अ
रु मधुपजो मधुपीवनहार ते पीवतहैं किंवा
पल्लवपत्र ताको मधुमाधुर्जेमधुपभवरताको
अधकहियेऊपरहोपीवतहैं भाषामैंअधरनामऊ

परको हीकोअर्थ हीकहियेहृदयसों रत
तहैराजीहोतहैं रुचिरमनोहरजहांपीककोकि
लकोरुतसब्दहै फेरसुषकोसागरहै दीहविधि
सिसिररितुहै सदागतिपवनचलतहैजाहिविषै
सोभाभरीफैलीहै वारनागरीपक्ष कोईकाहूसों
कहतहैऐसीसरसिजलोचनीकमललोचनीवेस्या
ताकोतूविलोकदेष ताकेलोचनकैसेहैं असमस
रकामदेवसेहैं अर्थातदेषतकमलसेलगकामस
रसे जाकेदेषतलोककीजोलीकहैलाजकीसोआग
रीलोपहोजातहै ललितलतासीजाकीबांहहैजून
वृद्धज्वानजुवाबालकअरुविटपगुंडासोहराकैसो
कोउहोपताके उरछातीसोंलगतहै किंवाललितल
तासीजाबांहुहैतेजानकरज्वानजूनबालतिनविटप
नमेंपलटती अर्थातबहुतभोगकरतीहै किंवाजून
वृद्धनहीहै जुवाहै जाकेबालजोकेसहैसो हेऽष कै
सी उरछातीमेंलगेहैं उमगकेउजागरीजाहिरहैपल्ल
वकेसेअधरताको मधुजेमघपीवनहारेपीवतहैं
सोरचतराजीहोतहैं फेरकैसीमनोहरमनहरनेवा
रीहैजाकोरुचि किंवापल्लवकोमधुसुधापीवतहैं
पिककेसेवचनबोलतहै रुतसुषसागरहै देनरहकी
गतिचालहैजाकी किंवापातरहकीगतिदसाहै वास
सुगंधजुरूजाकेवासवस्त्रगलितनछुटैहैं नरतनहीये

वतनिलज्जहै किवायातरहकौदृसासौंयाकोवसन है श्रागतिजाकेवस्त्रहै २७॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजधिराजकासिराजश्रीमदीस्वरीप्रसादनारायणस्यश्राज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीस्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीस्वरेणविरचितायांकविप्रियायांटीकायांवरनाख्यायांसप्तमःप्रभावः ७॥ श्री ॥ ॥

मू॰ राजःश्रीभूषनवर्नेनं॥ दो॰॥ राजारानीराजसुतप्रोहितदलपतिदूत॥ मंत्रीमंत्रपयानहयगयसंग्रामश्रभूत १॥ टी॰॥ अथराजश्रीभूषनवर्नेनं॥ राजाश्ररुरानीराजकुमार प्रोहित दलपति सेनापति दूतपियादा मंत्रीताकोमंत्र पयान चलनो हयघोडा गयहाथी संग्रामजुद्ध १॥ ॥**मू॰ श्राषेटकजलकेलपुनिविरहस्वयंवरजान॥ भूषितसुरतादिकनकोराजःश्रीहिवषान २॥** टी॰ श्राषेटकसिकारजलमेकेलकरनोसो जलकेल विरह स्वयंवरविवाह रतिश्रादिकरिकेभूषित ऐसोराजश्री २॥ ॥**मू॰ राजावर्नेनं दोहा प्रजाप्रतिज्ञापुंन्यप्रनपरमप्रतापप्रसिद्ध॥ सासननासनसत्रुकेवलिविवेककोरिद्ध ३॥** टी॰ राजावर्नेनं॥ प्रजाजुक्तबरनिये पुन्नजुक्त प्रनजुक्त बडोप्रतापीहोय सबकोईजानतहोय सासनजेनासैनासत्रुकोनासकरै बलविवेककोवृद्धबहुतहोय ३॥ ॥

मू० दोहा दंडअनुग्रहधीरतासत्यसूरतादान॥कोसदेसजुतवरनियेउद्यमछमानिधान ४॥ टी० सामदामदंडभेद अनुग्रहधारी धैर्जवारो सत्यवारो सूरहोय दानीहोय उद्यम छमी ४॥ ॥

मू०॥ नगरनगरप्रतिघनहीतोगाजेघोरदैनकी नभीतभीतअघमअधीरकी औरनगरीनप्रतिकरतअगम्यागौनभावैव्यभिचारीजहाँचोरीपरपीरकी॥ सासनकोनासनकरताएकगंधासनकैसोत्रासदुर्गनहीदुर्गतिसरीरकी दिसिदिसिजीतपैअजीतद्विजदीननसोंगोसीरीतराजनीतिराजैरघुवीरकी ५ ॥ टी० श्रीरामजीकेनगरपरसत्रुनाहीगरजतएकघनगरजतहैं ईतअनावृष्टआदिकोभीतनहींहै एकअघपापकोभयहै अर्थसबसुधर्मीहैं अरुअधीरजनाकोभीनहै भयअरुअगम्यागमन जिनकेराज्यमैंनहीं मधुकीनगरीमेंफौजजातयहीअगम्यागमनहै अर्थलंकाअगमरहीतापरगमनकीनो अरुव्यभिचारीजोपरनारीभोगैसोकहांहै तहांव्यभिचारीनिर्यंदादिकहैं अरुचोरीपराईपीराको अर्थपरपीरनासकरतासबहैं सासनआज्ञानासकरनहाराएकगंधासनपवनहै गंधलैकरसबकोदेत अरुदुर्गनकाहूकोनाहीहेतिएकदुर्गनिकिलागढ़है दुर्गनिकोअर्थ

दुर्गकरत अरुदिसिदिसिजीतिहै एकदीनअरुदु
जंब्राह्मण इनसौंजीतिनाही ऐसीराजनीतिश्रीराम
कीहै ५॥ ॥मू० रानीवर्ननं दोहा सुंदरसुषद
पतिव्रतासुचिरुचिसीलसमान ॥ एहिवि
धिरानीबरनियेसलजसुबुद्धिनिधान ६ ॥
टी० रानीवर्ननं सुचिश्रिंगाररस तामेरुचिहै किंवा
पवित्रतामैंरुचिहै जाकोसीलसमानबरोबरकी
औरिइस्त्रीनाहीहैं लज्जाबुद्धिजुक्त ६॥ ॥मू०
जथा क० माताजिमिपोषतपिताज्योंप्रतिपा
लकरैप्रभुजिमिसासनकरतहेरहियसौं भ
य्याज्यौंसहायकरैदेतुहैसषाज्योंसुषगुरुज्यौं
सिषावैसीषहेतुजोरजियसौं॥ दासीज्योंट
हलकरैदेवीज्यौंप्रसन्नह्वैसुधारैपरलोकना
तोनाहीकाहूबियसौं छाकेहैंअयानमदक्षि
तिकेक्षनकक्षुद्र औरनिसोनेहकरैंछांडिऐ
सीतियसौं ७॥ ॥ ॥ टीका॥ हेरिहियसौं
नामह्रिदयसौं सर्वजीवनकोमातासमानपोषैहै पि
तासमानप्रतिपालकरतिहैप्रभुकेसमान आज्ञाँकर
तिहै अरुभैयाकेसमानसहायकरतिहै सषाकेस
मानसुषदेतिहै अरुगुरुकेसमानसीषदेत हेतुजो
रकेअपनेजियसौं इहातैंकैहे तुजोरकर जीयजोपति
हैतासौंकहाकरति दासीसमानटहलकरति अरु

देवोंकीरीतिनेंप्रसन्नहोतिहै अपरलोकमुधारि
कहासहगामीहोयहै तबदूसरअर्थादिकमोंना
तोनाहीरामत ऐसीजोतियतासोंनेहत्यागआनद
स्त्रीसोंजोनेहकरततेआकेहैं अयानअज्ञानके
मदमेक्षितिपृथ्वीके मदसोंकेतमराजाहैं तेऊन
कहैंछनकबुद्धि जोऐसीरानीनाकोनाहींचाह
तहैं परलोकईस्वरनामउच्चारनयानैंआप्रग्नत
परसंसाअलंकार ७॥ ॥मू० कामकेहैंआपनै
होंकामरतिकामसाथरतिनरतीकोजरीकेस
उरआनिए अधिकअसाधुइंद्रइंद्रानीअ
नेकइंद्रभोगवनकेसोदासवेदनवपानिए
॥विधिहूअविधिकीनीसावित्रिहूसापदी
नीऐसेसबपुरुषजुवतिअनुमानिए राजारा
मचंद्रजूसेराजतनअनुकूलसीतासीपतिव्र
ताननारिउरआनिए ८॥ ॥टी०॥श्रीरामराजा
सोअनुकूलआननाहीं अरुजानकीसीपतिव्रता
आनरानीभीनाहीहैं इहांचौथोप्रतीपअलंकार
जानिये कामदेवकोहैजाकोकहीरामसहस्यका
हेआपने॥ कामकोहै अनेकअपमानसोंभो
गकरतरतिजोकामकीवामहै सोकामभागिगयो
अरुआपरतीकयोरीभोननहीं अर्थरामनेजानकी
होनविवाहनकियो अरुजानकीतोचनमेंसंगनआ

गो इंद्र बडो असाधु है गौतममुनिकी पत्नीसौंरतिक
री है अरु इंद्रानीएक इंद्र अनेक विधिब्रह्माताने
अविधिकरी सरस्वतीकंन्याकेपाछेधाए सोदेषि
सावित्रीनेश्रापदई तिहारी पूजाअरुप्रतिमानहो
य अर्थरामकेसामुनेसुलोचनाआई तब भी बर
दिये यातेंरामअनुकूलजानकीपतिव्रता ८॥ ॥
मू० राजकुमारवर्ननं दो० विद्याविविधविनो
दजुतसीलसहितआचार॥सुंदरसूरउदारवि
भुवर्नियराजकुमार ९॥ ॥टी० राजकुमारवर्ने
नं विभूनामव्यापक अरुभूकोभीहैसेनाकेस्वामी
किंवाजनके ९॥ ॥मू०जथा क० दानिनकेसील
परदानकेप्रहारीदिनदानवारिज्यौंनि दानदेषिएसु
भायके दीपदीपहूकेअवनीपनिकेअवनी
पप्रथुसमकेसोदासदासदुजगायके॥ आनंद
केकंदसुरपालककेवालकसेपरदारप्रियसा
धुमनबचकायके दैंहधर्मधारियैविदेहरा
जजूसेराजराजनकुमारऐसेदसरथरायके १०
टी० दानिनकेसर्वदान किंवाबलिआदिकजोदानी
हैं तिनकेसील परकहियेसत्रुतिनकोदानमदताके
प्रहारी उतकर्षहरताहैं अर्थ दसदिसमहीपनको
मद भ्रिगुमुनिसहितधनुषतोरकेहरो दिनदान
वारिजोसूर्ज किंवामेघ किंवाभगवान ज्यौंनिदान

कारनसुभावचारेहें पुनः दीपदीपकेअवनीपजो
राजातिनकेअवनीपराजाहैं राजापृथुकेसमानआ
लणओगायके दासहैं आनंदकेकंदजेहैं सु
रपालकइंद्रकोबालकजयंतसेहैं परपराइंराज
नकोजद्यपिप्रियहैं तथापिआपुसाधुहैं मनसावा
चाकर्मनाकरिके अर्थसपनमानेबहूतकहोआ
पुनमाने देहतेंधर्मधारनकरतपरंतु विदेहराजि
नकोदेहाध्यासनाहीरहत तिनकेराजाजनकति
नसेहैंराजकाजमें अर्थराजकाजकरत आसक्त
नाहीहोतऐसेदसरथकेकुमारहैं १०॥ ॥ मू०
अथपुरोहितवर्नेनं दोहा ओहितनृपहित
वेदवितसत्यसीलसुचिअंग॥ उपकारीब्रा
ह्मणनकोजीत्योजगनअनंग ११॥ ॥ टी०पो
हितवर्नेनं राजाकोहितकरैत्या वेदवेत्ता सत्यवा
ले सीलवारीपवित्रअंग उपकारीहोय ब्राह्म
नहोय ब्रह्मवेत्ता रिजु॥ पापजानेजीतो किंवाकाम
लचित्तजगतसंसारजीतो अनंगकामजीतो ११॥
मू० जथा क० कीनेंपुरुहूतमीतलोकलोक
गायगीतपायेनृअभूतपूतआरिउरत्रासहे॥
जीतेनृअजीतभूतदेसदेसबहुरूपओरनि
कोकेसोदासबलकोविलासहै॥तोरयो हर
कोधनुषनृपमनभोविमुखदेख्योनृबभकोप

षसुषमाकोवासहै ह्वैगयेप्रसन्नरामबाढ्यो धनधर्मधामकेवलवसिष्ठकेप्रसादकोप्र कासहै १२॥ ॥टी० राजादसरथकोइतनीबा तैंजोभईसोकेवलवसिष्ठकेप्रसादप्रसन्नताको प्रभावहै केकीनोपुरुहूतइंद्रमित्र किंवाऐसेपु त्रजिनसे इंद्रुनेमैत्रीमानी सर्वलोकनमेंवेदनेजि नकेगीतजसगाए ऐसेअभूतपूतपाएजिनको अ १६॥ ॥जकेउरमेंत्रासहोयरह्यो है अरुअजीत रावनादि कजो भूपहैंतिनकोजीते फेरदेसदे सबहुरूपकेहरिदेसकोरूपभिन्नहै औरकौनक हैएकामबालकविलासमेकीनो ह रधनुषतोरो राजाविमुषकिए अरुपुत्रबधूजानकीकोसुषदे ष्यो सुषमासोभाकोवासजामें किंवासोभाकोवा सवसन अर्थसोभाजानकीकोपाय अधिकहोयग ई सोजानकीकोसुषदेषिराम प्रसन्नहोयगये यहसबवसिष्टकीकृपा इहाँहेतुअलंकार सर्वका रजवसिष्टकीप्रसन्नतातेंभए १२॥ ॥मू० दलप तिवर्नेनं दोहा स्वामिभक्तश्रमजितसुधीसे नापतीअभीत॥अनालसीजनप्रियजसीसु षसंग्रामअजीत १३॥ ॥टी० दलपतिवर्नेनं श्र मकोसहै सुसुंदरधीबुद्धी सेनाकोपति भयरहि त आलसीनहोय औरप्रानीकोप्रियहोय जसीहो

य संग्रामतैंमुषमानैं कहूंमुषसंग्रामगोपाटहै त
हां संग्राममैंमुष अग्रगामीहोय १३॥ मू० सवैया॥
छांडिदयोअतिआरसपारसकेसवस्वारथ
साथसमूरो साहसिंधुप्रसिद्धसदाजल
हूथलहूबलविक्रमपूरो सोहिएकअनेक
निमाहिअनेकनएकविनारनरूरो गनतहै
तेहिराजकोराजसुजाकीचमूमैंचमूपतिसू
रो १४॥ ॥टी० आलसीपनकोपारस
छांडयो अर्थआलसीनाहीराषनअपनेकाममैंऔ
स्वारथमूरजेरिसभेतछोडो अर्थपरधनलेकरस्वा
मीकोकारजनासनाहींकरत साहसकोसमुद्रहैप्र
सिद्धसवजगजानैजलमैंथलमैं चलसेनाकोपराक्र
मपूरणरावतहै अरुएकअनेककेमनमैंसोभापाव
त अरुअनेकजोहैंसोएकसेनापतिविनासोभाना
हींपावतहैं ताराजाकोराजसोभतहै जाकीचमूसे
नामैंचमूपतिसूरहोय सेनासेनापतिनैंनमस्कमत
कार १४॥ ॥मू० दूतवर्नैन दोहा लेजवहौन
जराजकोअरिडरडपजैक्षोभ॥ इंगितजानैंस
मयगुनवरनहुदूतअलोभ १५॥ ॥टी० दूतवर्नै
न लेजवहौ होइनिजअपनेराजाकोजेअरिवैरी तिन
केहियमैंक्षोभहोय विकारअर्थकंपादिपैनेवैरीका
होय इंगितचेष्टाजानैसमयको १५॥ ॥मू० जथा

क० स्वारथरहितहितसहितविहितमतिका
मक्रोधलोभमोहक्षोभमदहीनेहैं मीतहू
अमीतपहिचानिबेकोंदेसकालबुद्धिबल
जानिबेकोपरमप्रवीनेहैं॥ आपनीउकति
अतिऊपरीदैऔरनिकीदुरीदुरिदूरीमतिले
लैबसकीनेंहैं केसोदासअरिदलदेसदेसरा
मदेवराजनिकेदेषिबेकोदूतद्रिगकीनेहैं॥
१६॥ ॥टी० स्वारथतेंरहितहै परधननाहीलेत
स्वामीके॥ कार्जनिमित्त हितस्वामीकेहितमें वि
हितकरीहै अरुकामादिककेक्षोभतेंमदहींनहै
अरुमित्रअमित्रपहिचाननहारदेसकालभी अरु
बुद्धिपरसेनापरबलएजानबेमेंप्रवीनहै अपनीउ
कतआनकेऊपरराषै किंवाअपनीजो उक्तिहै ताकोउ
पायकेउपरीदूसरीउक्तिऊपरकीबनाईबातपग
एकोहितहोकें कैसीहैआपनीउकतिदुरीहै अरु
औरनकीछपीबुद्धिलेलैबसकरी देसदेसमेंपरस
त्रुकेदलमें राजनकेदेषिबेकोंदूतजेहैं तेईप्रगटने
त्रबनाएहैं १६॥ ॥मू० मंत्रीवर्ननं दोहा राज
नीतिरतिराजरतसुचिसर्वज्ञकुलीन॥ छमीसू
रजससीलजुतमंत्रीसंत्रप्रवीन १७॥ ॥टी०
मंत्रीवर्ननं॥ राजनीतिजामेंसुद्ध सुरडरकेआननक
है सुचिसुद्धहोयपापबुद्धिनहोय १७॥ ॥मू० क०

केसव केस हू बारिधि बांधि कहा भयो रीछनि सों छिति छाई सूरज को सुत बालि को बालक को नल नील कही प्रभुताई॥ को हनुमंत किते कुबली जमहूँ पर जोर लई न लिगाई भूषन भूषन दूषन दूषन लंक विभीषन के मत पाई १८॥ ॥ टी० केसहू समुद्र बांध्यो तौ का भयो रिछभालु सो भूमि छाई तौ भी का भयो सूर्ज को सुत सुग्रीव अरु बालि को बालक अंगद नल नील इत्यादिक ते का भयो प्रभुताई ठिकाना को बानक ही है अरु हनुमान भी का है लंका जम हू पै भी नाहीं जो रने लई जाय है भूषन जगत के रामनि न के भूषन विभीषन किंवा भूषन के भूषन दूषन पर दूषन के दूषन राम॥ तिन लंका विभीषन के मतते पाई किंवा भूषन जो अच्छी बात ता को भूषन करे अरु दूषन बारी बात को दूषन करे ऐसे विभीषन सूर्ष्ठीषन नरांसेगरे हैं सता के राम भूषन अरु दूषन के दोष देनहार १८॥ ॥मूल पुनः ज्यु द्रुरै दुरजो धनसों कवि कौन करी जमलोक बसीसों कर्न कृपा द्विज द्रोण सो वैरके काल बचे वर कौ जे प्रनीतसों भीम कहा बपुरा अरु अर्जुन नाहिन ग्याबन की चल रीन्यों केसव के वल केसव के मन भूतल भार लपार्थ जीत्यो॥ १९॥ ॥टी० कौन नें जमलोक बसी नें वासन पायो॥

कृपाचार्जे अरु कर्नेकुयातें अरुद्विजद्रोणाचार्जेसों
वैरकरिकै कालजोहैसोबरजोरावरीकिये वंचैकैयह
प्रतीति कीजियेहैकाहूसोनाहींबचिसकैयहअर्थ
भीमसेनकहा अरुवपुराअर्जुनभीकहा नारीउत्त
राकुमारीताकोगवावतनचावतवलबीतिगयो किं
वानारिनच्यावत द्रौपदीकोवसनहरतबलबीति
गयो केवलकेसवकेमतितें भारथपारथजो अर्जु
नतिनजीतो तहांप्रस्न प्रथमअर्जुनकीनिंदा पा
छेअस्तुति उत्तर तहांऐसोकहोचाहो पारथराजा
जोजुधिष्ठिरहैं तिनजीतो १९॥ ॥मू॰ मंत्रीवर्ने
नं दो॰ पाँचअंगगुनसंगषटविद्यादसजुत
चारि॥ आगमसंगमनिगममतिऐसेमंत्रवि
चारि २०॥ ॥टी॰ मंत्रीवर्नेनं पंचअंग तिथि१
वार२ नक्षत्र३ जोग४ करन५ येपाँच अर्थजोति
सशास्त्रकोग्याता किंवापंचांग सहाय धन उपाय
कोविभाग देसकाल याकोग्यान अरुषटगुनसो
जाकोसंगसंबंधहोय अर्थषटगुनकोजानैं अरु
षटगुनकोषटजोगुन संधि१ विग्रह२ जान३ आ
सन४ द्वैधीभाव५ संश्रय एषटगुन६ फेरिसोजेधे
जेइसादिगुन छ दसचार विद्याजुतहोय ब्रह्मज्ञा
नरसायनजानों जलपीरब पुनधनुषबषानों अस्त्र
कलापुन दूसवीनों धर्मसोतपनकोकनवीनो राग

काव्यपरसभाबिचारी वेदगनकसुचिसब्द अचारी
प्रचौदहविद्या आगमसारू संगम संगहोयाकै
औरकेमनकीजानजायनिगमभेदऐसोविचारचाहो २०॥
॥ मू० केसवमादकक्रोधविरोधनजीसबस्वा
रथबुद्धिअनेसी भेदअभेदअनुग्रहविग्रह
निग्रहसंधिकहीविधिजेसी॥ वेरिनकोविप
दाप्रभुकोप्रभुताकरैमंत्रिनकोमतिऐसी रा
पतिराजनिदेखनिजोदिनदिव्यविचारविमा
ननिवेसी २१॥ ॥टी० मादकवाहनीआदिन
हींपानकरै क्रोधभीनाहीं काहूसाविरोधभीनाहीं
अपनेसबस्वारथकोतजो राजाकेस्वारथपैचित्तद
यो ऐसीबुद्धिहै भेदहोमित्रमेभेदकरायदेनो अभेद
सत्रुखोंमित्रताकरायदेनौ काहूपैअनुग्रहकृपाकर
देनौं विग्रहकाहूसोंविरोधकरदेनौं निग्रहरूपकरदे
नौं काहूसोंसंधिमैत्रीकरनी जैसीविधिमदोचाहीने
सदीतहांकरै वेरीकोविपदाहोय अपनेप्रभुकोप्र
भुताहोय ऐसीमंत्रिनकोमतिचाहो राजाकोदेख
नकीरीतितें दिन आदिनसुदिनमेंदिव्यविचारहै
विमाननपुष्पक विमानकीरीतिसे जहांचाहोतहां
जाय इहांउपमाअलंकार २१॥ ॥मूल पयानव
र्नन दो० चँवरपताकाछत्ररथ दुंदुभिभ्रुनि
दुजान॥ जलथलमयभूकंपरजराजितबनप

मान २२॥ ॥टी०॥पयानवर्नन॥ चवरपताका छत्र रथ नगाडा जान पालकी जल थल भूकंपामा नहोतहै रजधूरमयरंजितपयान २२॥ ॥मू०॥

राघवकोचतुरंगचमूचपिकोगनेकेसवरा जसमाजनि सूरतुरंगनिकेउरझेपगुतुंगपता कनिकेपटसाजनि॥ टूटिपरैतिनतैंमुकुताध रनीउपमाबरनीकविराजनि बिंदुमनोमुषफे ननिकेमनोराजसिरीश्रवैमंगललाजनि २३॥

टी० राघव श्रीरामतिनकोचतुरंगिनीसेना रथ हाथी घोडा पैदर ताके चपसमूहमेराजनकेसमाज कोगनै अर्थबहुतराजाहैं सूरमनकेजे हयहैं तिन केपगमैंअरुझजातहैं तुंगऊंचीपताकनकेपट प्र लं पगनोचेपताकातुंगतिनमैं पगकेसेअरुझैंगेउ त्तर घोडाजे अपनेजोरतैं किंबासवारकी इच्छातैं जवउडततबउरझतहैं तिनतैंमोतीटटत तेकेसे जानेजात कैमानोआनकेमुषकेफेनहै केसंदेह अलंकारकरके राजश्रीश्रवावतीहै मंगलहेतुला ननधानकेफूल पूरबमेलावाकहैंजाको मंगलहै पयानसमयराजनकेऊपरफेकेजात उतप्रेक्षा अलंकारहै॥ २३॥ ॥मू० श्रीरामचंद्रचंद्रिका नादपूरिधूरिपूरितूरिबनचूरिगिरिसोषिसो षेजलभूरिभूरिथलगाथकी केसोदासआस

पासठौरठौरराषीजनतिनहूकीसंपतिसब
आपनेहीहाथकी॥ उन्नननवाएनतउन्नत
बनाएभूपसत्रुनकीजीविकासोमित्रनिकेहा
थकी मुदितसमुद्रसातमुद्रानिजमुद्रितकै
आईदिसिदिसिजीतिसेनारघुनाथकी २४॥
टी० उक्तिपुरबासिनकी कैदिसिदिसिजीतकरकै
सेनारामचंद्रजीकीआईहै कैसेजीतिकैनादमारू
राग किंवाहाथीघोडानकीसब्दकिंवा नगाडाकीस
ब्द धूरहयपरनारतैंधूरपर नहींसब्दलच्छन दो०
जग कारनधारनसकतिसब्दअर्थजिहिवाच॥ पर
मातमआतमकहैसब्दनजाईसाँच १ परापसंतीम
ध्यमामूलनाभिहियठाम॥ कंठप्रगटयहबैषरीन
हतनामअभिराम २ पुनः नभगुननैयायिककहैं
नभजकविननेजोय॥ दुघाकपधुनिबरननिलिख
हैबैषरीहोय ३ सबैसब्दनभधुनिहैग्रहनश्रोत्र
तैंहोय॥विचीतरंगन्यायतैंउतपतिनानोसोय ४ ब
नकोतोरिगिरिकोचूरकरिकै अरुसोषिकैभूरबहुत
जलथलकोगाथकरदई सबजलथानकोपनफरू
नलागे अरुठौरठौरबैरीकेथानमैं अपनेजनराषि
कैंतिनराजनिकीसंपतिसबअपनीकरिलई उन्नन
जेऊचरहैतेनवायदये जेनीचेतेऊचेकरिदयेसर
नताकेपर अरुसत्रुनकीजीविकाभूमादिमित्रन

कोकोरिद्दई अरुसातसमुद्रतैंमुदितवेष्टित जोभूमि सोअपनीमुद्रातैंमुद्रितकरी अर्थरामकी मोहरराहि आनकीनाहीं मुद्रितमुद्रातैंजमकअलंकारजानिये २४॥ ॥मू० अथहयवर्ननं॥ दो० तरलतता ईतेजगतिमुषसुषलघुदिनलेष॥देससुवेससुलक्षनैंवर्नेहुवाजिविसेषि २५॥ ॥टी० अथहयवर्ननं॥ तरलतेजहोय ताडनानसहै तेज गति रोहालचले किंवातरलचंचलहोय मुषकोसुषदाताकडीलगामनचाहै देसउत्तमदेसको अर्वी आदि सुंदरवेषकौं सालिहोत्रकेलक्षनपाइए कहूंवेषसुदेसभीपाठहै २५॥ ॥मू० वामनहीदुपदजुनाघेनभत्ताहिकहानाघेपदचारिथिरहोनइहिहेतहैं छेकोसितिक्षीरनिधिछाडिधापछत्रतरकुंडलकरतलोलचितमोललेतहैं॥मनकेसमीतवीरवाहनसमीरकेसेनैननिज्यौंनोनानानेहकेनिकेतहैं गुनगनवलितललितगतिकेसोदासऐसेवाजिरामचंद्रदीननकोदेतहैं २६॥ ॥टी० ऐसेवाजीश्रीरामदिनदिनदीनकोंदेतहैं कैसेजेविचारतहैंका वामनजूनैं दोयपाँवतैं नभआकासनाघेताकोहमचारपायतैं नाँघेतोहमारीकहानारीफ इहाँवामनतेव्यंग एकतोभिषारी दुतियछोटो हरिनामहमारो अरुवा

मनकोभीहै किंवावामनजूदोपदकर आकासनो
घो हमचारपद यहहैतुनैं थिरहोततातैं देत्रअसा
॥अरुछेकोहैक्षितिक्षीरनिधिसमुद्रनेतातेंहमारी
उतपत्तिहैताकीछातीपरलाननदियोचाही यह
विचारिकैथापछोड कन्नहीके॥ तरकुंडलकरत
हैं किंवाछेकोक्षितिक्षीरनिधियहजानके यातैंथाप
देरिकोठौरजेतनीदूरघोडादौरावनोहोय ताको
नामथाप थापदेवायकैघोडादौरावतहैं यातैं च
त्रकेलरेकुंडलाकारलोलचंचलभ्रमतहैं औदेषन
वालेकोचित्तमोललेतहैं किंवा चित्तजोलोलतातैं
चंचलताकोमोललेत तातैंअसुचक्रैसंकरहै म
नकेमानोमीतहोहैं अर्थमनकेसमानजाकोवेग
है हेमकोसमैं वीरनामभटकोअरुअश्वकोभीहै
समीरपवनकेवाहनसेहै वाहनघोडाकोकहत॥
किंवाताकोवाहनकोदेहायनसेहैं नैननकेनीकी
सुंदरतानामलुंदेलषंडमैंरसणीकोकहतहैं जासौं
हरबांधत वागाडीबांधत सो नैननकेनीकेनानहैं
अर्थदृगकेसाथफिरतहैं तादेतनैनको औनेहना
कोनिकेतअस्थानहैं कहूंनैननि-ग्यौनोभीनैन ऐसो
पाठहैसोअच्छोनहीं नहींऐसोअर्थ नैननेत्रनोनीका
वन्य सुंदरतासौं देषनवालेकेनैनाविषमकेनैनताके
निकेतघरहैं किंवा देषनवालाकेनैनके औनेहके

निकेहैंनैनबसिजातहैं अरुगुनजोसालिहोत्रके ता
तैंवलितजुक्तहैं अरुललितहैजिनमैंगति ऐसेवा
जिदीननकोंदेतिहैं समुद्रादिनांघबेकेकारनहैं प
रकारजनाहीकरसकत यातेविशेषोक्तिअलंकार
२६॥ ॥मू० गजवर्नेनं दो० मत्तमहाउत
हाथमैमंदचलनिचलकर्नै॥ मुक्तामयइभ
कुंभसुभसुंदरसूरसुवर्ने २७॥ ॥टी० गजव
र्नेनं मत्तहैतोभीमहाउत गडदारकेहाथमेहैं मं
दचलतहैं अवनचंचलहैं मुक्तामयइभ हाथी
केकुंभसुभगजासुवेदतें उत्तम सुंदरहैं सूरहैं सुं
दरसरीरहैं २७॥ ॥मू० कवित्त जलकेपगार
निजदलकेसिंगारपरदलकेबिगारकरपर
पुरपारैंरोरि ढाहैंगढजैसैंघनभटज्योंभिर
तरनदेषिदेषिआसिषा गनेसजूकेभोरैंगोरि
॥ विंदकैसेबं धुबोकलिंदनंदसेअमंदव
दनकीसुंडभरेचंदनकीचारुषोरि सूरकेउ
दोतउदैगिरिसेउदितअतिऐसेगजराजराजे
राजारामचंद्रपोरि २८॥ ॥टी० ऐसेगजराज
रामचंद्रकेदरवाजेपररहत जेजलकेपगार जल
समुद्रादिकोपायतैंतरैहैं निजअपनेदलकेश्रृंगा
रहैं परसत्रुकेदलकोविगारकरनहारे परसत्रुके
पुरमैंपारतहैं रोरनामहूलबुंदेलषंडमैं कहेहैं॥प

मान औढेकोनवज्रतोसोंकरैकौनजुद्ववीरमेंलपी
रघाटहलेपरेपटनालोंहैं अरुढाहतहैंगढजैसेंम
घअरुसुभटकीरीतिनैंरनमेंभिरतहैं अरुजिनको
गनेसकेपोषेतेंगोरीपार्वतीआसिपाआसीसदे
तिहैं बिंधाचलकेसेभाई कलिंदजातैंकालिंदी
जमुनानिकसीताकेसेपुत्र चंदनरोरीनैंजिनको
सुंडभरीहै चंदनकौपीरदपहैं अरुचंदनसोसुंड
भरैंकहूंयोभीपाठहै तातैंलालचंदनसिंदूरादितें
सूर्जकेउदयमें उदयाचलसेदेषिपरत गोसंग
जराजद्वागौरिकेआसिपातें भ्रमअलंकार २८
॥ ॥मू॰ अथसंग्रामवर्नेनं॥दोहा॥सेनास्व
नसनाहरजसाहससस्त्रप्रहार॥अंगभं
गसंघट्टभटअंधकबंधअपार २९॥ ॥टी॰
संग्रामवर्नेनं॥सेनाकोस्वसनसब्द सनाहबषत
रजधूरिसाहस भयकोडके आपनेजोरतेंजाद
इरादाकरतहैं सस्त्रकोप्रहारकेकलां अंगकोभंगहो
नोंनासहोनों कटिजानों अंधजोहैं अरुकबंधनो
हैं एबकुतहैं २९॥ ॥मू॰दो॰ केसवबरनहुजु
द्वमैंजोगिनिजनजुतरुद्र॥भूमिभपानकरु
धिरमयसरवरसरितसमुद्र ३०॥ ॥टीका
जुद्धमेंजोगिनि जनआपनेदासजुतरुद्रहैं भूमिभ
पानकरुधिरमयसरवरसरितसमुद्रहैं ३०॥ ॥मू॰ क॰ श्रोनितस

लिलनरवानरसलिलचरगिरहनुमंतविष
विभीषनडास्योहै चँवरपताकाबडीवाडवा
अनलसमरोगरिपुजामवंतकेसवविचा
स्योहै॥वाजिसुरवाजिसुरगजसेअनेकगज
भरतसबंधुइंदुअमृतनिहास्योहै सोवत
सहितसेषरामचंद्रकुसलवजीतिकैसमर
सिंधुसाचेहूसुधास्योहै ३१॥ ॥टी० कुसल
वकेजुद्धमें रूपककवि करत॥ श्रोनजल न
रवानरजलचरमीनादिक हनूमानपर्वत विष
विभीषन काहेस्यामरंगतें चँवरपताकाबडवा
अग्नि जामवंतधन्वंतर प्रस्न जामवंतभीस्याम
हैं तिनकोविषकादेनकहें इहाँबुद्धिवाननमेता
तपजे अस्वसुरहय गजसुरगज भरतइंदु चंद्र
मारिपुदहनअमृत सेषलषन रामनारायनऐसो
संग्रामजीतिकेकुसलवसमुद्रबनायो ३१॥ ॥मू०
॥आषेटवर्ननं दोहा॥जुरीबहरीवाजिबहु
चीतेस्वानसिचान॥ सहरबहिलियाभिल्ल
जुतनीलनिचोलविधान ३२॥ ॥टी० आषे
टवर्ननं॥जुरीवाजकीविसेषजाति अरुवाजकोइ
स्त्रीसोबहिरी बहुवाजचीता कुत्ता सिचानसिकरा
सहरफारसीमें बनकोभीकहतहैं बहरभीपाठ
है तोसमूहबहिलिया कोलभीलआदि निचोलव

स्न ३२॥ ॥मू० दो० बानरबाघबराहमृगमी
नादिकबनजंतु॥ बधबंधनबेधनबरनिप
गआयेटअनंत ३३॥ ॥टी० बानरमर्कटबाघ
मृग बराहसूकर मृगहरिन मीनमछरीइनआ
दि बननामजलकोभी अरुबनकोभी बधकरनो
बांधनो बेधनो ऐसोआयेटसिकार ३३॥ ॥मू०
कवित्त तीतरकपोतपिककेकीकोकपारा
वत कुररीकुलंगकलहंसगहिलाएहैं केस
बसरभसिंहस्याहगोसरोसगनकूकरनिपा
ससमासूकरगहाएहैं॥ मकरनिकरबेधि
बांधिगजराजमृगसुंदरीदरीनभीलभामिनी
नभाएहैं रीझिरीझिगुंजनकेहारपहिराएऐसो
कामऐसेरामकेकुमारदोऊआएहैं ३४॥ ॥
टी० तितरी कपोत पारावत पिककोकिल केकी
मयूर कोकचक्रबाक पारावत कलरव कोपल
को कुररी कुलंग कलहंस शरभपक्षीबिसेष सिं
ह स्याहगोस ताकीरोसकोगनि कूकरपासमें स
सापरहा सूकरताकोगहाएपकराएहैं मकरम
छरी किंवाग्राह इनकोबेधिके गजराजमृगको
बांधिके सुंदरादरीनमें भीलकीजभामिनीलल
नाहैं तिनकेमनमें बहुतभाएहैं तिनसबरीनके
घुंघचीकेहारपहिराएहैं उपमाअलंकार ३४॥ ॥

मू० कवित्त षलनिकेषेलभैलमनमथमनए
लोसैलजाकेसैलगैलगैलअतिरोकहै सेनानीके
सटपटचंद्रचितचटपटअनिअतिअटपट
अंतककेओकहै॥ इंद्रजूकेअकवकधाता
जूकेधकपकसंभूजूकेसकपककेसोदासकोक
है जबजबमृगयाकोंरामकेकुमारचढैंतब
तबकोलाहलहोतलोकलोकहै ३५॥ ॥टी
का जबजबरामकेकुमार सिकारकोजात तबत
बलोकलोकमें कोलाहलहोतहै षलजेहैंतिनके
षेल भैलनाम हडबडाहटकहतहैं ऐलनामसोर
कोसोमनमथकामकेपरत काहेंवाकोवाहनम
करहै वहुधाजोवाहन सोईधुजामेंरहत जैसेग
रुडधुज तैसेवृषभधुज सैलजागौरीतिनकोपर्व
तहिमालय किंवाकैलासताकीगैलराहसोरोकी
जात सेनानीषडानन तिनकेसटपटपरत मयूरन
मारोजाय चंद्रमाकेचटपट काहेमृगनमारोजाय
अंतकजमराज तिनकेओकघरमेंअटपटकिहमारो
भैसाबचै इंद्रहूकेअकबक हमारोगजनजाय
योंहींधाताविधाताहूकेधकपक हमारोहंसनमा
रोजाय अरुसंभुजूकेसकपककोकहै प्रश्न इंद्रा
दिदेवतनकोतोदुषकृयाकही अरुमहादेवकोन
कहीसोकाहे उत्तर उनकोवाहनवृषभहै अरु

कहूँसंभुजूकेसकचक अरुकहूँ थकपक इत्यादि कहूँबहुतपाठमिलैहै इहाँवरनमैत्रीतें॥ छेका नुप्रास ३५॥ ॥मू०॥ ॥जलकेलिवर्ननं॥दो हा सरसरोजसुभसोभनिहियसोंपियमन मेलि॥गहिवोगतभूषननिकोंजलचरज्यों जलकेलि ३६॥ ॥टी० जलकेलिवर्ननं॥सर तलाव सरोजकमल सुभसोभा किंवा स्वनचन्न हृदयसोपि याकोमननमिलरह्यो है भूषनकोपक रिवो मीनादिककीगतितें ३६॥ ॥मू० कवित्त ॥एकदमयंतीऐसीहरैहंसवंसगतिकहंमिनी सोविसहारहियसोहिए भूषनगिरतपक लेतिबूडवीचवीचमीनगतिलीनहीनउप मानटोहिए॥एकहारिकंठलागिल्योगिलबुडिवुडि जातजलदेवतासीदुगदेवताचिमोहिए केसोदासआसपासभ्रमतभ्रमरजलकेलिमें जलजमुखीजलजसीसोहिए ३७॥ ॥टी० ए केदमयंतीऐसीनलकीरानीसरीषी हंसपकरैहैं हंसकेवंसबालक किंवाहंसवंसथीकामिनिन कोंहरति प्रथमहंसचंस पाकैताहीनेचंद्रवंसभ यो किंवा हरैधीरंमंदसुवचादकेहरतीहैं हंसके वंसकोकाहेहाँसगकुवगोंहैं अरुएकैहंसनी सोहोयरहीहैं बिसनामजलताकोहारपहिरैहैं अ

थेगरेलोंबूडीहैं मुषमात्रदेषिपरत अरुएकेजेंगरे भूषनतेडूबकेलेतीहै तेमीनकैसीगतिकरतीहैं इहांडूबनोंउछरनोजानिए एकेश्रीस्यामसुजान केकंठसौंलगिबूडतीहै तेजलदेवीसीजानीपरति है तेदृगदेवतासूजे तिनकोमोहउपजावती आसपासभ्रमतहैं जिनकेभ्रमरतेकमलमुखीकमलसीसोभती किंवासससिमुषी जलजलजतैंजमक ॥उपमाअलंकार दमयंतीउपमान ऐसीवाचक नायकाउपमेय चलनोधर्मतातेंपूरनउपमाअलंकार मीनगतिमैंवाचकलुप्ता जलदेवीसीडूबती हरिकंठलागकैं यामैंपूरनउमाजानिए जलजमुषीजलजसी इहांभीपूरनउपमाजानिए याकविचमैं पूरनउमा लुप्तोपमाअलंकारकोसंकरभयो ३७॥ ॥मू॰ **विरहवर्ननं** दो॰ **स्वांसनिसाचिंताबढैरुदनपरेषेबात॥ कारेपीरेपीरेहोत कुसतातेसीरेगात॥३८॥** ॥टी॰ विरहवर्ननं॥ रसिकप्रियामेंएचारितरहके विरहवरनतताकों हमनेरसिकप्रियाके तिलमैंलिषेहैं मानविरह१ प्रवासविरह२ करुनाविरह३ पूर्वानुरागविरह४ ॥सोचारोकोउदाहरनचारिकवित्तकरिकहो स्वासइति स्वासबढैरात्रीमैं अरुचिंताभीबढै वातवातमेरुन सषीसबपरेषैहैं कारीहोतहै पीरीहोतहै

दुबरीहोतहै तातगरमजाकेगातहोयरहे ३८॥
मू॰ दोहा भूषप्यासक्षुधिबुधिघटैसुषनिद्राद्यु
तिअंग॥दुषददोतहैसुषदसबकेसवबिरह
प्रसंग ३९॥ ॥टी॰ मातसुपबिरहमैंजानरहतहै
भूष१ प्यास२ क्षुधि३ बुधि४ सुष५ निद्रा६ अरु
सबगातजाकेदुषीहोतहैं बिरहप्रसंगपाइकैया
सात ३९॥ ॥मू॰ रसिकप्रिया कवित्त बारसो
कब्बरजोमैसारससरससुषोआरसोलेदेषिबु
षयारसमैबोरीहै सोभाकैनिहोरेनोनिहोरत
ननैकहूतहारिहौनिहोरसबकहाकहूंपाग
है॥सुषकोनिहोरोजानमान्योसोभलीकरीब
केसारायकोसोनोहिनलोमनमोरिहै नाहके
निहोरैकिनमानैहोनिहोरतिहोनहकोनिहो
रेफिरिमोहिजानिहोरहै ४०॥ ॥टी॰ नायका
मानकीनोसोसषीसमुझावति कैहेसारसकमल
सुषीमैबारबारबरजतहौं तूमानमानिकारनैनारी
माननिहै किंवावारिजलजो सोककोहै सोबारी
मैं आइबुको अथैमानकारो आरसौदपनलेकै
देषिरापिमुषअथैकोपजुक्तहै किंवाआरसीलेन
हारीमुषनायकदेषतहै अरुपाईसोजनमसीनिर
समैबोरहै अथवाजोनिहारीआनन आरसौसो
पासोंकवारकैरसमैंचूडहै अथोंस नायकजान

है गोतबरुदनकरैगी अबेतोकोसोभानेबहुतनि
होरोहै अर्थबहुतसुंदरहै तातेंतूंनाहींनिहारतिहौ
निहोरकेहारचुकी काहूकोषोरनाहींदेनी अरसु
खकेनिहोरेजोतूं नहीमाननतोभलीकरति अब
तोकोंसपतिसोहंहै जोमानतेमनकोमोरे नांहक
ष्मकेनिहोरेकिनमाननहोनिहोरतहै नेहउपजि
है तबमोकोनिहोरोगी अर्थसपत्नीकेपासनायक
जाहिगो यहमानविरहलाटानुप्रास किंवाआखिर
नेहकेनिहोरेफिरिमोकोनिहोरोगी यामैंगूढव्यंगहै
पर्जोउक्तिअलंकारमानवस्तुतें नाईकाकेरूपकी
बडाई जहांदूसरीवस्तु अथवामानवस्तुतेंतुल्या
अलंकारकोसंकर ४०॥ ॥मू० पुनः कवित्त॥ ह
रितहरिनहारहेरतहियोहरतहारीहोंहरन
नैनीहरिनकहूंलहों वनमालीब्रिजपरबरष
तवनमालीवनमालीदूरदुष्यकेसवसुकों
सहों हृदयकमलनैनीदेषिकेकमलनैनहोंउ
गीकमलनैनिऔरिहोकहाकहौं अपघनघ
नस्यामघनहीसेहोतस्यामघननिकेघोयघन
स्यामबिनक्योरहों ४१॥ ॥टी० कोऊबहिरंगस
षीसोंकिंवापरोसिनीसोंनायकावचन हरितहरित
होरहोहै हारषेतसोहेरतदेषत हियकोहीलेत अ
रुहेहरननैनीमैहारगई हरिजोहैंकृष्णसोंकहूंना

हींमिलत वनकीहैमालजाविषैं ऐसोजोहै ब्रिज किं वा वनमाली मेघसोवृजकेऊपर वनजलताकी मालासमूहबरषतहैं वनमालीजोश्रीकृस्नसोदू रिहैं योदुषकेसेसहौं प्रमान वनमालीवनि:ध्वं सीकंसाराति:धोक्षज:इत्यमर: हृदयकमलनैनी हमारेजोहृदयकोकमलहैसोईनैनहैं तासोंकमल नैन वृजचंदकोंदेषिकैहोहिंगीकमलनैन कमल जलतासोंजुक्तहैं नैनजाकोसोमैहोऊंगी अर्थआं सूमयनेत्रहोहिंगे अपघनघनस्यामयाकोअर्थ अपनामजलसोहैबहुतजामेफेरिघननिविडस्या महैं घनहीसोंहोत अर्थघनलोहकोलक्षनाकरि ताकोप्रहारसमानहोतहै ऐसोस्यामघनकोदिनव पों तामैंघनस्यामश्रीकृस्नबिनाक्योंरहौं इहांमुरका रोदनकरुनाजानिये याकवित्तमेंस्वत:संभवीमें ज मकअलंकारतेंविरहवस्तुहै ४१॥ ॥मू० पुन:क० भूलिगयोसबसोंसतरोषमिटैभवकेभ्रमरोनि बिभातो कोअपनेपरकोंपहिचानतजाननि नाहिनैसीतलनातो॥नीकहींमेंवृषभानललीकोभ ईमुनजीकोकहौपरैबातो गयकहिबरन जानिएकेसबकाहूनेंकूट गएसँगसातो॥ ४२ ॥ ॥टी० यहकवित्तमेंपूरनअनुरागकोदसदसा दिषावतहैं नयनप्रीतिनेसबभएयानाकोजानियत

केवृषभानकीकुमारीकों एकहीबेर सातोसुषभू
लिगए यामेंउनमादतादिषाई नरोषकरतनसोस
करत जोजियमेंआवतसोईकरतहै१ रसअरुरोष
सबसोंभूलो रसतेंइहांलक्षनलक्षनाकरिकेस्नेह
रोषभी तोसषिनसोंरसभूलो अरुसपत्निनतेंरोषसं
सारजोहैसोज्ञानकरिमिथ्याहैअरुजो कोईसंसार
केव्यवहारदसामेंसाँचमानतसोभ्रम ऐसीमोहद
साभईजो संसारकोज्ञानभूल्यो अरुभवकोभ्रमरैन
तैंनिद्रानाससमुझावतिहै २ किंवानएतिजानतनदि
नजानत दसाकीवातन्हीकहीजात रसरोषभूलेतेंसु
धिभूली किंवाभवकेभ्रमतैंबुद्धि दिनरात्रितेंनिद्राभू
ली अरुअपनेपरकोनाहींपहिचानतियामेंचिंतादे
षाईवाहीरूपकोचिंततहै३ विनपहिचानतैं यातेंने
त्रजोति अंगदुतिक्षीननेत्रतोअंगहैं सीतलतसना
हींजानत यामैंरुचहान सीतल नसमुझपरैनगरम ४
किंवातससीतनाहींजानत यातेंभूषप्यास नीकेहीमें
वृषभानलली को यामैंसंकल्पकै नीकेहियमेंवृषभा
नललीकोबसेहैंस्यामसुंदर ५ याकवितमेंप्रवासवि
रह काहेकेएकहीवारकहतहैं तोनायकप्रवाससुनि
कें सोबातेंकहनजोगनाहीं यातैंलाजभंगहै ६ एक
हीमात्रबेरिनमेक्रिसताकेहीमात्ररहैहै ७ अरुसातो
सुषभूलिगए यामैंमूर्छासबमिलिमरनहोहिगो ५२

मू॰ पुनः क॰ मेहकेदै सपिऔसरुसासनिसा
थनिसासुविसासनिवाढी हांसगयोउडिहं
सनिज्यौँचपलासमनींदगईगतिकाढी॥चा
तकज्योंपिवपीवरटैँचढितापतरंगनिज्यौँग
तिगाढी केसववाकोदसामुनिहौंअवआगि
विनाअँगअंगनिडाढी॥४३॥ ॥टी॰ पूर्वानुरा
गमैँनायकप्रतिसखीवचन नायकाकोदसाबना
वतहै कैनायकाविना आगदाढीजरीजात मेरुव
रमैहै तोमेहकादेनाहींबरसो यहजानऔसरुआग
नहै उसासकेसाथ नाकेसाथनिसागई विसासि
निविस्वासघातिनवाटीहै अरुहांसजोहै सोहंसन
कीरीतितैँउडिगयो अरुचपला बिजुरी समानजिन
ज्ञअपनीगतिकाढीहै अर्थआवनजान जद ॰॥
हौंसदोयहैनवदमजानैहैं निद्रानाहींदै अरुनवनि
द्राध्यानमैंमगनहोत नर्चानद्राआनिपगन चानि
ककौरीनितैंपीवनिह्रागोनामरटनरहत अरुनाय
रूपीतरंगिनीनदीवहुनचाढीहै ।।केसवयाकोकह
दसानुमसुनोगे ।।लनीपानमकोमामगीहै अरु
आगनहीहैतोभीअंगअंगमैंजरी यानैंप्रथमविभाव
नाअलंकार किंवाऔसमेद उसासपवन दोमहं
सनाहीरहै इत्यादिसोरूपकअलंकारजानियै ४३॥
मू॰ अथस्वयंवरवर्ननं दो॰ सचीस्वयंवरचर

निमेमंडलमंचबनाव॥ रूपपराक्रमवसगु
नवर्नियराजाराव ४४॥ ॥टी० स्वयंवरवर्नेनं॥
सचीस्वयंवरकी रक्षाकरनहारीहैं मंडलगोलाकार
॥अरुकहूंसर्वेभीपाठहै मंचसिंहासन रूपवारेपरा
क्रमवारे ४४॥ ॥मू० क० मंडलीमंचनिकीनृप
मंडलमंडितदेषिएदेवसभासी दंपतिकी
दुतिदेहकीदीपतिभूषनजोतिसमेतअभा
सी॥फूलनिकीछबिअंबरकीछबिछत्रनकी
छबितक्षनभासी सोहतहैअतिसीयस्वयं
बरआननचंद्रप्रवेषप्रभासी ४५॥ ॥टीका
जानकीकेमुषकीसोभा धनुषभंगहोंनेतैंबहुतब
ढी सोबरनतहैंकवि मानोंपरिवेषमैंचंद्रमाहै रा
जनकेजोमुषसोमानोंपरवेषप्रभाहै चंद्रमाहीको
मंडलबनोंहै सोमंडितदेवनकीसभाऐसी दंतन
कीदुति अरुदेहकीदीपति औभूषनगहनाआभास
द्रिस अरुफूलनकेहारनकी किंवासुरवरसावतसो
फूल अंबरवस्त्र अरुछत्रराजनके तिनकीछबि ता
छनभासतिहैतामैंसीतासोहतिहैं ४५॥ ॥मू० सु
रतवर्नेनं दो० सुरतिसात्विकीभावभनिमनि
तरनितमंजीर॥हावभावबहि अंतरतिअल
जसलज्जसरीर ४६॥ ॥टी० सुरतिवर्नेनं काम
कृतिजोमनसो सात्विक तातैंउत्पत्तिभयेजोदंपति

तिकौभाव कृयामैंहन सौसुरतकहावत मानितर
तिमेंजोसब्द ताकोमंजीर पांयभूषन सोमनितहैं स
ब्दकरतहैं हावकिलकिंचितादि भावखेदादिक
वहिरति अंतररति रसिकप्रियाकैंतिलकतैं जानलौ
जिये आलिंगनलपटनेकोकहतहैं चुंबनादिसान
बहिरति स्थितिनिर्भेकयादि अंतरति अलजनिरल
ज्ज सलनलज्जाजुक्तमगीर ५६॥ ॥मू० क० केसो
दासप्रथमहिउपजतभयभौरशेमरुचिस्वेदहैं
हकंपतगहतहैं प्रानप्रियावाजीकुनवारन
पदातिक्रमविविधसबदद्रुजदानलितहैं
॥कलितकृपानकरतकनिसुमानवानसजि
सजिकरजप्रहारनिसहतहैं भूषनसुदेसहा
रहूषनसकलवाणसपिनिसुरानिरीतिममरक
हतहैं ५७ इतिश्रीविविधभूषनभूषितायां
कविप्रियायांराजश्रीभूषनवर्ननंनामअष्टमः
प्रभावः ८॥ इतिपूर्वार्द्धम॥ ॥ ॥ ॥
टी० नायकनामन्कासुरतिकरनिहैं ननसम्बोधनसिस
पीवचन केसुरतहैयहकैसंग्रामहै मंग्रामपक्ष॥प्र
थमहीकादरलोगोंको भयउपजतहै भौरनामकाद
रकोहैं अरुसुरनकोरोप कोधउपजतहै रोमरुचिहर
षउपजैहैं स्वेदपसीनाउपजैहै अरुतिनवीतननकंपन
नाहीं प्रानतैंप्यारोहोरहोहैजहाँ वाजीघोड़ा किंवापा

नहीलगाए्हैंजामेंबाजी जोजौतैसोसत्रुनकेप्रान ले
हि वारन्हाथी पदातिपियादाक्रमसोंचलतहैं विवि
धतरहकेबहुतसब्दहैंसेनाको किंवाविविधतरह
केवेधघाउजामैंहोतहैं दुजपक्षीदानमांसकोपाव
तहैं किंवादुजनारदसुखदानलेतहैंजाविषैं अथवा
दुजदसनदानपावत अर्थसत्रुनकौंकाटलेत कलि
तजुक्तहेजामेक्रिपानतरवार करमैं सकतिबर्छी
मानजुक्तहै आनबषतर सजसजकैं तेकरजकरतें
जोउतपतभएप्रहार तिनकोसहतहैं किंवातनआन
बषतरनषनसोंफारडारतहैं भूषन भूप्रथ्वीषनगई
है किंवाभूप्रथ्वीतोषनषनके भटजोधागाडदेतहैं
सुदेससद्रिसहारहोरहो हारमैदानतामैं अस्व गज
मनुष्य बहुत दूषनसकलहोत सकलदूषनहोजात
है किंवासुदेसहारहारजोग्राम रहितअस्पानहैंसो
दूषनकरतहैं अर्थासजहाँ रनपरततहाँ भयकरके
षेतनाहीं कोईकरतहै कोऊपहिचानतनाहींकोआ
पनकोबिराना सुरतिपक्ष प्रथमभय प्रथमसुरति
तैंभयउपजतहै किंवापरकीयाहैतोलोकभयकीभी
रबहुत रोषक्रोधनिकीरुचिकांति बनावतिहै अरु
सात्विकहोतहैतासों रोमस्वेदकंपाहोतहै प्रानप्रि
यानायकनेकीनोहै वाजीकरनदलाज जासोंवीजेस्तं
भनहोय वारननायकानाहीनाहीकहत पदातिक्रम

पायचलतहैं अरुनूपुरादिकेविविधमक्रहोतहैं दुजदसनदानलेरहेहैं अधरामृतकों अरुकालितल लितजोकिपानहैसोनाहींहैजाविषैं अरुवहनहैमा ननायकाको जोचाहतसोकहन अरुआनगोकैछु कीसोनायका करजनपकेप्रहारसहतिहै भूषन जेहैंते सुदेसमुंदरदेसतें हारगए अर्थदूदट्टपरत हैं अदूपनसकलनायककोजानपरत अर्थदूषन सेहोजातहैं प्रानप्यारोपढिरैनाहींदैन रोसोलमा सुरत ४९ ॥ स्वस्तिश्रीमहाराजाधिराज कासिराजश्री मदईस्वरीप्रसादनारायणसिंहचकाहुग्यआज्ञानि गामीललितपुरनिवासी हरिजनकवीस्वरात्मजेन सरदारकवीस्वरेण विरचितायांकविप्रियायांटी कायांवरनाख्यायांअष्टमःप्रभावः ८॥ इतिशुभंभूयात्॥

मू० अथविसिष्टाअलंकारवर्ननं दोहा॥जा तिस्वभावविभावनाहेतुविरोधविसेष॥उ त्प्रेक्षा९ आक्षेप१० क्रमगननाआसिषश्लेष १॥ ॥टी० अथविसिष्टाअलंकारविसेषअलंका रकहतहैं सामान्याअलंकारतोकहे अलंकारना मइनकेलक्षन उदाहरनआगेकहैंगे जातिस्वभा वइत्यादिमातदोहामैं नवप्रभावमै जातिअलंका ररूपवरननकीजिएसोजाति गुनक्रियावरननकी जिए सोस्वभावएतनोभेद औविभावना यौहेतु

औ विरोध औविसेष औउत्प्रेक्षादस प्रभावमेंभे
दसहित आक्षेपाअलंकार इग्यारहवें प्रभावमें
क्रम औगनना औ आसिष औ भेदसहितश्लेष १
॥मू० दो० प्रियसुश्लेषसभेदहैनियमविरोधी
मान॥ सूछमलेसनिदर्सनाऊर्जसुरसबजान
२॥ [redacted]सूक्ष्म औलेस
औनिदर्शना औउर्ज २॥ ॥मू० दो० रसअर्थांतर
न्यासहैभेदसहितवितरेक॥ फेरअपन्हुति
उक्तिहैवक्रोकतिसविवेक ३॥ ॥टी० और
सवत फेरिनवरस फेरिअर्थांतरन्यास भेदसहित
फेरिभेदसहितवितरेक औअपन्हुति औद्वादस
भावमेउक्ति औवक्रोक्ति ३॥ ॥मू० दो० अन्योक्
तिविधिकरनहैसुविसेषोकतिभाषि॥फिरि
सहोक्तिकोकहतहैंक्रमहीसोंअभिलाषि॥
४॥ ॥टी० अन्योक्ति औविधिकरन औविसेषो
क्ति औसहोक्ति क्रम ४॥ ॥मू० दो० व्याजस्तुति
निंदाकहैंव्याजनिंदस्तुतिवंत॥ अमितसुपर
जायोतिपुनिजुक्ति१२सुनैसबसंत ५॥ ॥टी०
औव्याजस्तुतिनिंदा फेरिव्याजनिंदास्तुति फेरिअ
मितालंकार औपरजायोक्ति औजुक्ति ५॥ ॥मू०
दो० सुसमाहितजुसुसिद्धहै औरकहेविपरी
त॥रूपकदीपकभेदपुनिकहिप्रहेलिकामीत

६॥ ॥टी० तेरहवें प्रभावमें समाहितऔ सुसिद्ध औ विपरीति औ रूपकसभेद औ दीपकसभेद औ प्रहेलिका ६॥ ॥मू० दो० अलंकारपरवृत्त कहि १३ उपमा १४ जमक १५ सुचित्र १६॥ भाषाइतनेभूषननि भूषित कीजे मित्र ७॥ ॥टी० चौदहवेंप्रभावमें उपमाकेभेद औ पंद्रहयें प्रभावमें नष्पिषकहि जमककहेहैं सोरहवें प्रभावमें चित्र ७॥ मू० जातिलक्षनवर्ननं दोहा जाकोजैसोरूप गुनकहिएतैसोसाज॥ तासोंजातिस्वभावकहिवरनतहैंकविराज ८॥ ॥टी० जातिलक्षनवर्ननं जाकोजैसोरूप अरुगुनहोय तैसोईसो जानि नहांरूपकोगुननहीहै गुनकछि दूपनकहै नहांहेमकोसमें रूपनामआकृतीकोहैं॥ अरु सुंदरकोभीहै सोआकृतिजहांकहिएसोजाति अरुजाकोजैसोगुनक्रिया वरनिएसोस्वभाव साजभूषनवसनजनसाजसहितरूपवरनिए औगुनवरनिए अरुकुवलयानंदादिभाषामें भाषाभूषनादि जातिस्वभावोक्तितजुदीनाहीं तहांरूपलक्षन दोहा चमत्कारिकैग्राह्यहैरूपकहावतसोय॥ द्रव्यादीउपलंभको सोगुनकारनहोय ८॥ ॥मू० क० पीरीपीरीपाटकीपिछौरीकटिकेसोदासपीरीपरीपागेपगपीरीएपनहिंऔ बडेबडेमोतिनकीमालनडेबडे

नैननान्हीनान्होभृगुटीकुटिलवघनहिआं॥ बोलनिहंसनिमृदुचलनिचितौनिचारुदेषत हीबनैपैनकहतबनहिआं सरजूकेतीरतीरषेलैं चास्यौरघुवीरहाथद्वैद्वैतीरतीरातीएधनुहिआं ९॥ ॥टी० पीरोपीरोपाटरेसमकी पिछौरी जाकोचादरकहतहैं नान्हीनान्हीभृगुटीनाहींव रनोचाही तहांकुटिलभृगुटीनान्ही बगनहिया॥ व च्यासेरके नषइत्यादिसुगमजानिए ९॥ ॥मू० स्व भाववर्ननं क० गोरोगातपातरीनलोचनस मातमुषउरउरजातनकीबातअवरोहिए हं सनिकहतिबातफूलसेमरतजातओठअवदा तरातीरेषमनमोहिए॥ स्यामलकपूरधूरिकीओ ढनीओढेउडिधूरिऐसीलागीकेसोउपमान टोहिए कामहीकीदुलहीसीकाकेकुलउलही सुलहलहीललितलतासीलालसोहिए १०॥ ॥ टी० गोरोगातहैपातरीन यामैंपातरीनहीहै अस स्थूलभीनहीं प्रस्न स्थूलयामैंनाहीं उत्तर जनक होकेपातरीनहीं तबस्थूलभीनाहीं आयो याकहत लिखनेकीनहींजाननेकीहै जैसेकहोकेदरिद्रनहीं तहांसंपतिवानभीनहीं आयजातसाधारनहैा लो चननेत्रमुषमैंनहीं तहांसमातमेलक्षनातैंबडेनै त्र अरुउरधैउरजातकुचकीशोभाअवरोहिएनाम

सोभामानहै कुचउठेनाहीं प्रस्न उरपैउरजातहो तहै इहाँउरजातपदअधिक उत्तर उरजातहैअबै उरमेतेबाहिरनाहींभए किंवाआनसोभामुपनैंक हिजात उरजातकीजो सोभासो उरमैंमुषमैंनहीं आयसकत वचनहींसयुक्तिसामुद्रिकमैं मुनहु नमैंहै अरुओठमैंअरुदंतमैंरागीरपामनिकोसो हतहै अबैपाननहींपातलोभीरागीरपाहै प्रस्न इहाँविभावनाकाहेनाहीं उत्तर अंगअंगीभाव तैंसर्वसर्वमैंरहत तथापिपानकहेतेहुनिनाहीं पानहैकीरपलालहै अरुस्यामधूरकपूरकीजो ओढनीहैसोधूरसीनेत्रमैंलगरहीहै आनउपमा याकीनाही कानदलहीसदृस यहकाकेकुलमैं उलही नईहैलहलहीलतासदृस इहांगोगोगान गनहैहसत यातकहत इत्यादिनेजानिहायनान इनछिपैतोभी दोअलंकारसाफनाहीं किंवायामैं वचनअंगसोजानिहै अरुवचनादिकभावहै॥ तातेंजातिसुभावजानिए अरु लछननहीलच्छिन लु तासों यामैंपूरनउपमा कोंहकहैंसोनाहीं काहेकै अंगअंगीभावमैंजान स्वभावअंगीहै अरुउपमा अंगहै यातैंजातस्वभावमानिए १०॥ ॥मू० अथ विभावना दोहा कारनकोबिनुकामकोउदय होनजिहिठौर॥तासोंकहतविभावनाकेसो

कविसिरमौर ११॥ ॥टी० विभावना कारजकोका
रनबिन उदयहोइ सोविभावना ११॥ ॥मू० क० पूर
नकपूरपान षाए कैसौमुषवास अधर अरुन रु
चिसुधासौंसुधारेहैं चित्रितकपोललोललोच
नमुकुरमैन अमलमलकमलकनिमोहिमारेहैं॥भृ
कुटीकुटिलजैसीतैसीनकिएहूं होहिआंजीऐ
सीआंषैकेसोरायहेरिहारेहैं काहेकोंसिंगारि
कैसिंगारतिहैमेरीआलीतेरेअंगसहजसिंगार
हीसिंगारेहैं १२॥ ॥टी० पूरनकपूरतैंपानकारन
नाहीं मुषवासकारजहै ऐसेहीअरुनअधर ऐसेहीं
चित्रितहीनकपोलचित्रित अरुलोलचंचलनेत्रनै
नकामसुकुरसे किंवानेत्रनेमैनकोमुकुरमोहिलिए
तथाभृगुटीटेढी विनाकिए अंजनदए ऐसीआंषैं अं
जनहीन प्रस्न एकबेरनेत्रकहे फेरकाहे उत्तर इहां
अंजनमैंतातपर्ज उहांचंचलमैं प्रस्न तहां मुकुरभीचं
चलकहा उत्तर मुकुरमैंजोप्रतिबिंबतैंचंचल किंवाप्रथ
मऐसो अर्थकपोल जोहैसोलोललोचनमैंमुकुरहोरहीहै
अर्थइनकोजोदेषत ताकेलोचनआसक्तहोयजात अ
रुइहांनेत्रलोनैं यातैंतूश्रृंगारजोकारन सोकाहेकोक
रततेरोजोअंगहै सोबिनहीश्रृंगारश्रृंगारे किंवाअरु
श्रृंगारनाहीकरनदेतसषी यातैंनाईकामानुकीनौं सिं
गारउतारबैठी तबदूतीमानकोनामनाहीलेत तूंजो

शृंगारउतारसोभलोकरी अबन्धकृतसंदरलगत अ
बनंनायकपैचल १२॥ ॥ मू० पुनःविभावना॥
दोहा कारनकोनहुआनतेंकारजहोइसुसि
द्ध॥जानौयहैविभावनाकारजछांडिसुसिद्ध
१३॥ ॥टी० फेरिभेदकहत केहूंआनकारनतें
आनकारजहोयसोभी विभावनाजानिए १३॥ ॥
मू० सवैया नेकहूकाहूनवाईनवानीनवाए
विनाहींसुचक्रभईहै लोचनश्रीबिकुकाएवि
नाबिकुकीसोविनारंगरागमईहै॥केसवकौ
नकीदीनीकहोयहचंदमुषीगतिमंदलईहै
छोलीनहोछिगईकटिछीनसुजोबनकीयहजुक्ति
नईहै १४॥ ॥टी० उक्तिसषीकीसषीप्रति किंवा
नायकप्रति देषोयाकीवानीकोकाहूनवाईनाहीं
परंतुयहचक्रहोयगई नवायवोकारनसोनाहीं
लोचनकीश्रीसोभाकुकाएबिनहीबिकुकीव्हैगई
रंगेविनारागजुक्त कौनकोदईहैकहोयह गोचंद
मुषीकीगतिमंदहोयगईहै अरुबिनाछीलेकटि
जोहैसोछीनपरगईहै ऐसीजोबनकीजुक्तिनईहै
लोइहांजोबनकारण अरुवानीचक्रादिकारज तैं
समअलंकारमानोंचाहीआनकारनतेंआनकारजना
हींभयो यहप्रश्न उत्तर इहांजोबनएकचक्रता सो
यनोचंचलकौनचाही यातेंकारणांतर प्रश्न सबही

कोकारणजोबनहै यातेंकारणांतरनाहीं तहांऐसो अर्थ कैजोबनकीयुक्तिकहतहैं जुक्तितेंअनेककारजकर्त्तोव्हैगयो सोरीतिहोतीतोप्रस्तरही जुक्तितें जोबनकारणांतर किंवापहिले विभावनामैंकारनबिनकारज दूसरेमेंजोवनकारनतेंसबकाजभयोहै तौउत्प्रेक्षाहोतहै कोईकहैसोनाहीकाहेकै अहेतुकेहेतुहोहितबहेतुउत्प्रेक्षाहोतहै यातें इनके मतमैंद्वितीयविभावना यामैंनायिकाकेरूपकीअधिकाईकरिकै नायककोमिलायिबोव्यंगजानिये १४॥ ॥मू॰ हेतुलक्षन दो॰ हेतुहोतहैभाँति दोबरनतसबकविराव॥ केसवदासप्रकासकरिबरनिअभावसुभाव १५॥ ॥टी॰ हेतुलक्षन हेतुअलंकारदोरीतिको एकभावहेतुजोकहूसोमिल्योहोय आनकीसहायतेंप्रबलहोय दूसरोअभावहेतुजोनिबलहोय औजामैंभावअभाव दोईमिलैसो तीसरोअभावसामर्थ तातेंछीनहोय॥ १५॥ ॥मू॰ स्वभावहेतु सवैया केसवचंदन बृंदघनेंअरविंदनकेमकरंदसरीरो मालतीबेलिगुलाबसुकेतकीकेतिकचंपककोवनपीरो॥ रंभनिकेपरिरंभनसंभ्रमगर्भघनोघनसारकोजीरो सीतलमंदसुगंधसमीरहरोइनसोंमितिधीरजधीरौ १६॥ ॥टी॰ इहांऊढानायका

कीउक्ति हमारोप्रीतम परदेसगयो अन्यपुरुषसों रतिकरनोंचाहति तोपरकीया ऊढासषीसों गूढक हतिहै कैसीतलमंदसुगंधित जोपवनहैतानें इन सोंमिलकरिहमारोधीरजहरनकीनों अर्थअन्यना यकसोंमिलाउ यामेंभावहेतुदिषावतहैं कैचंदन केवृंदसमूहघनेहैं प्रसन्न घनेसमूहकोएकअर्थ उ त्तर समूहबहुत घनेनिकट किंवाबहुतपत्रभाषा जुन अरुअरविंदकमलको मकरंदपुष्परसमों सरीरमेंलगायआयो मानोंआदिआनमोंमिल्यो रंभाकदलीतिनसोंप्रारंभनकरिकें प्रारंभनमि लाप संभ्रमआदरकोभीकहेहैं किंवासंभ्रममान के कैधीरजहरनकोरमकै गोकोनादीकरिमकैगो यातेंहेतुअलंकार इहांचंदनादिउद्दीपनविभावहै धीरजछुटनोंअनुभाव अरुधीरजकूटिवेकोगोविषा द गोसंचारीरनिष्याई तातेंसंगश्रंगारहै अंगीहै नुभपन अत्रगर्भबढायो नवरंभाकेरानतें कपूर कोजीरपायो कपूरकेरानेंनिकसन नवधीरजहलो नासहेटगई॥नायकनपायोतोइन वचनहलचानकह नतो विप्रलब्धानायकाजानि॥ १८॥ ॥मू॰ अभा वहेतु सवैया जान्योनमेंमदजोबनकोउत्त स्योकवकामकोकामगयोई कोटचानचार तजीवकुलेचरजोरकलेतयरलाडिहपाई॥

आवतिजातिजरादिनलोलतिरूपजरासव
लोलिगयोई केसवरामररौनररौअनसाधे
होंसाधनसाधुभयोई १७॥ ॥टी० अभावहे
तु उक्तिवृद्धकीसषाप्रति मेरामकोनाहींररो अरु
कोईसाधनभीनाहींक्रियो संजमनियमइत्यादिप
रंतुमैंसाधुव्हैगयो यामैंकोईकहैकै विभावनावि
नकारनकारजहै सोनाहींकाहेकै इहांभावकीइ
च्छाकविकीहै अरुअभावनाजानेकेनिर्वेदनाही
भयो आपवपुकोपस्यात्तापकरतयहसांतरसमेंअ
भावहै किंवायामैं काहूकेबलतेंनाहीं यातैं अभा
वहेतु मैंनजानीजोबनमदकबउतरो अरुकामकोका
ज़ेगयोसोभीनजानों अरुजीवयासरीरकोनाहींछो
डोचाहतपरजोरने कलेबरछोडइयो किंवा कले
बरनेंजोरछोडदयोहै अबजराअवस्थादिनको
लीलतआवत अरुरूपजोहैजरायकेलीललीनों अ
रुकहूंसाधुकीठौरसिद्धभीपाठमिलत तहांभीवही
अर्थजानिये प्रस्न इहांप्रथमविभावनाकाहेनाहीं
विनासाधेतैंसाध्यभयो अकारणांतभीहै यातैं द्वि
तीयचाही उत्तर इहांनिबल बलरहितजोजराअ
वस्थाहै सोकारनहै॥ तानेसहायआनकीनपाई
यातैंविभावनाभई १७॥ ॥मू० अथस्वभावहे
तुवर्ननं कबित्त जादिनतैंवृषभानललीहीं

अलीमिलए मुरलीधरतें ही साधनसाधि अगाधिसबै बुधिसोधिजे दूत अभूतनमें हौं॥ तादिनतें दिनमानदुहूनको केसव आवतिबातकहें हीं पीछेअकासप्रकासै ससी चढ़िप्रेमसमुद्र बढ़ै पहिलें हीं १८॥ ॥टी० अथभाव अभाव उक्तिसषीप्रतिसषीको केजादिनतेंतूनें वृषभानतनी राधाकों मुरलीधरसोंमिलायो साधनसाधकरकें अगाधबुद्धिनेंसोधिकरिकें जेदूतकर्म अभूतनहीं होनलागनिनतें जादिननेंदिनदिनदोहूनकोमानकहीआवन केपीछेअकासमें चंद्रोदयहोन प्रेमसमुद्रपहिलेंहीं चढ़िजातसषी मिलायोयानेंस्वभाव [illegible] चंद्रोदयहीनप्रेमसमुद्र बढ़िजात यानेंअभाव [illegible] अकाकव्यावै भावलक्षन दोहा रसअनुकूलविकारकोभावकहतकविलोय सोईचारिप्रकारकोसंमतमतिनिजोय अभावकोलक्षन अनुचितदेंगनिभावजेते अभावकविलोय जोइक्योंदोहूनकेमपचंद्रोदपिवेकोचाहहै॥ तानें प्रेमसमुद्रबढ़नयहभाव अरुदिनहोंमेंजोसमुद्रकोबढ़नी सोअनुचितभाव जानेंभावअभावदोहूभयं अरुदोहूनकोदेननेंहेतु १८॥ ॥मू० अथ विरोधाभासलक्षन दोहा वरनतलगैविरोधसों अर्थसबैअविरोध॥ प्रगटविरोधाभासय

हसमुरूतसबेसुबोध १९॥ ॥टी० अथविरोधाभासलक्षनं विरोधसोजानिपरै अरुअर्थेअविरोध होय १९॥ ॥मू० जथा क० परमपुरुषकुपुरुषसँगसोभियतदिनदानसीलपैकुदानह्नौंसौं रतिहै सूरजकुलकलसराहकोरहनमुषसाधुकहैंसाधुपरदारप्रियअतिहै॥ अकरकहावतधनुषधरेदेषियतपरमकृपालपैकृपानकरपतिहै विद्यमानलोचनहैहीनवामलोचननिकेसोदासराजारामअद्भुतगतिहै २०॥ ॥टी० श्रीरामकोअद्भुतगतिहै आपपरमपुरुषहैंकुपुरुषसंगरहत यहविरोध कूपृथ्वीकेपुरुषसंगसोहत अर्थराजाकेसंगसोहतहैं किंवावानरभाखु दिनदिनदानसीलहैं पैकुदानसौंरतिप्रीति यहविरोध अरुकुपृथ्वीदानसौंरतियहअविरोध किंवादाननामभदवारेआपहैं परंतुजेमदतैंपीनभक्तहैं तिनसौंजिनकीरतिप्रीतिहै सूजेकुलकेकलसहैं परंतुराहुतैंसुषरहतयहविरोध अरुराहसुराहकेरहेसुखपावत यहअविरोध अर्थजेकुराहीहैंतिनपैकोपराषत अरुसाधुकहतकेसाधुहैं परंतुपरदाराप्रियहैं यहविरोध परदाराउतकर्षदाराजानकी किंवाभगत किंवातुलसी यहअविरोध अकरकहावतहैं अरुधनुषधारेहैंयहविरोध अकरका

हूकोदंडनाहींदेन यहअविरोधं परमपकृपालहैं॥ परकृपानहीं यहविरोध अरुकृपानतरवार जिनके करमैं तिनकेपतिहैं यहविरोध त्रियमानहीनेत्र हैं अरुहीनवामलोचनविरोध अरुहीनहैजिनके लोचनवाम इस्त्रीकुलटादि किंवाविषमदृष्टवार यहअविरोध ऐसोविरोधाभास किंवाजिननैंवाम टेढेलोचनवारेरावनतिनकोनामकियो अथवाजिनकेवा मलोचनहैंतिनकेहीनकियो २०॥ ॥मू॰ पुनः विरोधलक्षन दो॰ केसवजहाँविरोधमैंरचियत वचनविचारि॥तासोंकहतविरोधसब कविकुलबुद्धिसुधारि २१॥ ॥टी॰ यहतोविरोधमैंवचनरचिए २१॥ ॥मू॰ सवैया आपुसोतासितरूपचितैचितस्यामसमेररंगरंगरातैं ॥केसवकाननहीनसुनैंसुकहैरसकोरसनाविनवातैं॥नैनकिधौंकोऊअंतरजामीरजाननिसौंजियकृतनातैं दूरलौंदौरनिहैंविनपायनदूरिदुरीदरसैमतिजातैं २२॥ ॥टी॰ सखीकीउक्तिसखीप्रति येपनत्रअद्भुतहैं आपसितासितनैनस्यामहैं परंतुस्यामकोरातिरंगमैंरंगतहैं॥ प्रश्न तादृशोंविषमकादिनादी अनुरागसों उत्तर ए कछकाननैं अन्यकारजनासौं दहोंदोषकारनहैं किंवाइहांनस्नाराण्यवसानागोनोंनिकृष्टी तेंअनुराग

अरुकाननतेंहीनसुनतहैं अर्थोसइसारासमुन्त
हैं अरुरसनाजीभविनबातैंकरतरसवारी अर्थोस
संज्ञाबातैंकहतहैं एतेरेनेत्रहैंकेकोऊअंतरजामी
हैं हेसषीजानतिहेजियमैंतोसौंबूरुतहैं दूरतौंदौ
रतहैं विनापायनतैं दूरतैंदुरीबातैंदरसतदेषतहैं
यामैंकोईकहैके विनकारनकारजतैंविभावना
होत सोनाहीकाहेइहांकारन कारजकोसंबंधना
हीहै केवलविरोधाभासहै प्रथमतुकमैंविषमना
हीं काहेके विषममैंकारनकारजभावहै यामेजो ने
त्ररंगतैं जोरक्तरंगव्हेजातोतोविषमहोतो चितव
नमात्रतैंरक्तभयो प्रस्न केस्यामसुक्लरंगतैं रक्तकी
उतपत्तीभई तोकारनकारजभावकाहेनाही उत्तर
॥इहांसाध्यवसानालक्षनातैंकाहेकेरोप्यमान जोर
क्तहैसोइहांहै रोप्यविषयजोअनुरागसोनाहीं २२
॥ ॥मू० पुनः सोभनसुवासहाससुधासौंसु
धारयोविधिविषकोनेवासजैसोतैसोमोहका
रीहै केसोदासपावनपरमहंसगतितेरीपर
ह्नियहरनप्रक्रितकोनपारीहै॥ वारकविलो
किवरवीरसेवलिनिकहूंकरतिवरहीवसऐ
सीवैसवारीहै एरीमेरीसषीतेरीकैसेकेप्रती
तिकीजेकृसनानुसारीद्रिगकरुनानुसारीहै
२३॥ ॥टी० उक्तिसषीकोनायकाप्रति केहेसषी

तेरीजोहांसहै सोसोभनचारोसुंदरहै जामेंबासमु
गंधहै सोतेरोहांस्य सुधाअमृतसौंविधिनेसुधारो
है परंतुमोहकरनहारकैसोहै कैजैसोविषकोनिवास
अस्थानतोयामेंयहविरोध कहनमात्रहै सुधासौंमा
नौंबनायो प्रश्न यामेंगम्योत्प्रेक्षाअलंकारकहनहो
नहै उत्तर सबअंगहैंअंगीविरोधाभास किंवाविष
कोकोईचाहतनाहीं यहचाहनहतहै यहआभासभये
तैंमृतुहोत यहआभासभयेजीवन अरुपावनपुनीतजेप
रमहंसहैं तेसीतेरीगतिहै परमहंसमेंश्लेष परमहं
स एकपरमहंस दसावतार तोकोपरकैहियकोहरिवे
कोकोनप्रकृतिधारीहै राहसंचारोवेसन्नलोकोबसक
रैयहविरोध अविरोधएकबेर देखतबलचोरसोको
ऊनाहींचली ताकोचारकविलोकबसकियो याचारी
वेसमें यानेंतेरीप्रकृतिकैसेकोधारी अरुस्यामरंगको
अनुसरनकरेहैंग्रहनकोरहै कानननेंभागभयेहैं हृ
स्नकरनसौंविरोधहै जोकृष्णानुसारी होय सोकानें
कैपीछेंनलगे किंवाकृष्णद्रौपदीकेमनमारोहोकै का
नेकेपीछेनलगे इहांनायकनायिकाआलंबनविभाव
वचनकटाक्षअनभाव गर्भसंचारी रतिथाईहै रस॥
॥२३॥ ॥मू॰ अथविसेषलक्षण दो॰ साधन
कारनविकलजहंहोयसाध्यकीसिद्ध॥केसो
दासवषानिएसोविसेषपरसिद्ध २४॥ ॥दो॰

विसेष यहलक्षनलोगकहतहैं कैविसेषअलंकार कौनयोहै चंद्रावलोककोनाहीं तामैंऐसाहै कैएकस मानएकविसेष समानमैंविसेषहोतहै साधनकोग्र र्थसाधकहै जाकारजकीजोकारजसिद्धकरिए सोव्या करनकीरीतिसौंसाधनकहावै साधकजोहैसोकार नकहिएहेतु ताकारनकेविकलहोयहीनहोय औ साध्यकहिएकाजेताकीजहाँसिद्धहोय अरुसोईन्या यमैंजानिए जाकोसाध्यकरियेसोसाध्य अरुजोनसा ह्वकतुसोहेतु दोहा सैलसुअग्नीवानहैधूमवत्वतैं जान॥ सैलपक्षसाध्यसुअगिनधूमहेतुपहिचान इ हाँसाधनधूम साध्यअगिनी किंवाजेसेकुलालघट व नायबेमैंप्रवृत्तिभयो तहाँचक्रचीवरादिनाहीं तहाँका रनतीनहैं एकसमवायि द्वितीयअसमवायि त्रितीय निमित्त तोइहाँनिमित्तकारननहोय २४॥ ॥मू॰ य

था सवैया साँपकोकंकनमालकपालजटा निकीजूटरहीजटिआँतैं षालपुरानोपुरानो ईबैलसुऔरकोऔरकहैंविषमाँतैं॥पारव तीपतिसंपतिदेषिकहैंयहकेसवसंभ्रमताते॥ आपुनमाँगतभीषिभिषारिनिदेतदईमुहमांगी कहातैं २५॥ ॥टी॰ काहूभक्तकीउक्ति केमहेस मुषमांगी कहातैंदेतहैं सर्पादिकोभूषन कपालादि कोकंठमाल जटाजूटजोहैसोजटाभईहै पुरानोवा

घचरहै पुरानोबैलवाहन इतनेंपरविषमंमानेरह
त आनबोलैचाहैआनबोलत तोहूहौंकाजसाध
नकरतसिवजी अरुमुषमाँगेदेन मोकाज्जसाध्य
अरुहेतुरलादिकनाकोरिकेहीनहैं अरुयहकामश्री
तैंदानसिद्धनाहींहोत यातैंविसेष ७५॥ ॥मू॰ पु
नः तमोगुनओपतनओपितविरूपनैंनलो
कनिविलोपकरैकोपकेनिकेतहैं मुषविष
भरेविषधरधरेमुंडमालभूषितविभूतिभून
प्रेतनिसमेतहैं॥पातकपिताकेजुनपानकी
हीकोतिलकभावैगातकामरीकोकामिनी
केहेतहैं जोगिनकीसिद्धिसबजगकीसकल
सिद्धिकेसोदासदासिनिज्योंदास नकोदेतहैं
२६॥ ॥टी॰ तमोगनजोहैताकौंओपत नामनर
चारकोमिलनासपीछेजोगहीकरत नाकोओपनीक
हत किंवातमोगनकोहैननमेंओप अरुविरूपहैं
ज्ञानमयजिनकोरूपहै विषमनीनि सूर्ज चंद्र अग्नि
एविषमहैं किंवासबकेनत्रएकगोनिनैंदाई ज्नकैने
त्रएकुअग्निमय एकचंद्रमीनलमय एकअग्नि सूर्यनम
मय यहीविषमता अरुसबलोककोविसेषकरलोपक
रतहैं अर्थनासकरत कोपकेनीघरहैं त्रय एककार
तमोगुनओपतनहीं फेरकोपकेघरतायातैंभनकलि
दूषनकाहैनदोष उत्तर ओपऊपररहन ताकोहै

कहै हृदयमें नहीं यातैं अंतरबाहिरदिषायो नुपविष धारनकरेहैं अरुविषधरसर्पतिनकोभीधरेहैं अरु मुंडमालभी भूषितहोरहीहैविभूति भूतप्रेतकोसंग अर्थआपकोपकेघरभूषनसर्प तेंभीकोपी संगभूत नको संगीभीनहीनीके अवताकोपकोपष्टकरत के पिताब्रह्मातिनकोएकसीसकाटडारो कहोताको क पावैयानिमित्त गौतमब्रहस्पतिकीइस्त्री गमनकर्ता चंद्रमा ताहीको करैहैतिलक अरुभावतहैगीतका मको जोकामजराए अरुकामिनीरतिकेहेतु विलाप किंवाकामनाजाकेहृदयमैं ताकोगीतभावत कामि नीइस्त्रीताकीभीजोकामना करैतापेप्रसन्न अर्थ भ स्मासुरादिजोगिनीकीजोसिद्धी अरुजगकीसिद्धी अ र्थभुक्तिमुक्तिदोई दासीकीरीतितैंदानकोदेतहैं द्या मैंहेतुचाहीसतोगुनी समनैनइत्यादिसिद्धसदाहोय इत्यादिहेतुविकलहै यातैं विसेष २६॥ ॥मू०पुनः

वाजिनहींगजराजनहींरथपातनहींबलगात
विहीनौं केसवदासकठोरनतीक्षनभूलिहू
हाथहथ्यारनलीनौं॥जोगनजानतिमंत्रनजा
पनतंत्रनपाठपढ्योपरवीनौं रक्षकलोकनिके
सुगवारिनिएकविलोकनहींबसकीनौं २७॥ ॥

टी० यहगवारिग्वालिनीतैं अनेकलोकनको रक्षकव स एकहीविलोकनतैं बसकीनौं देषोवाजिघोडाआदि

तरंगिनीसनानाहींहै अरुहाथीभीनाहीं अरुचलनें
गानसरीरविहीनहै अरुकहोरतीक्ष्णहथ्यारभीहा
थकेनाहींलेत जोग जंत्र मंत्र तंत्र जपजापाठपभीनहीं
जानत इहांसाधनजोहै हेतुसेनादितानें हीनहै साध्य
कर्त्तानायकायातेंविसेष किंवानानें त्रिलोकननें वस
कीनो यातेंविसेष २७॥ ॥मू० रसिकप्रिया क०
द्विजकीकुमारिकावेलीनेंसुकसारिकापठा
ईकोककारिकानिकेसबमवेनिबाहि गोरी
गोरीभोरीभोरीथोरीथोरीवेसफिरैंदेवतामोदे
रिदौरिआईचोरीचोरीचाहि॥बिनगुनतेरीआ
निभृकुटीकमानतानिकुटिलकटाक्षबानपह
अचरजआहि एतेमानडीठडेठमेरकोंअडोट
मनपीटदेहैमारतीपैचुकतीनकोऊनाहि २८
॥टी० सर्पोवचनसर्पोप्रति कैहैपिद्विजकीकुमारिका
बिनविवाही सुकसुवा सारिकामैना तिनकोपढाय
तीहैकोककीकारिका प्रश्न इहांकुमारिकाकोक
कारिका सुकसारिकाकोंपढावती सोकिन उनकोप
ढायो उत्तर सुकसारिकाननें जिनकोपढायो सर्वसुनत
सुनत उनकोकोककीकारिकाआवगई सबैनिबा
हिकै असुइनाहीं गोरीभोरीथोरीवेसकोरि इहांदीप
सावकुवारतेंजानिये तेदेवतासदृस चोरीचोरीआ
वती देवसबकोंदेषत देवकोकोईनाहींदेषत सो

विनागुनप्रत्यंचाहीनतेरोश्रानसपषहै औंरजोकमान हैतातैंटेढेकटाक्षरूपीबानमारतीहैं एकताकमानगुन हीन द्वितीयटेढेबानतैं घाउनभयोचाही एतेमानएते जोसामान्यहैं मारनेकेसोतूंमानडीठकीजोईठ चेष्टामे रेकौं अदीठकरिकेमोकौंचुरायके किंवाईठजाहमारो इष्टश्रीकृस्नताको सोपीठदेकरमारती परंतुचूकती नाहीं कोनऊंचोटतैं प्रस्न पीठदेकैदीठकेसेमारैंगी उत्तर जात आगेकौंमुरकेहेरत प्रस्न दोहा राधेआधेनैनसौंफिरिफिरिहेरतजाय ॥ज्योंनिसानआगेचलैपटपीछेफहराय इहांसर्वसाधनपूर्ववतजानिये प्रस्न इहांविभावना कहेनाहीहोय उत्तर विभावनामैं कारननाहीं इहां कारनहै परंतुहीनहै किंवाइहां विनगुनकीकमान भृकुटी कुटिल कटाक्ष सर पीठदैदैमारतीहैं सोनाहींचूकत यहविसेषतादिषाई इहांअर्थपढेबिननाहींहोन सोविनहींपढोअर्थ करत यहविसेषता २८॥ ॥मू॰ दोहा

॥वाचनआवेलिषकछूदेषतलौहनघाम॥अर्थसुनारीबेदईकरिजानतपतिराम २९॥ ॥

टी॰ पतिरामनामएकबेदरहेताको केसवसौंवैररहो जबकेसव कविप्रियाबनावनलगे तबतानेकहीहम आपकेहैं हमारोनामकोईजागामैं राषिदीजिये सो मुनिइंद्रजीतअरु प्रवीनरायकहीके याकीनिंदाभीरहै अरुनामराषिए ताकोयहदोहाहै केपतिरामकोनहींलि

पनोआवत नहीवाचनोआवत नहीभूपकोहुको जा
नहै नअर्थजानत ननारीकोज्ञान इनकोहै परंतुवेसब
जानत आनसबेपूर्ववत २९॥ ॥मू० अथउत्प्रेक्षा
॥दोहा॥ केसवऔरहिवस्तुमें औरेकीजेतर्क
॥ उत्प्रेक्षातासोंकहैंजिनकीबुद्धिसपर्क ३०॥॥
टी० अथउत्प्रेक्षा औरवस्तुमें औरवस्तुनकोतर्केकै
मिलाइए ताकोउत्प्रेक्षाअलंकारकहतहैं जिनकीबुद्धि
सपर्कजागतहै ३०॥ ॥मू० जथा क० हरकोधनुष
तोरिलंकातोरिरावनकोवंसतोस्योनोरिजैसे
बहुबंसबानहै मनुनिकेसेलिसलफूलन
लसहेरामसुनिकेसोगयकोसोहोयादद्रग
तहैं॥ कामसरहूतेतोपनारेतरुनीनहूकेला
गिलागिउचटिपरतगिमेगानहै मेरेजानजान
कीनंजाननिहैजानकछुदेपतहीतेरेनैनमेनस
केजानहैं ३१॥ ॥टी० मुनिकीउनिमुनिपनिकेगागनें
हरसिवतिनकोधनुपतोस्यो अरुलंकानोरिपुनराव
नको वंसमेतोस्योजैसेपुगनोवांसयानपवननोरे अरु
हैमसेवंसनामपीठको अरुलाटकोनीहैजैसेबहुहूको
पीठको बातरोगतोरे अरुमनुजोहैनिनके सेनलरको
सल त्रिसूलतेसेनफूलसेमजानलमेसहे ताकोसुनि
हिंदूमदहरतजरातहै अरुतरुनीनकेजेतारेते काम
बाननेतोबहैं सोलागेपरलनननवेधो काहैरामअनकु

लहैयातैंजोमेरेजानकहतहैसोउत्प्रेक्षा व्यंजकज्ञा
निये है जानकीतूंजानजादूकछूजाननहै यातैंतेरेनै
ननलागत मेनमोमसद्रिस रामकोतनहौ यज्ञात मैं
यहसंभावनाकरतहौं इहाँऐसेप्रलय रामतिनकोत
नतेरे द्रिगमेनसौंकरदेतहै यहहेततैं हेतूत्प्रेक्षा ३१

॥मू० श्रीरामचंद्रिका क० अंकनहसंकनप
योधिहूकीपंकनसुअंजननरंजितरजननि
जनारीको नाहिनैंम्लकम्लकनितमग्रान
कीनछितिछाँहछाईछलनाहीसुपकारीकौ
॥केसवकृपानिधानदेषिएविराजमानमानि
एप्रमानरामवेनवसनचारीको लागतिहैजा
यकंठनागदिगपालनिकेमेरेजानसोईकृत
कीरतितिहारीको ३२॥ ॥इतिश्रीद्विविधभू
षनभूषितायांकविप्रियायांविसिष्टाअलंका
रवर्ननंनामनवमःप्रभावः९॥ ॥ टीका॥ श्री
रामचंद्रिका श्रीरामजूकेप्रति सुग्रीवादि कोईकोक
हैहै केयहचंद्रमामैं जोस्यामताहैसो अंकनहीहै॥
अरुपयोधिकीपंकभीनहीहै अरुरजनीकीरात्रीकौं
चंद्रमानैंआलिंगनकरो ताकोअंजनभीनहीहै अरुत
मकोजो चंद्रमानासकरो ताके प्रातकोम्लकभीनाहीं
॥किंवाहेराम यहमयंकको अंकसागरकीकीच अंध
कारनाहीहै तुम्हारीजोकीरतिहै सोदिगपालनकेनेहा

थो तिनके करलागि प्रकास कियो सो रुकी गनिरश्मि
मैं कलंक है अथवा नेरिकोगनि दिगपालनके दं
ड तांई लगि अर्थात पहुंचन है तिनको अनुआप
चंद्रमा जहांताईं पहुंचनको समर्थ नाहिं है तिनि
पृथ्वीकोआंदरभीनाहीं अरु सुप्रकाशितो चंद्रमाहै ना
मैं कलबहुनहै काहूनाहींनें दर्शनकोको गोनेंभी
नाहीं है हे कृपानिधान कृपाकोपान होयएंह जोनिरा
जमानस्यामनामतिमैंयामें मानितप्रमानकरकें हग
मवचनश्रवनचरनानरको हैंगोलागनि है नायके नाग
लायी तिनकेकंठमें निद्रागिकोगनको कलंकसनाताको
देपि चंद्रमाकोमोहकनको हैमैं ठगी उज्वलनाहीं सोई
यहहै किंवातोकोयहकालहै प्रथमचंद्रमाकोकारे
पलगायकेंपाछेंनागकेंठसोंलग्यो पवन नाहींकोगन
मैं कारिपकहा उत्तर चंद्रमादेपनकोर गोस्वामकरो
३२॥ ॥इतिश्रीमन्महाराजाधिराजमहाराजश्री
मन्हईस्वरीप्रसादनारायणसिंहज्यदातृस्य आश्रित
गामी ललितपुरनिवासी हरिजनकवी स्वामीनन स
रदाराध्यकंश्रीभगवानविरचितायां काव्यप्रभाकरटीका
यांवर्णार्थानामनवमःप्रभावः९॥ ॥ ❋ ॥

मू० अथआक्षेपाअलंकार दोहा कारजकेआ
रंभहीनहैं कीजनप्रतिषेध॥ आक्षेपपकताको
कहत बुद्धिविधिवरनिसुमेध १॥ ॥दो० आक्षे

पाअलंकार कारजकेआरंभसमयमें जहांप्रतिषेध नामनिषेधकरैं किंवाप्रतिबंधककीजे सोआक्षेप अलंकारकहावे बहुतरीतको सोभविस्यभूतवर्त्तमानविषेंहोतहै १॥ ॥मू० दो० तीनहुकालबषानिए भयोजुभाभीहोत॥ कविकुलकोकौतुककहतजहंप्रतिषेधउदोत २॥ ॥टी० भयोभूतभाभीजोहोयगो जोअबहोतसोवर्त्तमान कहतप्रतिकहतके २॥ ॥मू० दो० बरज्यौंहोहरत्रिपुरहरबारककरिभ्रूभंग॥सुनौंमदनमोहनमदनहोहिगयोअनअंग ३॥ ॥टी० कोईइस्त्रीकीउक्तिपारवतीप्रति देषोबरजोहों मेंतिहारेपतिकोबरजो कैवारकएकबार भ्रूटेढीकरनेतेंत्रिपुरहरकहाए अर्थकोपकरेपर त्रिपुरनबचो सोनमानी अबसुनोमदनकोमोहनवारोरतिमदनकामअनंगहोयगयो अर्थजरिगयो यामेंपूर्वकेरत्तांततेंभूतप्रतिषेध प्रस्न प्रथमतोभूतकीकथाको इहांप्रयोजननाहीं द्वितीय जासौंकहततानेकौनआरंभकाजकीनौं बहतोबिचारीविधवाहे ताकोसूलदेनौं यहकोनआक्षेप उत्तर तहांऐसो अर्थकेतीनिदोहामैं तीनिउदाहरन उमाकेमानमेंहे सषीकहतके हेपारवतीमैंबरजोहों हरप्रथमतोत्रिपुरहरहैं महाक्रोधीफेरिदिषावतकैवारककरिवारनकरिजोतूंभ्रूभंग

करत अर्थसीधोभ्रुकुटीकरिले किंवावारक्रांवार भ्रूभंगकरेतें सुनोहेमदनमोहन जाकोमदनकों ऐ सोसिवताकीमोहनहारी मदनकानअनंगनामह्लो गयो अर्थइनकोकोपअनर्थ करनहारजौलों इन्हे कोपनहींआयो तौलोंवारनकरआपनीभ्रूभंगकों यहभूतवर्त्तमानकह्नो मानकोप्रतिषेधकियो या तेंआक्षेपअलंकारजानिए ३॥ ॥मू॰दो॰ तातेंगौ रिनकोजिएकोनहूंविधिभ्रूभंग॥ कोजानेंह्वे जायकतप्राननाथकेअंग ४॥ ॥टी॰ सोहै सषीपार्वतीकोसकोप देषिकहनहै प्रनयमानमें ॥क्रीडाकलहमेंजो उपजैसोप्रणयमानकहावै॥ना तेनामति सवास्ते हेगोरीपार्वतीकोनहूंप्रकारतेंभ्रू भंगमतकर प्राननाथजोसिवहैं ताकेअंगकहांहोय गे भ्रूभंगआरंभकरतप्रतिषेधकरनिवे सोयनामगी यहभाभीजानियें ४॥ ॥मू॰दो॰ कोविदकपटन कारसरलगननननतिंउछाह॥ प्रनिपलन तननेहकोपहिरनोंहसनाह ५॥ ॥टी॰ कोइ सषीकहतहैके हेपार्वती कोविदपंडित अर्थ सर्व जान किंवाकोविदनायिकासोंकहतहै यहनकार भोहैसरहै कपटनकारयोहै फल ना नकारकोरूप हैपैयह सरनयनायकाकहतहैकैलगननलजत उछाह नाहींनजननकाहैतें किंयाकपटनकारसरनों

तुमचलावती अर्थमानतोकियोहै ताहीअरुमाने
नीहोके ताहीताहीकहती याकेलगेतैं नाँहउछाह
नतजेगो प्रतिफलसबछननूतननवीननेहको तिहा
रोनाँहनायक सनाहपहिरेरहतहैं तातैंप्रतिषेध गो
रीमानकियेसोसषीकुडावतहै कैजेहरकैसे हैं जिन
त्रिपुरकोहरोनाममारो तनकभृकुटीटेढीकरकैं अरु
सुनोमदनहीहै इनकी मदनकाम जबमोहबढायो
तबबिनअंगहोयगयो ताकोउत्तरगौरीकियो कैह
मारेनाहकेनकाररूपीसरनाहींलगत काहेहरबेला
मैं नेहकोबषतरराषतहैं देषियामैं वर्त्तमान यातें
तीनकुमैं मानको बरजिबो वस्तुतैं आक्षेपाअलंकार
॥५॥ ॥मू० दोहा आक्षेपनाम प्रेमअधीरज
धीरजनिसंसयमरनप्रकास॥आसिषधरम
उपायकहिसिक्षाकेसबदास ६॥ ॥टी० आक्षे
पनाम प्रेमाक्षेप धैर्याक्षेप अधैर्याक्षेप संशयाक्षेप
मरणाक्षेप आसिषाक्षेपधर्माक्षेप शिक्षाऽक्षेप यह
आठआक्षेपको उपायकेसबकहतहैं ६॥ ॥मू० प्रेमा
क्षेपलक्षण दो० प्रेमबषानतहीजहाँउपजत
कारजबाध॥कहतप्रेमआक्षेपयहतासोंके
सवसाध ७॥ ॥टी० प्रेमलक्षन प्रेमआपनोकहत
केकोईकाजकोबाधहोयसो प्रेमाक्षेपजानिये ७॥ ॥
मू० जथा क० ज्यौंज्यौंबहुबरजेमैप्राननाथमेरे

प्रानआंगनलगाइएजूआगेदुपपाइयो त्यौं
त्यौंहँसिहँसिअनिसिरपरउरपरकोचोकि-
येऔंपिनकेऊपरपेलाइयो ॥ ग़कोपलइन
उतसाथतैंनजानदीनें लोनैंरहैंसाथहींकहाँ
लौंगुनगाइयो तुमतौकहूनतिन्हैंछाडिकैच
लनअवचाहतएकैसेतुम्हैंआगेउठिधाइयो
८॥ ॥टी० उक्तिनायकाकी नायकप्रति कै ज्यौं ज्यौं व
कुवारमैं वरजैगएकैमैरजौप्रानहैं सोहूप्राननाथ आ
पने अंगसौंजिनिलगावहु ताहीतोंआगेदुपपावकु
गे त्यौं त्यौं आपहँसिके पुसीह्वैकैअपनेसिरपर उ
रछातीपर आंपिनपरपेलावनरहे पलभरनामछुन
भरभी इतउनभी नहींजानदियो अपनेसाथमैराषे
अवनिनकोत्यागतुमगमनविचारत सोअवतुमनैं
आगेजाहिंगे॥ अर्थमरिजायंगी प्रश्न यामैंमरनाक्षेप
काहेनाहीं उत्तर इहाँ नायनमैंप्रेमकीअधिकाई क
रनी सोईयामैंप्रेमदिपायो पहगिन्हैं लक्षन लक्षको
जाननाहींहै तेयहअर्थकरत कैनम्हैं अवतुमउनको
कैसेछाडत हौ अरुतुमकोआगेउठपावनौहै यह्ना
यकाकाहू विदेसीसौंआसक्तभईरही ताहीसौंकहत
है ८॥ ॥मू० अधैर्याक्षेप दो० प्रेमवचनकेसु
नतजहँउपजतसात्विकभाव॥ कहतअधी
रजकोसुकवियहआक्षेपप्रभाव ९॥ ॥टी०

अथअधैर्योक्षेप जहाँप्रेमभंगकेवचनसुनतजहाँ सात्विकरोमांचादिभावउपजे सोअधैर्योक्षेप अरु कहूँप्रेमभंगभीपाठहै तहाँभीवहीअर्थ ९॥ ॥मू॰ क॰ केसवप्रातबडेई्बिदाकँहआएप्रियाप हँनेहनहेरी आवौंमहावनहूंज्यौंकहौंहँ सिबोलहूंयेसेवनायकहेरी॥ कोप्रतिउत्तर् देइसषीसुनिलोलविलोचनयौंउमहेरी सौं हककेहरिहाररहेदिनबीसकलौंअँसुआन रहेरी १०॥ ॥टी॰ श्रीकृष्णकोसषीप्रति किंवाराधा कीसषीकोवचन केआजप्रभातमहावनकौं बिदा मांगनगए॥ताकोउत्तरकोनदे बीसदिनलौं आँसू ना हींरुके इहांआँसूसात्विकभावउपजो प्रश्न बीसदिन लौंआँसूनरुकेतब भोजनसैनकैसे उत्तर भोजनसैन तोविरहमैंवरननत्यागकहोहै प्रश्न फेरनायककेरह नेकेवचनतेकाहेनरुके उत्तर दिनविसवतनामइव तलौं किंवादिनविषजललौंरहो अर्थजबलौंअमृतदि ननहींपायो जानकहिबोबिषनहीं जाहुगोयहअमृत प्रश्न बीसकोविषक्यौंकरभाषामेहोय लघुदीरघ दीर घलघु होयजात ग्रह९ नक्षत्र२७ अरुवेद४ अर्थक रिकोबरजे मोहिषात किंवाषट्तिलोदोहा दीरघहूलघु करिपडैसुषहीमुषजिहिँठोर१०॥ ॥मू॰ अथधैर्यो क्षेप दो॰ कारजकरिकहिएवचनकाजनिवा

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

तजिन्हेंप्रबोध १३॥ ॥टी० अथसंशयाक्षेप जहाँ संदेहउपजायेतेँ काजेमेंविरोधहोय १३॥ ॥ मू० क० गुननिवलितकलसुरनिकलितगायललि तललितगीतश्रवनरचायहे चित्रितहौंचि त्रनिमैंपरमविचित्रतुम्हेचित्रनोज्यौंदेषिदे षिनैननिनवायहे॥ कामकेविरोधीतम सो धिसोधिसाधिसषीबोधिबोधिश्रोधिनकेवा सरगवायहै केसोरायकोसोमोहियहहीक ठिनवाकोरसनेरसिकलालपानक्यौंपवाय है १४॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनायकप्रति केहेप्रानध नं तिहारीजैसीरीतिगानमेंहै सोभीकरोंगी अरुचित्र नीपेतिहारोऐसोचित्रवनवावहुंगी जाकोदेषियहल ज्जापाय नैननवावैंगी अरुकामकेजेविरोधीतम अंध कारादितिनसैंकहूंमंत्रभीपाठहे तहाँसिवमंत्रलीजिए किंवाकामविरोधीसंतादिककीकथा सुनायहैं अरुश्रा वनवारीजो अवधताकेदिनभीगनाऊंगी परंतुमोहिय ही कठिनदेषिपरतवाकीरसना रसिकहै तिहारेहा थछोडआनसषिनके दियेपाननाहींखात सोमैंकेंस षवायहौं अर्थरसनावारीएनवनिपरैंगी पानपानमो तैंनहोयगो यहसंसयसुनाय गमनरूपकाजेमैंप्रति बंधकताजताई १४॥ ॥मू० मरनाक्षेप दोहा म रननिवारनकरतजहै काजनिवारनहोत॥ जा

नकुमरनाक्षेपकविज्यौंजियबुद्धिउदान १५
॥ ॥टी॰ मरनाक्षेप ऊपरतैंगोंदिखात मीजहांन्या
इकेगापिएसो आक्षेप नहीं॥ मरन॥ निवारन॥ क
रैतें कानेंनिवारन ह्वायसोमरनाक्षेप १५॥ ॥मू॰ क
वित्त नीकेकैविचारदैहौंहारद्वारकेसोदास
मेरेघरआमपाममूरजनछावैगो किनमैंक
चायलैहौंऊपरअटानिआजुआंगनपटाप
नैहौंनैंसमोहिभावैगो॥न्यारन्यारनाचहाँन
मूंदिहौंकगोंपाजालपायहैनपैंडोपौनआवन
नपावैगो माधवनिहारपाछेमोपाईमरनमू
ढआयनकहनसुनौकौनपैंइआवैगो १६॥ ॥
टी॰ उक्तिनायककोकी नायकआनि कौनजोविदेशन
भयेपरमेगेस्वस्वद्वारजाना होम्याहैं नानैदैन कि
वाँदेहूंगी ऊंचेमुंडेगोकौं ग्रानैपीकोंछभीन यावैगी
अरुअटा कोटा अटारीका आंगनदेहुंगी अरुआंग
न पोकभी पटायनदूंगी नानबगन नहीं सी पावैगा॥
आवन वाहिर कहीजानके जालभीमंडैगी पौनभी पै
ठने न पानैगी अरुआइ गनोपौनभीपाछैतें पामैमरन
गोकेनैंगगनकाजैंगेका याते आक्षेप होतहीं रूपातैं म
रनत्याय गननगोका १६॥ ॥मू॰ आसिषाक्षेप॥
दो॰ आसिषविपकेपंथकौनैंवंदनःबहुराय॥
आसिषकोआक्षेपयहकहतसकलकविराय

य १७॥ ॥टी० सिक्षाक्षेप आपनेदुषकोछुपायक
यहअर्थ १७॥ ॥मू० क० मंत्रीमित्रपुत्रजनकेस
बकलत्रगनसोदरसजनजनभटसुषसाजसौं
॥एतोसबहोतजातजोपैहैकुसलगातअबहीं
चलौकैप्रातसगुनसमाजसौं॥कीनौंजोपया
नबाधछमीएसोअपराधरहियेनपलआधबं
धिएनलाजसौं होनकहौंकहतनिगमसबअ
बतबराजनिपरमहितआपनेहीँकाजसौं १८
॥ ॥टी० कोईराजाकोपयानसमयरानीं ताकोसषी सु
नावतहै केराजाकोकाजपरहितूहै काहेकारजसौंएस
बलगेहैं मंत्री मित्र पुत्र पुत्रकेजन किंवामित्रओताके
पुत्रजन दासओकलत्र इस्त्रीगनसमूह ताकेसोदरभट
जोधा सुषसाजसौंएलगेहैं अर्थएसबपराएहैं जो ति
हारे सुषकोसाजरहैगो तोफेरह्वैयरहैंगे अरुसुषसा
जजोहैसो गातसरीरसौंलगोहै जोसरीररहैतोसुषहो
य चाहोअबैचलोचाहोप्रातचलियोजामैंसगुनमिलैसो
ईकरनौं काहेसगुनहोहितोगातरहै अरुमैनेंजोति
हारो पयानरोकोसोअपराध छमाकीजियो हीमैंनहीं
आधापलकलाजसौंबांधिए मैनाहीँकहत याबातनिग
मकहत राजाकोपरमहितूआपनोकारजहै प्रस्न इहाँ
आसिषकहाहै अरुकारजरोकोभीनाहीँजानोजात उत्त
र मंत्रीइत्यादिफेरमिलैंयहतोआसिष अरुमंत्रीकेमित्र

दिक है तो हमनोको देमीना हाँ न वैगी यातें कारज गैवो
अलक्षणविचार आशिषमात्र सौं जदपि दुगाहिक सोभतो
मित्र पुत्र गमन समूह मोद आनादि फेर मिले अरु या
पनो दुषनादि को कहत दूननिह मैंद १८॥ ॥मू० धर्मा
क्षेप दोहा राषन अपने धरम कों जहँ कारज र
हि जाय॥ धरमाक्षेप सदा कहैं बरनन सब सुष
पाय १९॥ ॥टी० अथ धर्माक्षेपवर्ननं दो० अपने
धरम के राषन कारन रहै सो धरमाक्षेप १९॥ ॥मू०
क० जो हौं कहौं रहिये तौ प्रभुता प्रगट होत चलन
न कहौं तो हित हानि नाहीं सहनो भावै सु कर
हु तौ उदास भाव प्राननाथ साथ लै चलन हू कैसे लो
कलाज बहनो॥ केसौराय की सौं तुम सुनहु छबी
ले लाल चले हीं बनत जो पै नाहीं राजनरहनो ॥ जै
सिए सिषायो सो पनु मैं हों सुजान पिय तुम हीं च
लन मोहि जैसो कछु कहनो २०॥ ॥टी० इक्ना
यका को नायक गमन जानि कै नागरि सो कहै या सु गढ
जा कहैं तो प्रभुता जानी जाति पतिव्रता को धर्म जातो
हु कमरहि अरु चलन न कहौं के आप जाहु तो साथ नाहि
सु कानहि लोक में कहा कहेंगे इत्यादि ने आपने धर्मकी
रक्षा करि गमन का न कहत है किंचा सौं तन कह सो या
प्रभुता इत्यादिक जो या कहै लौं तिमग जतावै के हां में स
दा है आन स्याग तहाँ है तुम सो कहो मो हाँ गकहै गवनी है

षैं पतिआज्ञाभंगनभयोचाहौ तातें धर्माक्षेपजानियें २०
॥ मू॰ अथउपायाक्षेप दो॰ कौनहुएकउपायक
रिरोकैपियपस्थान॥ तासौंकहतउपायकवि
यहआक्षेपसुजान २१॥ ॥टी॰ उपायाक्षेप गम
नरोकिएपियकोपस्थानादि कौनहुउपायतें रुके २१
॥ ॥मू॰ क॰ मोकौंसबैब्रिजकीजुवतीहरिगो
रिसमानसुहागिनजानैं ऐसीकोगोपीगोपाल
तुम्हैबिनगोकुलमैंबसिबोउरआनैं॥ मूरति
मेरीअदीठकैईठचलौंकिरहोजूकछूकरिमा
नैं प्रेमनिछेमनिआदिदैकेसबकोऊनमोहि
कहूंपहिचानैं २२॥ ॥टी॰ उक्तिनायकाकोनाय
कप्रति केगौरीसमानसोहागिनी जानतीहैं तोगौरी संभुके
वामअंगमें रहतहैं तो ऐसी कोहै गोपवधू जोहैगोपा
लतिहारे बिनाफेरबसे यातें मेरीजोमूर्त्तिहैताकोअद्रि
ष्टकरिकैं चाहैचलोचाहैरहो॥ अर्थमेरेप्रान अपनेप्रा
ननमैंमिलायलेहु किंवालोपअंजनलगायदेहु जामें
कोईदेषिनसकै इहांलोपअंजन उपायप्रेमकरि किंवा
क्षेमकरि आदितें द्रोहकरिमोकों कोईपहिचानेनाहीं
सोबनिबोदुस्तरतब गमनरुकहै किंवाक्षेमरहै करि
दीजे अरुअद्रिष्टजामैंकोई पहिचानसकै अर्थासमेरोदे
हनरहै अरुकोईकहैकै देहनरहिसकैजहां परमात्मा
कोमनायोकहोचाहो तौआपपतितजि औरकोई ईश्व

रनहैं मानत मातें कहौंहैं गायमेरी चलनरहैगी अथ
चामेरी चेष्टा दूसरनहींमयातें आपरहिता २२॥ ॥

मू० अथ सिक्षाक्षेप दो० सुपदहोंसुपनदैराषि
ए सिपदीसिपसुपदान॥ सिक्षाक्षेपकमोचर
निक्ष्योत्रारहचानि २३॥ ॥टी० सिक्षाक्षेप सि
क्षानामउपदेस हरहौंनारहकर्मकरन बारहैतातें चाहो
है कियानिरदोसहोय ताकोसी बारहवानीतें कहनहैं २३॥

मू० चैत्रवनेनं छप्पै॥ फूलीलतिकाललितत
रूननन फूलेनरवर फूलीसरितासुभगसरस
फूलेसचमरवर॥ फूलीकामिनिकामरूपक
रिकैतनिपूजहिं सुकसारीकुलकैलिफूलको
किलकलकूजहिं॥ कहिकेसवऐसीफूलमहिं
सूलनफूलनलाइए॥ पियआपचलनकी
कोकहैचित्तनचैतचलाइए २४॥ ॥टी० चैतब
नैनं छ्किनायिकाकौनायकप्रति है पियआप चलि
वेकी कौनकहै चितनचैतमैं नाहींचलाइयै तिनतच
लाइएमाहि पावन पाँमैजर अरुचितन्य मनकामकैव
सहोयकै सबआनंदकरतहैं तहाँतुमतजउनातन
लतिका फूलिनरहिफूलि यातैंहृदयापकरतहौं फूले
नैनकहूकैनगौनागिनहैं अरुमारितानहीं सरना
नावरोपहनत्र अरुनेनन कामिनीकैतनकैनगौकप
हुंचौ किंवा कामिनीकौनर्वतनगाकरतीहैं कैतनमेचैत्र

मे होरीपाँचदिन आदिमेहोतहै तहाँहोरीनाहीं षेलनो जानो पूजाअबीरादिलेकेकरनी अरुनभगामीभीसुक आदिकनो थलजलनभ जीववासिनकोफूलअरु हम कौंया फूलजोसबकी किंवासुमन किंवातिहारोफूलके गमनसों सूलसोजिनसलावो त्रिसूलसोमतलगावो ॥ २४॥ ॥मू॰ वैसाषवर्ननं क॰ केसवदासअका सअवनिवासितसुवासकरि॥बहतपवनगति मंदगातमकरंदबिंदुधरि॥दिसिविदिसिनिछ बिलागिभागपूरितपरागवर॥होतगंधहीं अं धबधिरबोराविदेसिनर॥सुनिसुषदसुषद सिषसीषपतिरतिसिषईसुषसाषमें॥वरवि रहिनवधतविसेषकरिकामविसिषवैसाषमें ॥२५॥ ॥टी॰ वैसाषवर्ननं छप्पै उक्तिपूर्ववतसब मेरहेगी यातेंअबनलिषेंगे वरश्रेष्ठविरहिनीजो तु रंतविरहकोप्रासभई काहेकामकोविसिषवानवध तहै विसेषदिषावत सुवासमम अवनिभूमिआकास होरहो सोतासोंमहाउद्दीपनहै अरुपवनभीत्रिविध बहतमकरंदपुस्परसलैकें अरुदिसानमेंविदिसानमें सोईपवनकोभाग प्रासहोतप्रकाससहित ताकीगंध तें अंधअरुविक्षिसनरहोयजात अरुकहूँभोराविसेष भीपाठहै तहाँमकरंदफूलछोडदेत अथसर्वदासुगंध पावतयातें यातेंअंधबधिरश्रुतिहीनहोयजात सुनोसु

पद्दाता सीपमिक्षा आसिषाप द्रतिपनिकामनेसाषा परबैठवेठसिपाई सापानपरकोकिलाकेजबोलहैं सोई कामकेदूतहैं यह अर्थ किंवा रसिकजोप्रीतितानेसिपाई किंवा असपत्रितीयाकेदिन बुंदेलखंडमें कहींपुरुष आपुसमें नामलिवावत तुमहमओकोनामकको असइओकोकहनतुम पुरुषकोनामलेहु यहसुपदसोपमिपनहसुपर्नोमापहैं २५॥ ॥मू० जेठवर्नन॥ ए कभूतमयहोनभूतभजपंचभूतभ्रम ॥ अनिलअंबुआकासअवनिह्वैजानआगिसम॥ पंथथकितमदमुकितसुषितसरसिधुरजोवन ॥ काकोदरकोरकोसरुदरतरकेहरीमोवन॥ पियप्रवलजोनत्रहह्किविषिअवलसकनचिकन जलथलरहन॥ तजिकेसवदासउदासमगजेठ मासजेठहिकहन २६॥ ॥टी० जेठवर्नन॥ ए कभूतमयपंचभूत पांचोतत्वहोपजानसे ग्रन्त नहीं प्राचीनमतमेंपांचतत्वनाहीं माननेंअग्निहैं चाहीचार कहैचाहीए उत्तर केपंचभूतसप्राणीनी केसववानाहींकहीं पंचपंचीकरनमें पांचोतत्वकापांचभागकरह एकमें एकतत्वनिमेष गमनचारमाग ग्रन्यतौ पांचमें पांचोहैं सोपांच मिलिकेएकअग्नितत्वहोत है किंवापंचभूतमय भ्रम भेदभजिजान चर्यहरूपसोहैसोनमहोपजान॥ पु पनव भूअप तेजसु वायु नभकालु बहुरहिपनाम॥

हतआलामनसहितएनवद्रव्यसुधाम अवनिपृथ्वी अंबुजल आकासपवनअग्निनय पंथानाहीं चलतम दकाहूकोनाहींरहत प्रस्न जोमदछूटेनोकानोदीपन नचाही जोकामोदीपननहीं तबश्रिंगारमें अनुचित भावतेंरसाभासहोयजायगो उत्तर पंथचलनहारजेहैं केहमबहुतचलतयहमदछूटिजात सूषिजानसरत लाव सिंदुरहाथीजोहतदेषत काकोदरसर्पसोकरि हाथीकेकरहायसुंडसोभयोकोससंपुटतानैंरहत सो वत अरुउदरकेनरेकेहरीसिंहसोभी सोवतहै अर्थ यहभोजनसिंहकोहाथी ताकोपबरनहींकेभषपास है किंवाहाथीनाहींजाननमरोकालहै सोहेपियजी ऐ सेप्रबलजोवहैं तेयाविधितें निबलहोतहैं सर्वविक लहोय जलथलमेंरहत प्रस्न इहांजलवासीकोईजी वनाहींकहै सर्वथलवासीबताए उत्तर तहांयहकेजे जीवहैं तेजलकोथलदेषिरहत हाथीकोजबगरमीहोत तबहाथीकीसुंडतेंजलगिरत अरुजहांबैठेहैसोभीमु षतैंपानीडार करआद्र थलकरिद्यो अर्थथलमेंजल होजातहै याहीतेंसिंहतररहत तातेंनजिदेहु उदासीबा रीमति यातें जेठमें नचलोयाजेठबडेकहत प्रस्न जेठ इहांकहा तहांएसोउत्तर जेठकहेसुरादिकजो पूर्वकहे जहांमुलाफिररहत रहेतहननासभए किंवाजेआदमी केरहनेकेहैंतेहतहोगए काननमेंभमकारीसर्पसिंहा

द्विकरहैलग २०॥ ॥मू• आसाढवर्नन पवनच
क्रपरचंडचलतचहुँओरचपलगति भवनभा
मिनीनजतभ्रमतमानहुतिनकीमति॥ संन्या
सीइहिमासहोतइकआसनवासी॥ पुरुषनकी
कोकहैभएपक्षीयोनिवासी॥ इहिसमयसेज
सोवनलियोश्रीहिसाथश्रीनाथहू॥ कहिकेस
वदासअसाढचलमैंनसुन्योश्रुतिगाथहू २१
॥ टी• आसाढवर्नन पवनचक्र जो बवूलनसों कहाहै
जे भवनमें भामिनीन तजत हैं सो इनहें भ्रमें तिनकी म
ति भ्रमत है संन्यासी भी नाहीं चलत एक आसनवास
हा किंवा आसाढ कहि उद्दीपन मुनि लक्ष्मन है
वे तो मैं सब परम चंद्र वनमें गए जान सम्य थर्गनिजा
नवीन स्वामी जहां सिंहासन इतने दिन हैं तो सागर में शि
लन हैं लागि बहुतक नमें तानि नचन में स्वर्ग को गिनगहा
है अरु भूमने पातालनी यथा निज लोकमें नाहुकनाम का
मि हैं अरु गमनकी कोन कहै मुनि गति भी वनमनहूं गाथ २१
॥ ॥मू• सावनवर्नन केसवसरितासकलमिल
तसागरमनमोहै ललितलतालपटाततरुनतन
तरवरसोहै॥ रुचिचपलामिलिमेघचपलच
मकतचहुँओरन॥ मनभावनकहँभेटिभूमिकू
जतमिसमोरन॥ इहिरीतिरमनरमनीनसोंरम
नलगेमनभावनो॥ पियगमनकरनकोकोकहै

गमननसुनियतसावने २८॥ ॥टी० आवनद्व नेनं सरितानदी सागर समुद्रमैंमिलती अरुलतिका तरवरवृक्षसौंलपटी चपलाबिजुरी मेघपुरुपसौं मिलिचमकतहै अरुएमयूरनाहींबोलत मनभावननायकसौं मिलकैंभूमिकुजतहै इहिभाँतितैं रमननायक रमनीनायकासौंरमनलागे यातैंगमन कोनकरनकहै सो नचाही किंवादुरागमनभी नाहींसुनिपरत २८॥ ॥मू० भादौंवनेनं घोरतघनचहुँओरघोषनिरघोषनिमंडहिं॥ धाराधरधरधरनिमुसलधारनजलछंडहिं॥ झिल्लीगनझनकारपवनझुकिझुकिझकझोरत॥ बाघसिंहगुंजरतपुंजकुंजरतरुतोरत॥ निसदिनविसेषनिहिसेषमिटजातसुओलीओढिए॥ देसहिपयूषपरदेसविषभादौंभवन नछोडिए २९॥ ॥टी० भादौंबनेनं घोरइहाँउमडबो घोषदादुरमोरादिकेइहाँलीजिए निर्घोष मेघकोसब्दधाराधरमेघधरनीसोलगकैं झिल्लीझींगुर कुंजरहाथीकेपुंजसमूहजहाँरात्रीदिनना हींजानपरति तिहारेआगेओलीओढिएहै अंचलपसारोझोरीमाडिएहै यातैंहेनाथ देसमैंपियूषसुधा परदेसमैंविषजहर किंवापानो २९॥ ॥मू० कुवारबनेनं प्रथमपिंडहितप्रगटपितरपाव

न घर आवै नत्र दुर्गनि नग पुनि स्वर्ग अपवर्ग
द्विपावै ॥ छत्र नु दैखि तिपतिलन नृव लै मग
पंडित ॥ केम च दाम अकाम अमल जलथल
जनि मंडित ॥ रमनीय रजनि रजनीस मर्चिरमा
रमन हूं राम रति ॥ कलकौनि कलपतरु क्रार
महिकेतन करहु चिंद मम मति ३०॥ ॥टी० कु
वारवनैनं देपापामामर्गे वयमपिंडनिमतापिनर
नोहिं सोघर आवत नाकेव गपनर आवै सानगेम
निहैंलोदकैमना.. अरुफेरनचदुर्गा आवत नो स्व
र्ग अपवर्ग मो दाता प्रभु मुर्दा भोथकदं पावत
उत्तर जैदैया को यनिदानदनते मोक्षदोय मान लि
नि पनिग नायपाल कान ह्रवैदैसों प्रभु मुर्दा गमन
कोरी कियो चाह्हा सोदुं वरनौ उत्तर सभी मात्र कोग
नन प्रभु कानि नका ये म्य कोन गर्भ कोहै नसो ॥ सो
अर्थ पंडित संगति को कैकानेदकारिके नु दुना हों का
हु मरमान त्रोंकहे विजैदस गो को पै लको पुरा कारन
यह तानिय गये रमनी नागन चहनो चंद्रमा भी मी
नामान रमा रमन श्रीकृष्णनि नौरा मकियो कल न
नोद रमो सेडाला को कल्पवृक्ष मानकुमार है ऐसे श्री
निध ३०॥ ॥मू० कानिक बनैनं वन उपवन
जलथल अकास दीसंत दीप गन ॥ नृप कौ
सुपदिन राति जुवा पैलत दंपति जन ॥ देव ष

रित्रविचित्रचित्रचित्रितआँगनघर जगतजगत जगदीसजोतिजगमगतिनारिनर॥ दिनदान न्हानगुनगानहरिजनमसुफलकरिलीजिए ॥ कहिकेसबदासविदेसमतिकंतनकालिक कीजिए ३१॥ ॥टी० कार्त्तिकवर्ननं वनउपवन वाटिकामैं देषिपरत दीपगनसमूह जुवादिवागिमें षेलतहैं काहेसुषहीसुषराति ऐसोभीपाठहै तहाँ सुषहीमें सुषरातिमें विपसा देवतानकेचरित्र वि चित्र प्रस्त विचित्रकहा जालंधरकीस्त्री पासवि ष्णुकोगमन महास्वकियावह महाअनुकूलयह अ रुचित्रजोहैसो आँगनघरमें सबकोईकरत अरुज गतिसंसारजागरनकरत अरुजगदीसविष्णुभीजाग तहैं जोतिजगमगहोतिनारीनरकी अर्थबहुतछवि धारति दिनदिनदानअरुस्नानादिकतें जन्मसुफलकी जतहै यातैंकार्तिकमेंनजाहु ३१॥ ॥मू॰ मार्गशीर्ष वर्ननं मासनमेहरिअंसकहतयासोंसबको ऊ स्वारथपरमारथनदेतभारथमयदोऊ॥ केसवसरितासरितफूलफूलेसुगंधगुर॥ कू जतकुलकलहंसकलितकलहंसनिकेसुर॥ दिनपरमनरमसीतनगरमकरमकरमयहपा इयतु करिमाननाथपरदेसकोमारगसिरमा रगनचिंतु ३२॥ ॥टी॰ मार्गशीर्षवर्ननं मासमैंह

रियेस बदपुरानकहतहैं स्नानपञ्चरूपरमात्मदाक
दिनहार गाग्यमेंलिषोहै गीतासरितासरमैं गुरुबहै
सुगंधवारेफूल कलसुंदर कलहंसकूजतहैं कलितहै
सनीरूसी दिनपरमनरमहैं नसीतलनगरम किधौं
सीतहैगरमेनाहीं करमकरमक्षारमैं पितरदेवपूजन
…तस्था कातिकमैंतचमिलत किंवापुबेकेकरम …
…होतसबै धातेंहै आननाथ मार्गशीर्षमैं पाइसक
लागोरहमैं चित्तमतिकरौ ३२॥ ॥मू॰ पूसवर्नेनं
…पै सीतलजलपलब मनअसनसीतलता
नरोचक केसवदासअकासअवनिसीतल
असुमोचक॥ तेलतूलतामोलतपनतापनन
वनारि॥ राजरंकसबछोडिकरतदुनदौंअधि
कारि॥ लघुद्यासदीरघनिसासवनहोतदुसह
दुषरूपसमैं॥ यहमनक्रमवचनविचारिपियपं
थनचूकियपूसमैं ३३॥ ॥टी॰ पूसवर्ननं तलप
नसीतल सीतलनाहीरुचत अरुआकासभूमिसीत
ल आंसुप्रान किंवाऔषतें आंसमोचतछोडतहैंअ
र्थतुषारूसी आंसुझारतहैं आकासतेलादिक तपन
सुतें तापनअगिन तापनतबानवानारागआ रंकसबके
अधिकारीहोतहैं तातेंलघुदिन बरीराती यातेंरूपस
बमेंदुसहदुषहोतहै यातेंमनतेवचनतेंभामनि
जाहु ३३॥ ॥मू॰ माघवर्नेनं वनउपवनकेका

कपोतकोकिलकलबोलत॥ केसवभूलेभ्रम
रभरेबहुभांतनडोलत॥ मृगमदमलयकपूर
धूरधूसरितदसौंदिसि॥ तालमृदंगउमंगसु
नतसंगीतगीतनिसि षेलतबसंतसंततसुघरसं
तअसंतअनंतगति॥ घरनाहनछांडियमाह
मैंजोमनमाहसनेहमति ३४॥ ॥टी० माघ व
र्नेनं वनउपवनबगीचामें केकीमोरादिक बोलत
हैं अरुभ्रमर भूलिभूलिसबदिनमें डोलत अर्थेनवे
ठांउसुगंधितव्हैगयो सोईकहतकी मृगमदकस्तूरी
मलयचंदन कपूरादिकीधूरउडतहै अरुबसंतदेषि
संतअसंतहोयजात अनंतलक्ष्मनसहस चलन
हार ३४॥ ॥मू० फागुनवर्नेनं लोकलाजतज
राजरंकनिरसंकविराजत॥ जोइभावतसोइ
कहतकरतपुनहंसतनलाजत॥ घरघरजुव
तींजुवनिजोरगहिगांठनिजोरहिं॥ बसनछीनि
मुषमीडिआंजिलोचनतनतोरहिं॥ पटवास
सुवासअकासउडिभूमंडलसममंडिए॥ क
हिकेसवदासविलासनिधिफागुनफागन
छंडिए ३५॥ ॥इतिश्रीकविप्रियायांविशि
ष्टअलंकारवर्नेनंनामदसमप्रभावः॥१०॥ ॥
टी० फागुनवर्नेनं लोककोंलाजतजिकेराजारंकनिर
संकफिरतजोईभावतसोईकरतलजियाननाहीं घ

रपरजुवतौंज्वान प्ररूषनकौं जोरसौंपकरकैंगाढ
जोरदैतौं अन्यकोंदस्त्रीसौं यहतुमारीदसाभई अरु
तूनतोरतौहै पट्यासन वासअस्थान सुगंधनैंभरे
आकासमैंमंडल अर्थचांदनीनानन यामैंविलासनि
धि किंवा द्वैविलासनिधिका गुनमैंफागनजाड़ौ ३५॥
स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजकासिराजश्रीमदीश्वरी
प्रसादनारायनसिंहस्यआज्ञाभिगामीललितपुरनि
वासीहरिजनकवीश्वरात्मजेनसरदारकवीश्वरे
नविरचितायांकविप्रियायांटीकायांविविधालंका
रवर्ननंनामदशमःप्रभावः १०॥ ❀ ॥ ❀ ॥ ॥

मू॰ अथक्रमालंकार गननालंकारवर्ननं॥

दोहा आदिअंतभरिवरनिये सोक्रमकेसवदास॥ अरुगननासौंकहतहैंजिनकेवुद्धिप्रकास १॥ ॥टी॰ अथक्रमालंकार गननालंकारवर्ननं आदितैं अंतलौंजहाँ क्रमरहै सोक्रमा अरुएकादिकगननारहै सोगनना १॥ ॥मू॰ छप्पै॥ धिकमंगनविनगुनहिंगनसुधिकसुननरीझिय॥रीझसुधिकविनमौजमौजधिकदेनसुखीझिय॥दीवोधिकविनसाँचसाँचधिकधर्मनभावै॥धर्मसुधिकविनदयादयाधिकअरिकहँआवै॥अरिधिकचितनसालईचितधिकजहँनउदारमति॥मतिधिककेसवज्ञानविनुज्ञानसुधि

कविनुहरिभगति २॥ ॥टी० धिकहैमगनको जामैंगुननहीरहै काहेदाता वेदपाठीकोदानदेत अरुवहगुनकोधिकहै जोगुनसुनिकेदातानरीझै॥ अरुरीझ्वार बिनाभोजधिकहै भौजदानसमयवीझै दिवोसत्तताबिनसांचधर्महीन धर्मदयाहीन दयाअरिपै अरिजोचित्तमैंनसालै चित्तउदारमतिविनमति ज्ञानविनाधिकहै औहरिभक्तिविनाधिक २॥ ॥

मू॰ सवैया सोभतिसोंनसभाजहंवृद्धनवृद्धन तेजुपढेकछुनाहीं॥ तेनपढेजिनसाधुनसाधितदीहदयानदीपैजिनमाहीं॥ सोनदयाजुनधर्मधरैधरधर्मनसोजहँदानवृथाहीं॥ दाननसोजहँसांचनकेसवसांचुनसोजुबसैछलकाहीं ३॥ ॥टी० सोसभानहींसोभत जामैंबुद्धिवानवृद्धनहींहैं अरुबुद्धिवृद्धहैंसो पढेनाहींतेवृद्धभीनाहीं सोभावानहोति सोप ढवोनाहीसोहत जिनसाधुउत्तमपुरुषकोरीतिनहींजानी साधनकोसाधनाकहांदया अरुसोदयाभीनाहीं जोधरसरीरविषैं धर्म सात्त्वादिककोरीतितैं बाह्यहोइ जैसेचोरादिकपरराजाको अरुसोधर्मभीनहीजो दयादानजूपादिक किंवावेसादिकप्रति सोदानभीनाहींजामैंसत्तनाहीहै सोसत्ताभीनाहीं जोछलप्रीतिकीजिए कहूंवसेछलमाहीं यहभीपाठहै तहांभीवहीअर्थजानिये ३॥ ॥🙞॥

मू॰ छप्पै नजहु जगन बिन भवन भवन न जि
तिय बिन कीनौं॥ तियन जिजन सुपके द सुसप
तजि संपत हीनौं॥ संपति न जि बिनु दान दान
न जिजहँ न बिप्रमति॥ बिप्र न जहँ बिन धर्म ध
र्म तजि जहाँ न भूपति॥ न जि भूप भूमि बिन भूमि
न जि देस दुर्ग बिनु जो बसइ॥ न जि दुर्ग सुकेस
व दास कबि न जहाँ न जलपूरन लसइ ५ ॥टी०॥
नगर बिना गढ़ न जि॥ कुर्म्म बिना गो धर कियो सो न
सो बिना सुपक को नियन जो नृपन गो बिना संपति को
संपति न गो बिना दान को दान न गो बिप्र को न बिप्र
मति नहीं बिप्र को न गो बिना धर्म को धर्म न गो राजा बि
न किंवा न वो गना होय न दो भाग न डो न बद राजा को
न जहु जा को भूमि नहीं भूमि न गो न है दुर्ग को न
हीं दुर्ग को न जहु जहाँ जल परिपूरन नहीं है ५॥ ॥
मू॰ अथ गननायक बर्नन दो॰ एक आत्मा च
क्र बिन एक सुक्र की दृष्टि॥ एकै दसन गनेस
को जानत सगरी सृष्टि ५॥ ॥टी॰ अथ गननाय
आत्मा एक अर्थ सब को एक सुक्र को दृग एक
गनेस को एक दसन आत्मा एक कैसे न हो आत्मा
निरूपन कबित्त सबैया भनिजात आत्मा एक दृष्टान
लेजुक माया न होत गोसुच नि गान॥ सुक दृष्टि
दि सम या दृष्टि कारण ताके एक नाक विस्मन ग्रान्

सिद्धांत ईस्वरमें आतमत्वजानि है अद्रिष्ट हीन या
तें सुषदुषउतपत्ति होत नाहीं आन जो स्वरूप योग्य
रूपकारण है नित्यतातें फलचाहियत यामें कोई ना
प्रमानगान ५॥ ॥मू॰ द्वैवर्नेनं दो॰ नदीकूल द्वै
रामसुतपक्षपडग की धार॥ द्वैलोचन द्विज
जन्मपद भुज अश्वनीकुमार ६॥ ॥टी॰ दोय
वर्नेनं नदीकोतट रामकेसुतलवकुस पक्षकृष्ण
सुक्ल किंवापक्षीकेपक्ष किंवासत्रुमित्र तरवारको
दोधारा होत है नेत्र द्विजब्राह्मनके दोयजन्म एकज
न्म द्वितीय संसकारजन्म किंवापक्षीके किंवादसन
के चरण भुजा अश्वनीकुमार दोय है देवदेस ६॥
॥मू॰ दो॰ लेषनि डंक भुजंग की रसना अयन
निजानि॥ गजरद सुष चुकरैंड के कच्छा सिपा
बषान ७॥ ॥टी॰ कलमके दोडांक भुजंग सर्प
ताकी रसना किंवाभुजंगपक्षी ताकी रसना अयन उ
त्तरायण दक्षिणायन हाथीकेदसन चुकरैडसर्प
विसेष दोयमुषको बुंदेलषंडमें बहुत होत हैं क
क्षा कांष सिषाकाकपक्ष ७॥ ॥मू॰ तीनिवर्न
न दोहा गंगामग गंगेसहग ग्रीं वरेष गुन
लेषि॥ पावक काल त्रिसूल बलि संध्या तीनि
विसेष ८॥ ॥टी॰ तीनिवर्नेनं गंगाकोपंथ ॥मं
दाकिनी स्वर्गमें भागीरथी भूमिमें भोगवती पाताल

में प्रमान मदाकिनीविपद्गाखर्नेदासुरदीर्घिका भागीरथीत्रिपथगात्रिस्रोताभीष्मसूरपि त्वमरः॥ गंगसभिजूकेनेत्र औचा कंठरूपा गुनमन रत्न नम किंवा आन माधुर्ज प्रामाद पावक अग्नि दक्षिणा ग्नि आहवनीय गार्हपत्य प्रमाण दक्षिणाग्निआहवनीय गार्हपत्य भविष्य वर्तमान का लक्षण क॰ जन्यजनककाल घटपटनानुगानि कर्तानिपय नवीनोनिसंबंधकाल पनभीपगर्भ हेतुर्थाविचारकरौ क्षण दिन मासआदिदै उपाधि नाकोनाम क्रियाजन्यगोविभागभावई वोक्रम प्र यमनक्षण नाकोनाथीदसरथनाम पुरुषसंयोगई क्रिनकोनिनागनुजी अपरत्वपान वीनीनाकीगुन हेतुनाम दो॰ पुरुषकेसंयोगकोनागमुनावकिन उ नाकेसंयोगवैताधानवेनिन्द उदर्गधिकनोमी अमृतोन्द्वनिर्गोक्रमन संख्यानीनि पान गाथान संख्या प्रमान प्रान्तःप गापहन्यान्दनिसंख्यमनग वीनुन्यमरः ७॥ ॥सू॰ दो॰ पुष्करविक्रमगुमाव चित्रपुरत्रिवनीवट॥ नोनिनापपरिनावपद ज्वरकेनीनि गुनिद ९॥ ॥टी॰ पुष्करगोविंद सो नंद नंदकनोकुमारपकर दुमरोमुखानाय गोमगेनद विक्रम पग नाग ननतैं ननतैं धनतैं राग हामरवैः परमराम बलराम त्रिविक्रम सुम अगन गुनान

किंवा वेदविधिलोकविधि कुलविधि तीनिपुर स्व
र्गं मृत्यु पाताल किंवा त्रिपुरदैत्यके जाकोसिवनेमा
रे ताकेतीनिपुररहे त्रिवेनी गंगा जमुना सरस्वती वे
दतीनि ऋक स्याम यजुर अथर्वनको इहां नहींलो
नो वामैं मारनहै तीनिताप आधिभौतिक आधिदैवि
क अध्यात्मिक परिताप तीनिहैं मनपरिताप तनप
रिताप औ बलिपरिताप किंवाबीजे परिताप ज्वरके
पदतीनि सषेद दुषसहित ९॥ ॥मू॰ चतुर्वर्नेनं॥

दोहा॥ वेदवदनविधिवारिनिधिहरिवाहन भुजचारि॥ सेनाअंगउपायजुगआश्रमवरन विचारि १०॥

॥टी॰ वेदचारिअथर्वनलेकर ब्रह्माकेमुप वारनिधि चारदिसाके समुद्र हरिकेवाहन॥ चारिघोडा विस्नुभुज सेनाअंग हाथी घोडा रथ पैदल उपाय साम दाम भेद दंड जुग सत्त त्रेता द्वापर कलि आश्रम ग्रही ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ सन्यासी वरण ब्राह्मण क्षत्री वैस्य सूद्र १०॥

॥मू॰ **दोहा सुरनायकवारनरदनकेसवदिसाबषानि॥ चतुरव्यूहरचनाचमूचरनपदारथजानि ११॥**

॥टी॰ सुरनायक ताकेबारनहाथी ताकेदांतचारि दिसाचारहै कोई आठ कहतहैं कोई दस कहतहैं व्यूहचारि क्रुंच चक्र धनुष सकट पदश्लोकके चारच रन पदार्थ अर्थ धर्म काम मोक्ष ११॥ ॥मू॰ पंचव

नैन दो० पडुपूत इंद्रियकवलरुद्रवदनगति
वान॥लक्षनपंचपुरानकेपंचअंगअरुप्रान
१२॥ ॥टी० पंचबर्ननं पंडुनाके पाँच पुत्र युधि
ष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव इंद्री आंख नेत्र ना
सा जिह्वा त्वचा कवल भोजनसमय पंचकवल अ
रु कहीं कमलपाठहै तहाँपांचरंगकेकंज किंवा मू
ल नाभ हृदय भृकुटी शीश मिचकै नपगति मोक्ष
सालोक्य सायुज्य सामीप्य सारूप्य एकत्व किंवाअ
नन रेचन संदन ऊर्ध्व लवन नाम बानकामके सो
षन मोहन संदीपन उन्मादक संतापन लक्षनपांच
कलंकाँ को लांछनं च चिन्हं लक्ष्मच लक्षणं किंवा
पुरानलक्षन सर्ग प्रतिसर्ग वंस मन्वंतर भूम्यादि सं
स्थान औपंचांग तिथि बार नक्षत्र जोग करन प्रान
पाँचहैं प्रान अपान समान उदान व्यान १२॥ ॥
मू० दो० पंचवर्गतरुपंचअरुपंचसबदपरमा
न॥पंचसंधिपंचाग्निनिकंन्यापंचसमान
१३ टी० कल्पवृक्षपंचवर्गाः तरुद्या मंदार पारिजात संतान
कल्पवृक्ष हरिचंदन पंचसता मंदारःपारिजातकः संतानः क
ल्पवृक्षश्चपुंसिवाहरिचंदनम् इत्यमरः पंचशब्द पंचाकृत
त्यावकरन प्रमान पंचोनिनिके कौंधिकान मनने को
किह औषाक पाँचमन्त्र वानिकुमार्याकोश मदाकवि
केप्रयोग परमाणुपरी पांचको एक्यो स्वप्नेन आदि

काशकोपचसंधिअहल विसर्गस्वाधिप्रकृतिभाव किंवा संज्ञास्वरप्रकृति विभंजन विसर्ग पंचअग्नि दक्षिणाग्नि ग्राहपत्य हवनीय सभ्य लौकिकप्रमान दक्षिणाग्नि ग्राहपत्यहवनीयोत्रसंशयः इत्यमरः किंवा दिव्या बिजुरी बाडवा जठरा बंस पंचकन्या अहिल्या द्रौपदी तारा कुंती मंदोदरी १३॥ ॥ ॥मूल॥ दोहा॥ पंचभूतपातकिप्रकटपंचयज्ञजियजानि॥ पंचगव्यमातापितापंचामृतनबषानि १४॥ ॥ टी॰ पंचभूत पृथ्वी अप तेज वायु॥ आकास पातकी ब्रह्मघाती सुरापी स्वर्नचोर और गुरुसेजगामी इनकोसंगकरैसोपातकी पंचजज्ञ देवजज्ञ भूतयज्ञ पृ कृजज्ञ मनुष्ययज्ञ ब्रह्मयज्ञ पंचगव्य दूध दही घृत गोबर गोमूत्र मातापंच गुरुपत्नि राजपत्नी मित्रपत्नी आपनीमाता औदस्त्रीकी माता पिता उत्पन्नकरनवारो उपनेता विद्यादाता अन्नदाता भयत्राताअरु इनकीपत्नीभीमाताजानिये पंचामृत दही दूध घीव मधु चीनी १४॥ ॥मू॰ षटवर्ननं दोहा कुलिसकोनषटतर्कषटदरसनरसरितुअंग॥ चक्रवर्तिसिवपुत्रमुषसुनिषटरागप्रसंग १५॥ ॥टी॰ षट्वर्ननं कुलिस वज्रताकेकोन तर्कषट्सास्त्र वेदांत सांख्य पातंजल न्याय मीमांसा वैशेषिक दरसन ब्राह्मन वैस्नव

संन्यासी जोगी जंगम सेवरा रसछह मिष्ट अमल्ल कटु कषाय लवन तिक्त रितुछ बसंत ग्रीषम पावस सरद हेमंत सिसिर अंग वेदांगषट् सिक्षा कल्प व्याकरन छंद जोतिस निरुक्ति चक्रवर्तेषट् युधिष्ठिर विक्रम सालवाहन विजयाभिनंदन नागार्जुन कलंकीअवतार किंवावेनु बलि धुंधमार अजैपाल प्रवर्तक मानधाता औकार्त्तिकेयकेषटवदन षट राग भैरव मालकोस हिंडोल श्री दीपक मेघमल्लार १५॥ ॥मू॰ दो॰ षट्मातापट्वदनकोषट्गुनवरहुमित्त॥ आततादनरषटगनहुपट्पदमधुपकवित्त १६॥ ॥टी॰ पटवदन अस्कंदजीतिनकी छमाताहैं कृत्तिकानक्षत्रकेछनाराहैं अरुगुनभीषट्हैं संधि विग्रह पान आसन द्वैधीभाव संश्रय अरुकहूँसोजोदिभीहै अरुकोईयहकहतहैं ईस्वरता ज्ञाता कीरति विषय चितके जीवनमुक्त आनताई अग्निलगावनवारो विषदेनहार सस्त्रलेकर मारीचदै परधनहरनहार खेत्रहरनाहस्त्रीहरता एषटनर मधुपभवर ताकेषट्पद षटपदी छप्पे किंवाषट्अर्थकोकवित्त १६॥ ॥मूल सातवर्ननं दो॰ सातरसातललोकमुनि द्वीपसुरहैवार॥ सागरसुरगिरितालतरु अन्नईतिकरतार १७॥ ॥टी॰ सातवर्ननं नल१ अतल२

वितल २ सुतल ४ तलातल ५ पाताल ६ रसातल ७
लोक भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्गलोक ३ महर्लोक ४
तपोलोक ५ जनलोक ६ सत्तलोक ७ मुनि मारीच १ अ
त्रि २ अंगिरा ३ पुलस्त्य ४ पुलह ५ क्रतु ६ वसिष्ठ ७॥
किंवा विश्वामित्र १ जमदग्नि २ भरद्वाज ३ गोतम ४ अ
त्रि ५ वसिष्ठ ६ कस्यप ७ द्वीपसात जंबूद्वीप जहाँजामु
नकोवृक्षहै प्लक्षद्वीपजामेंपाकरि कोवृक्ष है ॥ शा
॥ल्म लिद्वीपमेंसेवरकोवृक्षहै ३ कुशद्वीपमें कुसहै
४ क्रौंचद्वीपमैंक्रौंचपर्वतहै ५ शाकद्वीपमें शाककौ
वृक्षहै ६ पुष्करद्वीपमे कमलहै सूर्जकेअस्वसातमु
षकौ वारनामदिनसातहै सागरसातसमुद्र क्षारसमु
द्र १ इक्षुरसोदक २ सुरोद ३ घृतोद ४ क्षीरोद ५ द
धिमंद ६ स्वादूधक ७ स्वरसात षरज १ रिषभ २ गांधा
र ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ सारीगमपध
नीषरजादिककोनामहै सातपर्वत सुमेरु १ हिमाल
य २ उदयाचल ३ विंधाचल ४ लोकालोक ५ गंधमाद
न ६ कैलास ७ प्रमान लोकालोकश्चक्रवालस्त्रीकूट
ककुत्समौ हिमवान्निषदो विंध्योमाल्यवान्पारियात्रक
।गंधमादनमन्येचहिमकूटादयोनगाः इत्यमरः सात
ताल सरोवर मानसरोवर विंधसरोवर जहाँकर्दममु
निहैं पंपासरएतनेमुष्य हैं औरगुप्तहैं वृक्षसात नंदार
१ पारिजात २ संतान ३ कल्पवृक्ष ४ हरिचंदन ५ अक्षैव

८६ औकैलासवट७ औसातअन्न अरब्हरागोहूँ२धा
न३ जौ४ चना५ मूँग६ उरिद७ कहूँजमुनाद्वीक
रतालऐसोभी पाठहै सातधाराजमुनाकीपुरानमैंप्र
सिद्धहैं इतीसातहै अतिवृष्टि१ अनावृष्टि२ मूषक३
सलभ४ षग५ सेना६ राजा७ करतालगाद्बेकेताल
एकतालीरूपक१ जती२ अनुद्रुत३ विरामद्रुत४ द्रुत
लघु५ विश्राम६ गुरुलुन७ किंवाकरतार ब्रह्मा विस्नु
सिव सतोगुन रजोगुन तमोगुन प्रकृति १७॥ **मू० पुनः**
सातवर्नेनं दो० सातछंदसातौपुरीसात
त्वचासुपसात॥ चिरंजीवमुनिसातनरस
समात्रकातान १८॥ ॥टी० गाइत्री१ अनुष्टुप्२
वृहती३ जगती४ त्रिष्टुप्५ उष्मिक्६ पंक्ति७ छंद
बहुतहैं इहाँयही प्यजानिये ऐसेहीमुनि पुरीसा
त अजोध्या१ मथुरा२ माया३ कासी४ कांची५ अवं
तिका६ द्वारावती७ त्वचाअंगमैंसातहैं औसुपसात
हैं रसिकप्रिया षानपान धन धान पुनिजानगानदुति
अंग॥ सुषसंजोगवियोगत्रिनसातोसुषतियसंग या
कोअर्थहम रसिकप्रियाकेतिलकमें कियोहैचिरंजीवी
अश्वत्थामा१ बलि२ व्यास३ हनुमानजू४ विभीषन५
कृपाचार्ज६ परसराम७ रिषि मारीच१ अत्रि२ अंगि
रा३ पुलस्त४ पुलह५ क्रतु६ वसिष्ट७ किंवाकस्यप
अत्रि भरद्वाज विश्वामित्र गौतम जमदग्नि औवसि

ए नर ब्राह्मन१ क्षत्री२ वैश्य३ शूद्र४ वरनसंकर५ अ
तिज६ यवन७ माता ब्राह्मी१ माहेश्वरी२ कौमारी३
वैस्नवी४ वाराही५ इंद्राणी६ चामुंडा७ प्रमान ब्राह्मी
माहेश्वरीचैवकौमारीवैस्नवीतथा वाराहीचतथेंद्रा
णीचामुंडासप्तमातरः इत्यमरः तातहेतात यहसंबोधन
हैकाहेपिताकहिचुकेकहूँसुनिभीपाठहै१८॥ मू॰ आठवर्ने

**नं दो जोगअंगदिगपालवसुसिद्धिकुला
चलचारु॥ अष्टकुलीअहिव्याकरण दिग
जतरुनिविचारु १९॥** ॥ टी॰ आठवर्नेनं जोग
अंगआठहैं यम१ नियम२ आसन३ प्राणायाम४
प्रत्याहार५ ध्यान६ अध्यासन७ समाधि८ दिसाके
पालनवारेआठ पूर्वदिसाकोइंद्र१ अग्नि२ यम३ नै
ऋति४ वरुन५ मरुत६ कुबेर७ महादेव८ वसुआ
ठहैं जल१ ध्रुव२ सोम३ धरा४ अनिल५ अग्नि६ प्र
त्यूष७ प्रभास८ आठसिद्धि प्रमान अणिमामहिमाचै
वगरिमालघिमातथा॥ प्राप्तिःप्राकाम्यमीशत्वंवशित्वं
चाष्टसिद्धयः इत्यमरः कुलाचल अचलकोकुलआठ
चारुकहैंसुंदर हिमवान१ निषद२ विंध्य३ माल्यवा
न४ पारियात्रिकः५ गंधमादन६ लोकालोक७ चक्र
वाल८ अहिसर्पआठ तक्षक१ महापद्म२ संष३ कु
लिक कंवल५ अस्वतर६ धृतराष्ट्र७ वलाहक८
व्याकरण आठ इंद्र१ चंद्र२ गार्ग्य३ साकल्य४ सकट

५ कात्यायन६ पाणिनीय७ जपनेंद्र८ किंवा इंद्रचंद्र काशिकृत्स्न आपसिली साक साकटायन पाणिनीय अमर एव्याकरण८ दिग्गजआठहैं प्रमाण ऐरावतः पुंडरीकोवामनःकुमुदोंजनः॥पुष्पदंतःसार्वभौमः सुप्रतीकश्चदिग्गजः इत्यमरः नायकाआठ प्रोषितपतिका षंडिता कलहंतरिता विप्रलब्धा उत्का वासकसज्जा स्वाधीनपतिका अभिसारिका८ प्रवच्छ्यत्पतिका आगतपतिका प्रोषितपतिकामें अंतरभूत होतहैं १९॥ ॥**मू॰ नववर्ननं दोहा अंगहारभूषंड रसबाघिनिकुचनिधिजानि॥सुधाकुंडग्रह नाडिकानवधाभक्तिवपानि २०॥** ॥टी॰ नववर्ननं मूल१ सिष्मु२ मुप३ नासिकाकेदोयछिद्र४ नेत्रदोय७ श्रवनदोय९ पृथ्वीकेनवषंडहैं इलावर्तक१ रम्यक२ कुरु३ हरि४ वर्ष५ किंपुरुष६ भरतषंड७ केतुमाल८ भद्राश्वषंड९ रस श्रिंगार१ हास्य२ करुन३ रौद्र४ वीर५ भयानक६ वीभत्स७ अद्भुत८ शांत९ बाघिनिनामकेहरितिनकेकुचनवहैं औंनव निधिहैं प्रमान महापद्मश्च पद्मश्च शंषो मकर कच्छपौ॥ मुकुंदः कुंद नीलाश्च खर्वश्चनिधयोनवइत्यमरः अमृतकेकुंडनवहैं पित्रकेजज्ञमें कहेहैं नवग्रह सूर्ज१ चंद्र२ मंगल३ बुध४ वृहस्पति५ शुक्र६ शनि७ राहु८ केतु९ नवनाडी सरीरमेंमुष्पहैं इडा१ पिंग

ला२सुषुम्ना३गंधारि४ गजजिह्वा५ पूषा ६ पसा६७
शनि ८ संषिनी९ भक्तिनवप्रकारकीहै श्रवन१की
र्तेन२ स्मरन३ चरनसेवन४ अर्चेन५ वंदन६ दास्य
७ सष्य८ आत्मनिवेदन९॥ २०॥ ॥मू॰ दसवर्ने
नं दो॰रावन सिरश्रीरामकेदसअवतारवषा
न॥ विश्वेदेवादोषदसदिसादसादसजान
२१॥ ॥टी॰ दसवर्नेनं रावनकेसिरदस श्रीराम
केअवतारदस मत्स्य१ सूकर२ कच्छप३ नृसिंह४
वामन५ परशुराम६ श्रीराम७ बलदेव८ बोद्ध९ क
लंकि१० पितरदसहैं विश्वेदेवाआदि मनुष्यदोषदस
चौर१ जूप२ अज्ञ३ कादर४ मूक५ क्रूर६ अंध७
पंगु८ बधिर९ क्लीब१० दिसा प्रमान दिशस्तुककुभः
काष्ठाआशाश्चहरितश्चताः॥ प्राच्यवाचीप्रतीच्यस्ताः
पूर्वदक्षिणपश्चिमाः उत्तरादिगुदीचीस्यादिश्यंतुत्रिषु
दिग्भवेत् इत्यमरः दसादस नयनप्रीति१ चिंता२ संक
ल्प३ निद्रानास४ कृसतन५ रुचिहान६ लाजभंग७
उन्माद८ मूर्छा९ मृत्यु१० उदाहरन २१॥ ॥मू॰॥
कवित्त एकथलथितपैंबसतप्रतिजनजीव
ह्विकरपैदेसदेसकरकोधरनुहै॥ त्रिगुनकलि
तवपुवलितललितगुनगुननिकेंगुनतरुफ
लितकरनुहै॥ चारिहीपदारथकौलोभचित
नितनितदीवेकोंपदारथसमूहकोपरनुहै॥

केसोदास इंद्रजीतभूतलअभूतपंचभूतकी
प्रभूतभवभूतकोसरनुहै २२॥ ॥टी० उदाहर
न एकथलपैस्थितहै परंतुप्रतिजनजीवमें अरुदोक
रहाथनैं देसदेसतें करदंडधरतहैं अर्थदंडलेतहै
त्रिगुन रज तम सत्ततें कलितहैजुक्तहै वपुसरीरजि
नको परवलितललित गुनहैजिनमें अरुवहुवलित
पाठहैतहाँबहुतवलवान गुनीहैतिनकेगुन तरु ता
कोआपफलदेतहैं चारपदार्थकोलोभहै जिनको परं
तुप दारथलसमूह दोवकेकरनहैं कहींप्रनपाठहै
तहांप्रनजिनको कहींरटतहै तहाँरटनरहतदेहुदेहु
केसोदासकहतकै इंद्रजीतभूप्रथ्वीतलमें अभूत पं
चभूत पृथ्वी अप तेज वायु आकास ताकीभूतहैं ता
सौं उपजेहैं यहअर्थ भवसंसारमें जेउपजेहैं तिनको
सरनदेत अर्थसबभूतके रक्षक किंवाभवभूतमहा
देवतिनकेसरनहैं २२॥ ॥मू० कवित्त दरसैन
सुरसेनरेससिरनावैंनितपटदरसनहीकोसि
रनापियतुहै॥ केसोदासपुरीपुरपुंजनकेपा
लकपैसानहीपुरीसेपूरोप्रेमपाइयतुहै॥
नायकाअनेकनिकोनायकनगरनचअष्ट
नायिकानिहीसोंमनलाियियतुहै॥नवधा
देहरिकोभगतइंद्रजीतजीकोदसअवतार
हीकोगुनगायियतुहै २२॥ ॥टी० दरदरवाजा

पैसेनसहित सुरदेव सदृमनरेस राजासिरनावत हैं अरु षट्दरसनको सिरनावत हैं अरु पुरीसर्व पदार्थतें पूरीतिनकेपालकहैं परसातपुरी अजोध्यादितिनपरहैबहुतप्रेमजिनको अरुनायकाजे हैंअनेकतिनकेनायकहैं नगरनागरहैं परंतुप्रोषितपतिकादिकजे अष्टनायका काव्यमें कही तिनसौंहैजादाप्रेम जिनको नवधाभगत हरिकीनाको भजनहै इंद्रजीतके अरु दसअवतारके गुनगावत अर्थ कीर्त्तन अतिप्रियहै क्रमको भेदगननाकही २३॥ ॥मू०

अथआसीरवाद वरननं दो० मात पितागुरुदेवमुनि कहनकछुसुषपाइ॥ ताहीसों सबकहतहैं आसिषकविकेराइ २४॥ ॥

टी० माता पिता जेमानिबेजोगते सवजानलीजिये॥ २४॥ ॥मू० **उदाहरन मलपमिलतवासकुंकुमकलितजुतजावककुसुमनषपूजितललितकर॥जटितजरायकीजंजीरबीचनीलमनिलागिरहेलोकनिकेनैनमानौंमनहर॥ पंन्नगपतंगअरुकिन्नरअसुरसुरमसकगयंदसमचाहतअचरचर॥हयपरगयपरपलिकासुपीठपरअरिउरपरअवनीसनिकेसीसपर २५॥** टी० कोईसमय में श्रीरामजीके चरननिहारिकेकौसिल्याकहतहे मलयचंदननि

लिकरिके अरु कुमकुमकेसरकी सुवासमिलिकरि
के कलितजुक्तहै अरुजावकमहावर कुसुमफूलए
सबमिलायकैं नषनकोपूजनकरत अर्थललितकर
नतैं तिहारेसाससमुरपूजैंविवाहहोउ फेरएचरन
कैसेहोहिं कैजटितजबाहिरकीजोजंजीरहै ताके
बीच लोगनकेजेनेत्रहैं सोईनीलमनिहै नेमनोहरता
मैं दरसे अर्थराजअविसेषहोउ पन्नगसर्प पतंगप
क्षी किन्नर असुर सुरमसकछोटे गयंदबडे तेसब
समचाहैं असुरभी सुरभी अर्थरणमे सबकोविज
यकरी यहअश्व गजहाथी पलंगसेज अरितत्रू ता
केउरहृदय अवनीसुराजानके सिरपररहतहै अ
र्थ अंकटकरहहु कहूंतीसरीतुक चिरचिरसोहै रा
मचंद्रकेचरनजग दीवोकरो आसिष असेष मि
लिनारिनर २५॥ ॥**मू॰ क॰ होयधोकोऊचरा
चरमध्यमेउत्तमजातिअनुत्तमहीको॥ कि
न्नरकैनरनारिविचारकिवासकरैथलकैज
लहीको॥ अंगीअनंगकीमूठअमूठउदास
अभीतकिमातसहीको॥सोअथवेकहूंज
निकेसवजाकेउदोतभयोसबहीको २६॥**
टी॰ यहकवित्त प्राचीनप्रतिनमैं नाहींमिलत॥उ
क्तिकविकीजाकेउदयतैं सबको उदयरहै ताकोअ
स्तुतिन होय चरअचरमैं कोईउत्तमजाति किन्नरआ

दिपुरुषइस्त्री थलवाजलवासी अंगाकित्राभृंगा मृ
रषपंडित्त केमित्र यासवस्त्र उदासीन जाकेउद्दोत
उदोस वहीकोयहभीपाठहै २६॥ ॥मू॰ प्रेमालंका
रलक्षन दोहा कपटनिपटमिटिजायजहँ
उपजैपूरनछेम॥ताहीसोंसवकहतहैंके
सवउत्तमप्रेम २७॥ ॥टी॰ प्रेमालंकारवर्ननं
कपटनरहै छेमकल्यानउपजै इहाँलक्षनलक्षनना
तें अनुरागजानिये २७॥ ॥मू॰ यथा क॰ कछु
वातसुनैंसपनैंहुवियोगकोहोनचहैदुइदूक
हियो॥मिलिषेलिएजामहुँवालकतेंकहिता
सौंअबोलोक्योंजातकियो॥कहियेकहिके
सबनैननसोंबिनकाजहिपावकपुंजपियो
॥सषितूंबरजैअरुलोगहँसैंसबकाहेकोप्रे
मकोंनेमलियो २८॥ ॥टी॰ सषीपरिहाँसकि
योताको समाधानकरतहै हेसषीतूंपरिहाँसकाक
रत मेरोऐसोसुभावपरिगयो केकहूंस्वप्नमेंजोवियो
गकीबातसुनत तोदोयटूकहिदयहोयजातहै मिलि
केषेलिये जामें बालकपनतें तासोंकहो अवलोंक्यों
जातकियोहै अर्थविनाबोलेकैसे रह्योजाय भलोविन
काजअरुनेत्रतें अग्निपीवतबनतहै तूंबरजतअरु
लोगहँसत केकाहेकोप्रेमकोनेमलियो तथापिनाहींछो
डोजातहैमोसों किंवासषीसोंविनकपटहिदयकीक

हतहै सषीतोमानकरायोचाहतहै यहअर्थप्रेमालं कारकोहै प्रेमाक्षेपकोनहीं २८॥ ॥मू॰ अथाश्लेष वर्ननं दो॰ दोयतीनअरुभाँतिबहुआनतजा मैंअर्थ॥ श्लेषनामतासौंकहतजिनकीबु द्धिसमर्थ २९॥ ॥टी॰ आश्लेषवर्ननं दोयभाँ तिकेअर्थ किंवा बहुतभाँतिकेअर्थ जहाँहोयतहाँ अश्लेषअलंकार २९॥ ॥मू॰ दोयअर्थश्लेष कवित्त धरनिधरनिईससीसचरनोदकनि गावंतचतुरमुषसबसुषदानिए॥कोमल अमलपदकमलाकरकमलकलितवलितगुन कौनउरआनिए॥हिरन्यकस्यपुदानकारी प्रह्लादहितद्विजपदउरधारीवेदनिबषा निए॥केसोदासदारिदद्दुरदकेविदारिबेकों एकैनरसिंहकोअमरसिंहजानिए ३०॥ ॥ टी॰ अयद्द र्थ दारिदद्दुरदहाथी ताकेफारिबेमैं राजा अमरसिंहनरसिंहहैं किंवानरसिंहैंकेअमरसिंह हैं तहानरसिंहपक्ष धारतहैंधरनीसीसपैसेस अरु ईससिवतेजिनकेचरनकोउदकजल धरतहैं किंवाक च्छपरूपहोयकैं धरनीकौंधारतहैं अरुईसमहादे वजिनकेचरनकोजलगंगाताकौं सिरपरराषतहैं अ रुगावतहैं चतुरमुषब्रह्मासोसबकोसुषदाताहैं तहाँ प्रसन्न केहिरन्यकस्यपकेप्रानहरेतन सबकौंसुषकहै

उत्तरतिनकोमुक्तिदाता अरु कोमल अमल है पद जिनको फिरि कमलालक्ष्मी करकमलकलित सेवत हैं तिनके गुन क्यौंनउरआनिए किंवाकोमलअरुअमल ऐसोजोहै जल अरुहेममैंकोमलनामजलको अर्थजलसाईहैंसोज लकैसोहै कमलालक्ष्मी करकिरनतैं सुषकोप्रकासतैं अरुकमलतैं सोभावानहै अरुफेरकैसेहैं हिरन्यकस्यपु कोतिनकोदानमदकारी किंवाषंडनकारी अरुप्रहलाद केहितकर्त्ता द्विजपदभृगुलताउरमैं धारनकियोऐसे वेद बषानतहैं राजाअमरसिंहपक्ष धारनकरेंहैं धरनीकोया तैंभूपतिनामप्रसिद्धहै अरुईसमहादेवतिनकेचरनको जलसिरपरधरतहैं किंवाधरनिईस अन्यराजा जिनकेचरन कोउदकसिरपरधरेहैं अरुगावतहैंगानकरतहै अर्थपरमे स्वरकेगुनगावतहैं चतुरहैंअरुसुषतैंसबकोसुषदाताहैं किंवाचतुरजे कविकोविदहैं तेजिनकेगुनगावतहैं केसब केसुषदाताहैं फेरकोमलअमलजाकेपाँयहैं कमलनामहेम कोसमैं लक्ष्मीकोअरुइस्त्रीको कमलावरांगनाकेजोकरक मलतातैंसेवतहैं किंवाकोमलअरुअमल पदअस्थानकम लाकोहैकरनमैं अर्थ लक्ष्मीकोचिन्हहै अरुकलित ललित गुनकौं क्यौंनहीं उरमैं आनिए ॥ दाताभीहैं अरुसूरभी है हिरण्यसुवर्ण औकस्यपसैजकोनामहै हिरन्यसुवर्नको सिज्जाकोदान कारीहै प्रउत्कर्षआनंदताकेहित कारीहैं द्विजब्रासनकेपदउरमैंधरतहैं किंवादुजपक्षीगरु

वा जेपरमविरोधीउनमें मीनादिक मारततिनसों वि
रोधनाहीं करत किंवाजो कष्टपरमविरोधीहै जाने
सोचनकरकै पाल्यो नाहीकेउरपै राहबनाई तिन
सो आपअविरोधी रहत अर्थडुबावतनाही दानिनि
केदानकल्पवृक्ष सुरधेनलक्ष्मीएसबकों देत ति
न्हैआपदेत प्रमान जथार्थज्ञानकोनामप्रमान अ
मतैंभिन्नजज्ञान सबप्रमाकहतहैंनाहि महामोह
तमभानुभल्लराषीअसदहरादि दुतीयलक्षन तदव
दहोतविसेषहियययपिविपजोग्यान प्रमाकहत
मुनिताहिकौंसुनियेक्रिपानिधान यामैंप्रमाज्ञानना
ही कितनोगहिरो कितनोजल कितनेरत्नहैं अरुअ
धिकअनंतआपुजलहै सोहतहैसंग अनंतजीवन
को असरनकौं सरनदाताहै अर्थमैंना कगिरिको इंद्र
कोभयतैं बचायोरच्छाकरी निधिराषनहारे जहां ल
क्ष्मीकोवासहैयातैं हुतभुक् बाडवाअग्निराषत॥
श्रीपतिनारायणजलसाई उरमैंरहैंहैं अरुभावतहै
गंगाजिनको अर्थपत्नीहैं जगसंसारके कारणहै॥रा
जापक्ष परमविरोधीजेबैरीहैं तेअविरोधीहोयजात
जिनकोजससुनिके दानिनकेदान दानीमदवारेहाथी
नकोदाताहैं अरुकविके सबप्रमानहैं अर्थ अरुक
विकहतकिहमहाथीलेहि रतनसोदेत किंवा कविक
रनसेबरनत नवआपतेसहींहोतहै अधिकहै अनं

त सोजे धेजे मे आपअनतहै अनंतनाहींमिलतजि
नकौं अरुऐसहीअनंतवीर संगमैं रहतहैं असरन
सरनभाषामें लघुदीर्घ होयजात आसदैरनकीजिन
कौं सरनवाननकरके सुरछकसुरछक है पंथजिन
की बाहुबलतैं चलतहै निधानप्रवीनहै हुतभुकहि
तमतजज्ञमैंयज्ञमें अग्निकोपूरन करिवेकोहै इच्छा
जिनको श्रीपतिश्रीसोभाताकेपति किंवाराजश्रीके
पतिहैं सोराजश्रीह्रिदयमैं बसतहै गंगाजलको का
रनधर्मेजिनकौं भावतहै केसोरायसपथकरकहत
केसोभगवानकी ऐसेराजा देषिए ३१॥ ॥मू॰ चार

**अर्थ क॰ दानवारिसुषदजनकजातनानु
सारकरषतधनुगुनसरससुहाएहैं नरदे
वक्षयकारकरमहरनपरदूषनकेदूषनसु
केसोदासगाएहैं॥नागधरप्रियमनिलोक
मातासुषदानिसोदरसहायकनवलगुन
भाएहैं ऐसोराजारामब्रिजरामकिपरसुरा
मकेसोदासराजारामसिंहउरआएहैं ३२॥**

टी॰ चतुर्थअर्थ ऐसेराजारामहैं कि ब्रिजरामहैं कि
परसरामहैं केसोदासराजाराम सिंहऐसेउरआनिए
ऐसेदासरथीहैंजैसे विसेषनकेसबदेत केब्रिजराम
बलभद्रकै परसरामके राजारामसिंहदासरथी राम
पक्ष दानवकेदुसमनजनककोभईहै जातना धनु

षनटूटे किंवा दानवारिइंद्रताकोसुषदाता किंवादा
नकरतहैं वारीजल तिनकौंसुषदजनकजाजानकी
ताकेतनकेअनुसारीहैं अर्थअनुकूलहैं किंवाजनक
जूकोभईजा ननापीडाजबधनुषउठो नव आपतो
सोयातैंअनुसारी अरुकर्षनहारेधनुषकीगुनप्रतं
चाके सरसरससंजुक्त प्रश्न केधनुषउठावन किंवा
षैंचतसरसरसकाहेकहे उत्तर॥ वीररसहोयगा॥ किं
वा नाटकमैंलिषोहे केजानकीके मनसमेत आक
र्षेनकोनो नरदेवविस्वामित्रादिक तिनकेछेकारी इ
हांलक्षनलक्षनातैं कर्मकेक्षयकारी किंवानरदेवही
ईकेक्षयकारी सुबाहुआदिक तिनके करमहरन
प्रश्न तहांमारनचाही उत्तर मुक्तिदाता अरुभरदू
षनकेतोदूषनहैं सुसुंदररीतितें केसवकेदास वा
लमीक तिनसतकोटिमैं गायेहैं नागनामश्रेष्ठको श्रे
ष्ठजो पुरुषधराविषैं तिनकोप्रियमानतहैं किंवाना
गसर्पेतिनके धारनहारे सिवतिनको प्रियमानतलो
कमैं माताकोसुषकंदाता प्रश्न काकोईआनदुषदेन
उत्तर केकई बनदीनो याहीमैं सुषीरहे सोआपती
नोसोदरभाई तिनकेसहायक भरतनिमित्तराजमा
गो किंवा लछिमनकौंसक्तितैं बचायो बलनवीन
गुनराजाभाईकोनाहींमानतयातैं नवीन किंवानवी
नगुन रावनसोवैरी वांदरकीसेना समुद्रमैं पाथर

कीनो वइत्यादि बलरामपक्ष दानवकंसत्रु केसीकं
सादिकमारे किंवा दानव अरीकृस्नतिनको सुषदा
ताजनकवसुदेवको जोभईजात नापीडाताकेलिए
आपदेवकीकेगर्भतें रोहिनीकेगर्भमें आए अरुक
र्षनहारी धनगोधन अरुधनुचितको नामहेमकोस
मेंहै तोचितकेकर्षनहारे किंवा ब्रिजवधुनकेचित्त
कौंकर्षनकीनो सरसजेरसश्रृंगारादिककोगहचले
यातें सरसनर अरुदेवक्षयकारजे करमतिनके हरन
हारेहैं किंवा नरजोरुक्मिनीताकौं देवकहिए क्रीडामें
नासकरी अर्थचौपरषेलतमारी किंवा नरदेवसूत
पुरानी तिनकोमारो अरुषरदूषनकेदूषन तालवन
में गदहाकोरूपधरें असुरबहुतरहे अरुमालिकधे
नुकनामा रहोताकेदूषन मारनहारे फिरकेसीदास
केसोभगवानदासहैं बडमानकेअरुगाए किंवाके
सोदास व्यासतिननेगायेहैं नागकालीताकेधरनहा
रकृस्न तिनकोप्रियमानत किंवानागसर्प ताकोध
रसरीरसो प्रियहै काहे बलदेवसेषावतारहैं किंवा
नागरूपहोय समुद्रमेंप्रवेसकियो प्रवासक्षेत्रमें हेममें
लोकनाम मनुष्यको मातानाम पृथ्वीकोयातें लोकनरमा
तापृथ्वीताकोसुषदाताहैं अर्थभूभारहरनहारहैं सोद
रएदोपदकरिए सोबलिराम दृस्नामत्रासकोभीहै त्रासमें
जोसुमिरै ताकोसहायकरैनवलगुनजसुनाको आकर्षनह

लतेंमदपानविषैंकीनो किंवानवीनहै गुनरूपादिकतिनको भावत परसरामपक्ष दानकोवाग्जलहै प्रियजिन को अर्थसंकल्प बहुतकियो जनकजमदग्निकोजोभ ईजाततनापीडाकरषतधनको धेनको तवगुनसरस होयगए किंवाधनुषको गुनप्रसंचाकर्षनकीनो नरदे वराजा तिनके क्षयकारीहैं करमसुभअसुभताकेह रनहार अर्थमोक्षदाता परनीक्षनजेदूपनताकेदूष नहारे नागधरमहादेव तिनकोप्रियमानतहैं लो कमाताउमाताकोसुषदातारहैं फरसोदरभाईसहा यकनहीहै वलजोगुनहैतेईभाएहैं राजापक्ष दानवा रीहैसुषद दाननाममदको वारजलजोहैसोईहैसुषद अर्थ मदवारे हाथीनतैं प्रसन्नरहत किंवादानवारी बेरा कुसितजोजनलोकसो जनककहावत जातिकहि एजातीसमूहजनकबुरेलोग ताकोजातिसमूह ताकोना कहिये नहीहैं अनुसार किंवाजनकहियेनोकर जा तमृत्युतें नानिसारतनमें नहींसरती किंवाजनकपि ताकोजाननान नानामाता पक्ष सारकोदोषकरषत जा कोजो धनकोगुनसो करषत षींचतहै नरदेवब्रासन तिनकेछयकर्त्ता तिनकेकरमकेहरनहारहैं षरदूषन केदूषनरामतिनकेदासहैं नागहाथीनकोजो धरतप करतवेहैं जिनकोप्रिय लोकमाताजो गऊहै ताकोसु षदाता प्रमान गवस्त्रेलोकमातरः सोदरसंपहै जिनको

सहायक किंवा सोजां दूर हैं रजपूतीकी साई हैं सहायक फेरन वलगुन ऐसेआनमैंन हीपाठकैथौं है अमरसिंह मेरेमन आए हैं तोभी राजाकों वहीअर्थ अरु कहूं ब्रिजराम चौथीतुकबलिरामनहीं है तहां ब्रिजरामकृस्नपक्ष अरु कहूं स्यामरामउरआए हैं तहां दानवारि दधिदानवारी जोवेराघरीसो है सुषदाता किंवावारदिन अर्थ जादिनदानलीला करीसोवारदिन अरु जनकनंद तिनकोजातनापीडा भईवरुनके दूतलेगए दावानलनेछेकेइत्यादितैं अनुकूलभए कलेसनिवारो किंवाजनकवसुदेवतैं बंदीषानेमैं रहे तिनकौं अनुकूल होकरछुडाए अरुकर्षनहारे धनजोहैं ब्रजबाला तिनकेगुनपतिव्रत किंवाधनजोहै सो कर्षनहार ऐसेगुनतैं सरसभए सुहानेव्रजबालानकों अरुजरासिंधादिकनकेजुद्धमैं चाँपभीकर्षनकियो किंवाधन श्री सोभाताके कर्षनहार किंवा रूपतैं आप सुभावामन है नरदेवराजाकंसताकेछयकारी किंवा नरदेवराजातिनकोछयकारी नरकासुरसव राजकंन्यावरजो रीछिनीताकेजेकरम हैं तिनकेकरमके हरनहार हैं अरुषरतीक्षणदोष ताकेदोभनहार अर्थ परस्त्रीगमनबडोदूषन है तौदूषनसबकोदूष्यो आपुगमनकिए तथाचौरादिकर्मेकिए किंवाताल वनमैं कितनेषररूपअसुरमारे नागजोकालीताकोधरे सो

ताको प्रियमानो फेरछोड़दयो अरुलोकमाता आदि ब्रह्म श्रीराधाताको सुषकेदाताहैं प्रमान देवकवि कोकवित्त आदिब्रह्मवेदविद्या कहतप्रकितजासौं सोजोदरसंष सोहैसहाइकजिनको संषचक्रगदाप द्मसोईहैआयुध किंवासोदरबलिराम किंवासोद रभाईतिनको सहायकरीजबदेवकीकहीके हमारे पुत्रलेआवो तबलिआए किंवानंवलनामनवीन द स्तीतिनकेगुनभाएहैं औरअनेकपोथिनमैं याकवि त्तंके बहुतपाठमिलतसोनहीँलिष्यो ३२॥ ॥मू॰

अथपंचार्थकवित्त भावतपरमहंसजा तिगुनसुनसुषपावतसंगीतमीतविबुध बषानिए॥सुषदसकतिभरसमरसनेही बहुवदनविदितजसकेसोदासगानिए॥ राजेद्विजराजपदभूषनविमलकमलासन प्रकासपरदारप्रियमानिए॥ऐसेलोकना थकेत्रिलोकनाथनाथनाथकैधौंजगनाथ रामनाथजगजानिये ३३॥

॥टी॰ पचार्थक वित्त इहाँजोविसेषनहैं तिनविसेषननसौं लोकना थब्रह्मा कैत्रिलोकनाथकृस्न औश्रीदासरथीराम नाथनाथ दिगपालतिनकेनाथ महादेव अरु कोई दिसापालकेनाथ इंद्रकहतहैकेराजारामसिंह औ उछेकेराजा प्रमान बंसबरननमैं रामसाहिराजाभ

ए ब्रह्मापक्ष भावतहैपरमउत्तमहंसजिनको हंसवा
हनहैंब्रह्माके किंवापरमहंसभगवानयहकथाभागव
तमेंहैकेसनकादिक प्रश्न करी सोब्रह्माकोउत्तरन आयो
तहांहंसरूपहोके भगवानआपउत्तरदियो अरुजातप्राप्त
भयेतिनकेगुनसुनसुषपाए किंवाजातजोउत्पत्तिकर
त ताकेगुनसुनसुषपावत संगीतमीत संगीतगावन
हारवेदतिनकेमीतहैं अर्थवेदउच्चारतहैं विसेषक
रि जिनकों बुधपंडितबषानतहैं सुषदातासक्तिके
धारनकरनेवारेहैं अर्थजोसुषकोंचाहततांदेत अरु
समरसनेहीहैं सबकीओरबराबररहनन्यूनअधिक
नाहीं अरुबहुवदन विदितहैंजस अर्थचारहैमुष
जिनको केसोदासनेगाएहैं किंवाबहुमुषतेंजसगाव
तकेसबभगवानको अरुतिनकेआपदासहोरहेहैंरा
जैद्विजराजपद दुजब्राह्मनपदराजत किंवादुजपक्षी
तिनकोराजतहै सत्तामेंपदराजत अर्थहंसपैसवार
होत अरुभूषनहैजिनको निरमल कमलासनकम
लविषें आसनहैजिनको परउत्कृष्टदाराब्राह्मनीसो
हैप्रियजाको श्रीकृष्नपक्ष भावतपरमहंसजापरम
उतकर्षहंसवृषके तिनकीजापुत्री अर्थवृषभानुजा
राधाजिनकोभावतहैं तोगुनसुन तीयजोइस्त्रीताकेगुन
सुनसुषपावतहैं किंवाहंसजाति श्रीजमुनाताके गुन
सुनसुषपावतहैं संगीतमीत संगीत राग ताके मी

तहैं विबुधवेदमें बषानेहैं कहेहै फेरसुषदसक्तिधा
रीहै जिनने अर्थलीलादेवी समरजोकामनाकेसनेही
हैं अर्थकामउत्पन्नकस्यो बहुवदनविदितजस जब
माटीषाई तबबहुवदनमेमाताको रूपदेषाए यह
अर्थ किंवारासमंडलमैं बहुरूपधरे यातैं बहुवदन
किंवाबहुवदनब्रह्माको विदितहै जिनकोजस बछरू
हरनसमयमैं किंवा बहुवदनमहादेवकोविदितहै
जसजिनको अर्थरासमैं गोपीरूपभए कविकेसवजा
निए दुजराजगरुडपैराजतहै पदचरन किंवा दुजरा
ज चंद्रमा सोईहै पदश्रीकृस्नचंदकहावतहै किंवादु
जराजकोपदजिनकेसिरपरराजतहै अर्थमोरचंद्रिका
धारनकरीहै भूषनविमलनिर्मल कमलालक्ष्मी ना
सनतिनकेसंगमैं विलासहै परदारप्रिय पराईदारा द
स्त्रीसोहै प्रियजिनको मानिएकोअर्थ मानीनायकको
रूपधरी श्रीरामचंद्रजीपक्ष भावतपरमहंससनकादि
कभावतहैं जिनकोजातसमूह जिनके गुनसुनके गु
नरूपादि चौबीसोपीछेकहे तेसुनकेसुषपावतहैं सं
गीतमीत विबुधदेवगंधर्वादिओबषानतहैं किंवापर
महंस सूर्जबंसी जिनकोभावत अरुवीनामपक्षी बुध
नामपंडित पक्षीमैं पंडित कागभसुंडबषानतहैं किंवा
वीनामपक्षीगीधतासौं करी मित्रतायहपंडितकहत
सुषदसकतिधर सक्तिजोसषदजानकी ताकोधारनक

रेहैं किंवा वरछी धारन करन अर्थ लक्ष्मनन भक्ता
दुकी बरछी धारन करी समर में तिनके हैं सनेही बन्धु
वदनरावनताकरिके विदित हैं जसजिनको अस्फु
जत है दुजराज आसन को पद्म पन अर्थ भृगु को ला
त कमल जो जलसो दे है जिन को असन भोजन ऐसे
जोगी त को है प्रकास जाहिर सो राम को जानत फेर
परदार भक्ति सो दे है प्रियजिनको किंवा तुलसी प्रिय
है जिनको॥ नाथ दिसापाल तिनके नाथ॥ मित्रपक्ष
भावत परमहंस आश्रम चार्यं हस्त १ ब्रह्मचारी
वानप्रस्थ संन्यासी ताके ऊपर परमहंस सो परमहं
स जिनको भावत फेर जाति कहिए जो एक होय अने
कन रहै सो गुन मे गुनत्व जाति है सत्त रज तम त्रक वृत्ति
को है गुनत्व सो सुन कर सुष पावत है तहां प्रस्न ताको
तमोगुन सुन सुष पावत तव परमहंस भावत कैसें बनि है
उत्तर इहां एक सतोगुन मात्र लीजिए किंवा तिगुन तें
सुन्न है ब्रह्मस्वरूप हैं तव हमेस को सुष बनैगो औ सं
गीत के मीत हैं आप नृत्यकारी हैं किंवा जाति जोग ने
स तिनके गुन सुन सुष पावत हैं किंवा भावत हैं परमहं
स सूर्जे तिनके जात वंस में जाति राम तिनके गुन सुन
सुष पावत हैं अरु सं सम्यक् प्रकार तें संगीत रामाय
ण ताके मित्र हैं अरु सुषद सकति धर कार्त्तिकेय को सु
षद हैं फेर समरस सांत रस ताके नेही सनेही हैं किंवा

समरत्रिपुरादिकतैंकरतहैं तातैंसमरसनेही किंवा
सूरमाकेलेतयातैंसम रसनेही अरुबहुवदनपंच
मुषहै अरुदुज राजचंद्रकेपदस्थानहै फेरविमल
विनष्टहोतहै पापजातैं किंवाआपनिर्मलहैंगंगासे
हैभूषन फेरकमलासनपयासनलगाएरहत ताही
सोहैप्रकास किंवाकमलासनब्रह्मातेहै प्रकासजा
कौं प्रमान बरनैपितुचारमुष पूतबरने पाँचमुष
नातीबरनैषट्मुषदपिनईनई परदारप्रिय उतकर्ष
दाराउमासोईहै प्रियजाको राजापक्ष भावतहैपरम
हंससूजेजानिजोकरन तिनकेगुनदान जिनकोभाव
तहैअरुदानसुनिसुषपावत फेरसंगीतअरुविबुध पं
डितहैंमीत जिनकेऐसेबषानिए अरुसुषद प्रजाको
सुषदाता अरुसकतिबरछीताकौंधारनकर्ता रन
केसनेहीहैं बहुतकविजिनके गुनगावतहैं अरुके
सवभगवानतिनकेदासहैं अरुब्राह्मनकेपदहैं भू
षन अर्थब्राह्मनकेपूजाकरतहैं कमलासनलक्ष्मीता
कोहैप्रकास परदारापराईदाराभूमिसोईहै प्रिय किं
वापरदारद्वारपालकौं सुषमानतहैं अरुकोई दिसा
पालकेनाथ इंद्रकहत तहाँइंद्रपक्ष भावतपरमहं
ससूजे जानजलगुनजिनमैं ऐसेमेघ अर्थइंद्रकीआ
ज्ञातैं मेघजलबरसतहैं अरुसंगीतसुनसुषपावत
हैं सुषदहै बरछीधरनहारे किंवाआपुबरछीधरेहैं

अर्थ वहीबरुह्मोइंद्रजीतकोदियो समरकामनाके सनेहीहैं बहुवदनजो विराटताकेगुनगावतहैं दुजराजदसनकी पंगतिहैजाके ऐसोहाथीसोहै पदकौंभूषन किंवाताकेपदमैं बहुतभूषनहै किंवा भूपृथ्वीताकौं षननहारवज्रसोईहै भूपनकमलजलविषैंहैआसन ऐसेनारायण तिनकरिके भयोहै प्रकासजिनको परकहिए उतकर्षदारा सचीसोई है प्रियजाकौं ३२॥ ॥मू० अथश्लेषभेदवर्नेनं ॥ दोहा॥ तिनमेंएकअभिन्नपद औरिभिन्नपदजानि॥ श्लेषसुबुद्धिदुवेषकेकेसवदासबषान ३३॥ ॥टी० अथश्लेषभेद तिनसाधारनश्लेषनमें एकभिन्नपदहै अरुएकअभिन्नपदहै श्लेषसुबुद्धदुवेष सुबुद्धिसंबोधनहै सुबुद्धिदोयरीतकोअ श्लेषहै ३३॥ ॥मू० अथअभिन्नपद जथा सोहतसुकेसीमंजुघोषारतिउरवसीराजारामभोहिबेकौंमूरतिसोहाईहै कलरवकलितसुरभिरागरंगजुतवदनकमलषटपदछबिछाईहै॥ भृकुटीकुटिलधनुलोचनकटाक्षसरभेदियतमनुतरुतनसुषदाईहै प्रमुदितपयोधरदामिनीसीसाथनाथकामकीसीसेनाकामसेनावनिआईहै ३४॥ ॥टी० अभिन्नपद॥जहाँएकही

सब्द होय अरु एकही अर्थ होय सब्द अर्थ मैं भेद न
परन पावै अरु होइ दोय पक्ष मैं तहाँ अभिन्नपद जा
निए नाथ नायकता के संग मैं कामसेना सदृस काम
सेना जो है नायका सो बनिआई है अर्थ सजिआई है
जैसे पावस बरनन मैं भूषन जराय जोत तडित रलाई
है तो इहाँ पद भिन्न है अरु अर्थ भिन्न है तहाँ अभि
न्नपद नाही है कामसेना सुकेसी सुसुंदर है केस जाके
लंबे स्याम सचिक्कन ऐसी सुकेसी नामा अपसरा नाय
का मे भी वही अर्थ उहाँ विसेष्य अपसरा इहाँ नायका
॥ औरू अर्थ कीजिये तो भिन्नपद होय जाय ऐसे ही मं
जुघोषा नाम अपसरा अरु मंजुघोष सब्द नायका को
रतिकामिनी इहाँ रति प्रति करै तो भिन्नपद होय यातैं
एक प्रीति उरवसी अपसरा इहाँ प्रीति उर मैं बसी तो
भिन्न होय यातैं उर मैं बसी है यही अर्थ उहाँ राजारा
म मोहिबे को अर्थ दूसरो करै तो भिन्नपद होय जाय
यातैं राजाराम संबोधन कै हे राजाराम मोहिबे के नि
मित्त मूरति है वाको कलरव अव्यक्त मधुर धुनि जुक्त
दोय सुरभि सुगंध दोई मैं राग दोनो मैं रंग दोनो मैं ब
दनकमल दोनो मैं षटपद भ्रमर दोनो मैं छबि भी भृ
कुटी टेढी भी धनुसदृस लोचन नैत्र के कटाक्ष भी दो
नो मैं भेदिए है मन अरु तन तथापि सुषदाता अरु प
योधर कुच दूसर नाहीं दामीनि सी दोनो अरु जो मेघ

कहैतोदोष ३४॥ ॥मू० अथभिन्नपद दो० प
दहीमैपदकाढियेताहिभिन्नपदजानि
॥भिन्नभिन्नपुनिपदनिकेउपमाश्लेषब
षानि ३५॥ ॥टी० अथभिन्नपद जहांकेमध्य
पददूसरोकाढिए जेसेकलेसएकपद पदनामसब्द
तामेएककहीजल लेसकहिए अल्पतोदोपदभए
॥अरुबस्तुभीदूसरीकढै सोभिन्नपद यहप्रथमतु
ककोअर्थ अरुदूसरीतुकमें फेरएकपद कर
पदनिको भिन्नकरैअरु उपमादेय सोभीभिन्न
पद उपमादेहलीदीपकन्यायकरिदोवारलगाइ
ए ३५॥ ॥मू० दो० वृषभवाहिनीअंगउर
वासुकिलसतनवीन॥ सिवसँगसोहतसर्व
दासिवाकिरायप्रवीन ३६॥ ॥टी० तो
इहांवृषभएकअर्थ धर्मदूसरोयातेंभिन्नपद अरु
सुकेसीमेके सहीमात्रहै यातेंअभिन्न ३६॥ ॥मू०
उपमाश्लेष क० राजैरजकेसोदासदूटनि
अरुनलारप्रतिभटअंकनितेंअंगपरसत
है॥ सेनासुंदरीनकेविलोकिमुषभूषननि
किलकिकिलकिजाहीताहीकोधरतुहै॥
॥देषगलपलतोपलीनि [illegible] तोरि [illegible]
पजसबारदंतकोअरतुहै चंदुसनहै अ
लष्यानिविसालरनतोकरपालबाल

षी नाहीं किंवासंकल्पपढके किंवामीठेबरनअक्षर कहिकैं किंवासाजसुबरनकी किंवारत्ननेमुद्रासहि त नबिहितनसंख्याकरिकैं अर्थअगिनितसजलसंक ल्पकोजल सहितअंगलताकोअंकुससमेत विक्र मपराक्रम वीरकेभेदमैंदानवीरभीहैं कोसषजा नातैं हैप्रकासमान धीरजनिधानदाता किंवाजोज नल्यावतसो फेरदानकेविसेषन केदीनपैदयाकर तहैं प्रतिभटदरिद्रताकोसाल कीरतिबढावनहा रजाहिर यहजहानजानतहै केविलोनहै घिलायजा तहैदुनी संसारकेदानयह दानदेषिकैं कृपानपक्ष क्षिपानकैसीहै प्रथमप्रयोगियतनाम पहिलेमिला इयत किंवामंत्रितकरियेहै जात्रासमयमें बाजि घो डा द्विजराजछत्रीपै सुंदरहैबरनजाको नहीसंख्याको प्रगानहै जामें केकितनेमारत किंवातरवारकोनामनि स्त्रिशहै निस्त्रिंसकोअर्थ तीसअंगूरीतें अधिकहोय अधिककोप्रमाननाहीं सजल पानिपहैजामें अंगमू ठतासहितहै किंवा बाढ विक्रम पराक्रम ॥ नाहीकोहैरंगजामें अर्थजबनिकासेतबसूरपनछ ढिजात कोसम्यानतेप्रकासमान धीरजाकेपासरहै सो धीरजधरत दीनकोनाहीमारत भटजोधाकोसा लतकीरतिकरत यहजहानजानत केदुनीमेंजेवैरी हैं तिनकोदाननाम मदविसेषकरके लीनहोतयाकृ

पानदेषिके इहाँक्रियाप्रयोगियत दानओकृपानसों लागीहै परंतुफलविरुद्धहै दानपालतकृपानमारत एकक्रियासोंबहुतकोअन्वयहै श्लेषमें नियमनाहीं विनाश्लेषभीहोयहै यहीलक्षनहै ३९॥ ॥मू०

अथविरुद्धक्रियाश्लेष क० कह्युकान्ह सुनोंकलबोलतकोकिलकामकीकीरति गावतसी॥पुनिवातैंकहैकलभाषितकामिनिकेलिकलानपढावतसी॥सुनिवाजतबीनप्रवीननवीनसुरागहियेउपजावतसी ॥कहिकेसवदासप्रकासविलाससवैबन सोभबढावतसी॥४०॥ ॥टी० विरुद्धाश्लेषवउक्तिसषीकीनायकप्रति हेकान्हसुनोंकलबोलत अव्यक्तजोधुनिकोकिलकरतसो मानोकामकीकीरतिगावतहैं यहनवीनकेमतमें वस्तुत्प्रेक्षाअनुक्तविषयाहै क्रियाकेआगेसीवाचकहैयातें अरुप्राचीनकोईग्रंथकारको मतलेकरकेसबनैंयाको विरुद्धक्रियाफलएकऐसो अश्लेषकहोहैअरुमधुर वातैंकहतहैं कामिनिसोमानों केलिकलाबढावतहैं पुनवाजतहै जोप्रवीनसो रागअनुराग मानोंउपजावतहै कहिकेसबप्रकासविलास सबबनकीसोभाबढावतहैं प्रस्न इहांक्रियाविरुद्धकैसे उत्तर कोकिलकोतोनभिन्ननायकाकी बातभिन्न अरुफलएकउद्दीपन इ

त्यादि अरुश्लेषकैसे कोकिलकामकी कीरतिके दो यअर्थ कारजकौअरुमदनकी अरुरागकेभीदोय अर्थ अनुराग रागवनकेभीअर्थ ग्रहजलवनकोव ननामहेमकोसमैंग्रहको ४०॥ ॥मू० अथ विरुद्धकर्माश्लेष क० दोऊभागवंततेजवंत बलवंतअतिदुहुनकीवेदनिबषानी बातऐसीहै॥दोऊजानेपुन्यपापदुहुनिकेरिषिवापदुहुनकीदेषियतमूरतिसुदेसी है॥सुनोदेवदेवबलदेवकामदेवप्रियकेसोरायकीसौंतुमकहोजैसीतैसीहै॥वारुनीकोरागहोतसूरजकरतअस्तउदोद्विजराजकोजुहोतयहकैसीहै ४१॥ ॥टी० अथ विरुद्धकर्माश्लेष चंद्रमासूर्जदोऊभागवंतहैं दो० भानुमहात्म्यसुज्ञानअरुहैप्रयत्नपुनरूप॥इच्छाज्ञानैंसूर्जपुनवीजधर्मश्रीभूप वैराग्यमुक्तधर्म नक्षत्रद्रूलनेकोनाम हेमभैंभागहै सोदोई भागवानहै अरुबलवानवेदबषानैं अरुपुन्यपापकेसाक्षी रिषिकेपुत्र दोईसूर्जेकस्यपकेहैंअरुमूर्त्तिदेषनेमेंआवत पुरानांतरमैं अत्रिकेपुत्र चंद्रमाहैं सोसुनौं देवनकेदेवबलदेवजी तुमकैसेहोकामदेवहैप्रिय तुमजोकहतसोदेहै केवारुनीजो पच्छिमदिसा तामेरागलालीभयेतैं सूर्जअ

स्तहोत दुजराजचंद्रमाउदैहोत यहकहाहै अरु श्लेषमैं वारुणी मदिरारागरंगअनुराग दुजराज ब्राह्मन कोराजाचंद्रमा ब्राह्मनको उदयप्रकासयह विरुद्धकर्म उदयमैंश्लेषवचनहै त्रिभिर्विप्रादिनस्यंतिहालाहलहलाहलैः यहतीनिवस्तुतैं ब्राह्मननष्ट हालामद्य औहलचलाएतैं औविषकोसाधनकियेतैं ४१॥ ॥मू० अथनियमाश्लेष॥

क० वैरीगायब्राह्मनकोकालैसबकालंजहाँकविकुलहीकोसुवरनहरकाजहै॥गुरुसेजगामीएकबालकैविलोकियतमातंगनहीकोमतवारकैसोसाजहै॥ अरिनगरीनप्रतिकरतअगम्यागौनदुर्गनहीकेसोहासदुर्गतिसीआजहै॥ राजादसरथसुतराजारामचंद्रतुमचिरचिरराजकरोजाकेंऐसेराजहै ४२॥ ॥टी० नियम जहाँएकअर्थसोदूसरोअर्थ निकसैअरुनियमहोययहलक्षन कोईमुनिकीउक्ति केहेरामतिहारेराजमैं गायनब्राह्मनको वैरीकालहै वेसंध्यावंधनमें प्रवृत्ति होयबे बांधीजातरात्रीमैं यहसर्वकालमैं अर्थेसर्वैरितुमैं कालकेहोयअर्थ एककालजातैं नासहोत एकतीनिकाल प्रात मध्यान्ह संध्या अरुचोरीसुवरनकीकविकुलचित्रकाव्यमैं करतहैं सुवरनकेहोय

अर्थ एकसोवरनअक्षर अरुएकसोवरनकंचन अरुगुरुकोसेजपै एकवालमात्रजाति वालकेदो यअर्थ इस्त्री बालक अरुमतवारेजेहैं तेईमतवा रेकैसेसाजरहत मतवारेकेदोयअर्थ एकमद एक मतवारे अरुऔरिकीनगरीनप्रति अगम्यागमन अर्थ समुद्रपारलंकाअगमरही काहूराजानेगम ननाहीकियो तहाँतुमगमनकीनौं अर्थअगम्य गमनऔरठौरमैंनाहीं यहीनियम दुर्गतिश्लेष दु षसोजानो नरकजानौं ऐसेजानिये इहाँअर्थहीमें अर्थनिकसत जहाँएकअर्थतेंदूसरो अर्थनिकरै अरुनियमहोययहीश्लेषकोलक्षन प्रमानरामा यने दंडजतिनकरभेदजहन्तकनृत्तसमाज॥ जीतोमनसिजसुनिय असरामचंदकेराज यातेंतु मचिरचिर बहुतकालराज्यकरोतुह्मारोएसो रा जहै यहजानिये ४२॥ ॥मू॰ अथविरोधीश्ले ष सवैया कस्महरेहरएहरेसंपतिसंभुवि पत्तिइहैअधिकाई॥जातककामअका मिनिकामनिकोहितघातककामसहाई॥ छातीमेंलच्छिदुरावतवेतोफिरावतएस वकेसँगधाई॥जद्यपिकेसवएकतऊह रितेंहरसेवककोसतभाई ४३ इतिश्लेष समाप्तः॥ ॥टी॰ विरोधीश्लेष यहश्लेषमें

दो अर्थ नाहीं तब कैसेकैश्लेष काहेयाको अर्थयह केकृस्नकृस्नताकलंकहरत अरुसंप तिहरत संभूविपतिहरत एजातिककामप्रद्युम्न केउपजावनहारे औअकामिनी कामिनीजेहैं अ र्थयह कि कामनाकामिनी इस्त्रीकोनहींचाहनताके येहितकारीहैं अरुवेकामकेघातकनासकरनहार एछातीमैं लक्ष्मीराषतवेदासनकौं देत जद्यपि ए कहैं तोभी हरकृस्नतैं प्रस्न हरसंभुसेवकपेसतभा वराषत तोइहांश्लेषकैसैं उत्तर यहश्लेषप्राचीन तिलककार दोअर्थअच्छोनहींकरततथापिकाम का मिनीमैं हरिहरमैंइश्लेषगर्भितपदहै प्रश्न तोजम ककाहेनाहीं उत्तरजमकमैं अकारांतइकारांतना हीहोतहै एकहीहोयहै इतनीबीचहै किंवाजो भीहरिहरात्मकस्वरूपएकहै तोभीहरमहादेव ह रितैं सेवकनिविषैंसत्यभावहै अर्थअभावहैएक स्वरूपहैंजो हरिकरैं सोहरनहीं करतहैं यहविरो धमेदोयअर्थ विरुद्धमिलेहैं यातैंश्लेष एकसब्द कोदोयअर्थसोनहीं लक्ष्मीकोअर्थ रमाओसंपति यातैंश्लेषनहीं ४३॥ ॥मू० अथसूक्ष्मालंका र दोहा कौनौभावप्रभावतैंजानैंजियकी बात॥ इंगिनतैंआकारतैं कहिसूक्ष्मअव दात ४४॥ ॥टी० सूक्ष्मालंकार कोईक्रियाकेप्र

भावसामर्थतैं जीवकीबातजानीजाय इंगितचेष्टा
तेंक्रियातैं आकारस्वरूपतैं ऐसीसूरतिजोवनाचैं
मनकी बातसुद्धजानींजाय अवदातसुद्धतहाँ सू
क्ष्मा अलंकार ४४॥ ॥मू॰ उदाहरन रसिक
प्रिया स॰ सषिसोहतगोपसभामहिगोविं
दबैठेहुतेदुतिकौंधरिकै॥जनुकेसवपूर
नचंदलसैचितचारुचकोरनिकौंहरिकै॥
तिनकोउलटोकरिआनिदियो केहू नीर
ज नीर नयोभरिकै॥ कहिकाहतैंनेकु
निहारिमनोहरफेरिदियोकलिकाकरिकै
४५॥ ॥टी॰ उक्तिसषीकी सषीप्रति हेसषी गो
पसभामें गोविंदबैठेरहे सोभासमेत जैसेपूरनचं
दचकोरनमें अर्थसबतिनकीओर देषतरहे॥ ति
न्हेएकसषीनें कमलमेंनयोजलभरकेंदियो अर्थ
तुम्हारेवियोगतैं राधारुदनकरतसोतुमचलो ति
नताकौं कली करफेरदयो उलटायकें अर्थहम रा
त्रीमें मिलैंगे ४५॥ ॥मू॰ लेसालंकार दोहा॥
चतुराईकेलेसतैंचतुरनसमझैलेस॥ बर
नतकविकोविदसबैताकोकेसवलेस ४६
॥टी॰ लेसालंकार चतुराईकेलेसतैं जहाँथोरी च
तुराई क्रियामिलेतातैं चतुरलोगथोरोभी नहींस
मुझिसकैं ताकौंकविअरूपंडित आदिलेसअलं

कारकहत ४८॥ ॥मू. सवैया षलतहैंहरि
बागैबनैंजहूँबैठीप्रियारतिनैंअतिलोनी
॥केसवकैसेहूँपीठमैदीठपरीकुचकुंमकु
मकीरूचिरोनी॥मातुसमीपदुराइभलेनि
नसात्विकभावनकीगतिहोनी॥धूरिकपू
रकीपूरिविलोचनसूँघिसरोरुहओढिउ
ढोनी ४७॥ ॥टी॰ हरिषलतरहेजहाँ बागेबने
हैं अर्थजामाबनेहैं किंवाबागेकहिये बगीचाब
नेहैंतहाँनायकाभी बैठीहे सोकैसी है रतितेंलोनी
है अर्थलावन्यजुक्तहै तिनकी दृष्टिजोकुचमेकुम
कुमलगावनहारीवानायका॥ ताकेपीठपैपरी सोदृ
ष्टकैसीहे कुचपरलगायोजो केसरिहैताकी रूचि
कांतितैं रमनीयहै तबसात्विकभयो ताकोछपाव
नहेतु कपूरकीधूरि आंषिनमैंडारआँसूछपाए अ
रुसरोरुहसूँघ कंपाजोकमलसूँघतसो सिरहला
यकेमहरात किंवाजो हरिकेबागेमेंजोलगोकुम
कुम केसरिकुचवारी सोदेषिनायकाकौं सात्विक भ
योतानैंछपायो किंवाधूरकपूरकी आढनी वोढरीनां
च सात्विकछपायो ४७॥ ॥मू. अथनिदर्श
ना दोहा कौनहुँएकप्रकारतैंसतअरुअस
तसमानकहियेप्रगटनिदर्शनासमुझतस
कलसुजान ४८॥ ॥टी॰ सतकोअरुअसनकौं

कोनहू प्रकारतें ॥ सामान्यकरे सोनिदर्शना ४८
॥ मू॰ क॰ तेई करैं राजचिरराजनिमैं राजैरा
जतिनहीकेलोकलोकलोकनिरूटतहे
॥ जीयनजनमतिनहीकोधन्यकेसोदास
औरनिकेपसुनिज्यौंदिननिघटतुहै॥ तेई
प्रभुपरमप्रसिद्धपुहुमीकेपतितिनहीको
प्रभुप्रभुताईकोंरटतुहै॥ सूरजसमानसो
मभित्रहूअमित्रकहुसुषदुषआपनेंउदै
हीप्रगटतुहै ४९॥ ॥टी॰ उक्तिराजाप्रतिउक्तिम
त्रीकी तेईराजाचिरबहुतकाल राजकरैं तिनहीं
को राजानकेविषे राजराजतहे तिनहींकोलोकलोक
मैंजसहे तिनहीकोजीवनधन्यहे औरकीनाई पसु
वत तिनकोदिननाहींघटत तेप्रभुहैं अरुप्रसिद्धलो
कमैं पृथ्वीपतिहीको प्रभुजो परमेस्वरसोप्रभुताद
हेहैं जोसूर्जसमानहैं तिनकोमित्रकमल अरुअमि
त्रउलूकादिकनकोंसुषदुषदेत अर्थ सूर्जकेउपदे
सकोंमानत सूर्जेउदयसैं उपदेसकारन ४९॥ ॥
मू॰ अथऊर्जेलंकार॥ दो॰॥ अहंकारकोना
तजैसोऊर्जालंकार॥ कविकोविदसबक
हतहैं केसोदासउदार ५०॥ ॥टी॰ अथऊर्जे
अलंकार अहंकारगर्वताकों नातजैसोऊर्जाकहा
वै अरुयांकोनामऊर्जस्वतिहे नवीनग्रंथकोलक्ष

नयहहैजहाँरसकोअरुभावको अगरस औभाव
कोअंगजहाँरस औभावजहांहोइ अरुयहदोहा
केतनेपुस्तकमैं नहींहै ५०॥ ॥मू० सवैया को
बपुरोजोमिल्यौहैविभीषनहैकुलदूषन
जीवैगोकोलौं॥ कुंभकरन्नमर्योमघवारि
पुतोरुकहानडरौजमसोलौं॥ श्रीरघुनाथ
केगातनिसुंदरिजानहुतूंकुसलातिनतोलौं
॥सालसबैदिगपालनिकोकररावनकेक
रवालहैजोलौं ५१॥ ॥टी० उक्तिरावनकी मं
दोदरीप्रति कैकोवपुराजे विभीषन मिल्यो काहे
कुलदूषहै किलनीवर्षजीवैगो कुंभकरन मेघना
दादिजो मरौतो कहाभयो मैनाहींडरत जोजमराज
एकहैं परंतुसतजमतें हौंनाहींडरत हेसुंदरीरामके
गातको कुसलता तूंतबलौं जिनिजान जबलौंरावन
के हाथमैंतरवारहै इहाँवीररसको अंगविभीषनादि
कीनिंदा अनुचितअभावहै यातैं ऊर्जस्वित ५१॥ ॥
मू० अथरसमयअलंकार दो० रसमयहोय
सुजानिएरसवतकेसोदास॥नवरसकोसं
क्षेपहीसमुझोकरतप्रकास ५२॥ ॥टी० रस
मयअलंकार जहाँरसकोअंगरसहोय सोरसवन र
समय जहाँबातरसभरीहोय ५२॥ ॥मू० अथशृंगार
रसवर्ननं स० आनतिहारीनआनफहोतन

मैं कछु आनन आन हीके सो ॥ केसव का
न्ह सुजान स्वरूप न जाय कह्यो मन जानतु
जैसो ॥ लोचन सो भहि पीवत जात समात सि
हात अघात न तैसो ॥ ज्यौं न रहात विहात तु
म्है बलि जात सुवात कहो नेक वैसो ५३ ॥ ॥
टी० अथ श्रृंगारलक्षन इहाँ लक्षन नाहीं है यातें लिषि
यतु है दोहा मिलि विभाव अनुभाव पुन संचारी सु अ
नूप ॥ व्यंग क्रियेथिर भाव जो सो ईरस सुषरूप नायका
बचन आनसपत तिहारी है हौं आन नाहीं कहत न
न सरीर में कछू कोई आन नाहीं आनत हे कान्ह सुजा
न तिहारो रूप जैसो मन जानत तैसो कह्यो नाहीं जात ॥
लोचन सो भा पीवत जात समात में सिहात पर अघात
नाहीं जो रहत नाहीं होतो बलि जाऊं तनकवात कहि
कै बैठजाहु इहाँ नायक नायिका आलंबन विभाव व
चन अनुभाव हरष संचारी रतिथाई तें श्रृंगाररस अरु
नायक अपराध सूचित करत यह ईरषाभाव ताको
अंग रस है यातें रसवत किंवा तुमसो और कोई हम
को प्रियनाहीं है जी को सपथ करौं यातें तिहारी आन स
पथ करति हौं यामें प्रीति अथाई निकस्यो मैं आन अन्य
था और तरह नहीं कहत हौं सत्य जानियो तुम्हारे तन में
औ आनन मुष में आन ही के सो और ही के सो प्रकास है
॥ तुम सुजान हो हमारे मन की हाल जानत हो इत्यादि

वचनअनुभावजैसेतुम्हारेस्वरूपको हमारामनजा
नत वैसेमैं नहींजानती जबमैंतुमसौं कछुकहिबे
लागतिहौं तबमेरोस्वरभंगहोजात यहसात्विक लो
चनसोभापीवत तिहारेरूपमैंसमात तोभानहीं अ
घात सिहातहैको धन्यमैहौं यासरूपकी सोभापिव
तहौंयामैंहर्षसंचारी किंवालालसासंचारी तुम्हेंबिगर
हमसौं नहींरह्योजात सोतुमबिहातहमसौं जुदाहोत
हो बलिजाती हौं तुम्हेंकिंवा तिहारी बलैयालेतिहौं
वैसीबातनेकथोराभीकहो कितुसैंहमकभीनछोडें
गे संचारीबहुतठौरहै सबनहीं लिष्यो नायकनाय
काआलंबन अरुएकांत उद्दीपनभीजानिए ५३॥ ॥

मू॰ अथवीररसवर्ननं रामचंद्रिका छप्पै ॥ जिहिसरमधुमदमर्दिमहामुरमर्दनकी नौं ॥ मास्योकर्कसनर्कसंषहनिसंषसुली नौं ॥ निःकंटकसुरकटककस्यौ कैटभवपुषं ड्यौ ॥ षरदूषनत्रिसिराकबंधतरुषंडविहं ड्यौ ॥ बलकुंभकरनजिनिसंह रउपलनप्र तिज्ञातैंटरेउ ॥ तिहिंबानप्रानदसकंठकेकं ठदसोषंडितकरेउ ५४॥

॥ टी॰ वीररसउ क्तिरघुनाथकी कैजिहिंसरतैं मधुकोंमदमर्दनकी नौं इहांकोइकहैकी मधुकोचक्रतैंमारो सोहेमको समैंसरनामजलको तहांअस्थाननिकसो तोइहां अ

स्यान हीं कहो चाही यातें अत्रमें प्रयोजन जानिये अ
रुमुरको भी मारयो कर्कस कहिए कठोर जो नरका
सुर ताको भी मारयो संषासुरको मारिकें संषलीनों
अरु सुरको कटक निःकंटक कीनौं षरदूषन त्रिसिरा
कबंध औ कुंभकरन ताही बानतें दसकंठके कंठ
षंडन करैंगे इहाँ रावन विभाव राम वचन अनु
भाव गर्व संचारी उत्साह थाई यातें वीररस है सो
भूत मधु आदि नरकासुर भविस्य सहित उच्चारनतें
रौद्रकें संग है यातें रसवत ५४॥ ॥**मू० अथ रौ**
द्ररस छप्पै करि आदित्य अदृष्ट नष्ट ज
म करौं अष्ट वसु॥ रुद्रनि बोरि समुद्र करौं
गंधर्व सर्व पसु॥ बलित अबेर कुबेर ब
लिहि गहि देउँ इंद्र अब॥ विद्याधरनि अ
विद्य करौं बिन सिद्धि सिद्ध सब॥ लै करौं अ
दिति की दासि दिति अनिल अनल मिलि
जाहि जब॥ सुनि सूल सूर जउ गतहीं करौं
असुर संसार सब ५५॥ ॥ टी० रौद्ररस ॥ उ
क्ति रघुनाथको विरहमें आदित्य सूर्ज अदृष्ट करौं
कैं जम नष्ट करौं अरु आठवसु भी अरु रुद्र जलमें
बोरौं गंधर्वनको पसु समान मारौं बलित कहिए
बल नाम सैन्या किंवा बल अबेर संभार सहित कुबे
रकौं अरु इंद्रकी सेनाको देहुं किंवा इंद्रकों अरु

विद्याधरजेहैंतिनको अविद्यमानकरो अरुविनासि
द्दूता सबसिद्धकरिडारो अरुअदितीकीदासी दि
तिकौंकरो पवन अग्निजलमैं मिलावो हेसर्ज्जे सु
ग्रीवतूं सुनिसर्ज्जे उदैहोतहीं सबकों असुरसुर र
हितकरोसंसारकौं इहाँरावनविभाववचनअनु
भाव उग्रतासंचारी कोपथाईयातैं रौद्ररस सो
जानकीकेवियोगमैं भयोयातैं सिंगारकोअंगहै
रौद्ररसयातैंरसवत ५५॥ ॥मू० अथकरुनार
स॥ सवैया दूरितैंदुंदुभीदीहसुनीनगुनी
जनपुंजकोगुंजनगाढो॥ तोरनतोरनतू
रबजैंबरमावतभाटनगावतढाढी ॥वि
प्रनमंगलमंत्रपढैअरुदेषैंनवारवधूठि
गठाढी॥ केसवतातकेगातउतारतिआ
रतिआरतिमातहिबाढी ५६॥ ॥टी० ॥
करुणरस.उक्तिभरतकीमाता ग्रहतैंआए तासमय
दुंदुभी नगारानाहींबजत अरु गुनीभीनाहींगाव
त गुंजनअवाज तोरनबंदनवारभीनाहीं वारव
धूवेस्यायेसबनाहीहैं काहेपितादसरथकेप्रान
त्यागेतैं सबआरतहैं दुषीहैं तामैं हमारीमाताआ
रतीकरतहैं इहाँदुषीदेषनोविभाव रुदनअनुभा
व मोहसंचारी सोकथाई यातैंकरुनातामैं कोप
कोउदयपहरसवत ५६॥ ॥मू० अथभयान

करस सवैया रामकीवामजुल्याए चु
रायसुलकमैमीचकीवेलवईजू॥ कौं
रनजीतहुगेतिनसौंजिनकीधनुरेषन
नाघीगईजू॥ बीसविसेवलवंतहुतेई
हुतीद्दगकेसवरूपरईजू॥ तोरिसरास
नसंकरकोपियसीयस्वयंवरकौंनल
ईजू ५७॥ ॥टी० अथभयानकरस॥ उक्ति मं
दोदरीकीरावनप्रतिकैरामकीवामचुरायल्यायो॥ सु
लंकामैं मीचकहिए मृत्युताकी वेलिबोई कौंक
रिकैरनजीतोगेतिनसौं जिनकीधनुषकीरेषानहीं
नांघीगई अर्थलछिमनजी जोधनुषरेषा करिगए
ते बीसविस्वा तुमबलवंतहुतेई सीतातुम्हारे हु
गनि गोदजैसोरहै लगीथी संकरको धनुतोरिकै
हेपिय जबजानकीको स्वयंवरभयो तब काहेन
लई दृहारामबलसुनिबो विभाव वचनअनुभा
व दीनतासंचारी भयथाई यातैंभयानक नाहीं है
[illegible] अनुचितभावकहैं पतिनिंदा यातैं रसवत ५७
॥ मू० पुनः कवित्त बालिबलीनब [illegible] प
रहे रिसु क्यौं बचिहौ तुमकौंनिजपौरहि
॥केसवक्षीरसमुद्रमथ्योकहिकैसेनबा
धिहै सागरथोरहि॥ श्रीरघुनाथगनो अ
समर्थनदेषिविनारथहाथियिहिथोरहि॥

तोस्यौसरासनसंकरकोजिहिंसोचकह्यो तुवलंकनतोरहि ५८॥ ॥टी० पुनः मंदोदरीकोउक्ति पूर्वे वालिने सुग्रीवकीइस्त्री छोरी ताकोमारो अरुतुमतो तिनहीकीनारिचोरीहै तो तुमकोअवस्यमारिहैंवालिमेव्यंग तुमतैंबलीरहे इहाँ पतिनिंदा अनुचितभावाभासको अंगभयानक यातैं रसवत अलंकार ५८॥ ॥मू० वीभत्सरस आसीविषसिंधुविषपावकसो नातोकछुतोप्रहलादसौंपिताकोप्रेम घट्योहै॥ द्रौपदीकीदेहमैंसुथीहीषलुदुस्सासनपरोदेषिसानोषैंचिबसननछूट्योहै॥ पेटमैंपरिछितकोपेठकेबचाईमीचजव सबहीकोबलविधिबानलूट्योहै॥ केसवअनाथनकोनाथजोनरघुनाथहाथीकहाहाथकेहथ्यारलागछूट्योहै ५९॥ ॥टी० अथवीभत्सरस जोअनाथकोनाथरघुनाथ नाहीहैं तोदेषो प्रहलादके पितानेआसीविषसौं कटायो आसीविषनामसर्प प्रमान आसीविषोविषधरःचक्रिन्व्यालःसरीसृपः इत्यमरः सिंधुविषहालाहलदियो अग्निमैंजास्यो तासौंकछू नातोरह्योजोइनबचाए काहेजहाँपिताउत्तमरक्षक तानेप्रेमघट्योअर्येपानकसो अरुद्रौपदीकेदेहमैं सुथीही नामश्यातीराषीथी दुः

स्वासनजो लेतलेतषिसानौं परंतुवसननजाने कित नौंहै परीछतकेहेतुपेटमैं पैठकेमृत्यु बचाई जब अश्वथामानें विधिब्रह्मास्त्रछोडोअरु हाथीका हूकेहाथसोनाहींमस्यो इत्यादितैं रघुनाथहीअना थकेनाथहैं इहांपेटमैं पैठसोई विभाव अरुकंप अनुभाव असुयासंचारी ग्लानथाईतैं विभत्ससो देवरतिभाव धुनिकोअंगहै यातैंरसवत यहकवि त्तभूलिकेकाहूअपन्हुतिमैंलिषिदयो किंवाद्रौपदी कोचीरक्यौंकरिबढो यहअदभुततासेकाहूनेअद भुतरसमैंभी याकवित्तलिषोहै ५९॥ ॥ **मू॰ अथ अदभुतरस॥सिगरेनरनायकअसुरवि नायकरच्छपती हियहारगए॥ काहूनउ ठायोअरुनचढायोटरोनटारोभीतभये॥ इनिराजकुमारनिअतिसुकुमारनिलेआए हौपेजकरे॥त्रितभंगहमारोभयोतुम्हारोरि षितपतेजनजानपरे ६०॥** ॥टी॰ अथअद भुतरस जनकवचनविस्वामित्रप्रति कैनरनायक राजा अरुअसुरविनायकबानासुर राक्षसपतिरा वननउठायो नचढायोटारोभीनाहीं डरगये अरु आपइनराजकुमारनिकोजोलेकरआएहौ सोइन तोरिसकिहैं यातैंहमारोव्रततो भंगभयो परतुम्हा रे तपकोतेज नहींजानिपरतयातैंतोरिहैं तोइहां

अनहोनीबातजो रामतोरिहैं यहीविभाव नृपवच
नअनुभाव अरुवचनतेंसंकाभोहै सोईसंचारी॥
अरुजोधनु काहूसोंनटूटो नाकोतोरिहैं यहआचर
जहै सोईथाई यातेंअद्भुतरस सोवात्सल्यकोरसया
तेंरसवत अरुकोईयाकोवीभत्सरसभी कहतहैं
कैबालकदेषि जनकजीको ग्लानिभई कियेधनुष
कैसेउठावहिंगे ६०॥ ॥मू॰ पुनः क॰ केसोदा
सवेदविधिसाथहीबनाईव्याधिसव
रीकौंकौनेसुचिसंहितापढाईहै॥ वेष
धारीहरिवेषदेष्योहैअसेषजगतारिवे
कौंकौनेंसिषनारकसिषाईहै॥ वारानसी
वारूनकस्यौहैबहुबसबासगनिकाकवै
धौंमनिकनिकाअन्हाईहै॥ पतितनपा
वनकरतजोननंदपूतपूतनाकबैधौंप्रति
देवताकहाईहै ६१॥ ॥टी॰ ईस्वरनेअद्भु
तवेदकेसाथ विधिबनाईमोक्षकी कैजपदानआ
दिकतेंमोक्ष अरुकुकर्मतें नरक सोव्याधअरु स
बरीकों संहिताकिहिंसिषाई अरुभांडननेंभेष ब
नायोईस्वरको दासनकौं द्रव्यकेहेतु किंवा कोई
राजानेभेषधरो ताकोकाजेआपुकीनों किंवाएक
राजपुत्रीनेकहीकी हमचतुर्भुजकौंवरौंगी तानि
मित्तबढईने कालबूतबनाय कन्याकोभुराय वि

वाहकीनों तानिमित्तआपुविस्नुआए सोअसेषज
गतनेदेषे अरुतारका राक्षसीकोकौंनने तारकमं
त्रपढायो तारिकाकोकोनैं सिषतारकसिषाई
ऐसोभीपाठहै वारनहाथीनैंवारानसीकासीवास
कस्योरहोकब अरुवेस्याकबमनिकर्निकाअन्हा
ई अरुपूतनाकबकबपतिव्रताकहाई पतिति
नकोनंदनदनपावन करतइहाँभीअद्भुतता दि
षाईयातैंअद्भुतरस सोदेवरतिभावध्वनिको अं
गहै इहाँनटस्थदेषनवालाकों वेषधारीकोंरस
भयो ६१॥ ॥**मू॰ अथहाँस्यरससवैया ॥**
॥ ॥**बैठतिहैतिनमैंहठिकैजिनकोतुमसौं**
मतिप्रेमपगीहै॥जानतहौंनलराजदमै
तीकोदूतकथारसरंगरंगीहै॥पूजैगी
साधसबैसुषकीतनभागकीकेसवजोति
जगीहै॥भेदकीबातसुनैंतैंकछुवहमास
कतैंमुसुक्यानलगीहै ६२॥ ॥टी॰ अथहाँ
स्यरस उक्तिदूतीकीनायकप्रति वातिनमैं हठक
रिकैबैठतिहै जिनकीमतितुम्हारेसौंपगी हौंजान
ति राजानलदमयंतीको अरुविवाहमैं दूतनैं अनु
रागउपजायो सोतुम्हारेमनकी साधपूरैगी भागकी
जोतिजागीहै अरुभेदकीबातसुनिकरके वहमास
कतैं मुसुकातिहै इहाँमुसुकानतैंहाँस्य ६२॥ ॥

मू० अथसांतरस स० देइगोजीवनवृत्ति वहैप्रभुहैसबरेजगकोतिनदैये॥ आवत ज्यौंअनउद्दिमतैंसुषत्यौंदुषपूरवकेक्रम पैये॥राजश्रीरंकसुराजकरौअबकाहेकौं केसवकाहूडरैये॥मारनहारउबारनहार सुतौसबकेसिरऊपरहैये ६३॥ ॥टी० सांतरस उक्तिकविकी केहेमनदेइगोजीवनवृत्तिवही जोप्रभुहैसिगरेसंसारको अरुसंसारकौंदेतहै आवतहै विनउद्यमसुषदुष सोपूर्वजन्मकेकर्मनको यातैंराजाअरुरंकधरेरहौ अवकाहेकौंकाहूकौंड रातहौ मारनहारअरुउबारनहारसबकेसिरपर हैये काहूकौंकाहेकौंडरात इहाँजोसाँतरसहैसो देवरतिभावध्वनिको अंगहै गतितैंनिर्वेद यातैं साँतरस सोरसवतअलंकार काहेकैसांतकेविभाव सिद्धनकीमंडली तपोवनअसमसानसो यामैं एकोनाहीं अनुभावसबमैं समतासोभीनाहीं निर्वेदसंसारको सुषदुष माननोसोभीनाहीं केवल संचारीसाँरसहै धीरजहर्षतातैंअंगहै ६३॥ ॥मू०

अथअर्थांतरन्यास ल० दोहा औरजानिए अर्थजहैंऔरैवस्तुबषान॥ अर्थांतरकोन्यासयहचारिप्रकारसुजानि ६४॥ ॥टी० अर्थांतरन्यास जहाँऔरअर्थकोकथन करिये

ताकीपुष्टतानिमित्त औरअर्थकहिएसो अर्थांतर न्यासचारिप्रकारको ८४॥ ॥मू० यथा स० भोरहूंभौंहचढायचितैडरपाइएकैमनकेहूंकरैरो॥ताकोतौकेसवकोरहिएदुषहोतमहासुकहोइतहेरो॥केसोहैतेरोहियोहरिमैंरहिछोरैनहींतनछूटतमेरो॥ बूंदकदूधकोमास्योहैबांधिसुजानतमाईहौजायोनतेरो ८५॥ ॥टी० उक्तिगोपीकीजसोदाप्रति भोरप्रातसमयतैं भौंहभृकुटीचढाय अरूडरपायके देषतिहो मनकौंकोईरीतिसौं करैरो कहियेकठोर करिकैंतौताकौं दुषहोतहै कोरबहुतहियेमें जोतूंअतितरे रतिआंषदिषावतिहो केसोहियछातीतेरीकठोरहै देषितूनेऐसोबांध्योके मेरोतनछूटोजात परंतु हरिमेरोछूटोनाहींछूटत बूंदभरदूधनिमित्तबांधके मारोहैसोमैंजानतिहौं हेमाईहेसषी कितेरोजायोनहीं यातैंप्रीतिहरिपैनहींहै यहपुष्टकरिबेकेहेतु यहकहीतेरोजायोनहीं ८५॥ ॥ मूल० अथ अर्थांतरन्यासकेभेद दो० जुक्तअजुक्तवषानिएऔरिअजुक्ताजुक्त॥केसवदासविचारिएचौथोजुक्ताजुक्त ८६॥ ॥टी० अर्थांतरन्यासके ॥ चारिभेदकहतहैं एकजुक्त१ दूसरोअजुक्त२ ती

सरोत्र्ययुक्तायुक्त ३ चौथोजुक्तायुक्त ४ पद्मावीन
ग्रंथमैंतैं केसवलिषि नवीनमैंनाहीं ६६॥ ॥

**मू० अथजुक्तलक्षन दो० जैसोजहांजुवृ
झियेतैसोतहांसुआनि॥ रूपसीलगुनजु
क्तिबलपैसोजुक्तबषान ६७॥** ॥टी० जु
क्तलक्षन जैसोरूपसीलगुन जहाँकेवलजुक्तितैं
जानोजाय सोजुक्ताजुक्त ६७॥ ॥**मू० क० गरु
वोगुरूको दोषदुषितकलंककरिभूषि
तनिसाचरीन अंकनिभरतहै॥ चंडकर
मंडलतैंलेखैनोप्रचंडकर केसोदासप्रतिमा
समासनिसरतहै॥ बिषधरबंधुहैअना
थनिकोप्रतिबंधुविषकोविसषबंधुहि
योहहरतुहै॥ कमलनयनकोसौंकमलन
यनमेरेचंदमुषीचंद्रमातैंन्यायहीजरत
है ६८॥** ॥टी० प्रोषितपतिकाकीउक्तिसषीप्र
ति कैकमलनयन कृष्णतिनकी सपथहै हमारे
द्रिग कमलचंद्रमासेजरतहै सो न्यायनोतिहै ना
में यहजुक्तिहै कैचंदमें अयगुनबहुतहै गरुजो
गुरुकेदोष तासोंदुषितहै अर्थ गुरूपत्नीकेसाथ
गमनकरो ताकलंककरिभूषितहै अरु निसिरात्री
मैंजोचलैसो निसाचरी विभिचारिनी ताकेपापको
भरतहै विभिचारपापरातमैं बहुतहोत अंकनाम

दुषकौंभरतहै अपनेमें किंवाअपनेकिरनतैं राक्ष
सीनकौंपरसत चंडकर सूर्जेतिनके मंडलतैंप्रचंड
जोतेज सोचोरीकरि मासमासमैं निकसतहै ॥ अ
मावसको चंद्रमा सूर्जेएकत्र रहत अर्थ याहीतैं
विरहिनीनकौं तपावत अर्थ तेजसहै तेजलक्ष
ण दोहा तेजस्परससुउष्णहैभास्वररूपसुजान॥
भाषतहैंजेमुनिसदांसुमिरतहैंकुलभान १ त्रिधा
होतसोरामजूइकसरीरगोबीग॥ विषयसहितद्
मिजानियेहैसबगुनगंभीर २ जोसरीरतैजससुतो
कहैंअजोनिजराम॥ मारतंडकेलोकमैंरहतसुष्य
केधाम ३॥ चौपाई चखूइंद्रीतेजसलेषो अरुविप
धरविषनाम जलताकोजो धरैसो विषधरसमुद्र॥
ताको बंधुहितकारी किंवा सिवतिनकेभालमैं र
हत जुक्तयहसोई विषपसारकैं विरहीनकौंमारत
औनाथहीन वियोगिनीनकों प्रतिबंधु दुषदाता
अरुविषकोतोभाईहै यातैंहियेकौं हहरावत इ
त्यादि जुक्तजोलीजेतो चंद्रमाकोगुन जुक्ततैंजाहि
रहोत किंवाअपनेमुषसम नाहींमानत मेरेमुष
मैं ऐसेदोषनाहीं यातैं अपनेमुषकी बडाई अरु
कोईयाकवित्वकों भीलपरलगावत जगतगुरुत्रा
सनकौंलूटत यह गुरुदोष अकलंकपापसौंभरो
भीलनीनिसाचरी चंडप्रचंड अत्रकरमें राषत बा

रहमासनिकरत किंवाअनेकजीवकेमास विपध
रसपोदिपासरहत गरीबकोमारत विषभीषोदिके
बेचत ६८॥ ॥मू० अथअयुक्तलक्षन दो०
जैसोजहाँनबूझिये तैसोतहाँजुहोय॥ के
सोदासअजुक्तकहि बरनतहैंसबकोय
६९॥ ॥टी० अजुक्तजैसोजहाँनचाहिए तैसोत
हाँवर्नेननहोय अरुआछोलागै यहअजुक्त ६९॥ ॥
मू० क० केसोदासहोतमारसीरिएसुमार
सीरीआरसीलैदेषिदेहऐसीएहैरावरी॥
अमलवतासेऐसेखलितकपोलतेरेअ
धरनमोलधरेदृगतिलचावरी॥ एहीछ
बिछकिजातछनमैंछबीलेलाललोचन
गमारछीनिलेहैइतआवरी॥ बारबारब
रजैतैंबारबारजानिकतमैलेवारवारौंआ
निवारीहैतूंबावरी ७०॥ ॥टी० दूतीकीउ
क्ति नायकाप्रति किंवानायकप्रति वहकैसीहै जो
मारकामकी श्रीसोभासदृस सोभा तासौं सुमार मू
छितहोतहै अरुनासा ऐसेकपोल अधरपान ध
रे दृगनमैं तिलचावरी स्यामसुक्लयाछबिदेषि क
बीलेछनमैं छकिजातहैं सोगंमार अपनेलोचनतैं
छीनिलेहैकोऊ वारवारवारजातैं छपजातैं बाहि
रकाहेकोजात मैलेकौ आनकौ तेरे ऊपरवारौंतूंब

रीहैवयहीनहै इहांकामकोसोभाबतासा ऐसेक
पोलद्रिग तिलचावर इत्यादिपदपंथ विरोधीहै ता
थापि अज्ञातदूतीकेवचनतें नाहींसोभाअर्थषींचने
परत किंवाजामे अंगकोबरनन ऊपरतें अभिप्रा
य यहकि तूंबाहिरमतजाव तमोरतिलचावरी लो
कोक्तिहै अरुसबमें अर्थांतरन्यासचलोजात मार
सीरीतें सुमारहोत विसेषकहि आरसीलौं सामान्य
कीनौं सोषौंचिकेकहे ७०॥ ॥मू॰ अथअजुक्ता
जुक्तल॰ दो॰ असुभैसुभव्हैजातजहँकेहू
केसवदास॥ दहैअजुक्तैजुक्तकविबरन
तबुद्धिविलास ७१॥ ॥टी॰ अजुक्तजुक्तल॰
पहिलेअजुक्तअजोगकहैं पाछेजुक्तजोगहैसो अ
जुक्ताजुक्तकहावे ७१॥ ॥मू॰ सवैया॥ पातक
हानपितासंगहारिबोगर्वकेसूलनितेंड
रिएजू॥ तालनिकोबंधिबोबधगेरकोना
थकेसाथचिताजरिएजू॥ पत्रफटेसैंकटे
रिनकेसबकेसहूंतीरथमेंमरिएजू॥ नीकी
सदालगैगारिसगेनकीडांडभलोसुगया
भरिएजू ७२॥ ॥टी॰ हानिआनिआछीनहीं
परंतुपातककीहोयसोंअच्छीहै अरुहारआछीनहीं
परंतु पिताकेसंगभेहारजानेंअच्छीहै प्रसवसमैमेग
र्भके सूलचलेहैं तासौंडरिएभलेही तालकोबांधिबो

रोसनामदारिद्रताको वधमारिवो आयुर्वेलको का
गदफटिबो आछोनहीं रिनकोकागदफाटवो आ
छोहै पापकेसंजोगतैं पापकीहानिआछी इहां
प्रथमविसेष फिरिसामान्यअयुक्तायुक्त करकेसव
कहनहैं हानिआछीनाही यहविसेषफिरपातक
कीयहसामान्य किंवाहानआछीनाही यहअजु
क्तहै अजोगहै परंतु पातककी नीकीयहजुक्त
जोग्यहै ७२॥ ॥मू॰पुनः सवैया आगेव्है
लीबोयहैजुचितैइतचौंकिउतैदृगऐं
चिलईहै॥मानिबेकोइहईप्रतिउत्तर
मानिएबातजुमौनमईहै॥रोषकीरेषव
हैरसकीरूपकाहेकोकेसवछाडिदईहै॥
नाहिइहांतुमनाहींसुनीयहनारिनईन
कीरीतिनईहै ७३॥ ॥टी॰ याकवित्तमें अ
नजाननायकके प्रति सषीकीउक्ति कैनवीनजोना
रीहैंतिनकी रीतिनईहै जोअजोग्यहै सोइनमेंजो
ग्यहै इनकेआगे होयकेलीबोयहजुचितैकेइतै
चोकनो अरुनेत्रफेरनो यहक्रियासो नायकको
लिआवनो अरुनायककोबात मानिबेको यहीप्र
तिउत्तरहै जोमोनहोयरहनो रोषनामक्रोधजताय
बेकों ऐसीजोरेषा भौंहकेबीचमें त्रिवलीकरनो सो
नहीरसकोरूपहै सोदेषके काहेकों छाडयाए॥ चौ

कब नजरषैंचब रोषकीरेषनाहींकरब अजुक्तजहाँ
विसेषफेर नईवनितामैं जुक्तकरसामान्य करोतातैं
अर्थांतरन्यासजानिये ७३॥ ॥मू॰ जुक्ताजुक्त॥
दो॰ इष्टेबातअनिष्टजहँकैसेहूं ह्वैजाय॥
सोईजुक्ताजुक्तकहिबरनतकबिसुषपा
य ७४॥ ॥टी॰ अथजुक्तअजुक्त इष्टजहाँअनि
ष्टहोय ७४॥ ॥मू॰ रसिकप्रिया कः सूलसे
फूलसुवासकुवाससीभाकसीसेभएभौन
सभागे॥केसवबागमहावनसोजुरसीच
ढीजोन्हसबैअँगदागे॥नेहलग्योउनना
हरसोनिसिनाह्यॆ?रीककहूंअनुरागे॥गा
रीसेगीतबिरीबिषुसीसिगरेईसिंगारअँ
गारसेलागे ७५॥ ॥टी॰ उक्तिनायकाकी जो
सामग्रीसुषकीदाता रहीसोईअबदुषकीव्हैगई॥
भाकसीसे दुषद किंवायामैं फूलजो इष्टरहे बिसेषतैं
प्रीतमवियोगतैं सोअनिष्टसामान्य दुषदायकदि
षाए यहअर्थांतरन्यास ७५॥ ॥मू॰ पुनः सवैया
पापकीसिद्धसदारिनवृद्धसुकीरतिआप
नीआपकहीकी॥दुष्मकोदानजुसूतक
न्हानजुदासीकीसंततिसंततफीकी॥बेटी
कोभोजनभूषनराँडकोकेसवप्रीतिसदाप
रतीकी॥जुद्धमैंलाजदयाअरिकोअरु बा

मनजातिसौंजीतिननीकी ७६॥ ॥टी॰सि
द्धइष्टहै परंतु पापकोहोयसोअनिष्ट दानभलोहै
परंतु ग्रहसांतिको भलोनहीं किंवासिद्धविसेषमें
पापकीसामानकरी तातैंअर्थांतरन्यास असिद्ध
जेहैंजुक्त ताकौंअजुक्तकरी ७६॥ ॥मू॰ व्यतिरे
क दो॰ तामेंआनेभेदकछुहोयजुवस्तुस
मान॥ सोव्यतिरेकसुभांतिद्वैजुक्तिसहज
परिमान ७७॥ ॥टी॰ व्यतिरेक जोवस्तुबरोब
रहोय तामैंकछुभेदआवै सोदोयरीतिको एकको
नामजुक्तव्यतिरेक दूसरोव्यतिरेक सहजहै ७७॥ ॥
मू॰ जुक्तव्यतिरेक क॰ सुंदरसुपदअतिअ
मलसकलविधिसदलसफलबहुसरस
सँगीतसौं॥ विविधसुबासजुतकेसोदास
आसपासराजेद्विजराजतनपरमपुनीतसौं
॥फूलेईरहतदोऊदीवहीको प्रतिपलदेत
कामनानिसमभीतहूअभीतसौं॥ लोचनव
चनगतिविनइतनोईभेद इंद्रतरुवरअरु
इंद्रइंद्रजीतसौं ७८॥ ॥टी॰ जुक्तव्यतिरेक इं
द्रतरुवरअरुइंद्रजीतमें इतनोभेदहै लोचनको इं
द्रकेहजार यातैंउपमानकोअधिकाई अरु इंद्रतरु
वरकेनहीं इंद्रजीत उपमेयताकेउत्तमहैं यहीरीति
इंद्रदेवभासाबोलत इंद्रतरुवरनहीं बोलतहै इं

इंद्रजीत बोलत हैं इंद्रभूमिपै नाहीं चलत इंद्रतरु चल तहीं नाहीं इंद्रजीतकी गति सुषद है दोउ पमान एक उपमेय तामैं एकतैं न्यून एकतैं अधिक आनपद सबमैं बराबर तथापि भिन्न भिन्न करतीन अर्थ लिषे है इंद्रपक्ष सुंदर जो है कामताकों सुषके दाता अरु अति अमल जो सकलचंद्रमा विधिब्रह्मा सहित सदलदलसहित फलभालसर कहिए बानजुक्त सहित गीतसों भरी है जिनकी सभा अर्थवेदध्वनि नानाप्रकारके वासकहिए वस्त्र दुजराज वृहस्पति फूले पूरी रहत दोईमैं उपमान उपमेय इहां समभीजत्तायो कामना देत हैं मीत अमीतको यह सम है तरुपक्ष तरु केसो है सुंदर है सुषदाता है अमल है सकलविधितैं दल पत्र फलरससहित है उत्तम जिनको है गीत नानाप्रकारके सुगंध दुजराजपक्षी तनसुनीत फूलसहित आनपद एक इंद्रजीतपक्ष सर्वे दातानमैं सुंदर है सुषी हैं अरु जसतैं अमल हैं वेदविधिजाननहार हैं दलकहिए सेनाताके सहित हैं सो सेना केसी है फलदेनहारी है संगीतसास्त्रमैं निपुन हैं नानाप्रकारके आन दुजराज ब्राह्मन फूलेरहत हैं जिनके देई जिनके कर किंवादानको अरु प्रजाप्रतिपालनकौं देत सबकौं यहमैं बहुतपदके सबने चमत्कारी कियेयातैं अर्थभी कछुक लिषे हैं ७८॥ ॥ मू० सहजव्यतिरेक स

वैया॥ गायबराबरिधामसबैधनजातिबरा बरिहीचलिआई॥ केसवकंसदिमानपिता निबराबरिहोपहिराबनिपाई॥ वैसबराब रिदीपतिदेहबराबरिहीविधिबुद्धिबडाई ॥ एअलिआजुहोहौहुंगोकैसैंबडीतुमआ षिनहीकोबडाई ७९॥ ॥टी० सहजव्यति रेक सषीकीउक्तिनायकासोंतुममें अरुश्रीकृष्णमे स बवातनकीबराबरिहै एकतिहारेनेत्रमात्रबडेहैं॥ यातेंतुमगर्वमतिकरो गायतुम्हारी अरुउनकीब राबरिहै अरुधामकहिए घरसोभीबराबरिहै धन संपतिसोभीबराबरिहै औजातिभीबराबरिआगेतें चलिआईहै कंसकोदिमानकहियेसभा तामेंवृष भानअरुनंददोइबराबरि पहिरावनपाई अर्थ सि रोपावादि वैसबराबरिहै तुम्हारी औश्रीकृष्णकी अरुदीप्ति सरीरभीबराबरिहै विधिक्रिया विवाह आदिमें बराबरकियो अरु बुद्धिऔवडाईदोईब राबरिहै इहांश्लेषादिवारेजेपदहैं तेनहीँकहे या तेंसहजव्यतिरेक ७९॥ ॥मू० अथअपन्हु ति दोहा मनकीवस्तुदुरायमुषऔरैक हियेबात॥ कहतअपन्हुतिसकलकवि यासौंबुधिअवदात ८०॥ ॥टी० अथ अप न्हुति मनकीवस्तुदुराइए अरुमुषतें आनकहिये

८०॥ ॥मू० क० सुंदरललितगतिवलितसुवासअतिसरससुवृत्तिमतिमेरेमनमानीहै॥ अमलअदूषितसुभूषननिभूषितसुवरनहरनमनसुरसुषदानीहै॥ अंगअंगगूढभावकेप्रभावजानेकोसुभावहीकोभावरूपपन्चिपहिचानीहै॥ केसोदासदेवीकोऊदेषीतुमनाहींराजप्रगटप्रवीनरायजूकीयहबानीहै ८१॥ ॥टी० कोईपुरुषअनसषीप्रति काहूइस्त्रीकी तारीफकरतरहो ताही समयताकीइस्त्रीआई अरुबूझी केतुमकोई देवीदेषीहै तबतानें रूपाइबेनिमित्तकही जैसेघरमेकोई रामकृष्णादिककोनामलेत कोईपिताको तैसहीराजाको केहमप्रवीनरायकी बानीकी बातोंकरतहैं अतिसुंदरहै अरुललिततेंजाकीगति वलितजाकेहैंवासवस्त्र किंवायहवलिको अर्थजुक्त सरसरसजलसहित किंबावासतें उत्तिम अरु सुंदरवृत्तिजाकी मतिभीमेरेमनमें जाकोमानीहै अमलहैअवैनिज पुरुषकेधामनाहींगई अदूषितपरपुरुषऔरभी नाहीं देषत अरुभूषनभीबहुतपहिरेहैं सुंदरबरनगोरीहै देवतनकेमनकोभीहरनहार सुषदाता अंगअंगमें गूढहावभावहैजाके अरुसुभाव वहभावरूपहीहैपर वीनरायकी बानीकेसी

है बहुतसुंदरजो ललितरागताहीकोहै उच्चार चक्र
तताकीचाललय अरुगानसमसुगंधप्रगटतसरस
शृंगाररससहित सुंदरहैवृत्तिवरनमात्राछंद मेरे
मनमेमानी अमलसुच्छजामैं कोईदूषन रागके
किंवाकाव्यकेनाहीं भूषनअलंकारतेंभूषितहैं सुंद
रबरनअच्छिरहरनचित्रके भीभेदहैं मननकपरजा
दिकहैं जामैंसुर किवासुंदरवरनहरनजो मृगतिन
के मनकोसुरजाको हरिलेत सुषदेकैं सर्वअंगतेंजे
हावहैं अरुभावहैं तिनकेप्रभावकी जाननिहारीहैं
पहिचानीहैं ८१॥ ॥मू० पुनः क० कारेसट
कारेकेसलोनीकछुहोनिवेससोंनेतेंस
लोनीदुतिदेषियततनकी॥ आछेआछेलो
चनचितौनऔचलनआछौसुषमुपकवि
ताविमोहैमतिमनकी॥ केसोदासकेहूंभा
गपाइएजोबागगहिसासनिउसासैंसाध
पूजैरतिरनकी॥ वेदीकाहूगोपकीविलोकी
प्यारेनंदलालनाहींलोललोचनिवडवाब
डेपनकी ८२ इतिश्रीद्विविधभूषनभूषि
तायांकविप्रियायांविशिष्टाअलंकारवरन
नंनामएकादशमःप्रभावः ११॥ ॥टी० पहि
लेनायकनेप्रशंसा करीसोकाहूनैं सुनिलीनौं तव
नायकछपावेहै अपन्हुति कहिये छपावनेको का

रेकारेकेसघोडीके ओसोने तें सलोनीदुतितोरंगए कनाहींमिलत अरुअस्ववर्नेनमैंतरलततार्इते ज गतिमुषसुषलघु दिनदेसभेसकहोहे कविताक रनवारे अस्वपसु कैसेनेत्रनाहींकहे किंवा ऐसोअ र्थ हेप्यारेनंदलाल तुमकाहूगोपकी बेटीविलोकी है बडेघनकी बहुतारीफ माफितयहअर्थ पनक हिएस्तुतिकों नायककहतहे हेलोललोचनि चंच लनैनी बाडवाघोडी बडेमोलकीदेषीहै अवदोअ र्थकोजतहे गोपसुतापक्ष कारेवोसटकारेहैं॥ केसस टकारेहैं सटकारेनाम ऊपरमोटे अरुनीचेपतरे लो नीं सुंदरहोनी उठानकीवेस अरु सोनेंतेंदुतिसुंद रजाके तनकीहे अरुअच्छेहैं नेत्र औचितोनभी आछेहैं मनमतकीमोहनवारीहे सुषमुषकी क विता कोईभाग्यसोंजो वागमैंगहिपाइए तोवाके जे सुगंधस्वाँसहैं ताकेचलैं रतिरूपीरनकीसाधपू जे बाडवापक्ष सोनेतैंसलोनोचंपेरंगकीहे औपा छिलोअर्थ मुषकीबहुत साफलगामकडीनाहींचाह तहै अरुबागगहिपाइएतो रनकीसाधपूरीकरत ८२॥ ॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजकाशिराजश्रीमदीस्व रीप्रसादनारायणसाज्ञाभिगामीललितपुरनिवासीहरिजन कवीस्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीस्वरेणविरचितायां कासिराजप्रकासिकायां कविप्रियायांटीकायां विशि

ष्टाअलंकारवर्ननेननामएकादशमःप्रभावः ११॥ ॥

मू॰ अथजुक्तिअलंकार दोहा बुद्धिविवेकअनेकबलउपजततर्कअपार॥तासोंकविकुलजुक्तिकहि बरनतअमितप्रकार॥१॥ ॥टी॰ जुक्तिबुद्धिके विवेकतैं अरुविचारतैं बहुततर्क उपजोसो जुक्तिअलंकारकहावे॥॥१॥ ॥मू॰ अथजुक्तिभेदकथन दोहा वक्रअन्यव्यधिकरनकहिऔरविसेषसमान॥सहितसहोकतिमैकहीउक्तिसुपंचप्रमान॥२॥ ॥टी॰ जुक्तिभेद वक्रोक्ति१ अन्योक्ति२ व्यधिकरणोक्ति ३ विशेषोक्ति४ सहोक्तिएपाँचप्रकारकेभेदहैं॥२॥ ॥मू॰ वक्रोक्तिलक्षन॥दोहा॥केसवसूधीबातमेंबरनतटेढोभाव॥वक्रोकतितासौंकहतसदाँसबैकविराय॥३॥ ॥टी॰ वक्रोक्तिलक्षण जहाँसीधीबातमैं टेढोभाववरनै सोवक्रोक्तिअलंकार॥॥३॥ ॥मू॰ रसिकप्रिया सवैया ज्यौंज्यौंहुलाससौंकेसवदासविलासनिवासहियेअबरेष्यो॥सौंसौंवढ्योउरकंपकछूभ्रमभीतभयोकिधौंसीतविसेष्यो॥मुद्रितहोतसषीवरहीमरैनैनसरोजनिसाँच कैलेष्यो॥तैंजुकह्योमुषमोहनकोअरविंदसोहैसो

तोचंद्सोदेष्यो॥ ४॥ ॥टी० उक्तिपंडितार्को सषीसौं ज्यौं ज्यौं अनंदतैं विलासको निवासहिए मैं अवरेष्यो अर्थलक्षितकियो सौंत्यौं हमारेउरमैं कंपबढो सोनाहींजानतभ्रमतैं किडरोहै कैयाहो मुषकोविसेषसीतव्याप्यो मुद्रितहोतहैहेसषी व रकहिएश्रेष्ठहियजातैं अरुमेरेजो नैनसरोजहैं तिननैं सचोलेषोहै ते मोहनकोमुषकमलवत कहोसोमेनैं चंद्रमासो प्रकासकारीदेष्यो यहसीष कहनावत् कलंकीहैं यहवक्रजानिए॥ ४॥ ॥

मू० अथअन्योक्ति दोहा औरहिप्रतिशु बषानिएकछूऔरकीबात॥ अन्यउक्ति यहकहतहैंबरनतकविनअघात॥ ५॥

टी० अथअन्योक्ति औरकीबातकहिएसोअन्योक्ति कहावे॥ ५॥ ॥ मू० क० दलदेषौनहींजड जाडोबडोअरुघामघनोजलक्यौंहरिहै॥ कहिकेसबवावबहैदिनदावदहैधरभी रजक्यौंधरिहै॥ फलहैफुलनाहींकितालौं तुहींकहिसोपहिभूषसहीपरिहै॥कछुछां हनहींसुषसोभानहींरहिकोरकरीलकेह करिहै ६॥ ॥टी० कोईदरिद्रीराजाको सेवनक रतहै ताकोसुनायकै बकसुकप्रतिकहतहै कै हे सुकतूंकरीलपै कहाबैठोहै दलजोपत्रहैसो यामैं

नाहींहै तोसीतउस्नजलको कैसेसहिहै ताहीपरवा
तपवनचलतहै अरुयावननमेंअग्निभीउठतहैं
तबतेरोसरीरधीरकैसेधरैगो अरुजबलौं यहफूल
हीनफलहै तबलौंतूं भूषकैसेसहैगो छायासोना
हीईमेंएकोनाहींहै तोकहुहेकीरतूंकरीलपर काकू
रैगो यहवृत्तांतराजाको सुनावत ६॥ ॥मू० पुनः

सवैया अंगअलीधरियेअँगियाउनआ
जतैंनींदोनआउनदीजै॥जानतहौंजिय
नातैंसषीनकेलाजहूतोअबसाधनलीजै
॥थोरहिद्यौसतैंषेलनतेऊलगींउनसौंजि
न्हेंदेषतजीजै॥नाहकेनेहकेमामिलेंआ
पनीछांहहूंकोपरतीतनकीजै ७॥ ॥टी०

कोईनायकावहिनापन काहूनायकातेंजोरी॥ता
नायकाकेनायकसों तासोंप्रीतिहै सोजानसखीस
सुनावतिहै किंवाअनसंभोगित दुषिताअपराधि
निसषीकों सुनायआनप्रतिकहतिहै हेसषी अंग
मेंअँगिया नहींराषी अरुनिद्राभीनाहीं आवनदेत
औरसषीकेनातैं लाजकोभीसाधनहीं कीजिये का
हेएपूर्वोक्तजोसषीहैं सोथोरेदिनतैं हमारेजीवपर
षेलनलगींहैं जिन्हेंदेषिहमजीवतरहीं यातैंनाह
केनेहकेमामिलेमें आपनीछायाकीभी प्रतीतिनचा
हिये इहांआनसोंकहिसषीकोंसुनायो ७॥ ॥मू०

[illegible] औरहिमैंकीजेप्रगटऔ
रहिकोगुनदोष॥ उक्तियहैविधिकरनकी
सुनतहोतसंतोष ८॥ ॥टी० जहाँऔरऔर
को गुनदोषप्रगटकीजिये ८॥ ॥मू० क० जानु
कटिनाभिकूलकंठपीठभुजमूलउरजक
रजरेषरेषीबहुभाँतिहै॥ दलितकपोल
रदललितअधररुचिरसनारसनरसरस
मेंरिसातिहै॥ लेटिलेटिलोटपोटलपटाति
बीचबीचहाहाहूहूनेतिनेतिबानीहोति
जातिहै॥ आलिंगनअंगअंगपीडियतप
द्मिनीकेसोतिनकेअंगअंगपीडतिपिराति
है ९॥ ॥टी० उक्तिसषीकीसषीप्रतिकेपद्मि
निकेअंगअंग आलिंगनसमयमैं नायकपीडादे
तहै परंतुसपत्नीतिनके अंगपिरात अर्थपदसेले
करकामसर्वांगमें नायकाकेरहत जैसेप्रतिपदको
पगमें निवासकरत इत्यादिकोकसारकोमतहै
यहजाननायकजो परमप्रवीनहैसोजंघा कटिना
भि कूलनजीक कंठ पीठ भुजमूलको स्पर्सकरत॥
अरुजोन अंगमर्दन करिबेजोग्यताको मर्दत उरज
छातीपैकरजनषकीरेषरेषी बहुतभाँतिसों चुंब
नतेंकपोलदलितकरयो दंततेंललितजो अधरता
मेंललितरुचिकरयो रसनाजिह्वाजो रसकोस्वाद

लेत ताको रसमेरिसान बसायदियो अर्थजिह्वाने असंतरसपानकलोयहसुषपायके नायकालेटलेट के अरुलोटपोटके लपटातिहै बीचबीचमेहाहा हूहू अरुनेतिनेति यहमतिकरी यहवानीहोतजा तहै पीडितपद्मिनीकीदेहपीडा सपत्नीको ९॥॥

मू० पुनः क० राजभारसाजभारलाजभारभूमिभारभवभारजयभारनीकेहौंअटतुहै॥ प्रेमभारपनभारकेसबसंपत्तिभारपतिभारजुतअतिजुद्धनिजटतुहै॥ दानभारमानभारसकलसयानभारभोगभारभागभारघटनाघटतुहै॥ एतेभारफूलनिज्यौंराजेराजारामसिरतिहिदुषसत्रुनकेसीरषफटतुहै॥ १०॥

॥टी० राजआदिकभारलो राजारामकेसिरपै अरुसत्रुनकेसीरष सिरफटत १०॥

॥**मू० सवैया॥ पूतभयोदसरत्थकोकेशवदेवनिकेघरबाजीबधाई॥ फूलिकेफूलनिकौंबरषैतरुफूलिफलैसबहीसुषदाई॥ क्षीरवहीसरितासबभूतलधीरसमीरसुगंधसुहाई॥ सर्वसलोगलुटावतदेषिकेदारिददेहदरार सीषाई॥ ११॥**

॥टी० दसरथकेतोपुत्रभयो अरुदारिद्रकीदेहमेंदरारपरी ११॥

॥**मू० विसेषोक्ति दोहा॥ विद्यमानकारनसकलकारजहोइनसिद्ध॥ सो**

ईउक्तिविसेषमयकेसवपरमप्रसिद्ध ११ ॥ टी० कारनहेतके अछितकारजनहीहोय सो विसेषोक्ति १२॥ ॥ मू० स० कर्नसेदुष्टतेपुष्ट हुतेभटपापसपुष्टनसासनटारे॥ सोदर सेनदुसासनसेसबसाथसमर्थभुजाउस कारे॥ हाथीहजारनकेवलकेसबषैंचिथ केपटकोडरडारे॥ द्रोपदीकोदुरजोधनपै तिलअंगतऊँउघस्योनउघारे १३॥ ॥ टी० द्रौपदीकेवसन हरिबेमेऐसेजोधारहे कर्नम हादुष्टसोभीरोगग्रसतनाहींपुष्टरहो अरुराजअज्ञा नटारनहार अरुदुसासन आदिभाईतैं कार्जनिमि त्तभुजाकेवस्त्र उसकारतरहे हजारहाथीकेबलवा नरहे परंतुद्रोपदीकेअंगनउघारसके कर्नआदि अं ग उघारिबेकोकारनसमर्थरहेहैं परंतुअंगउघरिबोका रजनभयो १३॥ ॥ मू० रसिकप्रिया क० सिषैहा रीसषीडरपायहारीकादंबिनीदामिनिदिषा यहारीदिसिअधिरातकी॥ कुकिकुकिहारी रतिमारिमारिहारयोमारहारीझकझोरकैंत्रि विधगतिबातकी॥ दईनिरदईदईवाहिऐ सीकाहेमतिजारतजुरैनदिनदाहऐसेगात की॥ कैसेहूनमानेहीमनायहारीकेसोदास बोलिहारीकोकिलाबोलायहारीबातकी॥

१४॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनायकप्रति सिषीमयूर
सिषदैकरहारी कादंबिनीमेघमाला दिसाजाओर
नायकहैमकरूक रूपटम्पट रतिप्रीति सोदईनेवा
कोऐसीमतिदईहै किंवादई प्रतिकेसिषदेकरसषी
डरपायकेकादंबिनी दामिनी दिसादिषायहारी अर्थ
प्रकासकरिकैं आधीरातिभीदामिनीनैंदिषाई रतिरू
पटहारी मारकाममारहारो त्रिविधगतिपवनकीप
वनकीरूकमोरिकैं अर्थविरहभीभयो कैसेहूंनाहीं
मानत हौंभीमनायहारी यहकोकिलबोलहारी चा
तिकीबुलायहारी अर्थआपुचलो एसब कारनमान
छूटनेके तथापिनछूटो १४॥ ॥मू० पुनः स० क
नेकृपाद्विजद्रोनतहांतिनकोमनकाहूपैजा
यनटास्यो॥भीमगदाहिधरेधनुअर्जुनजुद्धजु
रैजिनसोंजमहास्यो॥केसवदासपितानहु
भीषममीचकरीबसलेदिसिचास्यो॥देषत
हीतिनकेदुरजोधनद्रोपदीसामुहेहाथपसा
स्यो १५॥ ॥टी० भीष्मकृपाचार्जादि दुरजोधनको
रोकिबेकेकारनरहे परंतुकार्जनभयो औरपद्सुग
म १५॥ ॥मू० पुनः सवैया वेईहैंबानविधा
ननिधानअनेकचमूजिनजोरहईजू॥ वेई
हैंबाहुबहैधनुधीरजदीहदिसाजिनिजुद्धज
ईजू॥वेईहैंअर्जुनआपतहीजगमेंजसकोनि

निबेलिबढ़ैजू॥ देषतहीं तिनकेतबषकाबनि
नीकहिनारिछिनायलईजू १६॥ ॥टी० बेरी
बानरहैंजिनबानतैं अनेकचमूसेनाहनैमारी वही
बाँहबहीगांडीव धीरजवहीबडीबडीदिसा जिनज
यकरी बेईअर्जुनपरकावनने इस्रीछीनिलई अर्जु
नरक्षाकरिबेंको समर्थथेपररक्षानभई १६॥ ॥मू०
असहोक्ति दो० हानिवृद्धिसुभअसुभकछु
करिएगूढप्रकास॥ होयसहोक्तीसाथहींब
रनतकेसवदास १७॥ ॥टी० अथसहोक्ति॥
जहाँसंगबरनी १७॥ ॥मू० जथा क० सिसुता
सहितभईमंदगतिलोचननिगुननिसौंवलि
तललितगतिपाईहै॥ भौंहनिकीहोडाहोड
हूँगईकुटिलअतितेरीबानीमेरीरानीसुनत
सुहाईहै॥ केसोदासमुषहाँसहीसिपैहीक
टिनटिछिनछिनसूछमछबीलीछबिछाई
है॥ बारबुद्धिबालनिकेसाथहींबढीहैबीर
कुचनकेसाथहींसकुचउरआईहै १८॥ ॥
टी० सिसुतामंदभई नेत्रनकी गतिमीयहअरुताही
साथ गुनसेगतिबँधिगई भौंहभीपरसबकाईकी ई
रषातेरी बानीवचनसुहावने अरुमुषहाँसभीमंद
कटिभी घटमुषकीछबिमैं सुच्छता बारीबुद्धिकेस
नके संगहींबढी कुचके साथसंकोचकुचभीकडे अ

रूसंकोचतेंमनभीकह्यो इहाँगूढव्यंगयह हानतौ कीनाहीं सोभीमंदगतिमुसुकानमेंनीको १८॥ ॥

मू॰ व्याजस्तुतिनिंदा॥दोहा॥स्तुतिनिंदा मिसहोयजहस्तुतिमिसनिंदाजानि॥व्याज स्तुतिनिंदाइहैकेसवदासवषानि १९॥ ॥

टी॰ व्याजस्तुतिनिंदा निंदातेंअस्तुतिकढै औअस्तुतितेनिंदा १९॥ ॥मू॰ स्तुतिकेव्याजकरिनिंदा

क॰ सीतलहूहीतलतुम्हारेनवसतिवहतु मनतजततिलताकोउरतापगेहु॥अपनो ज्यौंहीरासोपराएहाथव्रजनाथदैकैतोअ काथअबमैंनऐसोमनलेहु॥एतेपैकेसोदा सतुम्हैनप्रवाहवाहिवहैजकलागीभागीभू षसुषभूल्योदेहु॥माओमुषछाड्योछनछु लनिछबीलेलालऐसीतोगमारनिसौंतुमहूँ निबाहोनेहु २०॥ ॥टी॰ ऐसीगमारिग्रामीनन सौं हेछबीलेलाल तुमछबीलेवेगमार तिनसौंतुम नेहनिबाहो इहाँगमारपदतें निंदा अन्यपदतेंस्तु ति तिहारोहृदयसीतलतामें तिलभरनाहींबसतअ रुतुमताकेउरतततिलभरभीनाहींतजत इहाँना काविनतिहारोहृदयसीतलरहतयहनिंदानिकसी वाकोउरतुमबिनजरतयहताकीस्तुति हेव्रजनाथ आपने अपनेजोमनहीराहै ताकोआनकोदैकै वा

कोमेनसोमनलेतुहौ तूहौंतिहारोमनबडेमोलको
हौंरासरीरकोपरकठोर यहनिंदावाको मनमोम म
नोरथथोरेमोलकोपरकोमल यहस्तुति इतनेदेप
रतुम्हेवाकीपरवाहनाही यहनिंदा अरुवाकोतिह
रीवेहीजकजो पूर्वानुरागविषैंरहीयहस्तुति माडो
वाकोमुषतुमकेसरितैं वानैंछलनछाडो भाजिगई
किंवातुमतौभीछाडिगए छलकियो इत्यादिजानलो
जो २०॥ ॥मू॰ व्याजनिंदास्तुति कवित्त॥

केसरिकपूरकंजकेतकीगुलाबलालसूँष
तनचंपकचमेलीचारुतोरीहै॥जिनकीतूँपा
सवानबूझिएतेआसपासठाढीकेसोदास
कोनीभयभ्रमभोरीहै॥तेरेकोनौंकृतकि
धौंसहजसुवासहीतैंबसिगईहरिचितकेहूँ
चोराचोरीहै॥सुनहिअचेतआई इहहेतु
नाहींतरुतोसीग्वारिगोकुलगुवरहारथोरीहै
२१॥ ॥टी॰ व्याजस्तुतिनिंदा दूतीवचननायका
प्रति केतोविनलालकाहूको सुगंधनाहींलेत केस
रि कपूरकंजकेत्तकि गुलाबचंपक चमेली अर्थसब
रितुविषैं तेरेमुषकीसुवाससतैंराजीहोत अरुजिनकी
तूँपासवानहै तेभीबूझैतौआसपास भयभ्रमतैं भोरी
होयरही भयइनकोकहाँभयो भ्रमआगेकहाँहोय
गो अरुजोअन्यआश्रय लेहिंतोमानिनीके अवया

हीकेमनभए हमारेनहोंहिंगे सोनाहीजानीजातनेरो हूतिहै कैसुचासहीतोमें ऐसीहै बसगईतूँहरिके चित्तमें कोईचोराचोरीमें सुनिके अचेतुआईयह हैतुतें॥ नतोसीगोकुलमें गोवरवारीकाघोरीहैं इ हांनिंदाके मिसकरिअस्तुतिकरी अरुकोईऐसेभी लगावत गोनामइंद्रीतातें नेत्रवरश्रेष्टतेरेनेत्रस द्रिसथोरीहै २१॥ ॥मू० पुनः क० जानिए न

जाकीमायामोहतिमिलेहूमाहिएकहाथ पुन्यएकपापकोविचारिए॥ परदारप्रियम त्तमातंगसुताभिगामीनिसिचरकैसोमुष देषोदेहँकारिए॥ आजलौंअजादिराषैवर हविनोदभावेएतेपैअनाथअतिकेसवनि हारिए॥राजनिकेराजाछाडिकीजतुतिलक ताहिभीषमसौंकहाकहौंपुरुषननारिए॥ २२॥ ॥टी० राजसूयजज्ञविषैं जबभीषमने ति लक श्रीकृस्नकोकियो तासमय सिसुपालके व चनतें निंदा अरुसरस्वतीताहीमें स्तुतिनिकारत यहकोकपटनाहींजानौंजात मुषदेषतमोहिलेत किंवामायाजादूतासौं कालीनाथो अरुअहीरमोहे एकहाथतेंपुन्यकरत एकतेंनासकरत अर्थ वृषभा सुरकोमास्यो परदारगोपीसोहैंजाकोप्रिय अरुमातं गसुपचताकोअभिगामीहै निसिचरराक्षससो है

मुषदेहकोकारो अजालौंअजादिबकरा भेडराष
तहैं अरुवरदबैलकोषेलभावत अर्थअहीरग
डरियाहैं अरुअनाथहैराजानाहीं तापैराजनके
राजाछोडताकौं तिलककरतसोभीषमसोकाकहि
ए एनपुरुषननारी अर्थनपुंसकहैंयहनिंदाअर्थ
बानीस्तुतिअर्थ याकीमायामें शिवादिकमोहेहैं
भिलतमोहिगए मोहनीरूपमें एकहाथपुन्नबा
न ध्रूवादिककौंएकपापीउधारनहिरनकस्यपआ
दि परउतकर्षदाराश्री किंवाभक्ति मातंगसुतग
जचंद्रमुष देषोदेहकारी देहधारी अजादिब्रह्मा
दिककौंराषनहार वरदानकोकौतूहलभावत ए
तेपैअनाथयाकेनाथनाहींसबकोनाथहैं २२॥ ॥
मू० अथअमिलितलक्षनं दो० जहासाधनै
भोगवैसाधककीसुभसिद्धि॥ अमितनाम
तासौंकहतजाकोअमितप्रसिद्धि २३॥ टी०
अमिलित॥लक्षन॥जासौंकारजकीसिद्धकीजिए सो
साधनअर्थसहायकारन २३॥ ॥मू० यथा स०
आननसीकरसीककहाहियतोहितनैंअ
तिआतुरआई॥ फीकोभयोसुषहीमुषराग
कौंतेरेपियाबहुवारबकाई॥ प्रीतमकों
पटकौंपलट्योअलिकेवलतेरीमतीतिकों
ल्याई॥ केसवनीकेहिनायकसौंरमिनाय

काबातनहींबहराइ २४॥ ॥टी॰ परसभो गदुषिताकी उक्तिसषीसौं कैतेरेमुषमैं श्रमसौंक रकाहेतैंभये उत्तर तेरेहिततैं सीघ्रआइ इत्यादि पदसुगम इहाँसाधनसषी अरुसाधक जोनाय कताकीसिद्धू संभोगरूपताकोभोग्यो २४॥ ॥

मू॰ पुनः सवैया कोगनैकनैजगन्मनिसेनृ पसाथसबैदलराजनहीको॥जानैकोषा नकितेसुलतानसोआयोसहावदीसाहि दिलीको॥ओडछेआनिजुरयोकहिकेसब साहिमधूकरसौंसकजीको॥ दोरिकेदूल हरामसुजीतिकरयोअपनेसिरकीरतिटीको २५॥ ॥टी॰ राजाओडछेकेमधुकरसाहिसौं अ रुसहावदीसाहिसौं जुद्धजुरोनबराजकुमार दूलह रामनेआपताकोमारो सोसाधनदूलहरामने सा धकनृपकीसिद्धिभोगी २५॥ ॥**मू॰ल॥ अथप र्जायोक्ति॥दोहा॥कौनहूएकअद्रिष्टतेअ नहीकिएजुहोय॥सिद्धआपनेइष्टकीपर्जा योकहिसोय २६॥** ॥टी॰ पर्जायोक्तिअलं कार आपनेइष्टकीसिद्धि कौनहूअद्रिष्टितैं कौन हूकर्मतैं विनाकियेहोयसोपर्जायोक्तिअलंकारजा निए २६॥ ॥**मू॰ क॰ षेलनहींसननंजअलि नमैंआपुहितैंतहाँहरिआएकिधौंकाहूके**

बुलाएरी॥लागेमी॥ षेलनमिलेकैमनहू
रेहरेदैनलागेदाबुआपुआपुमनभाएरी॥
उठिउठिगईमिसमिसहीजितहींतितके
सोरायकीसौंदाऊरहेछबिछाएरी॥चौंकि
चौंकितिहिछिनराधाजूकेमेरीआलीजल
जसेलोचनजलदसेव्हैआएरी २७॥ ॥
टी॰ उक्तिसषीकीसषीप्रति जहाँसतरंजनायका
षेलतरही तहाँहरिनजानौं आपुतेंकैकाहूकेबुला
एआए सोलागेमनमिलेकैंषेलनधीरेधीरे रतिके
करिबेकेलिएप्रथममिलन जलदसेमेघसेजल
भरिआएआँसूअर्थसात्विकहोयआयो प्रहरषनमैंचि
तचाहतेंजतन यामैंनहीं २७॥ ॥मू॰ अथजुक्ति
अलंकार दोहा जैसोजाकोबुद्धिबलकहि
एतैसोरूप॥तासौंकविकुलजुक्तियहूबर
ननबहुतसुरूप २८॥ ॥टी॰ अथजुक्ति॥जै
सीजाकीबुद्धि औबलऔरूपहोय तैसोकरिए॥
२८॥ ॥मू॰ यथा क॰ मदनवदनलेतिला
जकोसदनवेषिजदपिजगतजीवमोहिबे
कोहैछमी॥कोटिकोटिचंद्रमासँवारिवा
रिवारिडारौंजाकेकाजव्रिजराजआजुहीलौं
संयमी॥केसोदाससाविलासमुषकीसुवा
सवाससुनियतआरसहींसारसनिसौंरमी॥

मित्रदेवक्षितिदुर्गदंडदलकोसकलबल
जाकेताकेकहोकोनबातकीकमी २९॥ इ
तिश्रीमतद्विविधभूषनभूषितायांकविप्रि
यायांविशिष्टालंकारवर्नेनंनामद्वादशःप्र
भावः१२॥ ॥ ॥ टी० सषीकीउक्तिनायका
प्रति केमदनजोकामतीवनतनाहीं लाजकोघर ते
रोमुषदेषिकेमदनजोवदनकथनकोघरसोनाहीं
करतहैतेरेमुषकीप्रसंसाकरनलगतहै किंवावद
ननामनमस्कारके औप्रसंसाको भाषामेवंदनाको
वदनपढो अथवामदनवदनभाषननहीं सकत
जोसबको मोहतसोमोहिजात अरुकोटानुकोट
चंदमनुहारकरिकेवारिवारडारों अरुमुषदेषिवे
कोंब्रजराज आजुलौं संजमीहोयरहेहैं अर्थआन
कोमुषनाहीदेषत अरुविलाससहिततेरेमुषकी
वासतें सहजहीं सारसकमलकोजेलपटेहैं तिन
सौंरमिगई सोकलकेसेहैसूर्जहैजाकोमित्र किंवा
देव क्षितिपृथ्वी दुर्गकिला कठिनअस्थानहैजानें
रहत यातेंजलवनपहारकीठोरि दुर्गकठिन फेरि
दंड है दलपत्रहै कोसषजानाताकेकोनबातकीकमी
है यामेंजैसोकमलहैतैसोकहो दुर्गआदिपदतें राजा
बनामो अर्थसर्वसुगंधीनकोराजा है मित्रदेवद्विज
दुर्गऐसोभीपाठहै २९॥ स्वस्तिश्रीमन्महा राजाधि

राजकासिराजश्रीमदईस्वरी प्रसादनारायणसिंहस्या
ज्ञाभिगामीललितपुरनिवासी हरिजनकवीस्वरा
त्मजेनसरदाराष्यकवीस्वरेणविरचितायांकविप्रि
यायांटीकायां वर्णाष्याया द्वादसमरीचीः १२॥ ॥

मू० अथसमाहितालंकार दोहा हेतुन
कौंहूहोतजहँदेवजोगतैंकाज॥ताहिस
माहितनामकहिबरनतकविसिरताज १

टी० अथसमाहिताअलंकार जहाँआपनोकियो
कारजनहोय देवबलतैंहोय १॥ ॥मू० रसिक
प्रिया क छबिसौंछबीलीवृषभानकीकुँ
वरिआजुरहीहुतीरूपमदमानमदछकिकै
॥मारहूतैंसुकुमारनंदकेकुमारताहिआ
एरीमनावनसयानसबतकिकै॥हँसिहँ
सिसोहेकरिकरिपाँयपरिपरिकेसारायकी
सौंजबरहेजियजकिकै॥ताहीसमैउठेघ
नघोरघोरदामिनीसीलागीलोटिस्यामघ
नउरसौंलपकिकै २॥ ॥टी० राधाकोमान
हरिकेछिडाएतैंनछूटो घनउद्दीपनतैंछूटो २॥ ॥

मू० पुनः स० सातहुदीपनिकेअवनीपतिहा
रिरहेजियमैंजबजानें॥बीसबिसैंव्रतभंग
भयोसुकह्योअबकेसवकोधनुतानें॥सोक
कीआगिलगीपरिपूरनआइगएघनस्यामबि

हानैं॥जानकीकोजनकादिककेसवफूलि उठेतरुपुन्यपुरानैं ३॥ ॥टी० सबैराजनतेंधनु नाहींउठ्यो तबजनककोव्रतभंगकीचिंताभई अरु सोककोअग्निजरनलागो ताहीसमयघनस्याम श्रीराम आइगए याजानकीजनिकादिकेपुरान पुन्यतरुतैं फलइहाँरामपूर्वपुन्नवसंतआएयातैं काजेभयो ३॥ ॥मू० सुसिद्धालंकार दो०॥साधिसाधिऔरैमरैऔरैभोगैसिद्धि॥तासौँ कहतसुसिद्धसबजेहैंबुद्धिसमृद्धि ४॥ ॥टी० अथसुसिद्धालंकार साधिसाधिपचिपचिपचि अर्थसंचिकै औरमरत औरकोईवासिद्धिभोगन ४॥ ॥मू० यथा स० मूलनिसौंफलफूलसबैदलजैसीकछूरसरीतिचलीजू॥भाजनभोजनभूषनभामिनिभौनभरीसबभाँतिभलीजू॥डासनआसनवासनिवाससुवाहनजानविमानथलीजू॥केसवकैकैमहाजनलोगमरैंसुवभोगवैलैलैवलीजू ५॥ ॥टी० मूलजरफलसौं फूलसौंपत्रसौं रसादिकजे ओषधी हैंतिनरीतिचलीआईहै भाजनपात्र भोजनअन्नादिक भूषनगहना भामिनिललना भवनग्रहभरी वस्तु अनेकसबभाँति डासनबिछावन आसनचौकी वासनसुगंध वासउत्तमवस्त्र वाहनअश्वादि

जानरथ विमान नरवाहनादि किंवापुष्पकआदि
जोइच्छाचलै थलौथलकेभी यहसबकरकेमहा
जनजो राषनवालेजन जोअनेकवस्तुकोसंग्रह
करैंसोईमहाजन संचकेमरतपृथ्वीमें अरुजेवल
वानहैंतेभोगकरत सोबनावैहैं आन अरुभोगत
हैंआन ५॥ ॥मू० छप्पै सरघासँचिसँचिम
रैंसहरमधुपानकरतमुष॥षनिषनिमरत
गँवारकूपजलपथिकपियतसुष॥बागवा
नबहिमरतफूलबांधितउदारनर॥पचिप
चिमरहिंसुवारभूपभोजननिकरतवर॥भू
षनसुनारगढिगढिमरहिंभामिनिभूषितक
रततन॥कहिकेसवलेषकलिषिमरहिंपंडि
तपढहिंपुरानगन ६॥टी० सरघामधमापीमधुसंचयकर
त अरुरहरवासी मुष्यवडेलोगभोगकरत अरुगंवानकूपषोद
त पथिकजलपानकरत बागवानमाली सुधारपाद्करता इत्या
दिसुगम ६॥ ॥मूल प्रसिद्धालंकार दोहा सा
धनसाधैएकभुवभुगवैसिद्धिअनेक॥ ता
सौंकहतप्रसिद्धिसबकेसवसहितविवेक
७॥ ॥टी० प्रसिद्धालंकार साधनएककरैताकीसि
द्धि अनेकभोगकरै ७॥ ॥मू० यथा स० माताके
मोहपितापरितोषनकेवलरामभरेरिसभारे
॥औगुनएकहिअर्जुनकोछितिमंडलकेसब

छत्रियमारे॥ देवपुरीकहँ औधपुरीजनकेम
वदासबडेअरुवारे॥ सूकरस्वान समेतसवै
हरिचंदकेसत्तसदेहँसिधारे ८॥ ॥टी॰गाना
रेनुका पिताजमदग्निकेपरोष संतुष्टहेतुपरसराम
रिसभरे अय गुन सहस्त्रबाहुको भोगअनेकछत्रीमरे
देवतनकीपुरीकों अजोध्याकेबूढे जुवावालकसूक
रस्वान समेतहरिचंदमहाराजके संगमेंसदेंहगएक
रिनीएकहरिचंदकीअनेकनेभोगी ८॥ ॥मू॰ विप
रीतालंकार दो॰ कारजसाधककोजहाँसाध
नबाधकहोय॥ तासोंसबविपरीतयोंकह
तसयानेलोय ९॥ टी॰ विपरीतालंकार काजेकोजोसाध
नकरैकरावै ताकोजोसाधनजासौं सिद्धकीजिएसोबाधहोय ९॥
मू॰क॰ नाहतेंनाहरत्रियजेंवरीतेंसाँपकरि घालेष
रवीथिकाबसावतिबननिकी॥ सिवहिसिवाही
भेदपारतिजिनकीमायामायहूनजानैछायाछल
निननिकी॥ राधाजूसोंकहाकहौंऐसीनकीसुनै
सिषसाँपिनिसहितविषरहितफननिकी॥ कौंन
पै बांचवांचआगिओनसहिसकैवा॰ पारीअं
गनाअनेकअगनानिकौ १०॥ टी॰ गोरेसपीकोउक्तिस
षीसौं नायकाकोंसुनायकैकहत एजो हमारे घर तिय आ
वनलागीसोकैसीहैं कैनाहजोस्वामीताकोनाहरके
हारवनावनहारि ... हैजरीहै किंवाजेवरि

जुकौंसर्पेकरत अरुघरसांपकरिपालती नासकरती
वाकीनाहींराषती अरुवनकीजेवीथीहैं गयलैंते ब
सावतीहैं अरुसिवशिवाएकअंगहैं तासौंजिनकीमा
याभेदपारिदेय अर्थविरोधकरायदेय अरुइनकीमा
याइनकीछाया नाहींजानत किंवामायाजो संसार
कोरचतसोछाया सनीश्वरकीमाता सोभीनाहींजा
नत याकीमायाकौं अरुराधाजूसौंकहाकहिए तिन
कीसीष सुनतीहैं जेसांपिनविषसहितहैं परंतुफन
इनकेनाहीहैं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ इनायकना
यकासौं बीचतफाउतकौं नपारैं इनकोपारोबीच
आगिभी नसहिसकै अनेकआगिकोजेहैं अंगनाइ
स्त्री तिनकेबीचपरीहै काजेसाधकनायक ताकौं सा
धनसषीसा बाधकभई मिलनरूपकाजेकी १०॥ ॥

मू॰ क॰ साधनसयानोकोऊहायनहथ्यार रघुनाथजूकेजज्ञकोतुरंगगहिराष्योई॥ काछनकछोटीसिरछोटीछोटीकाकपक्ष पाँचहीबरसकेनजुद्ध अभिलाष्योई॥ नल नीलअंगदसहितजामवंतहनुमंतसेअनंत जिननीरनिधिनाष्योई॥ केसोदासदीपदीप भूपनिसौं रघुकुलकुसलवजीतिकेविजयर सचाष्योई ११॥

॥टी॰ श्रीरामजीकोआश्रय ज
ग्यकोलव कुसनैंहै बाँधिराषो सोलवकुस कैसेरहैकैं

साधन सयानो बडो कोदे अरु ह्वायना ह्य्यो (जिनने का
छीन ही कछोटी कछनी अरु सिर पर छोटे छोटे दें का
कपक्ष अरु पाँच बरस के न हौं पूरे अरु जु द्धचाह्यो न
लादि हनुमंत अंतलों जोधा केसे जिन समुद्र नाघ्यो लां
घो॥ केदीपसात ताके दीप श्रीरामचंद्र तिनको जो नि
विजयरस चाख्यो इहाँ यज्ञकारजके साधक रघुनाथ
तिनके साधन पुत्र कुस लव सोई बाधक भये ११ ॥

**मू॰ अथ रूपक दो॰ उपमा ही के रूप सों मि
ल्यो बरनिये रूप॥ ताही सों सब कहत हैं के
सव रूपक रूप १२॥** ॥टी॰ रूपक उपमा के रूप
सों मिल्यो उपमेय को रूप बरनैं १२॥ ॥**मू॰ यथा** ॥
**दो॰ वदन चंद्र लोचन कमल बाँह पास ज्यौं
जान॥ कर पल्लव अरु भ्रूलता बिंबाधर नि
बषानि १३॥** ॥टी॰ वदनचंद्र में वदन उपमेय
चंद उपमान सो मिल्यो १३॥ ॥**मू॰ दो॰ ताके भेद
अनेक सब तीनों कहे सुभाव॥ अद्भुत एक
विरुद्ध अरु रूपक रूपक नाव १४॥** ॥टी॰
ताके भेद रूपक में अनेक भेद हैं तामें तीनि वरनैं ॥
१४॥ ॥**मू॰ अद्भुतरूपक दो॰ सदा एकरस व
निए औरनि जाहि समान॥ अद्भुत रूपक क
हत हैं तासों बुद्धिनिधान १५॥** ॥टी॰ अद्भुत
रूपक जामें हान वृद्धि न होय सो एकरस १५॥ ❀ ॥

मू० क० सोभासरवरमाँहिफूल्योई रहतसषि राजैराजहंसनिसमीपसुषदानिए॥ केसौहा सऋासपाससौरभकेलोभघनैंघ्राननिकेदे वभौंरभ्रमतबषानिए॥ होतिजोतिदिनदूनी निसिमैंसहसगुनीसूरजसुहृदचारुचंद्रमा नमानिए॥प्रीतिकोसदनछूयसकैनमदनऐ सोकमलवदनजगजानकीकोजानिए १६

॥ टी० कोईजनकपुरकी सषीरघुनंदनसों कहति है सबकोई कमलकहतहैं परंतु श्रीजानकीको वदनजोहै सोईकमलसंसारमें है काहेयामें दून नीबातेंहैं सोभा सरोवरमैं फूलोई रहत सरोवर ग्रीषमपाय घटजात सोभानाहींघटतहै अरु स षीराजहंसनीनके नजीकहैं सुषकीदाता अरुआ सपास सुगंधकेलोभतें घ्राननके नासिकानकेजे देव पृथ्वीसोई भ्रमरीभ्रमतहै किंवाबहुवाक्यतें घ्रानकेजुगलछिद्र किंवा सर्वदेव बाहिरभ्रमत रहत आवतनाहीं जयंतकीदसादेषि दिनमें जो तिदूनी कमलतेंहोत अरु रात्रीमें आपुकोसंजोग पायहजारगुनीहोत चंद्रमाकोनाहींमानत किंवा चंद्रमाकोभी चारुमतिमानो प्रीतिकोघरमदन ना हींछ्वैसकत तोश्रृंगारमैं न्यूनताहोयगी तहाँप्रीति कोघर मदमानसोजाकोनाहींछूयसकत इहाँ सो

भासोसरोवर सोअभेदमुषकमलसों अरुआनक मलकीजोतिघटत यह बढत यह अद्भुतनादिखाई १६॥ ॥**मू० अथविरुद्धरूपक दोहा जहँ कहिएअनमिलकछुमिलसकलविधिअर्थ॥ सोविरुद्धरूपककहैकेसवबुद्धिसमर्थ १७॥** ॥टी० अथविरुद्धरूपक जहाँ अनमिलबातकहिए परंतुअनमिलनहोय अनमिलभासहोय जहाँजहाँ एकअर्थमें एकअर्थ अंतरभूतरहै जानोजाय औरग्रंथमें रूपकातिसयोक्ति १७॥ ॥**मू० स० सोनेकीएकलतातुलसीवनक्यौंबरनौंसुनिबुद्धिसकैछ्वै॥ केसवदासमनोजमनोहरताहिफलेफलश्रीफलसेग्वै॥फूलिसरोजरह्योतिनऊपररूपनिरूपनचित्तचलैच्वै॥तापरएकसुवासुभतापरषेलतबालकषंजनकेव्है १८॥** ॥टी० नायकनैंनायकाबृंदावनमेंदेषी ताकोवर्ननकरतहै कैसोनेकीलतानायका ताकोंकोवर्नैबुद्धिकाबुद्धिछ्वैसकत अर्थनाहीं छ्वैसकत तामेंमनोजकेमनकेहरहार किंवा एकमनोजरूप दूसरोमनोहररूप एदो श्रीफलसदृसफूलेहैं अर्थेकुचतिनके ऊपरसरोजकमल फूलोहै मुषताकोरूपनिरूपितमैं मनचूचलत अर्थद्रवउठत तापर

एककीरनासिका तापरषंजननेत्र कहतमैं अन मिलमिल अर्थसुमिल १८॥ ॥मू॰ अथरूप रूपक दो॰ रूपभावजहँबरनिएकोनहुबु द्धिविवेक॥ रूपकरूपककहतकविकें सवदासविवेक १९॥ ॥टी॰ रूपरूपकरूप औभावमनको विकारजहाँबरनिए १९॥ ॥
मू॰ स॰ काछेसितासितकाछनीकेसवपा तुरज्यौँपुतरीनिविचारो॥ कोटिकटाक्षच लैगतिभेदनचावतनायकनेहनन्यारो॥ बाजतहैमदुहाँसमृदंगसुदीपतिदीपन कौँउँजियारो॥ देषतहौहरिदेषितुम्हैंयह होतहैआँषिनहीमैंअषारो २०॥ ॥टी॰ र सिकप्रिया हेहरितुमदेषतहो तुह्मेहेरिकेबहि आँषिनमैं आँषिके अस्थानमैं अषारानृत्यसाला होतहै सितसेतअरुस्यामजो नेत्रमैंरंगहैसोई तौनृत्यकारकेपहिरतकीकाछनीहै ताकौँपहिरे पुतरीसोई पातुरहै इहाँअभेदकियो कोटि क टाक्षनाचकीगति नेहनायकनचावनहार नेत्रके हाँस्यमैंसब्दनहीँ परमृदुहाँस्यजोहैसो मृदंग है जुहोबजत अंगकीदीपति सोई दीपकोउँजियारो है रूपककहाँकाछेइत्यादि फेरतुमदेषीयामैं मनको विकारहै सर्वांगअभेदकरि इतनाअधिककह्यो॥ या

तैंरूपरूपक २०॥ ॥मू॰ अथदीपक दोहा॥ वा
च्यक्रियागुनद्रव्यको बरनहुकरिइकठौर
॥दीपकदीपतिकहतहैं केसवकविसिर
मौर २१॥ ॥टी॰ अथदीपक वाच्यक्रिया याको
पाठ प्राचीनपुस्तकनमैं द्रव्यक्रियाहै द्रव्यवाची
क्रियावाची गुनवाची जोशब्दहै बोलनो हसनों
सुषमोरनों अंगरानों एशब्दक्रियावाची स्वेतपीत
रक्त हरित गुनवाची गुनलक्षण दोहा रहतद्रव्य
आश्रयसदानिर्गुनकर्मसुहीन॥ सोगुन इनकोज
हाँ एकठौरबरनिए तहाँदीपकअलंकारको दीप
प्रकासकहतहैं इहाँवनेअवर्नेको एकधरम न
लीजिए २१॥ ॥मू॰ दोहा दीपकरूपअने
कहैमैंबरनेदैरूप॥मनि माला तासोकहैं
केसवसबकविभूप २२॥ ॥टी॰ तामैं दीप
रीतिकेकहेहैं कविभूप एकमनिदीपक दूसरो
मालादीपक २२॥ ॥✿॥ ॥मू॰ मनिदीपक दो॰
बरषासरदवसंतससि सुभ-ता॰ सोभसुगं
ध॥प्रेमपवनभूषनभवनदीपकदीपक
बंधु २३॥ ॥टी॰ मनदीपक सुभताकाहूकी सो
भा एसबदीपकअलंकारके बंधुसहायकहैं इन
तैंदीपकपुष्टहोयहै २३॥ ॥मू॰ दो॰ इनमैंएक
जुबरनिएकौनहुबुद्धिविलास॥तासोंमनि

दीपकसदाक हएकेसवदास २४॥ ॥टी०
वर्षादिमें एकहूं बरनिये ऐसोजानिये २४॥ ॥ मू०
क० प्रथम हरिननैनिहेरिहरिहरिकोसोहरषि
हरषितमनेजनिहरतुहे॥ केसोदासआस
पासपरमप्रकाससोविलासनिविलासक
छूकहिनपरतुहे॥ भाँतिभाँतिभामिनीभव
नकहँभूषैभवसुभगसुभायसुमसोभाकों
धरतुहै॥ मानिनिसमेतमानमानिनीनिब
सकरिमेरोमनतेरोदीपदीपतिकरतुहै २५

टी० सषीनायकके पक्षकी कहतहै मेरोमनकोजो दीपप्रकास
क आनंददायक ऐसोश्रीकृस्न सोतेरेमनको दीपप्रकास आनं
दताकोकरतहै प्रथमही हेहरननैनीमृगनैनी हेरिकैं हरिह
रिकोसपतकसम हरषहरषके तमतेजकों हरे हैं॥ अर्थ ते
रोमानसुन जोतमभयोताको अरु अपने आसपा
स परमप्रकाससों विलाससोंहेविलासिनि विला
सजोमानतसो कहोनाहींजात भाँतिभाँतिसों हे
भामिनीघरकोंभूषित भवकल्यान तेरोजोसुंदर सु
भाव ताकीसोभाकोंधारन करतुहैं मानिनिकेसमे
त मानकेसमें मानिनीनिकोवसकरनहार मेरे म
नमें ऐसीआवत कैतेरीदेहकी दीपतिसों दीपति
करैहे इहाँद्रव्यनायकानायक क्रिया हेरहेरहरत
है यहक्रिया दीसगुन २५॥ ॥ मू० पुनः क० २

क्षिनपवनदक्षजक्षिनीरवरनलगिलोलन करतुलोगलवमीलताकोफरु॥ केसोदास केसरकुसुमकेसरसकनतनुतनुति नन्ह कोसहिनसकतिभरु॥ कौंहूकौंहूहोतह ठिसाहसविलाससबचंपकच्चमेलोमिलि मालतीसुवासहरु॥ सीतलसुगंधमंदगति नंदनंदकोसोंपावतकहाँतेंतेजतोरिबेकौं मानतरु २८॥ ॥टी० सषीदक्षिनपवनकी वा तोकरिकैं मानछडायो चाहतिकै दक्षिनकोजोपव नहैसो दक्षहोमके समर्थहोयके पछनीरमनकुबे रकोलगिकैं अर्थकैलासलों पहुंचकेवरअेष्ठलोल चंचलकरिदेतुहै अरुलवंगओलवनीवृक्षफल कोभी अर्थजडजो लताहैताको वृक्षसों लगायदे त अरुकेसरिकुसुमके जेकनहैं किंवाताकेरसम करंदके जेकनहैं तिनकोभार नाहींसहिसकत लवंगलतिका अर्थउद्दीपनहोयजात कोईकोई तरहतें जोरावरीसों चंपकलता आदिजे मानिनीहैं तिनको पकरलेत जबहनकेविलास बसहोत है मानरूपीवृक्ष तोरडारत इहाँ पवनद्रव्यकोगमन क्रियापरसगुन २८॥ ॥मू० मालादीपक॥

दो० सबैमिलेजहँबरनिएदेसकालबुधिवं त॥ मालादीपककहतहैंताकेभेदअनंत॥

२७॥ ॥टी० मालादीपक क्रियागुनद्रव्यवाचीजे शब्दसोजहाँएकएकसोंमिलिबरनिए नरषादिरितु लीजेदेसकालभी हैबुद्धिवंत २७॥ ॥मू० स० दीपकदेंहदसासोंमिलेसुदसामिलितेज हिजोतिजगावै॥जागिकेजोतिसबैसमुमैत्तमसोंधिसुतोसुभतादरसावै॥ सोसुभतारचैरूपकेरूपकोरूपसुकामकलाउपजावै॥ कामसुकेसवप्रेमबढावतप्रेमलैप्रानप्रियाहिमिलावै २८॥ ॥टी० दीपकदेंहकी अवस्थासों मिलैअरु दसातैंजाकी जोतिजगावति परसुगम मिलेइत्यादिक्रियासब्द प्रकास इत्यादिगुन देंहसब्दद्रव्यसोभा सुभता जोबनकाल एसर्बे मिलेतैं दीपकमाला २८॥ ॥मू० पुनः क० घननकी घोरसुनिमोरनिकेसोरसुनिसुनिसुनिकेसब अलापआलीजनको॥ दामिनीदमदेषिदीपकोदिपतिदेषिदेषिसुभसेजदेषिसदनसुवनको॥ कुमकुमकोवासघनसारकोसुवासभइफूलनिकोवासमनफूलिकेमिलनको॥ हँसिहँसिमिलेदोऊअनहींमनाएमानछूटिगोएकहीबेरराधिकारवनको २९ ॥टी० अलापकथन इहाँसुनिवे क्रियासोंघनकी घोरआई प्रेमसों मिलायकेबरनौं सदनघरसुवन

कोफल सोदेषि क्रियासौं मिलैहै पूर्ववतगुनक्रिया जानौं अरुविसेषइच्छाहोयतौ हमारोबनायोतर्क प्रकासदेषिलेनो २९॥मू० अथप्रहेलिका॥दो०॥

॥बरनतवस्तुदुरायजहँकौनहुएकप्रकार॥तासौंकहतप्रहेलिकाकविकुलसुबुधिविचार ३०॥

॥टी० अथप्रहेलिका वस्तुको कोईरीतिसैं छपायकेबरनौं ३०॥

॥मू०॥यथा दो० सोभितसत्ताईससिरउनसठिलोचनलेषि॥छप्पनपदजानोंतहाँबीसबाँहुबरदेषि ३१॥

॥टी० हरिहर विधि एतीनोदेवतासपत्नीक सवाहनसूर्जे मंडलमैं रहतहैं एकसीस हरिको१ एकलक्ष्मीको१ अरुएकगरुडको१ पाँच सिवको५ एकपारवतीको१ एकनंदीको१ अरुएकसिंहको१ ब्रह्माके चार४ ब्रह्मानीकोएक१ अरुहंसकोएक१ सूर्जकोएक१ संज्ञाकोएक१ अरुनकोएक१ अरुअश्वके ७ यहसत्ताईससिर उनसठलोचनलेष विस्नुकेदोलोचन२ लक्ष्मीकेदो॥ गरुडके दोय६ शिवकेघर२१ लोचन शिवकेपंद्रह१५ शिवाकेदो२वृषभकेदो सिंहकेदोय२१ ब्रह्माकेघर१२ लोचन ब्रह्माकेण ब्रह्मानीकेदो२ हंसकेदोय२ सूर्जेकेघरमैं बीस२० सूर्जकेदो२ संज्ञाकेदो२ अरुनकेदो२ अश्वकेचौदह१४ यह ५९ लोचनभयेछप

नपदजानोतहां विस्नुकेदो२ लक्ष्मीकेदो२ गरुड
केदो२ शिवकेदो२ शिवाकेदो२ नंदीकेचार४
सिंहकेचार१२ ब्रह्माकेदो२ ब्रह्मानीकेदो२ हंस
केदो६ सूर्जकेघरमैं ३२ सूर्जकेदोय२ संज्ञाकेदोय
२ अरुनपंगुहैं यातैं अरुनकेनहीं अश्वकेअट्ठा
ईस२८ यहसबमिलछप्पनपद५६ बीसबांहुब
रदेष विस्नुकेचारभुज४ लक्ष्मीकेदोय६ गरुडके
नहीं शिवकेदो२ शिवाकेदोय ४ नंदीसिंहकेन
हीं ब्रह्माकेदो२ ब्रह्मानीकेदोय४ हंसकेनहीं सू
र्जकेचार४ संज्ञाकेदोय६ अरुनअश्वकेनहीं चौ
दहहरिआदिकेछ सूर्जकेमिलबीसबांहुभये॥
३१॥ ॥मू० अथप्रभाकरमंडल दोहा चरन
अठारहबांहुदसलोचनसत्ताईस॥मारत
हैप्रतिपालिकेसोभितइग्यारहसीस३२॥ ॥
टी० दोयचरनभगवानकेदोलक्ष्मीके दोयगरुड
के दोयमहादेवके दोयपार्वतीके चारवृषभके॥
चारसिंहकेयह१८ बांहु४ भगवानके४ लक्ष्मीके
२सिवके२ शिवाके२यह१० लोचनभगवानके
२ लक्ष्मीके२ गरुडके२ शिवके१५ शिवाके२ वृ
षभके२ सिंहके२ यह२७ सिवरूपतैं मारत विस्नु
रूपतैं पालत सीसभगवानके१ लक्ष्मीके१ गरुडके
१ शिवके५ पार्वतीके१सिंह१वृषभके१यह११सीस ३२॥

मू॰ हरिहरात्मकसरीर दो॰ चौपखुनवहै देवताद्वैपक्षोजिहिंगेह॥ केसवसोई राषिदै इंद्रजीतजसदेंह ३३॥ ॥टी॰ सातचारोंप्रसूजें केकवृषभ१ एकसिंह१ देवनव९ ब्रह्मा१॥ विष्णु२ शिव३ सावित्री४ लक्ष्मी५ पार्वतीह६ सूर्ज७ चंद्रमा शिवभालको८ अग्निएकशिवभालमें९ पक्षी१ नारद हंस१जाकेघरमें कहो अरुनपक्षीहैपै घरमें सूर्जके सूर्जमंडल मेंनाहींरहत बाहरतें रथचलावतहैं ३३॥ ॥मू॰ अर्कमंडल दोहा॥ देषैसुनैनषामकछुपायनजुवतीजाति॥ केसवचलतनहारई वासरगनैनराति ३४॥ एरहै॥टी॰ लोगचलतहैं वेगजोपवसो नहींहारतहै शब्दछलसों कहतहैं ३४॥ ॥मूल॥ दोहा॥ केसवताकेनाम के आषिरकहिएदोष॥ सबोभूषनमित्रके उलटोदूषनदोष ३५॥ राज ॥टी॰ मित्रकोराजकहिकेबोलिए उलटकेपढ़े जराबुढाईकोनाम दोष हैसबहीजानत ३५॥ ॥मूल दोहा जातिलतादुहुँआषरहिनामकहैसबकोय॥ सधैमुषसुषभखिएउलटेअंबरहोय ३६॥ दोष॥ टी॰ लतावाकीजातिहै दोअसरकोनामहै भाषिएषायतो मुषकोंसुषहोय मूधेआषरदोप उलटोपढ़ै तोषद॥ वल्लयामीनपहिरतगजीपाटी ३६॥ ॥

मूल॥ दोहा॥ सबसुषचाहैभोगयोजोपि
यएकहिबार॥ चंदगहैजहैराहकोंजेहेति
हिदरबार ३७॥ बीरवलकोचंददरवान॥
टी॰ बीरबलकोदरवानचंद्रनामरह्यो सोसबकोरोक
तरह्यो॥ ३७॥ ०॥ ०॥ दो॰ ऐसीमूरदेषाव
सषिजियजानतसबकोय॥ पीठलगावत
जासुरसछातीसीरीहोय ३८॥ ॥ टी॰ पहे
लीकोभेद डिठियारीभीहै देषिनाईमें प्रश्नकरे जे
से सभामेंबठ्यो कहेहमैं याठोरमें बागदेषावो त
बजानने वारो वारीको बतायदेय कोटकहैयहमे
रूहै सषीमूरके फिरिके मोहकोई ऐसीवस्तुबना
वो पीठिसों आपकेपुत्रलपटेहैं तोजाकोरससो अ
नुराग सोछातीसीतलहोतहै पुत्रवाहीठोरमेंहै ऐ
सोजानिए ३८॥ ॥ मू॰ अथपरिवृत्तअलंकार
॥ दो॰ जहांकरतकछुऔरई उपजिपरतकछु
और॥ तासोंपरिवृतजानिहउ केसबकविसि
रमौर ३९॥ ॥ टी॰ परिवृत्त॥ जहांऔरकारज
कर औरउपजेसोपरिवृत ३९॥ ॥ मू॰ (सिकाश्र
या स॰ हँसि बोलत हौं सु हँसै सब के सबला
ज भगावत लोग भगैं॥ कछु बात न लावत ए
खलै मन आनत हौं मन ... गै॥ सखि तू
सुपरे हेतु हतो मन मेरे हू जानि इहै नहि पोउ

मगे॥ हरिसौंनिकुडीठिपसारतहीं अँगुरीन पसारनलोगलगै ५०॥ ॥टी० सिक्षाकरनस षीउपदेसकरत कैतूँहरिसौंमिलि तहाँनायकाव चनमेंकैसेमिलौं हँसिजो उनसौंबोलौं तौसबव्रज हँसत अरुजोलाजभजाऊँतो मोतैंलोगभागजात अरुजो बातचलाऊँतो चौचँदचलजात मनलगा ऊँतो कामजगत तूँजोकहतसो मेरेमनमेंभीरही परंतुयहबातसमुझि हियो नाहींउमगत हरिकी वोर द्रिष्टपसारतमें लोगअँगुरी पसारनलगतहँ सबोलत श्रृंगारवचन सबलोगहँसतहैंयामें इ नकीरीतितैं वीभत्सरसयहकवित्त रसिकप्रियामें रसदोषमें प्रत्यनीकरसको उदाहरनहैजहाँविरो धीरसमिलैसोप्रत्यनीक कहोरसदूषनकोभूषन में काहेलिषो तोरसदोहैं अलंकारमें भूषनहैं व्रहाँ सुषकेविलासकोकारज कियोतामें निंदाभई ५० ॥

मू० पुनः स० हाथगह्यौव्रजनाथसुभायही छूटिगईधुरिधीरजताई॥ पानभषेमुषनैन रचीरुचिआरसीदेषिकह्योदमठाई॥ देषी रंभनमोहनमौमनमोहिलियोसजनीसुषदा ई॥ लालगुपालकपोलनषक्षततेरेदियेतैं महाछबिछाई ५१॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनाय काप्रति सुभावसुंदरभावतैं जबव्रजनाथने हाथ

गहो तबधुरजो धीरजताकोरहीसो छूटगईयह
कहिबतहै अमुकधर्मधुरहै इहांधैर्जउपजो चा
हीसो छूटिगयो पानमुषमेंषाए रुचिलालीनेत्रमें
आई तुमआरसीदेषिहमतें सांचीकहो परिरंभन
आलिंगन अरुलालगुपालने कपोलनमें नषके
घाउकरेतें छबिबहुतबढी इहांघाउतें सोभाभ
ई ४१॥ ॥मू॰पुनः स॰ जीवदियोजिनजन्म
दियोजगीजाहीकोजोतिबडीजगजानैं॥ता
हीसोंवैरमनोवचकायकरैकृतकेसबको
उरआनैं॥मूषकतोरिषिसिंहकर्योफिरि
ताहीकोंमूषकरोपविनानैं॥ऐसोकछूय
हकालहैजाकोभलोकरिएसुबुरोकरिमा
नैं ४२॥ ॥इतिश्रीविविधभूषनभूषिता
यांकविप्रियायांवरणाख्यायांत्रयोदशःप्र
भावः १३॥ ॥ ॥टी॰ जो ईस्वरनें जीवदयोज
न्मभी जाकीजगमें जोतिजगीहै तासों बैरकरत
एकमूस दूसरोफिरतमुनिदेषो तासोंबूझी तूंकातें
डरतउत्तर बिलाईतें तब बिलाईबनायो तोभी ड
रो तबस्वान याहीरीतितें केहरिकियोसो मुनिके
षाइबेकों चलोतब फेरमूषक करिदयो यातेंजा
कोभलोकरोसो बुरोमानें भले को काजबुराईफल
४२॥ ॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराज

श्रीमदीस्वरी प्रसादसिंहस्याज्ञाभिगामीललितपु
रनिवासी हरिजनकवीस्वरात्मजेनसरदारारव्य क
वीस्वरेणविरचितायांकविप्रियायांटीकायांवरणा
ख्यायांत्रयोदशोतरंगः १३॥ ॥ ॥ श्री ॥

**मू॰ अथउपमालंकार दो॰ रूपसीलगुनहो
यसमजेपांकीौहूअनुसार॥ तासोंउपमाक
हतकविकेसवबहुतप्रकार १॥** ॥टी॰उप
मालंकार रूपसीलजो गुनहैसो समकाहूप्रकारतें हो
य १॥ **॥मू॰ उपमानाम दोहा॥संसपहेतुअ
भूतअतिअद्भुतविक्रियजानि॥दूषनभूषन
मोहमयनियमगुनाधिकआन २॥** ॥टी॰
संसयउपमासेलेकरदसउपमाकोनाम यादोहामें
कहेहैं॥२॥ **॥मू॰ अतिशयउत्प्रेक्षितकहौ
॥ श्लेष धर्मविपरीत॥निर्नयलक्षनको
पमाअसंभाचिंतामीत ३॥** ॥टी॰ अतिशयउ
त्प्रेक्षितयहजोदूसरो दोहाहैयामें आठउपमाकेनाम
हैं॥३॥ **॥मू॰दो॰उपमाभेदअनेकहैंमैबरनेंइ
कवीस॥बुधिविरोधमालोपमाऔरिपरस्परई
स॥४॥** ॥टी॰ विरोधीबुद्धिहोयसो विरोधोपमा मा
लोपमा अरूपरस्परोपमा ईसकविको संबोधनहै य
हतीन दोहामिलकर एकईसभेदउपमाकेभये अरु
संकीरनउपमा लेकरबाईसभेद उपमाकेहोतहैं॥ नं

कीरनबाईस ऐसोभीपाठहै ४॥ ॥मू० अथसंस
योपमा दोहा॥जहाँनहींनिरधारकछुसब
संदेहसुरूप॥सोसंसयउपमासदाबरनतहैं
कविभूप ५॥ ॥टी० जहाँनिरधार निश्चैनहोयस
बसंदेहरूपहोय ५॥ ॥मू० रसिकप्रिया सवैया
षंजनहैमनरंजनकेसबरंजननैनकिधौंमति
जीकी॥मीठीसुधाकीसुधाधरकीदुतिदंतन
कीकिधौंदाडिमहीकी॥चंदभलोमुषचंद
किधौंसषिसूरतिकामकीकान्हकीनीकी॥
कोमलपंकजकेपदपंकजप्रानपियारेकिमू
रतिपीकी ६॥ ॥टी० नायकावचन सषीप्रति षं
जनमनकेआनंददातानाहैं कैनायककेनेत्र मीठोसुधा
है केसुधाधरअधर प्रानप्यारेहैंकीप्रीतमकोमूर्त्ति प्यारीहै
इत्यादिपद सुगम॥ इहाँसंसयहीराखोयातैं उपमानोप
मेयनाहीं ६॥ ॥मू० हेतुउपमा दो० होतकोम
हूहेतुतैंअतिउत्तमसोहीन॥ताहीसों हेतोप
माकेसवकहतप्रवीन ७॥ ॥टी० हेतोपमा॥
कोईएककारनतैं हीनजोवस्तु सोउत्तमहोय ७॥ ॥
मू० यथा क० अमलकमलकुलकलितललि
तगतिवेलिसोंवलितमधुमाधवीकोपानिए
॥मृगमदमरदिकपूरधूरिचूरिपागकेसरिको
केसवविलासपहिचानिए॥केलिकैचमेलीक

रि चंपकसौं केलिसेद्र सेवतीसमेत हेतु केतकी सौंजानिए॥ हिलिमिलिमालतीसौं आवतसमी रजवतवतेरोमुषवासस्वाससौंवषानिए ८॥ टी० सषीवचननायकासौं जनपवनवहततवतेरी मु वासऔतेरेमुषकी वासतौंबषानोजात अमलकमल केकुलको परागलिएहोय औबेलिमाधवी वासंती लताको मकरंदभीलिएरहै मृगमदकस्तूरीको मर्दन किएहोय अरुकपूरकोभीचूरन पुनकेसरिविलासीहो य चमेलीकोधामके चंपकसौं केलिकरै अरुसेवती केतकीसौं हेतुकिएहहाँपवनमुषवासतैं अतुत्तम ८

मू० अभूतोपमा दोहा॥ उपमाजायकहीनहीं जाकोरूपनिहारि॥ सोअभूतउपमाकहीके सबदासविचारि ९॥ ॥टी० अभूतोपमा उपमा नाहींकहीजाय ९॥ ॥मू० रसिकप्रिया क० दुरि है क्यौंभूषनबसनदुतिजोवनकोदेहहूकी जोतिहोतद्यौसऐसीरातिहै॥ नाहकोसुवास लागेव्हैहै कैसीकेसवसुभावहीकीवासभौंर भीरफारैषातिहै॥ देषितेरीसूरतिकोमूरतिबि सूरतिहौंलालनिकेदृगदेषिबेकौंललचातिहै ॥चालिहै क्यौंचंदमुषीकुचनिकेभारभएकंच नकेभारतोलचकिलंकजातिहै १० ॥ ॥टी० सषीवनसषीप्रति नायककौं सुनायके याकेभूषन त्र

सनजोबन अवस्याकी दुतिकैसे दुरिहै देहकी जोति तें दिनऐसी रातिहोजाति अरुनाहकी सुबासलगे कहाहोहिगी सुभावकी बासतें तौभ्रमर घेरेरहन ते रीसूरतिकीमूरति देषिकेंविसरतिहौं अबै लालनैंना हीं देषी कुचभारतें केसवचलेगी कचभारजोनाहीं म हत दुहांदिनसी राति चंदमषीमें कोईउपमा निका सिसो नाहींकाहे नाहकी सुबासलगे इत्यादिपदनमें निकासैतौउपमा सोनाकी उपमा नाहींकहोजात य हअर्थ १०॥ ॥मू० अद्भुतोपमा दो० जैसीभईन होतिअब आगेकहेनकोय॥ केसवऐसीब रनिए अद्भुतउपमाहोय ११॥ ॥टी० अथअद्भु तउपमा॥ आगेकहे नकोयमानैंतीनकालजानिए ११॥ ॥ मू० यथा स० प्रीतमकोअपमाननिमानानि ग्यानसयाननिरीझरिझावै॥ वंकविलोकनि बोलअमोलनिबोलितौकेसवमोदबढावै ॥हावहूभावविभावकेभावप्रभावकेभाव निचित्तचुरावै॥ऐसोविलासजोहोयसरोज मैतौउपमामुषतेरेकीपावै १२॥ ॥टी० सषी नायकाकीखुसामदकरतहै कैऐसो विलासजो कमल में होय तौतेरेमुषकी समताकोपावै सोनाहीसंभवत यातैंअद्भुत प्रीतमकोसमयपाय अपमानमान पुन य ह ग्यानयहकाल रीझबेको यहरिझायबेको तिरछोवि

तवन अमोलवचन अरु आनताहि रीतितें वो लेतीआ
उ ताके आनंदको बढाय देय ॥ कहूं पाठहै हा
वहू भावसुभावके भावप्रभावकेभावनि चित्तचुरावै
वामैं हावभी होय औभावविभावअनुभाव संचारीया
ई औसुभावकेभावनसौं मनहरन क्रियाकेभावसम
र्थ हैभामिनी ताकरिकेचित्तचुरावै १२॥ ॥मू० अ
थविक्रियउपमा दो० केहूक्यौंहूवरनिए को
नहुएकउपाइ॥ विक्रियउपमाहोततहँ ब
रनतकेसोराइ १३॥ ॥ टी०अथविक्रिय उपमा
क्यौंहू कोईतरह बरनिये कोई एकउपायतें १३॥
मू० क० केसोदासकुंदनकेकोसतेंप्रकास
मानचिंतामनिओपनीसोओपिकेउतारि
सी॥ इंदुकेउदोततेंउकीरिएसीकाढीसव
सारससरससोभासारतेंनिकारीसी॥ सौंधेकेसी
सोधीदेहसुधामौंसुधारीपांवधारीदेवलो
कतेंकिसिंधुतेंउधारीसी॥ आजुयासौंहंसि
षेलिबोलिचालिलेहुलालकालिएकग्वालि
ल्यावौंकामकीकुमारीसी १४॥ ॥ टी० दूती
कीउक्तिनायकप्रति कुंदनसोबरनताके कोसतेतो
प्रकासमान अर्थ सोनेकेसंपुटतें अभिप्राययहध
नवानकीकन्या अरुचिंतामनजैसीचाहैतैसीदेय
ताकीओपनीतेंओपी अर्थजिलाकरी अरुचंद्रमा

कोउद्दोत प्रकासतें उकीरीषेदिकैंकाढी अर्थ दि
नमेउँजियारेमैंनाहीँल्यायसकी चंदकीजोतिमैंया
कीजोतिमिलिगई तबलिआई अरुसारसकमल
ताकी जोसोभाताको सारांस तातेंनिकासीसीचि
त्रितकरीसी उत्तमोत्तमसुगंधतैंसोधीअर्थसिहारी है
देंहअंग अमृततैंसुधारी कैदेवलोकतें आईकै
समुद्रतैं ऐसीसौं आजहँसिषेलिमिलिलेहु काल
कामकीकुमारीसरीषी बालालेआवोंगी यामैंया
कीनिंदानाहीं १४॥ ॥मू॰ अथदूषनोपमा॥
दोहा जहँदूषनगनबर्निए भूषनभावदुरा
य॥दूषनउपमाहोतितहँबुधजनकहतब
नाय १५॥ ॥टी॰ दूषनोपमा जहाँदोषदिषादूए
भूषनछिपाइए १५॥ ॥मू॰ रसिकप्रिया क॰ज्यों
कहोकेसवसोमसरोजसुधासुरभृंगनिदेंह
दहेहैं॥दाडिमकेफलश्रीफलविद्रुमहाट
ककोटिककष्टसहेहैं॥कोककपोतकरीअ
हिकेसरिकोकिलकीरकुचीलकहेहैं॥अंग
अनूपमवात्रियकेउनकीउपमाकहँवेई र
हेहैं १६॥टी॰नायकविचारकरतहैकै जोमुषकी
उपमासोचंद्रमाकीदेहहैंतो सुधासुरजोहै अमृत
केपीवनहारदेवसोचंद्रमाकीदेंहको दाहत देव
तनकेअमृतकेपियेतेंचंद्रमाकीएककलाघटि

नातयहकथाहै अरुजोसरोजकहैं तोंवहभृंगपाय
नतें रचावत अरुअनारश्रीफलविद्रुममूँगा हाट
कसोनानेबकुतकष्टपाए दाडिमफटत नरियरभी
षनसेचत मूँगाषरादचढत यातें रसनसिरअधर
लायकनाहीं कोकचक्रवाक कपोतकरीहाथी अ
हिसर्प कोकिलासुगा एसकुचिरहैं अंगजोवाति
यकेअनूपमहैं उनकोउपमालायक वेईअंगहैं
इनसबकोभूषनदुराए दूषनप्रगटे १६॥ ॥मू॰
भूषनोपमा दो॰ दूषनदूरिदुरायजहँ बरन
तभूषनभाय॥भूषनउपमा होततहँबरनत
कविकविराय १७॥ ॥टी॰भूषनोपमा॥ दूष
नदुराय भूषनबरनैं १७॥ ॥मू॰ क॰ सुवरनज्
तसुरवरनिकलितप्रुनिभैरोसोमिलितगति
ललितवितानीहै॥पावनप्रगटदुतिदुजन
कोदेषियतदीपतिदीपतिअतिश्रुतिसुपद
नीहै॥सोभासुभसानीपरमारथनिधानीदी
हकलुषकृपानीजानीसबजगजानीहै॥ पू
रबकेपूरेपुन्यसुनिएप्रवीनरायतेरीबानीमे
रीरानीगंगाकोसोपानीहै १८॥ ॥टी॰ कोईस
षीकीउक्तिप्रवीनरायप्रति कैहेप्रवीनराय तेरीबा
नीगंगाजलसीहै गंगापक्ष सुंदरहैजाकोवरन रू
प अरुसुरदेवतें कलितललितहै भैरवमहादेव

सोमिलिकैंचलीगतिजाकी ललितवितानीहै सोजा
कीसुकूता सोनाहीहै परमारथकी निधिबडेपापकी
तरवारजगतजानतपावनप्रगटद्विजपक्षीकी वाश्रासन
जहाँ देषिबेमे आवत दीपतिजाकीवेदमैंबरनी पू
रबकेपुन्यतैंपाए वानीपक्ष सुंदरबरन अक्षरसुर
षरजादि भैरवरागतैंमिलत गतिलपभीललितहै
पावनहै वेमेलरागनाही मिलत द्विजदसनदेषिबे
मैं तैंपावहैदीपतिजाकी श्रुतिश्रवनकोसुषदाता
अंगकीसोभासोसनी परमारथईस्वरकेगुनगावतहै
याहीतैं कलुषपापकीकृपानीसबेजानत इहांश्लेष
मैंशब्दकेअर्थ सोसमतालीजिए इहाँदूषनदुरायबे
मैं तात्पर्जनहीं अरुभूषनकीचाहनही यहभेद १८

॥मू॰ अथमोहोपमा दो॰ रूपककेअनुरूप
ज्यौंकौंनहुविधिमनजाय॥ ताहीसोमोहोप
मासकलकहतकविराय १९॥ ॥टी॰ मोहोप
मा जोकाहूकोरूपहोइअनुरूपताकेसमान ताहीवस्तु
मेमनजाय वाकेसमानयहहैऐसीबातविचारिकरिएता
सोमोहोपमाकहत १९॥ ॥मू॰ क॰ षेलतनषेल
कछूहाँसीनहँसतहरिसुनतनकानगानता
नवानसीवहै॥ ओढतनअंबरनिडोलतदिगं
बरसेसंबरज्यौंसंबरारिदुषदैहकोकहै॥ भू
लहूनसूँघैफूलफूलिकुँमिलातजातषातबी

रा हूनबानकाहूसोसुनैक है देषिदेषिमुषचंद्र कैस
बचकोरसम चंदमुषीचंदहूकेबिंबसौं चिनैरा
है २०॥ ॥टी० सषीकीउक्तिनायकाप्रति कैहैप्यारी
चंदमुषीनायक तेरेमुषकीओरहेरि अरुचकोरकी
तरह चंद्रमाकीओर हेररहत अर्थतेरेमुषकीआ
कृतचंद्रमामैं मिलत यातैं बिंबमंडल देषत षेलस
तरंजादिकनहीं षेलत हाँसीकाहूसौं नाहींकरत
तानबानसीभी नाहींसुनत नहीवस्त्र धारतनहीं उ
घारेरहत अरुसंबरनामजलआवत तौसंबरार काम
कीरीतितैंजरतहैं प्रमान अंबरतैं परैलागीसंबरकी
धारहै किंवाजैसे संबरदैत्यको दुषद्यो तैसेफूल ध
रेकुँभिलायजात तिनकोभीनाहीसूँघत अरुपाननहीं
षात बातनहींबोलत मुषकेसद्रिसचंद्रमाहै सोमोह
सौंदेषत २०॥ ॥मू० नियमोपमालक्षन दो०
एकहिसमजहँबरनिएमनक्रमवचनविसे
ष॥केसोदासप्रकासवसनियमोपमासुलेष
२१॥ ॥टी० नियमोपमा एकहीकी समताजहाँबर
निए सुभयेसोभीपाठहै तहाँएककीसुभसोभा जहाँ
बरनिए २१॥ ॥मू० क० कलितकलंककेतुकेतु
अरिसेतुगातभोगजोगकोअजोगरोगहीको
थलसो॥पूनोहीकोपूरनपैप्रतिदिनदूनोदोत
छिनछिनछीनछबिछीलरकोजलसो॥ चंद्रसोजु ब

रनतरामचंद्रकीदुहाईसोहैमतिमंदकवि
केसवकुसलसे॥सुंदरसुवासअरुकोमल
अमलअतिसीताजूकोमुषससिकेवलकम
लसो २२॥ ॥टी० उक्तिसषीकीसषीप्रति कैजान
कीकेमुषसो एककमलहै यामैं एककमलसो सम
ताचंद्रमासौंनाहीं चंद्रमाकैसोहै ग्रहन कियोहैकलं
करूपकेतु जानेपताका अरुकेतग्रहतासौंहै बैर स
रीरसपेतअरुभोगकेजोगकोहैजाको औजोगरोगको
थान एकपूरनमासीकोपूरनपरै तोप्रतिदिनदूनोक
भीघटत कभीबढत अरुछिनछिनमें छीनकैसो हो
त जैसोछीलर उरकोजल जो बहुतगहिरो नहोयता
को नामभीछीलर रामचंद्रकी दुहाई सपथकरकह
तिहौं जेकविचंदसमबरनतहैं सोमतिमंदहैं कैस
बबातमें कुसलसो कुसलप्रवीनहैंअथे नहींप्रवीन
हैं कमलसुंदरसुवासजुक्त अरुअमलनिर्मलहै औ
अतिकोमलहै २२॥ ॥मू० गुनाधिकोपमा अ
धिकनहूतैंअधिकगुनजहांबरनियतुहोय
॥तासौंगुनअधिकोपमा कहतसयानेलोय
२३॥ ॥टी० गुनाधिकोपमा अधिकतैंअधिकगुन
२३॥ ॥मू० क० वेतुरंगसेतरंगसंगएकएअ
नेकहैसुरंगअंगरंगपेकुरंगभीतसे॥ एनिसं
कअंकजन्तबेससंककेसोदासएकलंकरंक

वेकलंकहीकलीतसे॥ वेपियेसुधाहिए सुधानिधीसकेरसेजुसाँचहूसुनीतएपुनीं तवेपुनीतसे॥ देहिएदिएबिनाविनादिए नदेहिवेभएनहैनहोहिँगेनइंद्रइंद्रजीत से २४॥ ॥टी० इंद्रजोहैसो इंद्रजीत॥ समाननभ योहै नहैनहोयगो काहेकेवेजोत्रिकालकइंद्रहैँ इं द्रअनेक यातेंतिनकेसे तुरंगकोएकउच्चैःश्रवा तु रंगरहो अरुइनके अनेकरंगकेतुरंगहैं सोअनेक कोईरंगमीत चंद्रमाकेरंगके कोईआनरंगके किं वाकुरंगहरिनकेमीतहैं अतिचंचल एजग्यके अं क कुंड तें निसंक है वे जग्य तें॥ ससंकहैं सत जग्यकरिकोईइंद्रनहोय इन्हेकलंकनाहीं उन्हेगौ तमपतिनीकोकलंकलगो वेसुधाअमृतपानकरत एसुधानिधि चंद्रमाको ईससिवतिनकी भक्तिकोर सपीवत एसुनीतकरतवे कुनीतकरत अर्थवत्रा सुरकोपापलगो एविनदियेदेत वेविनादियेनाहीं देत इंद्रतेंअधिकगुन इंद्रजीतकेकहे २४॥ ॥मू०

अथअतिसयोपमा दो० एककरूएकेविषे सदाँहोयरसएक॥ अतिसयउपमाहोतित हंबरनतसहितविवेक २५॥ ॥टी० अथ अ तिशयोपमा एककोईवस्तुएकहीविषैंएकरस ए कतरहकहिए रूबहीँविकारकोप्राप्तनाहींभई॥ऐ

सोवरननकरिए सोअतिसयोपमा २५॥ ॥ मू० क०
केसोदासप्रगटप्रकाससोअकासपुनि इ
स्वरकेसीसरजनीसअवरेषिए॥ थलथल
जलजलअमलअचलअतिकोमलकमल
बहुबरनविसेषिए॥ मुकुरकठोरबकुनाहि
नअचलजसवसुधासुधानित्रियअधरनिले
षिए॥ एकरसएकरूपजाकीगीतासीतासुनि
तेरोसोवदनतैसोतोहीविषैदेषिए २६॥ ॥
टी० रजनीसचंद्रमाकेसोहै जाकोप्रकासआकासमें
सिवभालवासी अरुकमलकेसोहैथल कमलथल
थल जलकमलजलजल अमलनिर्मलदोनौं कमल
अचलचलायमाननाहीं अतिकोमलकमल अरुच
हुरंगकोविसेषहै मुकुरदरपन एतौकठोर दूसरअ
चलनाहीं अरुवकुठौरमें जसनाहीं अरुसुधावसु
धाकीइस्त्रीनके अधरमें विचारिएहै अरुएकरस
एकरूप जाकोहैगीतयातैं हेजानकीतेरेमुखसौं ता
हीविषैंविसेषहै चंद्रमाआदि ठौरठौर तेरेमुषनोंही
में २६॥ ॥ मू० उत्प्रेक्षोपमा दोहा एकैदीप
तिएककी होयअनेकनिमाँहि॥ उत्प्रेक्षित
उपमासुनौंकहीकविनकेनाहि २७॥ ॥
टी० उत्प्रेक्षोपमा एकजोदीपतिप्रकाससोभा एक
कीसी अनेकनमेंहोय तासौंउत्प्रेक्षितोपमाकहत

२७॥ ॥मू॰ क॰ न्यारेहीगुमानमनमीननके मानियतुमानियतुसबहीसुकेसेनजताइए॥ पंचबानबाननिकेआनआनभांतिगर्वबाढ्योपरिमानबिनुकैसेकैबताइए॥ केसोदासविलासगीतरंगअंगनिकुरंगअंगनानिहूकेअंगननिगाइए॥ सीताजीकेनयननिकाईहमहीमेंहैसुझूठेहैंकमलषंजरीटहूमेंपाइए २८॥ ॥टी॰ न्यारोसंसारसोंजुदोगुमानगौनकेमनमैं मानिएहै सीताजूकेनैननकीनिकाई सोभासोहमहींमेंहै आनमैंनाहींयह मीनजानतिहै सोझूठीआनहूमें पाइयतुहै यहअन्वयजाननसबैकोईहैं सोकैसेनजताइए अरुपंचबान कामकेबाननकीआन॥ मृजादजातगर्वकीहै सोपरिमानहीनबाढो ताकोकैसेनाहींबताइए हमसोपननेहनादिहैं अरुविलाससहितगीतके कुरंगहरिनकी अंगनाहरनीताके अंगनमैंगाइएहै एकजानकीकेनेत्रनकी सोभामीनादिकअनेकमैं बरनी २८॥

मू॰ अश्लेषोपमा दो॰ जहांसुरूपप्रयोगिएसब्दएकहीअर्थ॥ केसोतासौंकहतहैं श्लेषोपमासमर्थ २९॥ ॥टी॰ अश्लेषोपमा॥ एकरूपकोशब्दकहिए उपमानउपमेय सौंभिन्न रूपहोयकै नहीअर्थकरिलगै २९॥ ॥मू॰

क० सगुनसरससबअंगरागरंजितहैसुभगसु
सभागबडेभागबागपाइए॥सुंदरसुवास
तनुकोमलअमलमनषोडसबरषमहह
रषबढाइए॥वलिनललितवासकेसोहा
ससाविलासिसुंदरिसिंगारित्याईगहरुन
लाइए॥चातुरीकिसालामाँहचातुरहैनंद
लालाचंपेकीसीमालाबालाउरउरलाइए
३०॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनायकप्रति हैनंदलाल
यहजोचातुरीकीसालाग्रहहैजामैं चित्रकारीआदि
चतुराईकरीहै किंवाकोईउपरीआवेतो देषिनास
के ताकेमाँह वीचमैं आतुरहोयके चंचलहोयके
कहूंचातुरी व्हैएभीपाठहै चंपककीमालासद्रिस जो
यहबालाहै सोउरमैंलगाइए मालाकेसीहैगुनसू
त्रसहित रसजामेबसै अंगपपुरी ताकेरागतैं अनु
रागतैंरंजितहै हैसभागीबडेभागतैं मिलत अनेक
बागके पुष्पलगेहैं गूथेहैं फेरसुंदरहै उत्तमकी गो
ई सुवासहैकोमलहै अमलहैधूरनाहींपगी षोड
सबरषके पानीकीपाईहै ललितवासवारी उत्तम
बागकी बालापक्ष गुनसहितकाव्यकोजाननहारी
रसवसमध्या॥अंगरागभीलगायोहै षोडसबरष
कीस्यामाहै बडेभागतैंपाई वलितललितवासघर
की वस्त्रजाकेललितहैं विलासकरतसषीगनमैं या

मैं सर्वपदमैंश्लेषनाहीं ३०॥ ॥ मू० धर्मोपमा दो०
एकधर्मकोएकअंगजहाँजानियतुहोय॥
ताहीसौंधर्मोपमाकहतसयानोलोय ३१॥ ॥
टी० अथधर्मोपमा एकधर्मको जहाँएकअंगहोय
कोईरीतितैं जहाँवरनिए ३१॥ ॥मू० क० ऊजरे
उदारउरवासुकीविराजमानहारकेसमान
उपमानआनदोहिए॥सोभितजटानिबीच
गंगाजीकेजलबिंदुकुंदकलिकासेकेसोरा
यमनमोहिए॥नषकीसीरेषाचंदचंदनसी
चारुरजअंजनसिंगारेहैगरलरुचिरोहिए॥
सबसुषसिद्धसिवासोहैशिवजूकेसंगजावक
सोपावकलिलाररलग्योसोहिए ३२॥ ॥टी०
सिवउज्जलहैं उदारहैं उरबिषैंवासुकीसेसहैं कैसे
हैं वासुकीमालासमान औजटामैं गंगाजूहै कुंदक
लीसमान नषरेषासमान ससिभालविषैं रजधूरीचं
दनसमान सरीरमैं सोहत गरलविषकीरुचिअंजन
समान सर्वसुषकीसिद्धी पारवतीमहावरसरस अग्नि
लिलारमें अर्थततीयनेत्रमैंअग्नि है जहाँएकधर्मसंगरससजाकीए
कअंगआभासमानजानिए वासुकी हारकेसमान कहोसो
यातैंधर्मोपमा ३२॥ ॥मू० विपरीतोपमा दो०
केसवपूरेपुन्यकेतेईकहिएहीन॥तासौंविप
रीतोपमाकेसवकहतप्रवीन ३३॥ ॥टी० जे

पूरेपुन्यके तेहीनकहिए ३३॥ ॥मू० स० भूषित देहविभूतिदिगंबरनाहिनअंबरअंगनवीनों॥ दूरिकेसुंदरसुंदरीकेसवदौरिदरीनमैं मंदिरकीनौं॥ देषिविमंडितदंडनसोभुजदंडदुवोअसिदंडविहीनौं॥ राजनिश्रीरघुनाथकेराजकुमंडलछोडिकमंडललीनो ३४॥ ॥टी० जिनसूर राजनकीदेह विभूतितेंसंपनितें भूषितरही अरुदिकके अंबररहे अर्थआपनी दिसाके लाजराषनहाररहे तेअंबर वस्त्रहीनव्हैगए छाडकरिके सुंदरीपुरगिरकीदरीनमैं मंदिरवनाए अरुजिनकेभुजदंडविसेष मंडनदंडसोअर्थ सत्रुनको विसेषदंडदेतरहे तिनकेदोईभुजदंड असी तरवाररूपी दंडतें हीनहैं महाराज रामचंद्रकेराजमैं कुपृथ्वीमंडलछोडकेकमंडललीनो अर्थदंडीभए राजापूर्वकेपुन्यतेंराजसिरीतेंभरेरहे तेहीनव्हैगए ३४॥ ॥

मू० निर्नेयोपमा दोहा उपमाअरुउपमेयको जहंगुनदोषविचार॥ निर्नेयउपमाहोततहँ सबउपमनिकोसार ३५॥ ॥टी० निर्नेयोपमा उपमानऔउपमेयको जहाँगुनदोषविचारिए ३५॥ ॥

मू० क० एककहैअमलकमलमुषसीताजीको एककहैचंद्रमाईआनँदकोकंदरी॥ होइजोकमलतोरैनिमाहिसकुचैरीचंदजौतौवा

सरमेंहोयद्युतिमंदुरी॥वासरहीकमलरज
निहीमेंमुषचंदवासरहूरजनिविराजैजग
वंदरी॥देषेमुषभावतनदेष्योईकमलचं
दतातैंमुषमुषैसषिकमलनचंदरी ३६॥ ॥
टी० उक्तिसषीकीसषीप्रति हेसषी कविलोगजानके
केमुषको बरननकरत नहांएकेकहत अमलकमल
है अरुएकेकहत आनंदकोकंदमूल चंद्रमाईहै
सोनाहीहै जोकमलहोयतो रात्रीमेंसकुचै अरुजोचं
द्रहोयतो दिनमैंदुतिहीनहोयजाय यातेंकमल
दिनमें सोभावानचंदरात्रीमें अरुयहदिनरातिज
गतमैं वंदनीयहै अरुदेषतेंजैसेमुषभावत तैसोक
मलचंदनहींभावत यातेंमुषसदृसमुषहीहै नही
कमलनहीचंद्र कमलचंदको दोषकहोमुषकोगु
न ३६॥ ॥मू० लक्षनोपमा दो० लक्षनलक्ष्य
जुबरनियेबुधिबलबचनविलास॥ हैल
क्षनउपमासुयहबरनतकेसवदास ३७
॥टी० लक्षनोपमा एकवस्तुलक्षनहोय एकलक्ष्य
होय ३७॥ ॥मू० क० वासोमृगअंककहैं
तोसोंमृगनैनीसबैवासोंसुधाधरतोहूसु
धाधरमानिए॥ वहद्विजराजतेरेद्विजराजि
राजैवहकलानिधितोहूकलाकलितबषा
निए॥रतनाकरकेदोऊकेसवप्रकासक

रअंबरविलासकुवलयहितगानिए॥ वा केअतिसीतकरतूहींसीतासीतकरचंद्र मासीचंद्रमुषीसबजगजानिए ३८॥ ॥

टी० उक्तिसषीकीजानकीप्रति केहैजानकी चंद्रमासों सबकोई मृगअंककहतहैं मृगहैअंकमैंयातैं अरुतोसौंमृगनैनीकहत मृगसदृसनेत्रहैं अरुवहसुधाधरतोतूंहीअधरसुधाधरहै वहद्विजराजहैतोतुहीद्विजराजदसनताकोराजीपंगतिवारीहै वहकलानिधिहैतोतूहीं चातुर्जेकीकलाधरहै रतनाकरसमुद्रकोदोऊप्रकासकारीहै वहपुत्रतूंलक्ष्मीपुत्रीवहअंबरआकासविलासीहैतूं अंबरवस्त्रविलासिनीहै॥ यहकुवलयकुमुदिनकोहितकारी तूंकुवलयपृथ्वीवलयको वहसीतकरनवारीहै अरुतूंभीहेसीतासीतकरहै चंदमुषीचंद्रमासीतोकोसबजगजानत प्र० यहसबजगराज कुमारीकोकैसेजानिहै उ० जगतरूपरायतीसरीतुकमैं श्लेषकोलछनलागतहै दोऊसब्दनैंलछनजानिए यातैंश्लेषउपमानहीं चंद्रमा औरजानकीलक्ष्य मृगअंगऔ मृगनैनीइत्यादिलछन ३८॥ ॥मू० **असंभवोपमा दोहा जैसेभावनसंभवैतेसेकरतप्रकास॥ होतअसंभावितनहींउपमाकेसबदास ३९॥ ॥**

टी० असंभवोपमा जैसीवस्तुजामैंनहींभावे तैसीप्र

कासकरै ३९॥ ॥**मू० क० जैसे अतिसीतलसुवासमलयजमहि अमल अनल बुधिबल पहिचानिए॥ जैसे कौनौं काल बस कोमल कमल माहि केसरोई केसो दासकंटकसे जानिए॥ जैसे विधु सधर मधुर मधुमय महि मोहै मोह रूषविषविषम बषानिए॥ सुंदरि सुलोचनि सुवचनि सुहृदि तैसे तेरे मुष आषर परुष रुष मानिए ४०॥** ॥टी० मलयजनाम चंदन अतिसीतल है सुंदरवाससहित अरु अमलभी है बुद्धिके बलसों वामैं अनल अग्नि जानी जात प्रमान अतिसंघर्ष करै जो कोई अनल प्रगट चंदनतैं होई॥ अग्नी वामैं संभवै है नाहीं जैसे कोई कालके बसतैं कोमलकमलके कोसमैं केसरि जो है सो ईकंटसे होत है जैसे विधु सधर मधुर मधुमय महिमोको अर्थ जैसे विधु चंद्रमा सधर धारासहित अपंडित यह अर्थ है मम मैं मधुर नाम प्रियवस्तुको औसाद को विधु सधर अषंडित मधुर प्रिय जो माधुर्य नय है पृथ्वीको मोदत है मोह रूषविषैं गिनि मोह नाम मूर्छाताको रुषरहै जाको सोविषयकरत है सुंदरि हे सुलोचनि हे सुहृद कहीं पाठ सुदति भी है तैसहीं तेरे सुषके बरन परुष कठोर जानिए नहीं संभवसो ईकहो ४०॥ ॥**मू० विरोधोपमालक्षन दोहा**

जहँउपमाउपमेयसोंत्र्प्रातुसमाँनविरोध ॥ सोविरोधउपमासदाबरनतजिनमैंप्रबोध ४१॥ ॥टी० विरोधोपमा जहाँउपमाउपमेयविरोधहोय ४१॥ ॥ उदाहरण ॥ कोमलकमलकरकमलाकेभूषनको सोतासदूषनसरदसासिगायैहै॥ नसिरातिअमलअमलकमल ? निमयसीताकोवदनदेषिदाकोमलिनाहै॥ सीताकोवदनसबसुषकोसदनजाहिमोहतमदनदुषकदनानिकाहै है॥ [illegible] पलमाधोजुकैदेषिविनसोहै सिसीताकोवदनकहँ [illegible] ॥ ॥ टी० उक्तिसषीकोसषीप्रति [illegible] लहै अरुकलाश्रीकेकरकोभूषनहै ताकोदोषितकरनहारससीहै सरदससीमें सरदपद [illegible] हैं काहेसरदमेंकेतने [illegible] जातअरु कमलबहुतअमलहै सोभीमनिमय [illegible] ट जोजानकीकोमुषहैताकोंदेषि [illegible] कोमलिना हैहोत किंवाअतिअमलजोससिहै [illegible] मनिमय सीताकोमुषदेषिमलिनहोत [illegible] जानकीकोवदनजोहै सोसबसुषकोसदनघरहै जाकों देषिजाकोंनहीं हैमदऐसोरामभीहिजात [illegible] हैदुषकोकदन नासकारी सोजानकीकोवदन जो

औरउनगणकेवियोगसमें ससीदूषकातानोदुहै ड
हांवदनससिकोपरस्प विरोधहै ४२॥ ॥ज०
अथमालोपमा ॥ मदनमोहनकहोरू
पकोरूपककैसोमदनवदनएसोजाहिज
गमोहिए ॥ मदनवदनकेसोसोभाकोसदन
स्यामजैसोहैकमलरुचिलोचनानेयोहिए
॥ कैसोहैकमलजैसोआनंदकोकंदसु ॥ कै
सोहैसुकंदचंदजैसोउपमानटोहिए॥ कै
सोहैसुचंदवहकेसवकविकान्हसुनौआ
नंनारिजैसोतेरोमुखसोहिए ४३॥ ॥टी०
मालोपमा॥एककौएकसौं मिलाइकरकेजहांव
रनिएसोप्राचीनमतकीमालोपमा॥ सषीनायका
कौंसुसांमदनिमित्त कहीकैमदनकामकोसो मो
हनजोकृष्ण तिनकोरूप सौंदर्जताकोरूपकहैं सम
ताकरनवारोहै सोसुननायकाकहीके सोसुंदरता
कौंदेषिजगतमोहिजात तैसोहैसोभाकोसदनजो
स्याम सोमदनवदन कैसोहै कहिएसमानहै कमल
कीरुचिजाकेलोचननको जोहियेहै देषिएहै ना
यकाजैसी सुभआनंदको मूलहोयसो कंदकैसोहै
जाकोचंद्रमाको उपमानटोहिए अरुकहूँपाठहै
कैमदनमोहन कहोरूपकोरूपक कैसोहै मदन
वदन श्रीकृष्णजैसोजातैं जगमोहिएहै नायका

दनवदन सोभाकोसदनस्या मकैसोहै जैसोकमल रुचिवानजो लोचननमैं पोहोगूंदोरहत कमलकै सोहै जैसोआनंदकोकंद सुभचंद्रमाचंदभीकैसोहै जैसोकृस्न कृस्नकैसोहैतेरेमुष एकसौंएककोमिला यबरनेयह मालोपमामेचमत्कारनाहीं ४३॥ ॥

मू॰ परस्परोपमा दो॰ जहांअभेदबषानिए उपमेयोउपमान॥ तासोंपरस्परोपमाके सवदासबषान ४४॥ ॥टी॰ परस्परोपमा॥ परस्परउपमालागैअभेद ठहराइए ४४॥ ॥**मू॰ क॰ वारेनबडेनवृद्धनादिनैगृहस्थसिद्धबाव रेनबुद्धिवंतनारीऔननरसे॥ अंगोनअ नंगीगातऊजरेनमैलेमनस्यारऊनसरेर नथावरनचरसे॥दूबरेनमोटेरंकराजाऊ कहेनजायमरनअमरअरुआपनैनपर से॥वेदहूनकछुभेदपावतहैकेसोदासह रिजूसेहरिहरहरहैनहरिसे ४५ ॥** टी॰ काईसिष प्रनिगुरू शिवकंसवमे अभेदकरत केहरहो भाई हरजूसेहैं हरिभगवानसरीषेसिवहैं वालवृद्धनाहीं ग्रहस्तवैरागीभीनहीं इत्यादिपदसुगम ४५॥ ॥

मू॰ संकीर्णोपमा दो॰ बंधुचोरवादीसुहृदक ल्पवृक्षप्रभुजान॥ समरिपुसोदरआदिदै इवकेअर्थबषान ४६॥ ॥टी॰ उपमा वाच

कसब्दकहतहैं सास्त्रमें इवउपमावाचकहै ताके अर्थमें प्रबंधुआदिसब्दमवहैं ४६॥ ॥मू०क०

विधुकोसोबंधुकिधौंचोरहांसरसकोकि कुंदनिकोबादीकिधौंमोतिनिकोमीतहै ॥कल्पकलहंसकोकिछीरनिधिछविप्रस हिमगिरिप्रभाप्रभुपरमपुनीतहै॥ अमल अमितअंगगंगाकेतरंगसमसुधाकोसमु हरिपुरूपकोअभीतहै॥देसदेसदिसिदि सिपरमप्रकासमानकिधौंकेसोदासराम चंद्रजीकोगीतहै ४७॥इतिश्रीदुविधभूष नभूषितायांकविप्रियायांविसेषालंकारव र्नेनंनामचतुर्देशप्रभावः१४॥ ॥छ॥ टीका

विधुबंधुअर्थचंद्रमाके समान केहांसरसकोचुरा वनहारोयहआर्थी उपमाहै अर्थतें उपमाजानीजाति है कुंदनसोवनेवादकरनहार मोतीकोमित्र इहांकि धौं उत्प्रेक्षावासंदेहवाचकहै मीतउपमावाचीहै या तेंसंकर अहप्रकउपमेय श्रीरामकगीतकोअनेकउपमा नहै यातैंसंकीर्न कलहंसकोकल्पवृक्षहै समर्थ छीरनिधिकोछविनोप्रक्षकबृन्दनहार तूंभीमेरेस दृसहै हिमगिरिकीप्रभाकोनाथहै अमलअरुअमि तअंगहै जाकेगंगाकी लहरसमान सुधाकोअमृत कोसमुद्रहै रूपकेरूपबढाई ताकोवंधुहै किंवा न

पा रजततताकेरूपताकोभीबंधुहै देसदेसमें अरुदि
सिदिसिमे परमप्रकासकरिबेवारो किधौंरामचंद्र
जीकोगीतहै ४७॥ हीनउपमाअधिकउपमादोसहै
कोकिलकीहीनकी उपमाकेकोदई यहदोहा क
ल्पितहै॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराज कासिराजश्री
मदीस्वरीप्रसादसिंह स्याज्ञाभिगामी ललितपुरनि
वासीहरिजन कवीस्वरात्मजेन सरदाराष्य कवीस्व
रेणविरचितायांकविप्रियायांटीकायां विसेषालंका
रवर्ननंनामचतुर्दसप्रकासः १४॥ श्री॥ ॥ ॥

**मू॰ अथनषसिषवर्ननं दो॰ सविताकेप
रतापज्यौं बरनैकविताअंग॥ कहौंजथाम
तिवरनिस्यौं वनिताकेप्रत्यंग १॥** ॥ टी॰ न
षसिषप्राचीनपुस्तकनमें नाहींमिलत परंतुहमा
रेजानके सबछोडऐसे कवित्तवनावनहार आन
नाहीयातें लिषियतुहै सवितासूर्जकेप्रतापतें क
विताबरनी तैसहीं अब वनिताके प्रत्यंगसबै अंग
वर्ननकरतहैं १॥ ॥ **मू॰ दोहा कहीजुपूर
नपंडितनिताकोजितनीजानि॥ तिनकीक
विताअंगकीउपमाकहौंबषानि २॥** ॥
टी॰ पूरनहीपंडितकही जाकोजितनीजानसमुझ २
॥ **मू॰ दो॰ जगकेदेवीदेवकेश्रीहरिदेवव
षान॥ तिनहरिकीश्रीराधिकाइष्टदेवता**

जानि ३॥ ॥टी० जगतिकेजेदेवी देवहैंतेश्रोह रिदेवकोबषानत तिनकुलकीश्रीराधा इष्टदेवताहैं ॥३॥ ॥मू० दो० भूषिततिनकेभूषननित्रिभु वनपतिकेश्रंग॥तिनकेकेसवदासकवि बरनतहैंप्रसंग ४॥ ॥टी०लीलाकरेनव श्रापनेभू षनहरिको पहिरावत ताराधाकेकेसवदास प्रसंगएकश्रं गसेलेकैजुदेजुदे सर्वांगबरनतहैं ४॥मू० दो० नषतैंसिष लौंबरनिएदेवीदीपतिदेषि॥सिषतैंनषलौंमानुषी केसवदासबिसेषि ५॥टी०नषतैंसिषपर्यंतदेवीकीदीप्ति श्ररुदेवपाँयतैं मानुषीमनुष्यसिरतैंनषलौंबरनिए यिसेषकर के ५॥ ॥मू० चरनउपमा दो० उपमाश्रो रसमानसबदूतनोभेदबषान॥जावक जुतपगबरनिएमेहंदीसंजुतपान ६॥ ॥ टी० चरनउपमा उपमानश्रानचरनकरकेएक हैंपरंतुचरनमहावरसहित हाथमेहंदीजुत ६ ॥ मू० जावकवर्ननं दोहा रागरजोगुनकी प्रगटप्रतिपक्षी श्रोभाग॥रंगभूमिजावक बरनिकोपरागश्रनुराग ७॥ ॥टी० जावक वर्ननं रजोगुनलालहै भाग प्रातसमय तामें ला लीहोतहै ताकोप्रति पक्षीसत्रुहै प्रतप्राचीकोभा ग ऐसोभीपाठहै तैसोहै श्रौरंगभूमिभी लालहोइ है कोपकोरंगश्रनुरागकोरंग एसबलालजानिए॥

७॥ ॥मू० क० कोमलअमलताकीरंगभूमिकैधौंयहसोभियतआँगनकैसोभाकेसदनको॥अरुनदलनिपरकीनोकैतरनिकोपजीत्योकिधौंरजोगुनराजिवकेगनको॥पलपलप्रनयकरतकिधौंकेसोदासलागिरह्योपूरवानुरागपियमनको॥एरीवृषभानकीकुमारीतेरेपाँयसोहैंजावककोरंगकैसुहागसोनिजनको॥

८॥ ॥टी० कोमलताअरुअमलताकीयहरंगभूमिहै कैसोभाकेघरको आँगनहै कैअरुनदलपत्रकमल वाअंनसुमन तापैंसूर्जेने कोपकीनोहै कैरजोगुनजो कमलकेगनसमूहको रहोसोनजीत्यो कैपलपल प्रनयप्रेमकरत पियको पूर्वानुरागलागिगयो हैवृषभानकीकुमारी राधातेरे पाँयमें जावकमहावरकोरंगसोहैहै कैसपतिनीकोसुहागहै ८॥ ॥मू० पाँववर्नेनं दो०॥अतिकोमलपदबरनिएपल्लवकमलसमान॥जलजकमलसेचरनकहिकरकहिंथलजप्रमान ९॥ ॥टी० पाँववर्नेनं बहुतजेकोमलपल्लवपत्र सोकैसे कमलसमान अर्थकठोरपत्रसेनाहीं पुनजलजकंजथलजगुलाब ९

॥मू० क० गंगाजूकेजलमध्यकंठकेप्रमान

पैठिपढिपढिसूरमंत्रआनंदबढावहीं॥ केसोदासघामजलसीतसहैएकरसठाढे एकपाँवकोटिकलपनसावहीं॥ कोमल अमलभयेकमलानिवासभएसुंदरसुवासमनजदपिअमावहीं॥ पायोपदअमुतपद्मिनिपद्मिनितेरेपदपदवीकोपरपैनपावहीं १०॥ टी० पद्मिनिकमलनीनेंअमृऐसोपुत्रऐसीबडाईपाई परंतुहेपद्मिनीतेरेपदकीपदवीनाहीं बडाईएकपाँवतेंभीनहींपाई गंगाजीमेंनपकरोकंठनाईबैठिकेअरुसूर्जमंत्रजपोघामजलसीतभीसहोएकपाँदुठाढेरहो कोटिकल्पवितायदयो कहूंचितनचलावईऐसोभीपाठहैयातेंकोमलभीभएअमलभीभएलक्ष्मीकेनिवासभएसुगंधितभएपरतोपदकीपदवीनहींपाई १०

मू० पाद्गुलीवर्नेनं दो० अँगुलीचंपककीकलीजीवनमूरिसमान॥ताराखिससिसुमनमनुनगगनिनपनिसमान ११॥ टी० पाँवकीअंगुलीवर्नेनं चंपाकलीप्रीतमकीजीवनमूल ऐसीअंगुली औतारारविससीफूल मनीसमाननष ११॥ मू० दो० बिछियाबाँकअनौटकीनाहिनउपमाआन॥सोभाप्रभातरंगगतिहंसअंसतनुआन १२॥

टी० बाँकअनवटमैंभेदहै सोभाअतप्रभाजामैंरहै तरंगभीअंसकिरनहंससूर्जकी किंवाहंस बिछियाकिंवाहंसप्रमान चौंकिबाँकिपरैयाहवेंटुबामरालकेतननातमपतरसमान १२॥ मू०

स० चंपकलीदलहूतैं भलीपदअंगुलीबालकी रूपरसेहैं॥ सोभसुदेसलसैनषयोंजरप्रीतमके द्रिगदेवबसेहैं॥ बाँकअनौटबनीबिछियानिवि भूषितजीतिजरादृगसेहैं॥ केसवसोमसरोजनि ऊपरकोपिमनोतनत्रानकसेहैं १३॥ टी० चंपेकीक लीकेदलतैंभलीहैं बालकेपदनकीअंगुरी काहैयामेंरूपना हीं यामेंरूपहै अरुनषकैसेजानेजात मानौंप्रीतमकेदृगदेवस जेबसेहैं अरुबिछियाजराउजगेसहितकैसेजानेजातमानोचंद्र माऔसरोज केजीतिबेकेनिमित्त बषतरकसेहैं पदननेनषचं द्रमाजीतिबेकोपदकमलजीतिबेको प्रस्न यामैंसोमसरोजतैंपदअं गुलीनमैंन्यूनलच्छायोउ० सुगधाकेपदनकोवरनन किंवामानोचंद्र माकमलकेजीतवेकौंबषतरपहिरे १३॥ मू० नूपुरवर्ननं दो० नूपुररक्षाजंत्रमुनिलोचनगुनगनहार॥ जावक जसपाठकमधुपजाभिकवंदनिवार १४॥ ॥ ॥ टी० नूपुरवर्ननं रक्षाकेजंत्रहैंकैघौं रक्षाके मुनिहैं नंजरनिवारनहेतु गुनगनकेनेत्रहैं जाभिकपाहरूप्र मान जनुजगजामिक प्रजाप्रानके १४॥ ॥ मू० क० गनिनकेहारकिविहारकेपाहरूरूपकिधौं प्रतिहाररतिपतिकेनिलयके॥ हंसगतिना यककिगूढगुनगायककिश्रवनसुहायक क्रिमायकहैंमयके॥ केसवकमलमूलअलि कुलकुनतकिकैधौंप्रतिधुनितसुमनितनि

चयके॥ हाटकघटितमनिस्यामलजटित पगनूपुरजुगलकिधौंबाजेहैंविजपके १५

॥टी० गतिरूपइस्त्रीकेहारहैं कैविहारकेपाहरूहैं केकामघरकेप्रतिहारद्वारपालहैं हंसकीगतिके नायकसिक्षाकारीहैं कैपायनकेजेगुप्तगुनहैं ताकेगायकहैं कैस्रवन सुहावनहारमय दानवकेमायक मायकमायाकारहैं कमलके मूलमैं अलिभ्रमर तिनकेकुलकुनत बोलतहैं कुनतरतिसमयजो सब्द है ताकोनामकुनतहै कैरतिकूजतजो समूहताकी प्रतिधुनिके करनहारहैं सुवरनकेबनाए नील मनिके जडाए एनूपुरहैं कैविजयजोकरो सपलिन को रूपताकेबाजेहैं १५॥ ॥मू० जेहरिवर्ननं दो०

जेहरिजयकंकनकलितकेसवदाससुजान॥ मालासालासुभसभासीमासमसोपान १६॥

॥टी० जेहरिवर्ननं जीतिकोकंकनअनेकअर्थसब्दहै ताकोकलित सरीषोजानिए मालासी जेहरि ग्रहसीसुभकल्याननताकी सभासुषकोसीना अजाद सोपानसीढी १६॥ ॥मू० क० कोमलकमलकूलनूपुरनवलअलिकुलनकीमाला किधौंकेसवसुभायकी॥ चरनसरोवरसमीपकिधौंबिछियाकुननकलहंसनकोबैठकबनायकी॥ गजनिकोहंसनिकोजीतीग

तितेरीगतिबांधोजयककनकोसोभासुष दायको ॥ अमिलसुमिलसीढीमदनसद नकीकिजगमगैपगजुगजेहरिजरायको १७ ॥ ॥टी० कोमलजो कमल चरनहै॥तिनकेकूल निकटजोनूपुर भ्रमरनवलअलिहै ताकेकुलसमूकीकेसु भावकीसालाहैं केचरनरूपीसरोवर तलाव ताके नजीक बिछिया अनवट सोईकुनतबोलनके हं सहै बैठकबैठिबेकी सालाहै केहंसनकी अरुग ज़नकी जीतीहै तेरीगतिने गतिताकेनिमित्तताको जयकंकनबांधोहै सोभामदनके घरकीसीढीहै अमिल सुमिलनीचीऊंचो कैजेहरिहैजरायकी १७॥ ॥

मू० ऊरूवर्ननं दो० उरूकरीकरकेलिसम करभसोभसोलीन॥चक्रवाकथलपुलि नसमवरनिनितंबनिपीन १८॥ ॥टी०ऊ रूवर्ननं ऊरूसब्दतें संपूरनपायजानिए तोकोक रीहाथी अरुकेलाकेसमान. केलाकीउपमाकेल समयजानिए करभयेपहुंचाकोलैके कनिष्ट अं गुली सोभ सोभासोलीन चक्रवाकअस्त्रविसेष अरुकोईपक्षीभीकहत तहांसमतामें उपमा पुलिनथंलमें वालूकीसीढी सरीषीहोयजात ऐसोनितंबवरनिए आधेदोहामेंजंघा अरुआ धेदोहामें नितंबवरननहै १८॥ ॥मू० क०

कोमलअमलमुषीतेरेएजुगलजानुमेरेब लवीरजूकेमनहिहरतुहै॥सोरभसुभाय सुभरंभासोसदनअरूकेसवकरभहूको सोभानिदरतुहै॥कोटिरतिराजसिरताज ब्रजराजकोसोंदेषिदेषिगजराजलाजनिम रतहै॥मोचमोचमदरुचिसकलसकोच सोचसुधिआएसुंडनकोकुंडलीकरतहै॥ १९॥ ॥टी० सषीकीउक्तिनायकाप्रति केहेको मलकमलमुषी तेरेजोजुगलजंघाहैं सोमेरेबलवीर श्रीकृष्णकेमनकोहरतहै कहूँबलकोहरतपाठहै तहाँमूर्छितकरतहै सोरभसुगंध सुभाववारोसुभ सुंदररंभाजो कदलीहैसदनघर कहूँसदंभभीपाठ है तहाँताको दंभ अरु करभकीसोभाकोनिंदतहैं कोटिरतिराजकामदेवताकेसिरताज ब्रजराजकीसपति हैताकके गजराजलाजमें मरतहैं डारडारके मदरुचि सकलसकोच करिकेसुधितेरेजंघाकी करिकें किं वाआएतें सुंडकीकुंडली करिलेत १९॥ ॥मू०॥नि तंबवननं क० चहूँवोरविनचोरचाकच कचक्रमनिसुंदरसुदरसनदूरसनहीनेहैं ॥दितिसुतसुषनिघटाइबेकोंसुषरूपसुर निबडाइबेकोंकेसवप्रवीनेहैं॥सबहीके मननिहरनिकरिहरिहूकेमनमथिवेको

मनमथहाथलीनेहैं॥ रुचिसुचिसकुचिस केलिकैतरुनितेरेकाहूनएचतुरनितंबच ककीनेहैं २०॥ ॥टी० नितंबवर्नेनं चाहीवो रतैं चितके चोरहैं चाकजोचक्रकी आवृत्तीहै सो याकोचक्रमानके चकितहोयजात येकैसोहै च क्रसुंदरहै अरुसुदरसनचक्र औनितंबचक्रदर सनतैंहीनहै फेरसुदरसनकेसोहै द्विजसुतको दे त्य जोसो घटायबेको कहूँ पाठ सुतनभीहैतो त नघटाइबेवारोहै अरुसुषसुरदेवतानके सुषके बढावनहारहै प्रवीनहै यह नितंब चक्रकैसो है के सवहीके मनकोमथनहार अरुहरिकोमनमथ नहार जानमनमथजो कामताने हाथमें लियोहै यातें रुचिअरुसुचिता औसंकोचसकमेटिके हेत रुनीकोई नयोचतुरहै तानें नितंबरूपीचक्रकियो है २०॥ ॥मू० कटिउदररोमावलीवर्नेनं

दो० कटिअतिसूक्षमउदरदुतिचलदलद लउपमान॥ रोमलतात्तमधूमअतिचारु चिटीनिसमान २१॥ ॥टी० कटिउदररोमरा जीवर्नेनं॥ कटिअतिसूक्षमबरनोचाहौ उदरकी दुतिबरनिए अरुपीपरपत्रसो रोमराजीअंधका रधूम पिपीलिकायातेंस्याम आनभीजानिए २१ ॥ मू० क० कटिजथा भूतकीमिठाईजैसो

धुकीमुठाईजेसीस्पारकोढिठाईएसोक्तो
नछूह्रितुहै॥धीराकेसोहांसकेसोदास
दासीकेसोसुषसूरकोसोसंकअंकरंकके
सोबितुहै॥सूमकेसोदानमहामूढकेसो
ज्ञानगौरीगोराकेसोमानमेरजानसमुदितु
है॥ कोनेहैसवारीवृषभानकीकुमारीयहतेरीक
टिनिपटकपटकेसोहेतुहै २२॥ ॥टी०या
कवित्तमें कविकोअभिप्राययहदेषिबेमें है वस्तु
वस्तुनाही जेसेभूतकी मिठाई देषिबेमें आवतहै
नाहीं साधुकीअसत्तता कपूतकीढिठाई ऐसोक्षी
नसर्वरितुमें धीराकेहांस दासीकेसोसुषससीकोसु
षथोरो सूरकेसोसंका अंकसरीरमें सूरकोउत्सा
हहोतहै संकानाहीं संकामें वीररसकोभंग रंक
दरिद्रकोवित्तधन सूमकेसोदान औमहामूढके
सो ज्ञान एसबसूक्षम गौरीपार्वती गौर महादेव
होनोमाननीअरुमानी नही नहीं मानवारे अलगरह
त एमिलेरहत समुदित आनंदितरहत हे वृष
भानकी कुमारी कोनने सवारी हैतेरीकटिको य
हतोनिपटकपटको कारन है अरुयामें बहुतपद्स
देहकरावत २२॥ ॥मू० क० रोमावली
औउदरवर्नेनं॥किधौंकामबागवानयो
ईहैसिंगारबेलिसींचिकेबढाईनाभीकूप

मनमोहिए॥ किधौंहरिनैनषंजरीटनकेषे लिबेकीभूमिकेसोदासनषपंकरेषरोहि ए॥ किधौंचलदलपानपियकोकपटज्वर टूटिबेकोमंत्रलिषिलोचननिजोहिए॥ सुं दरउदरसुभसुंदरीकोरोमराजीकिधौंचि त्तचातुरीकीचोटीचारुसोहिए २३॥ ॥

टी० रोमावलीऔउदरवर्नेनं॥ कामबागवानने सिंगा ररसकीबेलीबोईहै अरुनाभीकूपतेंसींचीके बढाई है सोमनकोमोहत कैहरिकेनेत्रजो षंजनहैं ताके षेलिबेकीभूमि तामेंतिनकेनषकी पंकताकीरेषाहै केपीपरकेपत्रपे हरिकोकपटरूपीज्वर छूटिबेके हेतुजंत्रलिषेहै किंवा मंत्रलिषेहै यहनेत्रतेंजोहि एदेषिएहै सुंदरउदरसुंदरी नामक्याकी सुभ सुंदरजो रोमराजीहै तामेंकैधौं चतुरचित्त डूबोहै तेरे उदर वा नाभीकूप में ताकी चोटी है २३॥ ॥

॥मू० कुचवर्नेनं दो० चक्रवाककुचबरनिएकेसवकमलप्रमान॥ शिव गिरि घट मठ गुच्छ फल सुभ इभ कुंभसमान २४॥

॥टी० कुचवर्नेनं चक्रवाक कमल सिवपहार घट गुंबज फूल के गुच्छा फल इभ हाथीके कुंभसमान २४॥ ॥

मू० क० किधौंमनोहरमनिहारदुतिसुरषे लैंजोबनकलभकुंभसोभनदरसहैं॥ मोह

नीकेमठकिधौं॰ इंदिराकेमंदिरकिइंदीव रइंदुमुषीसौरभसरसहैं॥ आनँदकेकंद किधौं अंगद्वैअनंगहीकेबाढतजुकेसो दासबरसबरसहैं॥एरीवृषभानकीकुमारी तेरेकुचकिधौंरूपअनरूपजातरूपकेकरसहैं २५॥ ॥टी॰ एरीवृषभानकीकुमारी तेरे कुचहैं कैमनिके हारजोमनोहर दुतितिनको सोईसुरेषलतहैं कैसुरमहादेवषेलतहैं कै मन हरनहार प्रीतमकोमनषेलत कैजोबनरूपी कलभ हाथीको बालक ताके कुंभ आनगजकीसो भाकीनिंदाकरत कैमोहनीकेमठहैं कैलक्ष्मी॥के मंदिरहैं कैइंदीवरकमल किंवालक्षिमीकोमंदिरकमलहै तामैंइंदीवरस्यामकमलप्रमान इंदीवरंचनीलेस्मिन् अर्थऊपरस्याम नीचेगोरहैं हे चंदमुषीसौरभसुगंधसरसहैं इनमैं आनंदकेकंद हैंकैकामकेदोअंग बरसबरसप्रतिबढतजात कैतेरेरूपकेअनरूपजोन्यजातरूपस्वर्नताकेकलसहैं २५॥मू॰करभुजनषवर्ननं दो॰ करपंकजपल्लवबरनिभुजबिषलतासुपास॥रत्नतारका कुसुमसमनषरुचिकेसवदास २६॥ टी॰कर भुजनषवर्ननं करको कमलअरुपल्लवसे बरनिए अरुविषजलताकीलतामृनालसमअर्थ कमलकीजरहै कहुँ

बल्लरीभी पाठहै श्रोपासबांधिबेकोरज्जुऐसेभुज रलसरी
षी तारासरोषी कुसुमनषकीरुचि २६॥ ॥ मू०
क० केसोदासगोरेगोरेगोलकामसूलहर
भामिनीकेभुजमूलभाइूसेउनारेहैं॥ सोभा
सुषवरसतमाषनसेपरसतदरसतकंच
नसेकठिनसुधारेहैं॥ वलयवलितबाहुंदे
षिरीझेहरिनांहमानोमनपासिबेकोपासी
यौंबिचारेहैं॥ मलिनमृनालमुषपंकमैंदु
राएदुषदेषीजायछातिनमैंछेदकरिडारेहैं
॥२७॥ ॥टी० सषीकीउक्तिसषीप्रत केगोरेगो
रेश्ररुगोलकामजनितसूलकेहरनहारे जोभामि
निकेभुजहैंसो मूलतेषरादकेचढेसे हैं फेरकैसे
हैं सोभासुषताकौं बरसत श्ररु कोमलमाषनसे
देषिपरत श्ररुदेषतमैं सोबरनसे कठिनसुधारे
वलयकंकनलैं वलित जाकौंदेषि हरिरीझेजोस
बकेनाहहैं मानो मनकेपासिबेको पाससोविचा
रकरेहैं इन्हेदेषि मलिन होकेमृनाल पंकमैं दुरा
योमुषतोभीदेषो दुषनेवाकीछातीमैंछेदकियोहै २७॥ ॥
मू० क० कर भूषनवर्नेनं॥ गजराविराजेग
जमोतिनकेश्रतिनीकेजिनकोश्रजीतजो
तिकेसोदासगाईहै॥ वलयवलितकरकं
चनकलितमनिलालकीललितपौंचीपौंचि

नबनाईहै॥सेतपीतहरितमलकमलकति
लालस्यामलसुमिलमेरेस्याममनभाईहै॥
मानोसूरसोमकीकलासकेलिआपनीओ
आपनीसषीकोसुषपाइपहिराईहै २८॥
टी॰ करभूषनवर्ननं॥गजरामोतिनकेहैं जामेंनीफ
ताकीदीस अजीतगाइएहै वलयचूरीतैंवलित वे
ष्टितकरहै कंचनस्वर्नेतैंकलितजुक्तमनिलालना
निकजटित जोललितपहुँचीहैसो पहुंचनतैंवन
आईहै तेकईरंगकेहैं मुक्तगजरास्वेत कंचनपीत
काँचकीचूरीहरित ताचूरीकीमलकस्यामलहै औ
मनिलालसोअनमिलनहीहै सुमिलहै मेरेस्यामश्री
कृस्नकेमनमेंभाईहै सोमानोसूर्जने सोमकीकला
अरु अपनीभीसमेटिके आपनीसषीजोमृनाल
नी ताकोसुषपाय पहिराईहै २८॥ ॥मू॰ नषां
गुलीमुद्रिकावर्ननं क॰ गोरीगोरीआंगुरी
नितेसेरुचिरनषओरअतिपैनैंपैनैंरचि
रुचिकीनेहैं॥रतिजयलिषिबेकीलेषनि
सुरेषकिधौंमीनरथसारथीकेनोदननवीने
हैं॥किधौंकेसोदासपंचबानजूकेपंचबा
नसकलभुवनजिनिबसकरिदीनेहैं॥ कं
चनकलितमनिमूंदरीललितमानोंपियप
रिजनमनहाथकरिलीनेहैं २९॥ ॥टीका॥

नषांगुलीमुद्रिकावर्नेनं गोरीगोरीआंगुरीनमैंरातेसे अरुनसरीषे रुचिरसुंदरनषहैं औरअतिपैनेतीक्षननषके अग्रभागरचिके रुचिकांतिवानकरे विधिनैं रतिमैंजयलिषनकी कलमकीसुरेषाहै कैकामरथकेसारथीकी नोदनछरीहै नवीन कैकामके बानहैं मोहनादिक जिननेसकलभुवनको बसकरदए कंचनतैंकलितजुक्तमनितैं ललित मुद्रिका कैसीहै पियकेपरिजनके मनमानोहाथलिएहैं॥ २९॥ ॥मू० मेहँदीसंजुतहाथवर्नेनं॥स०॥ राधिकारूपनिधानकेपानन आनिमनोंछितिकीछबिछाई॥ दीहअदीहनसूक्षमथूलगहीद्रिगगोरीकी दोरिगोराई॥ मिहँदीमयबिंदुघनेतिनमैंमनमोहनकेमनमोहनीलाई॥ इंद्रवधूअरविंदकेमंदिरइंदिराकोमनुदेषनआई ३०॥ ॥टी० मेहँदीसंजुतहाथवर्नेनं॥श्रीराधाजोरूपकीषानहैं ताकेहाथनमैंमानोभूमिकीछबिछाई दीहबडे अदीहछोटे सूक्षमदुबरेमोटेजेजीवहैं तिनकेनेत्रनको पकरनहारदोरीहै गुराईजिनमे तोपाननविषैं जोघने मेहँदीके बुंदसमूहबुंदहैं तेमनमोहनके मनकीमानोमोहनी लगाईहै कैइंद्रवधूबीरबहूटी अरविंदकमलकेघरमैं इंदिरापदमाको मानोदेषनआईहै॥मे

हँसीइंदुवधू पानकमल सोभालक्ष्मी ३०॥ ॥मू॰ कंठओपीठवर्नेनं दो॰ कंठसुकंबुकपोत दुतिकेसव दास बषान॥ पीठकनककीपट्टिका जानतसकलसुजान ३१॥ ॥टी॰ कंठ पीठवर्नेनं संषओपारावतकेकंठसोकंठ सुवर्नकेपट्टीसद्रिसपीठ ३१॥ ॥मू॰ क॰ सुरनरमाकृतकवित्त्वरीतिआरभटीसात्विकीसुभारतीकीभारतीयौंभोरीकी॥ किधौंकेसोदासकलगानतासुजानतानिसंकतासौंवचनविचित्रताकीसोरीकी॥ वीनावेनुपिकसुरसोभाकोत्रिरेषरुचिमनवचक्रमनकिपियमनचोरीकी॥ अंबुसांईकोसौंमोहेअंबिकाऊदेषिदेषिअंबुजनयनकंबुग्रींवगोलगोरीकी ३२॥ ॥टी॰ देववानीनरवानीनागवानी कवित्तकीरीतितीनिहैंतामे अरुआरभटी सात्विकीओभारती एतीनिवृत्ति हमरसिकप्रियाकेतिलकमैं करीहै इनकीभारतीबानीभोरीकरीहै कैकलजोकलगानहैं सोकरतजो वचनसषिनमैंबोलत वीनाअरुबेनवाँसुरीपिककेसुर मानौंइनतीनकोजोजीतोहै ताहीकीजेतीनिरेषाहैं कैमनसाचोरी वचनचोरकर्मचोरे इनकीतीनिरेषाहै अंबुसादेविष्णुकी स

पतिहै अंबिकापारवतीभीमोहिजात हैअंबुजक
मलनयनी ऐसीकपोतवत्ग्रीँवागोलगोरीकीहै
३२॥ ॥मू॰ कंठभूषनवर्नेनं क॰ लेतिमे
ललालकोअमोलचित्तगोलग्रीँवलोलनै
नदेषिदेषिजातगर्वभागिकै॥ स्यामसेत
पीतलालकंबुकंठकंठमालजातिनाहि
नेकहीरहीज्जुजोतिजागिकै॥ केसोदास
आसपासवासकेरहेमनोसमेतरागिनी
निरागराजरंगरागिकै॥सूरकेनिवासतैं
प्रकाससोमजूकर्योअनेकभाँतिकीकि
धौँरहीमयूषलागिकै ३३॥ ॥टी॰ कंठ
भूषनवर्नेनं उक्तिसषीप्रतिसषीकी केमोलला
लकोचित्त अमोलग्रीँवालेलेत जोलोलचंचल
नेत्रकोउन्हेगर्वहै केमैसबकोमोहिलेनहारी
हौँ सोभीभागजातहै स्यामसेतपीतलालकंबुसंष
तद्वतकंठमैं ऐसीअनेकरंगकीजेमनीहैँ तिन
तैं कंठमालभूषितभईहै ताकीजोतिनाहीँकही
जातजगमगहोरहीहै मानो आसपासवासकरि
रहेहैँ समेतरागनीनकेराग राजश्रेष्ठ रंगजागिर
ह्योहै अनुरागसहित सूर्जकीजोतिचंद्रमामैँजा
तिहै तबचंद्रमाप्रकासकरतसो केधौँ सूर्जकेनि
वासतैं प्रवेसितहोयके चंद्रमानैँ प्रकासकर्यो

यातेंअनेकतरहकी मयूषकिरनप्रकासकरि र
होवै सूर्जकोरंगउदयसमय लाल चंद्रमासुक्ल कृ
लंकस्याम ३३॥ ॥मू० पीठवर्नेनं क० केस
वकुंवरदेषी राधिकाकुंवरिआजुसोव
तसुभायसेजजननीजनककी॥ वेनीमेव
नायगुहीकाहूअलीभाँतिभलीकुंदनकी
कलीतननतनकतनककी॥ पीठमैतिनकी
प्रतिमूरतिविलोकियतपूरतनयनजुगमू
रतिवनककी॥ हरिमनमथिबेकोमानो
मनमथलिषेरूपकेरुचिरअंकपट्टिका
कनककी ३४॥ ॥टी० पीठवर्नेनं राधा मा
तापिताकी सेजपरसोवतरही तबकोईसषीने
वेनीमें कुंदकीकलीछोटीछोटीगोयदई ताको प्र
तिबिंबपीठमेदेषि सषीसषीसों कहत बरनतना
हीं बनतवाकीसूरति कैसी बनीहै किंवावनककी
सूरतिजुग दोनोनेत्रमें पूरितहोरही हरिकोमनम
थिबेको मानो कामनेलिषीहै रूपकेरुचिरसुंदर
अंकीजंत्रविधिकनक सुबरनकीपाटीपर ३४॥ ॥
मू० चिबुकवर्नेनं दो० कज्जलमनिरसछी
टिछविरदनराहुकोजान॥ फौंककामसर
चिबुककीस्यामलबिंदुबषान ३५॥ ॥

टी० चिबुकवर्नेनं काजरबिंदुअरुपियकोमनलगो
है सिंगाररसकोछौटा छविजुक्तराहुकोद सन ता
कोचिन्हऔरस्यामभीजैसेअरसीकोफूल गेंडी का
मकेबानकीफोंक अरुस्यामबिंदुसहित ३५॥ ॥
मू० क० सोभनसिंगाररसकीसीछीटसोहै फों
ककामसरकीसीकहौजुगतनिजोरिऔरि
॥राहुकेसेरदनरसोहैचुमिचंद्रमाहित
मीकोसुहागकिधौंडारोविनतोरितोर॥च
तुरविहारीजीकोचितसे विहटरोनित
एतेकेसोहसलेतिनितचोरिचोरि॥तनकति
लकातलतेरेपरमेरोसखीवारौंडारितरुनी
तिलोत्तमासीकोरिकोरि ३६॥ ॥टी० सिंगा
ररसकीछीटसो तिलकामसरफोंकसीठोढी नमी
अंधेरीरात्रीका सुहाग तेरेथोरेतिलपर तिलोत्तमा
सीतरुनीकरोरनवारौं ३६॥ ॥ मू० अधरवर्ननं
॥दो०॥ अधरबिंबपल्लवबरनिप्रगट प्रवा
लसमान॥ दांत मुक्तादाडिमकुंदमनिहो
रादसनप्रमान ३७॥ ॥टी० अधरदसनवर्नं
नं॥ अधरनीचेकोओठ बिंबपकोकुंदुरू औपल्ल
वसेप्रवाल मूंगासेबरनौं दंतमोतीअनारकेबीज॥
कुंदकलीमानेहीरा ३७॥ ॥मू० क० अधर

रुनअतिसुबुधिसुधाकेघरकोमलअम
लदलदुतिछीनिलीनीहै॥ केसवसुगंध
मंदहाँसजुतकौनकामविदुमकठोरकटु
बिंबमतिहीनीहै॥सूक्षमसुरेपअतिसधी
सूधीसविसेषचतुरचतुरमुषरेषारचिकी
नीहै॥मानौंमैनगुरहरिनाहकेनयनगति
गनिगनिलेवेकहूँवियोगनिदीनीहै ३८

॥टी॰ उक्तिसषीकीनायकाप्रति अधरजोतेरलाल
हैंसोकैसेहैं केसुंदरबुद्धी औअमृतकेधारनहार
हैं तिनमैंजोकमल किंवाअमलपल्लवतिनकीदु
तिछीनिलईहै इहाँआरथीउपमाजानिए सोसुगं
धअरुमंदहाँसजुतहै तिन्हैकोनकी उपमादेहुवि
दुमकठोरहै अरुबिंबफलकटुहै तामैं जोसूक्ष्मरे
षापरीहैसो विसेषहैऔ आनकेनाहीं तेचतुरजो
ब्रह्मातिननैं ताहीकीरेषाकरी एकोदेनाहीं इनसम
नहैं सोमानोमैनजो गुरुहैताने हरीजोतिहारोनाह
है ताकेनयनकेजेगुनहैं ताकेगुनबेकोवियोगनद
एहैं अरुकहूँ वियाभीपाठहैसो गनिगनिकेविया
दईहै अरुकहूँनाहकेमनमथिवेभीपाठहै ३८॥

मू॰ दसनवर्नन क॰ सूक्षमसुवेषसुधीसुम
नवतीसीमानोलक्षनवतीसहकोसुरनिबि

सेषिए॥रातीहेरतीकरुचिसेतसवकि
धौंससिमंडलमैंसुरनकोसभाअवरेषिए
॥किधौंपियजुगतिअषंडताकेषंडिवेकोंष
डनकेकेसबतरकफुललेषिए॥दीनोदूनी
कलाविधितेरेमुषचंदकोसुन्यायहीअका
सचंदमंदद्युतिदेषिए३९॥ ॥टी० दसन० सू
क्षमहैसुंदरघटना अरुसीधीमानो कुंदकेफूलकी
बतीसीहै कैबत्तिसलक्षनकोमूर्त्ति बिसेषिएहै राती
कहैंलाल रतीकथोरीरुचिहै सबस्वेतहैं किंवारानी
मोहितहोरहीहेरतिकनामलजरताकोरुचिहै काहे
सेतहैं केससिमंडलमैं देवसभाअबरेषिएहै किपि
याकीजुक्तिअषंडहै अन्यनायकान के पासरमने
की ताकेषंडनकरनेकों षंडनकरेहैं न्यायसास्त्रके
काहेपदार्थ१६ दसन३२ यातैंएकएकपदारथके दो
भागकिए कैविधातानैं चंद्रमाकोदई सोरह कला
अरुतोकौं एबत्तीस याहीन्यायतैं चंदआकासमेंमं
दहै ३९॥ ॥मू० पुनः क० किधौंसातोमंडल
केमंडनमयंकमधिबीजुरीकेबीजसुधासीं
चिकैउगाएहैं॥किधौंअलबेलीकीचंबेली
कीचमकचोकफिधौंकीरकमलमेंदाडिम
दुराएहैं॥किधौंमुकताहलमहावरमैंरापर

गिकिधौंमनिमुकुरमैंसुषरसुहाएहैं॥केसो
दासप्यारीकेवदनमैंरदनछबिसोरहछि
नकाटिबत्तिसबनाएहैं ४०॥ ॥टी॰ पुनः के
सातमंडलजो सातोदीपताकेमंडन जोचंद्रमाताके
मध्यमैं बिज्जुरीजोहैताकेबीच अमृतसौंसींचिके
जमाएहैं कैजोअलबेलीनायका ताकेचौकामैं च
मेलीकीचमकहै कैकीरमुकने कमलके बीचमैं दा
डिमकेबीजछिपाएहैं कैमोतीमहावरमैं रंगेहैं॥कै
मनिमुक्रमुषमैं अच्छेसुहावन भयेसोई मोतीप्यारी
केवदनमैं रदनदंतकीछबिहै कैसोरहकलाकेबत्ति
सटूककीनेहैं ४०॥ ॥मू॰ हाँसवर्ननं दो॰ ॥जो
तिजुन्हाईदामिनीदीपतिसुधाप्रकास॥म
हिमामोहमरीचिकारुचिमोहनीसुहास
॥४१॥ ॥टी॰ हाँसवर्ननं दीप्तिचांदनी औबिज्जुरी
कीदीप्ति अमीकोप्रकास मोहकीबडाई मृगतृष्णा
मायाकीरुचिसौं ऐसोहाँसवरनो ४१॥ ॥मू॰ क॰
किधौंमुषकमलमैंकमलाकीजोतिहोति
किधौंचारुमुषचंद्रचंद्रिकाचुराईहै॥किधौं
मृगलोचनिमरीचिकामरीचिकैधौंरूपकी
रुचिररुचिसुचिसौंदुराईहै॥सौरभकोसो
भाकीदसनघनदामिनीकोकेसवचतुरचि
तहीकीचतुराईहै॥एरीगोरीभोरीतेरीथोरी

थोरीहाँसीमेरीमोहनकीमोहिनीकिगिराकी
गुराईहै ४२॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनायकासों
एरीगोरीभोरीतेरी थोरीथोरीहाँसीमैं अरी यह सो
भाहै कैधौंमुषकमलमैं श्रीकीजोतिहै कैचारुमुष
चंद्रनैं चंद्रमाकीचंद्रिकाचुराईहै अर्थेअपनेमुष
मैंपसारी कैमृगलोचनिकोमरीची जोहैतामैंमृग
लक्ष्माकीरुचिहै कैरूपरजतकीरुचिसुचि पवित्रता
सोंदुराईहै किंवासुचिस्वेतकोभीनामहै ताकोआ
पनीस्वेततासौंदुराई कैसौरभसुगंधकीसोभाहै
केदसनसेतघनमैंबीजुरी केचतुरचित्तकीचतुरा
ईहै केकृष्णकेमोहनी कीबानीगिराकीगुराईहै॥
४२॥ ॥मूल मुषवासवर्नेनं दो० मदनजी
विकासुषजननिमनमोहनीविलास॥ नि
पटकृपानीकपटकीरतिसुषमामुषवास
४३॥ ॥टी० मुषवासवर्नेनं॥ मदनकामकी उप
जावनजीविकाजियावनहारी औसुषकीमाता औ
मनमोहनहारऐसोहैजाकोविलासकपट काटिबे
कीतरवार प्रीतिकीउतकर्षसोभा ४३॥ ॥मू० क०
किधौंभयोउदितअनंगजूकोअंगउरसुर
भितअंगरागदाहैदेहदुषको॥किधौंचितचातु
रीचवेलीचारुफूलरहीफैल्योवासकेसबष
कासकरमुषको॥किधौंपरिमलप्रेमपूरना

वतंसनिकोकिधौंबरवानीवनमालाकेवपु
षको॥किधौंपायप्रानपतिहृदयकमलफू
ल्योताकोगंधबंधुकैसुगंधसुषमुषको ४४
॥टी॰ कैउदितभयोहै कामकोसरीरहृदयमेंसुर
भित सुगंधितकिंवासुरभीवसंतअर्थ अंगफूलहै
वसंतमें कामहोतहीहै सोदेहके दुषकौ जरावत
कानायकाके कुचादिकपरनाहींरहे यहद्रुप केचित
कीजोचतुराई ताहीकोउरमें चंबेली चारुसुंदर फूल
रहीहै केवासवस्त्र मुषकाप्रकासकरनहारफेलाहै
औप्रकासनाम हेममे स्फुटकोअरुहाँसको औउद्दी
दोतको प्रसिद्धकोभीहै केपूर्नेजोहैप्रेमऔ अवतंस
भूषनताको परिमल मनोहरसुगंधहै केवानीगिरा
ताकेअंगकी वनमालाको सुगंधहै केप्रानपतिकोपा
यहृदयकमलफूलो पतिप्रतिष्ठाताके गंधहै केनाको
भाईहै कैसुगंधसुषमुषकोहै प्रकासकरमुषपाठ
में मुषपुनरुक्तिअरुप्रकासकरमुषमेंमुषपुनरुक्ति ४४

॥मू॰ मुषरागवर्नेनं दो॰ अरुनोदयराजी
वमेंअंगरागअनुराग॥रूपभूपरतिराज
सोराजतसुषमुषराग ४५॥ ॥टी॰ मुषरागव
र्नेनं कमलमें अरुनोदयहै कैकाहूके अंगकोरागरं
गोहै रूपभूप रूपकोराजा रतिराजकामतामोराजेहैं
सुषदायकजोमुषकोरागरंग किंवाआछोजोतेजहै

पसोई है रतिराजजो कामताहीसौं सुषदायक सुषरा
गसोहतहै किंवा आछेरूपसौं अरुभूपसौं औ काम
सौं तेरे मुषरागसोभितहै जबकामचेष्टा इस्त्रीको
होततबमुषरमनीयलागत किंवाजो रूपत्वजाती
है ताकोभूपहै तहाँरूपलक्षन दोहा चक्षकरिकै
ग्राह्यहै रूपकहावतसोइ॥ द्रव्यादिककोजानिए
सोउपलंभकहोय॥ रूपत्वकहेतैं नीलपीतअरुनसु
क्लादिकजानिए सुक्लहाँसरदसन पीतगोरता कृस्न
विंदुचिबुक अर्थइनकोराजाहै प्रमान पानविना
आनन ४५॥ ॥मू० क० केसोदासरागरागि
नीनिकोकिअंगरागकिधौंद्विजसेवतहैं
संध्याभलीभोरकी॥ अरुनरदनबहुरतनि
कीषानिकिधौं वहहीझलकझलकनिचहु
वोरकी॥ किधौंभाषाभूषनकोमनिनिको
चाकचकचोरलेतिचितचालतेरेचितचो
रकी॥ लागिरह्योअनुरागकिधौंनाहनैननि
कोकिधौंरुचिराचीतेरेतरुनीतमोरकी ४७
॥टी० उक्तिसषीकीनायकाप्रति रागरागिनीकोअंग
रागहै कैद्विजदसनभोरकी प्रातसंध्यासेवत कैअरु
नरदन बहुरतनकीषानहै उहिकी ताकीझलक च
हुआरहैकि चहुओरकीझलकहै कैभाषाजोसरस्वती
ताके भूषनमनिमानिकादिताकीचाकचकबहुल तेरोचि

तचोरहरि ताकेचितकीचालचोरलेत अर्थमदनको
पास नाहीजानदेत केनाहहरिके नैनकोअनुराग
लागिरह्योहै कैपानकीरुचिराचीहै ४६॥ ॥मू०
रसनावर्ननं॥दोहा॥रसनाकोमलबर
निएकोविदअमलअमोल ॥ केसवदे
वीरसनकीरसहिस्रवतमृतबोल ४७॥ ॥
टी० रसनावर्ननं रसनाकोकोमल वरनोंहैपंडितअ
मलप्रवीन रसमधुरादिहसिंगारादिनौ९कोदेवी
औजाकोमूलवचन रसकोश्रवतहै ४७॥ ॥मू०
क० देषतहीँआधापलबाधीजातिबाधास
बराधाजूकीरसनासुरूपकीसीरानीहै॥
आछीआछीबाननकीजननीजगमगात
रसनकीदेवीकिधौंपचिपहिचानीहै॥कं
सोदासमकलसुवासकीसीसेजकिधौंस
कलसुजानताकीसषीसुषदानीहै॥किधौं
मुषपंकजमैंसक्तिकोनीसेवैदुजसविताको
छबिताकीकविनानिधानीहै ४८॥ ॥टी०
जाकेदेषत आधाप लबाधा बाँधीहीरहत अर्थ ना
नसमैंबोलेते देषिपरततबनायक की बाधाकटजा
त राधाजूकीरसना रूपकीरानीहै उत्तमबानकीना
ता उपजावनहारजगमगात रसकीदेवी रसनाजनी
यहै चौपाई बारहुदोप्रकारकोहोई नित्यअनित्यक

हतसबकोई॥ नित्यकहतपरमाणस्वरूपा द्यणुकादिकअनित्यकुलभूपा॥ सोपुनित्रिविधिअनित्यबषानौं इंद्रीविषयसरीरप्रमानौं॥ गोरसनाजुअजोनिजदेही विषयसरितपतिआदिकएही॥ इतनोपचिकेपहिचानी हरिकोभीइष्टदेवीहै किसकलसुगंधकोसेजहै किसकलसुजनता प्रवीनताकोसषी सुषदेनेवालीहै कैसुषकमलमेंसक्ति लक्ष्मीहै ताकेसेवतदुजदसनरूपीविप्रके सूर्जकीछबिताकीकविताहै ताकोनिधिहै अर्थउदयसमैं अरुन किंवादसनकैसेहैं सवितासूर्जकीछबिहैं ४८॥ ॥मू० बानीवर्नेनं दो० बानीबीनाबेनुअलिसुषपिककिन्नरगान॥ सोभनसुभबहुअर्थमयकेसवदासबषान ४९॥ ॥टी० वानीवर्नेनं वीनाबाँसुरीसीमधुर भ्रमरगुंजारसी सुषरूपकोकिलसी सुकपाठमेंसुकवानीसी किंनरकेगानसमान सोभावानश्रवनकोलगे अपरथोरेअर्थबहुत ४९॥ ॥मू० क० कामकीदुहाईकैसुहाईसषीमाधुरीकिइंदिराकेमंदिरमैंरादेउपजतहै॥ सुरनकोसुरीकिधौंमोदहूकिसारदरीकिचातुरीकोमतुऐसीबातनिसजतिहै॥ रागराजधानीअनुरागनिकीठकुरानीमोहेदधिदानीकैसोकोकिलालजतिहै॥ एरीमे

रीब्रजरानीतेरीबरवानोकिधौंबानोहैकी
बीनसुषमुषमैबजतिहै ५०॥ ॥टी॰ उक्ति
सषीकीसषीप्रति कामदुहाईहै अर्थनायककहो
करत कैसोभामानमाधुर्जेताकोसहेलीहै उपमाक्षे
थी लक्षिमीकोग्रहकमलतानें मौंईप्रतिधुनिहोतउ
पजतहै सुरजोसाततताकीदेवीहै कैआनंदकीभगिनीकेचा
तुर्जेताकीमाताहै ऐसीवातकौं साजत रागकीरजधानीहै अ
नुरागकीठकुरानी मोहेदधिदानीकृस्नके कौकि
ललज्जाकोंप्रासभई एरीमेरीव्रजरानी तेरीवरअेव
वानीहै कैगिराकीवीना सुषमुषमैंबाजतिहै ५०॥

मू॰ कपोलवर्ननं दो॰ मुकुरमधूककपोल
समकेसवदासप्रमान॥नासिका॥ निल
प्रसूनतूनीरसमसुकनासिकाबषान ५१
॥टी॰ कपोलवर्ननं दर्पनमधुमहुवासेपीत किंवा
नासामैंमधुकामकहेहैं समबरोबरनासिका निल
फूल तरकस सुक ५१॥ ॥मू॰ क॰ किधौंहरिम
नोरथरथकीसुपथभूमिमीनरथमनहूकी
गतिनसकतिह्वै॥ किधौंरूपभूपतिकोआस
नरुचिररुचिमिलीमृगलोचनमरीचिकाम
रीचिव्है॥ किधौंश्रुतिकुंडलमकरमकरकेमा
दासचितएतैंचितचकचौंधिकैचलतच्वै॥
गोरेगोरेगोलअतिअमलअमोललरेलालि

तकपोलकिधौंमैनकेमुकुरहैं॥ ५२॥ ॥टी॰ हरिकेमनइच्छारथकीभूमिहै मीनरथकामताके मनकीगतिनाहींऊसकल भगवानकीप्रियाहैयातें कैरूपभूपराजाकीगादी कैमृगनेत्रनायककेताकी मृगतृष्णाहै मृगतृष्णाकीमरीचीकिरिन होयकैं नायकामिलीहै सषीमिलेपरनायकासौंकहतहै श्रुतिकेकुंडलमकरग्राहहै मकराकृतकुंडलबर ननहै ताकेसरकपोलहैं चितएतें चितचकचौंध जातहै अरुचेचलनहे गोरेगोरेअतिसय गोलअ रुअमलअमोलजाकोमोलनाही अरुललितहैं क पोलतेरेकैहैमदनकेमुकुरदर्पनहैं ५२॥ ॥मू॰

नासिकावर्ननं क॰ केसवसुगंधस्वाँससि द्धिनिकीगुहाकिधौंपरमप्रसिद्धसुभसोभ नसुवासिका॥ किधौंमनमथमनमीनकी कुवेनीकिधौंकुंदनकोसीवलोललोचनवि लासिका॥ मुकुतामनिनकोहेमुकुतपुरी सीकिधौंकिधौंसुरसेवतहैंकासीकीप्रका सिका॥ त्रिभुवनरूपताकोतुंगतोयनिधिता केतोयकीतरंगकैतरुनितेरीनासिका ५३॥

टी॰ नासिकाव॰ स्वाँसअरुसुवासजो तपस्विनीताकेर हिवेकीगुहाहै कैपरमप्रसिद्धजोसुभउत्तिमसोभाहै ताकीवासकरनहारी कैसुभउत्तिमसोभानामताराब

हु वचन हैं नक्षत्रनकीमानौ हैं नपततिन की वामिका हैं कैमनमथकामधीवरसो प्रीतमकोजो मनमीन पकरत ताकीकुवेनी मीनधरिबेकोपात्रहै कैनेत्र नकेबीच सोनेकीसी वा बीचमें बाँधो विलासिकावि साल केमुक्तमनिनकीमुक्तपुरी है किंवामनिजो हैंमो ईमुक्तपुरुषहैं तिनकेवसिबेको मुक्तपुरी वैकुंठहै केसुरयाकौंसेवत चंद्रसूरसूर्ज सुरनासिकातें निक सत यह श्रोत्रीयमैं है ताकीकासी हैप्रकासकरनवा री कासीकौंभीदेवसेवत केतीनिभुवनकोरूपऊँचो समुद्रताकी ताकेजलकीतरंगहै कैहैतरुनीतेरी ना सिका है ५३॥ ॥मू॰ नाकमोतीवर्ननं दो॰॥

केसवआनँदकंदफलसुधाबूँदमकरंद॥ मनपतंगकोदीपगनिनकमोतीजगवंद ५४॥

॥टी॰ नाकमोतीवर्ननं आनंदकेकंदकोफ ल अरुअमृतकीबुंद औमकरंदसुगंधकीनी अरु मनपतंगकोदीपऐसो नासिकामोतीजगतजाकी वंदनाकरै ५४॥ ॥मू॰ क॰ केसोदाससकल

सुवासकोनिवाससषिकिधौंअरविंदमधि बिंदुमकरंदको॥ किधौंचंद्रमंडलमैंसोभित असुरगुरुकिधौंगोदचंदजूकेषेलैंसुतचंद को॥ बाढैरूपकामगुनदिनदूनो होतकिधौं चंदफूलसूँघतहै आनदकेकंदको॥ नाक

नायिकानिहूँनैंनीकोनकमोतीनाकमानो मनउरझिरह्योहैनँदनंदको ५५॥ ॥टी॰ उक्तिसषीकी नायकाप्रति सकलसुवासकोनिवास जोहैकमल मकरंदपुष्परस चंद्रमंडलमुष नाकमोतीसुक्र चंद्रपुत्रबुद्ध सोपिताकेगोदमें पेलतहै मुषचंदमुक्ताफूल सूँघतहैतासौँरूपबढतहै काम गुनमोहनतासौँ दूनोदिनमेहोतहै नाकमोतीसुंदर लगतयहअर्थ कोईनाकमैंलगावतहैं तामेंरूपकाम दोईबढतहैऐगुनमोतीमौंदिनदिनगुनहोत तेरीनासिकामैंनाकमोतीजोहै सोनाकस्वर्गतहाँकीजोनायकादेवकंन्या ताकेनकमोतीसौंनीकोलगत यह देषिससमानौंनंदलालकोमन अरुझिरह्योहै ५५॥

मू॰ लोचनवर्नेनं दो॰ लोचनचारुचकोरसमचातकमीनतुरंग॥ अंजनजुतअलिकामसरषंजनकंजकुरंग ५६॥ ॥टी॰ लोचनवर्नैनं चकोरचात्रिकपपीहा मीनअश्व अंजनजुतभ्रमरसे कामकेबान षंजन कमल औ कुरंग हरिन ५६॥ ॥

मू॰ क॰ पियमनदूतकिधौंप्रेमरथसूतकिधौं भँवरअभूतवपुवासकेसुरंगहैं॥ चितवतचहूँवोरप्रीतमकेचितचोरचंदकेचकोरकिधौंकेसवकुरंगहैं॥ वानमदभंजनकेषलिवेकेषंजनकिरंजनकुँवरकामदेवकेतुरंगहैं

॥सोभासरलीनमीनकुवलयरमभीननलि
ननवीनकिधौंनैनवहुरंगहैं ५७॥ ॥टी०॥
टी० प्रीतमकेमनकेदूत प्रीतममननिलावनहा
रे कैप्रेमरूपीरथकेसारथीहैं कैमैंवरअदभुतमरी
रकेवास स्थानकेसुरंगकिंवासुगंधकेजाकेसरीर
हैं औसुंदरजाकेअंगहैं किंवालालडोराहैं अरुचि
तवतहींपियकोचितचुरावनहार किंवानहूंचोर
चितवततोभी पियमनचोरत कैचंद्रमाकेमालेच
कोरकैचंद्रकेहरिन वानमदभंजन कैक्रीडाकेपं
जरीट कैकामकुंवरकेअस्त्र सोभारूपीसरकेमी
न कैकुवलयनिसिविकासी कमलरसरागनैंज
लमैंभीने कैनवीननलिनकमल कैबहुतरंगस्या
मसेतलाल कैबहुरूपधारनकरता कैनैन ५७॥ ॥
मू० अंजनवर्नेनं दो० विषसिंगाररसतूलन
मपूरेपातकलाज॥ मनरंजनअंजनसबैब
रनतहैंकविराज ५८॥ ॥टी० अंजनवर्नेनं॥
विष औ सिंगाररस तूलतुल्य औतम पूरनपातिक
लाजजुक्त मनआनंदकरनंहार ५८॥ ॥मू० क०॥
किधौंरसराजरसरसितअसितकिधौंललित
विसिषविषबलितसुभालके॥ किधौंजगजी
तिबेकौंराजारतिनाथहाथवाहनबनाएकै
सोदासचलचालके॥ वृतघातपातककिचि

तचोरिबेकोतमदेषिबेकोंनंदलाललालि करैकालुके॥लागिरहीलोकलाजषंजननय निकिधौंपियमनरंजनकिअंजनहैंबालके ॥५९॥ ॥टी॰ कैसिंगाररसजोहै सोरससंजुक्तहै अथैसिंगाररंगरँगे कैललितवानहैजाकीभालअ ग्रभागविषमयहै अथैविसारेबानहैं कैजगजीति बेकेलिये राजारतिनायकामताने बाँहनबनाएहैं नि जहाथसौं चलाँकिचालवारे कैतनासनपातिक है कैचितचुराइबेकोअंधकार देषिबेकों कालतैं नंदलाललालजतनकरेहैं कैलोकलाजलगीहैनैन षंजननमैं कैपियमनरंजनहेतु बालकेदोईनेत्रन मैंअंजनहैं ५९॥ ॥मू॰ भृकुटीवर्ननं दोहा भृकुटीकुटिललताधनुषरेषाषड्गअनूप॥ केसवदासपुपाससमवरनश्रवनकरिकू प ६०॥ ॥टी॰ भृकुटीवर्ननं भृकुटीटेढ़ीलतासी धनुषऔरेषासी तरवारसीऔपाससी श्रवनकूप सरसकरिबरनौं ६०॥ ॥मू॰ क॰ किधौंलागी पंकजकेअंकपंकलीककिधौंकेसवमयंक अंकअंकितसुभायको॥जंत्रहैसुहागको किमंत्रअनुरागकोकिमंत्रनिकोबीजअषऊ रधअभायको॥आसनसिंगारकोकिकाम कोसरासनहैसासनलिपीहैप्रेमपूरनप्रभा

पको॥रोषरूपवेषविषपियूषमविशेष
भामिनीकोभोंहैकिधौंभौनहावभावको॥
६१॥ ॥टी० कमलकेअंकमेंपंककींचहै केसमा
केअंकमें पंकअंक किंवाकलंक किंवाकोईअंक
आषरसुहागकोजंत्रके अनुरागको मंत्र केजहा
नकेजोमंत्रहैंताकोबीजनीचेऊंचेअभावहै बीचवा
रीरेषामात्रहै केशृंगारकोआसनहै केकामकोध
नुषहै केपूरनप्रेमकीआज्ञाहै केरोषरूपकोसरी
रहै केविषरूपपियूषहै केभौंहकेलीलादिकहा
वमनविकारभावकोघरहै ६१॥ ॥मू० श्रवन
वर्नेनं दो० रागरवनभाजनभवनसोभन
श्रवनपवित्र॥केसवलोचनलाजकेमन
केमंत्रीमित्र ६२॥ ॥टी० श्रवनवर्नेनं रागके
रमन औघर औपात्र सोभाबढावनहारश्रवनहैं
पवित्रपवित्री अर्थजोसो चरनामृत लीजिएताको
नामहै लाजकेनेत्र मनकेमंत्री मित्र औपवित्रकहि
ए ६२॥ ॥मू० क० रागनिकेआगरविरागके
विभागकरमंत्रकेभंडारगूढरूढकेरवनहैं।
ज्ञानकेविवरकिधौंतनकतनकतनकन
ककचोरीहरिरसअचवनहैं॥श्रुतिनकेकू
पकिधौंमनकेसुमित्ररूपकिधौंकेसोदास
रूपभूपकेभवनहैं॥लाजकेनयनिकिधौंन

यनसखिवकिधौंनयनकटाक्षसरलक्ष्यके श्रवनहैं ६३॥ ॥टी० आगरराग कहिवेमैं अ ग्रहोतहैं आकरपाउमैंषान विरागविसेषरागकेभा गकरनहारे जोसलाहकीवातोताकौंराषैं यातैंभंडा रगूढसब्दकेकथनवारे रूढजोगरूढ जोगिकजान नहार ज्ञानकेविवरविल केहरिरसअचेबेकीछो टीछोटीकटोरीकरछी वेदनकेकूप मनकेमीत के सुंदरताकेघर नेत्रनकेमंत्री केकटाक्षकेनिसानाय हश्रवनहे ६३॥ ॥मूल॥ कर्नफूलताटंक॥

दो० भनिमनिमयताटंकजुगलसितलक्षरी मान॥ तरुनतरनिचलचक्रसेकेसबकुसु मसमान ६४॥ ॥टी० कर्नफूलताटंक०॥ मनिकेता टंकनामकर्नभूषनदोय लसितहोयरहे लक्षनिसा ना तरुनजुवामध्यानकोसूर्ज चलचंचलहैं चक्रसे औकुसुमसे ६४॥ ॥मू० क० पहिरेकरनफूल देषीहेकुमारीएकसुनहुकुंवरकान्हसोभेसु षदानिए॥ तिनकेतनकीजोतिजीतेजोतिवं तसबकेसबअनंतगतिकेसेउरआनिए॥ मा नोकामदेववामदेवजूकेवैरकामसाधेसर साधनानिलक्ष्यउरमानिए॥ दुहूँदिसिदुहूँभु ज भृकुटीकमानतानिनयनकटाक्षबानवे धतनजानिए ६५॥ ॥टी० उक्तिसषीकीनायक

प्रति कैएककरनफूलपहिरेबालामेंनें देष्यो सुवरता
न सोकरनफूलकैसेहैं अपनेतनके जवाहिरतें जे
जगतकेजोतवंतहैं तेसबजीतिलिएहैं अर्थमर्जादि
अरुअनंतगति ताकीकेसेउरमैं लेआइए प्रश्न॥
अनंतगतिताटंकमैंकहा उत्तर कैअनेकरीतिके
जोलगेहैं ताटंकमैंजवाहिर जेसेमध्यमैंहीरा एक
ओरनीलमनि अरुएकओरअरुनमनितिनके प
रतहैं तामैंप्रतिबिंब तासौंअनंतगतिहोतजान अ
र्थअनेकरंगकीगति मानौंकामदेवनैं वामदेवके
महादेवजूसौं बैरलेबेकेनिमित्त कामकोअर्थकाज
करिबेकेलिएसरसाधेहैं तासाधनाकोताटंककरे
हैंलक्ष्यनिसानाअरुदुहूंभुजतें दोईभ्रकुटीकमान
तानकरिके नयनकटाक्षबानतेंवेधतहै वानिमा
नाको नजानिए काकुकरिजानिएहै ८५॥ ॥मू०
कर्नभूषनखुटिलादिवर्ननं दो० चलदलर
लसीतीतरीजनुपताकसममीन॥ सरसक
रसआकासकेसोभतदीपनवीन ८६॥ ॥
टी० कर्नभूषनखुटिलादिरवारुवीपीपरपत्तावर्ननं
पीपरपत्रसेपीपरपत्रकहतहैं तीतरीपंक्षी पताक
सरस सरसकहिए आकासकेकलसऊंचेमैं नवीन
दीप ८६॥ ॥मू० क० खुटिलाखचितमनिसो
हतवनकवनिकनककरसरुचिरुचिरव

नहैं॥तनकतनकतनतीतरीतरलगतिमा
नहुपताकापीतपीडितपवनहैं॥कालिंदी
केकूलकूलजातजलकेलिकहैकालिहीस
राहैमेरेकालीकेदमनहैं॥केसोदाससुंदर
स्रवनब्रिजसुंदरीकेमानोंमनभावतेकेभा
वतेभवनहैं ६७॥ ॥टी॰ उक्तिसषीकीसषीप्र
ति जोकुटिलाहैंसोकैसेमनिनतैंषचेहैं सोउत्तमव
नकआकृततैंबनेहैं सोनायककोकनककलसकी
रुचिलागतहै तिनकी किंवाकनककलसरुचिरसुं
दररमनजोनायकहैं ताकौंरुचिउपजावत किंवारु
चिसुंदरहै रमन रतिसमयमैं नाहींबजत तनकतन
कअंककीजे तीतरीहै चंचलहै तैसीयाकीगतिहै
मानोपीतपताकापवनतैं पीडितभईहै अर्थबोलत
हँसतमैंहलतिहै जमुनाकेनिकटजलकेलकौंजात
सो देषिकर कालकालीदवन सराहत सुंदरश्रवन
जेब्रिजसुंदरीके सोमानोमनभावतेके भावतेभवन
घरहै ६७॥ ॥मू॰ ललाटवर्नेनं दो॰ कनक
पट्टि॰ नासमकहौं केसवललितलिलार॥
सोभनसोभाकीसभाअर्धचंद्रमाचार ६८॥
टी॰ ललाटवर्नै कनकसुवरन अरुसोभाकीनीकी
सभासमूह औअर्द्धचं॰ ६८॥ ॥मू॰ क॰ [illegible]
[illegible]सोकविधौंसुंदरि सिंगारलो[illegible]तनकरि

रकिधौं आनंदकेकंदको॥ सोभाकोसुभावकि धौंप्रभाकोप्रभावदेषिमोहेहरिरावसषी नंदनसुनंदको॥ चमकतचारुरुचिगंगा कोपुलनकिधौंचकचौंधेचितमतिमंद हूअमंदको॥ सेजहैसुहागकीकिभागकी सभासुभागभामिनीकोभालकिधौंभागवा रुचंदको ६९॥ ॥टी॰ सोकहीनसिंगारलोकहै केहेमजामैंउपजतऐसोकेदारषेतहै केआनंद कंदकोषेतहै केसोभाकोसुंदरभावहै केप्रभाकां तीकोभावहै जाहिदेषिहरिनंदनंदनमोहे केगंगा कोपुलनकूलहै गंगाकोतरंगकेपुनकेसोहैजाहि देषिवकचौंधीसैंचित परिजातमंदअजानअमंदसु जान किंवाभालहैहै देषिसषीअजानसुजानकोकै सुहागसोइबेकीसेज केसुंदरभागकीसोभावानस भाकैचंद्रआधौं ६९॥ ॥मू॰ अलकवर्ननं टी॰

अलकचिलकसौंबरनिएस्यामलअमलसु पास॥ अतिचंचलअतिचारुअतिसूक्षमके सवदास ७०॥ ॥टी॰ अलकवर्ननंचिलकयु क्त फाँसीसीचंचलसुंदरथोरेकेसकी ७०॥ ॥

मू॰ दोहा डोरडारडगडीठिगुनतमत्रियज [illegible] ॥ छायामायाकामकीकायाकुस लबषान ७१॥ ॥टी॰ डोरीसीडारसी कैडीठ

कोगुनजासों डिगजातहै अर्थडीठनाहींठहरत अं
धकारकीदूस्रीजमुनासी छायासी कामकीमाया
सोसरीरजाकोसुंदर ७१॥ ॥मू० क० केसोक
साहैकिधौंअनंगकोसुरंगभूमिलोचनकु
रंगनकीचालहूटकतिहै॥ पियमनपासि
बेकोंपासीसीपसारीकिधौंकिधौंउपमा
कीमेरीमतिभटकतिहै॥ तरनितनूजापेलैं
तारानाथसाथकिधौंहाथपरीतमकीतरु
निमटकतिहै॥ सुनिलोललोचनि नवलनि
धिनेहनिकीअलकैंकिअलिकअलकल
टकतिहैं ७२॥ ॥टी० कसाचाबुक अनंग
कोअषाडाजामैं नेत्रहरनकीचालनाहींठहरत
अर्थोसचिक्कनहैके प्रीतममनपासिवेकोफासीहै
आनउपमाकोचितभूलत तरनसुजेकीतनुजापुत्री
चंद्रमाकेसंगषेलत केअंधकारकीदूस्री चंद्रहा
थमेपरीहै हेचंचलनयनी नवलनेहकीपान केअ
लिकहैं हेअलीके अलपलटलटकत अलपहोके
किंवाअलिकलिलारपै अलिकभौंरछोटो केअलि
कलटहैं ७२॥ ॥मू० मुषमंडलवर्ननं दो०
अमलमुकुरसोबरनिए कोमलकमलस
मान॥ अकलंकितमुषबरनिए चारुचंद
परिमान ७३॥ ॥टीका मुषमंडलवर्ननं अ

मलदर्पन से॥ कोमलकमलसे चंद्कलकाहि
तसो ७३॥ ॥मू० क० ग्रहनिमैंकीनोगेह
सुरनिदैदेष्योदेंहसिवसोकियोसनेहजा
ग्योजुगचास्यौहै॥तपनमैंतप्योतपजल
धिमैजप्योजपकेसोदासवपुमाससमास
प्रतिगास्यौहै॥उडगनईसदुजईसऔप
धीसभयोजदपिजगतईससुधासौंसुधा
स्यौहै॥सुनिनदनंदप्यारीतेरेमुषचंदसम
चंदपैनभयोकोटिछंदकरिहास्योहै ७४
टी० ग्रहनवमैंघरकरो सुरदेवतनकौंदेहदेवके
देष्यो सुरअमृतपानकरततासौं छीनहोइजात
सिवसोसनेहकरि तिनकेभालकोभूषनभयो चा
रजामजामिनीमैंजग्यो तपनसूर्जेकिंवासिवभाल
कीअगिनमैं तपस्याकरी जलधिसमुद्रमैंजपक
स्यो अरुप्रतिमासमाससरीरभीगास्यो पुनतारागन
कोराजाभयो अरुदुजईसभयो फेरऔषधीसभ
योजगतईस विधिनेअमृतसौंसुधास्यो परंतुदेष
थे कोटिउपायकररहोचंदपरतेरे मुषसौंनभयो॥
७४॥ ॥मू० केसपासबर्ननं दो० भौंरचौंर
सेवालतमजमुनाकोजलमेह॥ मोरपख
समबरनिएकेसवसहितसनेह ७५॥ ॥
टी० केसपासबर्ननं मेघस्यामभेघ सनेहतेल तासौं

सचिक्कन ७५॥ ॥मू॰ क॰ कोमलअमलच
लचीकनेचिकुरचारुचितएतैंचितचक
चौंधिअतकेसोदास॥सुनहुछबीलीराधा
हूटेतैंहुवेछवानिकारसटकारेहैंसुभाव
हींसदांसुवास॥सुनिकैप्रकासउपहासनिसिवा
सरकोकीनोहैसुकेसवसुवासजायकेअकास॥
जद्यपिअनेकचंद्रसाथमोरपक्षतऊंजीत्योएकचं
द्रमुषरूपतेरेकेसपास ७६॥ ॥टी॰ सुकुमारअम
ल चल चंचल सचिक्कन सुंदरजोतेरेबारहैं ताकोंदे
षिकेंचितमैंचकचौंधी लागतहै हेछबीलीराधासु
नौंयहछूटेतेंछवागुंफछूवत अर्थगुंफपर आनपरत
कारेसटकारे सौभाविक सुवासधरे अरुप्रकासने
रेकेसकोजोहै सोसुनिअपनेकेसनकी निंदानिसि
रातिअरु दिनमैं सुकेसीअपसराने आकासमैं बा
सकियो अरुमोरपक्षके साथअनेकचंद्रमाहैं तो
भीएकचंद्रजोहै तिहारोमुषताकोपक्षपाय तिनकौं
तेरेकेसपासनैंजीतलयो ७६॥ ॥मू॰ वेनीवनें
नं दो॰ ऐसीवेनीवरनिएकेसवदासबनाय
॥असिनिसिजमुनाधार॰अहि॰अलिअव
लीसुषपाय ७७॥ ॥टी॰ वेनीवर्नेनं असित
स्वार निसाराती अहिसर्प जासौंसुषपावेसो सुष
दायक ७७॥ ॥मू॰ क॰ चंदनचढायचारुकुंक

मलगायपीक्धिकिधौंनिसिनाथनिसिनेदसौं दुराईहै॥किधौंचंदीवंदनक्षिरकिक्षीरसा पिनसीअलिअवलीसमीपसुधासुधआई है॥केसोदासहाँसरसमिलिअनुरागरसस रससिंगाररसधारधराआईहै॥मेलिमाल तीकीमालखालडोरीगोरीगुहैवेनीपिकवे नीकीत्रिवेनीसीबनाईहै ७८॥ ॥टी॰ चं दनकुसुमकेसरिलगायकैं चंद्रमानैंरात्रीसनेहसौं पाछेछपाई केकाहूनैं वैंदीपूजीहैवंदनरोरीसौं॥ औदूधसौंक्षिरकीहै ऐसीसापिनिसीहैचोटी अलिभ्र मरीकेसमीप सुद्धसुधाचमेलीकेफूलकी समता हाँसरससौंमिलिकै अनुराग अनुरागरूपजोरसरा जहै तासौंमिलिकै सरसकीनी जोसिंगाररसकी धारासो धराभूमिकीओरआईहै दोरी धाईहै यह भीपाठहै मालतीचमेलीकीमाला प्रमान सुमना मालतीजातीइत्यमरः मेलिकैकेसमैं लालडोरील गायगोरीसषी गूथेहै सोवासषीने वेनीपिकवेनी कोकिलबैनीकी त्रिवेनीसीबनाईहै मालती गंग केसजमुना लालडोरा सरस्वती ७८॥ ॥मू॰ वैं दीवर्नन दो॰ बैंदीयरननसकलकविके सवललितलिलार॥भागसुहागनरेससम रविससिउदितउदार ७९॥ ॥टी॰ बेंदीवर्न

नं ललितसुंदरलिलार नरेसभूपति उदारबडी ७९॥

मू० दो० मांगफूलसिरफूलसुभबेनीफूलबनाव॥ रूपभूपजगजोतिजनुसूरजप्रगटप्रभाव ८०॥

॥टी० मांगफूलआदिभूषनकेनाम रूपसोईभूपराजाहै ताकीजोतिजगोहै औसूर्जको प्रकासप्रभावप्रगटो ८०॥

॥मू० दो० मोतिनकीलरसीसपरसोभतिहैइहिभांति॥ चारुचंद्रमाकीचमूघनमरालकीपांति ८१॥

॥टी० मोतिनकीलरीसीसपरऐसी चंद्रमाकीचमूतारागनघनमेंकेहंसकीपांति ८१॥

॥मू० अथसिरभूषनवर्ननं क० बेनीपिकबेनीकीत्रिबेनीसीबनायगुहीकंचनकुसुमरुचिलोचननिपोहिए॥ केसोदासफेलिरहीफूलसीसफूलद्युतिफूल्योतनमनमेरोन्यापहरिमोहिए॥ बेंदाजगमगतजरायजरयौताकीजोतजीत्योहैअजीतउपमानआनटोहिए ॥मानोंइनपांवडेनपांवधरिआएदोऊसोहतसुहागसिरमागभालसोहिए ८२॥

॥टी० सिरभूषनवर्ननं बेनीत्रिबेनीसीस्वेतकंचनकीगुनसुन हरीजरीकुसुमसपेदफूल स्यामबेनीताकीरुचिनेत्रनमेंपोहीहै किंवातीनिरंगकेनेत्रहैंसोमानोबेनीकोरुचिपोहीहै फूलकीघुसीसोद्यु

तिफैलिरहीहै तासोँमेरोदेषिकेतनमनफूल्योतो नंदलालकोमोहभयो यहतोन्यावनीतहीहै॥ ऽं दाअर्थ बेंदीजाकोबुंदेलषंडमेँवधिदिया कहत सोतामेजरायकीजोतिजगमगात तानेअजोनऔ तिजीती किंवाकाहूकेवस है मननहीँ ताकोँअस कीनोमानो एबंदीकेपाँवडेपै पाँयधरकरआएहै सोजगमगहोतसुहागअरुभाग सोहागसीसफू ल भाग्यलिलारको किंवाभागतेँ धनकोबाहुल्ल ता ८२॥ ॥मू० अंगवासवर्नेनं दो० सहज सुवाससरीरकोआकर्षेनविधिजान॥ अ ष्टसअतिगतिदूतिकादृष्टदेवतामान ८३ ॥टी० अंगवासवर्नेनं॥ सहजथोरीहीसरीरको जोसुवासहै आकर्षेन मंत्रकीविधिजानिए अष्टि ष्टदूतीकारजकीदेवता ८३॥ ॥मू० क० कम लवदनकरनयनचरनकुचपूरनकुरंगम दृहगनिविलासहै॥ भृकुटीकुटिलकुचमे चकसुगंधमयकुंदकलिकासेदंतचंदन सोहासहै॥ कुंकुमसरीरकुमकुमानि कोस्वेदनीरअंबरकोकेसोहासअंबरविका सहै॥ मनकर्षनविधिकिधौँदृष्टदेवताअ ष्टगतिदूतिकाकिसहजसुवासहै ८४॥ टी० मुषआदिजेपाँचअंगहैं तेकमलहैं मुषकर

चरनकुम्ब भ्रकुरंगकोमदकस्तूरी लगाइकटाक्ष
कोविलासहैकस्तूरी आँषमेंलगावत सोपाठेर
सिकप्रियाकेकवित्तमें मेदजवादसोमाँजे कहूँक
पूरकुरंगमदकटाक्ष॥विलासहै सेतस्यामकटाक्षको
विलासहै भ्रकुटीभौंहटेढी केसमेचकस्याम॥सो
भीसुगंधित है कहूँकचकेसरभीपाठहै कुंदकलीसे
रद चंदनकोजाकोहाँस विधिबनायो चंद्रकपाठ
मेंकपूरसोहाँसहै कुमकुमकेसरि ताकोसुगंधस
रीरमें कुमकुमानामगुलाबजल गुलाबकेपानी
कोपसीनाब्रम्हानेरचो अंबरसुगंधसमुद्रतेंउप
जतताको वस्त्रमें प्रकासोहै मन आकर्षनकी विधिमंत्रहैके
इष्टदेवहै के अदृष्टगतिकी दूतीहैजाकोकोईदेषनसकै कै
सहजसुबासहैकुवासभीपाठहैतहाँ पृथ्वीकेबासहैं काहेगंधव
तीपृथ्वीकोलक्षनहै किंवा एसी तीनि रीति की अंग
में सुवास है ८४॥ ॥ ॥ ॥मू॰ वसनवर्न
नं दो॰ वसनसहेलीसिद्धसमकायामाया
भाव॥सोभासुभगसुहागअतिलाजसाज
केआव ८५॥ ॥टी॰ वसनवर्ननं वस्त्रवस
न ताको सहेली बरनिए सिद्ध समान भी कायास
रीर औ मायाको भाव क्रिया सुंदर सोभा बरनिए॥
सुहाग भी अभिलाष भी औ लाज साज की आव
आयुर्बल काहे वसन च्युत होत लाज नाहीं

रहत ॥ ८५ ॥ श्री ॥ ॥ ॥ श्री ॥ ॥ मू० क०
किधौंयहकेसवसिंगारकोहैसिद्धिकिधौं
भागकीसहेलीकैसुहागकोसुहावहै॥ला
षलाषभांतिनकेप्रीतिहीकोअभिलाषप
हिरेबनायकिधौंसोभाकोसुभावहै॥जोव
नकीजायाकिधौंमायामनमोहिवेकीका
याकिधौंलाजकीकिलाजहीकोआवहै॥
सारीजरकसीजगमगतसरीरकिधौंभूष
नजरावहीकोजोतिकोजरावहै ८६॥ ॥
टी० सिंगाररसकीसिद्धिहै कै भागकीसहेलीहै कै
सुहागकोहावविलासहै प्रीतमकेउरकोअभि
लाष लाषनतरहकोसोईमानोवस्त्रकियोहै सोभा
कोसुंदरभाव सत्ताविद्यमानहै सोईमानौंपहिरेहै जो
बनकीजाया इस्त्रीहै कै मनमोहिबेकीमायाहै कै
कायासरीरहै लाजकीकैलाजको आव आवुर्वल
वस्त्रहै जरकसीसारी सरीरमैं जगमगतिहै कैभूष
नजोजराऊ ताकीजोतिको अंगमैं जराव कियो है
८६॥ ॥ मू० क० सर्वांगवर्ननं ॥ चंदकेसो
भागभालभृकुटीकमानऐसीमैनकैसेपैने
सरनैननिविलासहै॥नासिकासरोजगंध
वाहसेसुगंधवाहदारयोसेदसनकेसोकै
जुरीसोहासहै॥भाईऐसीग्रीवभुजपानसो

उदरअरुपंकजसेपाँयगतिहंसकीसीजा
सहै॥देषीहैगुपालएकगोपिकामैदेवता
सीसोनेसोसरीरसबसौंधीकीसीवासहै
८७॥ ॥टी० सर्वांगवर्नेनं चंदआधेसोभागटू
कसमानभाललछाटहै भृकुटीकमानसरीषीनै
नविलासकटाक्षमैनकामसरवानसेहैं नासिका
कीस्वाँसकमलसुगंधसी गंधवाहपवन तैसोसु
गंधहै अनारबीजसेदसन विजुरीसोहाँस ग्रीवाँ
भुजसुढारभाईसी पत्रसोउदर कमलसे पाँयहं
ससीचाल हेगोपाल एकगोपीदेवता एसीहोंदे
षीसुवरनसो सरीर सौंधेसीअंगकीवासहै ८७॥

॥मू० सर्वभूषनवर्नेनं क० विछियाअनौट
बाकेघूंघुरूजरायजरीजेहरिछबीलीछुद्र
घंटिकाकीजालिका॥मूंदरीउदारपौंचीकं
कनऔचूरीचारुकंठकंठमालहारपहिरेगु
पालिका॥बेनीफूलसीसफूलकनफूलमां
गफूलषुटिलातिलकनीकमोतीसोहैबा
लिका॥केसोदासनीलवासजोतिजगमगि
रहीदेहधरेस्यामसंगमानोदीपमालिका
८८॥ ॥टी० सर्वभूषनवर्नेनं विछियाहंसक
अनौटपायअंगुष्टभूषन बाँकटेढोकडा घूंघुरूज
घुरूजरायजरीजेहरिपायजेबछबिवारीछुद्रघंटिका जालिका समूह

मुंदरी उदार सुंदर पहुँची कंकन चारु चूरी औ कंठ विषे कंठ माल हार वह ग्वालिन पहिरे है वेनी फूलादि भीधारनकिये है कुटिलाश्रवनभूषन तिलकनीकामा को औ मोतीमालकिंवा नासिकामेंभीबालिका दूलो नील वसन मैं जोति अंग की जगमगाइ रही दीपमालिका दिवारीकी अमावसको होतसो मानो हैं धारनकिए हैस्यामकेसंगमैं ८८॥ ॥मू० अंगदीसवर्नेनं दो० कंचनकेसरकेतकीचपला चंपकचारु॥ कमलकोसगोरोचनातिय तनदुतिअवतार ८९॥ ॥टी० अंगदीसवर्नेनं अंगदीसि कंचनादिजेहैं तेतियकी दुतिकेअवतारसदृसहैं बरनिए ८९॥ ॥मू० स० राधाकेअंगगोराईसीओरगोराईविरंचिबनावन लीनी॥ कैसतबुद्धिविवेकसौंएकअनेकविचारनिमैं दृगदीनी॥ वानिकतेसीबनीनबनावतकेसवप्रस्तुतह्वैगईहीनी॥लैतबकेसरिकेतकिकंचनचंपककेदलदामिनिकीनी ९०॥ ॥टी० राधेकीजेसीगोराईहै अंगमैं तैसीविधाताने औरदूसरीगोराईबनाई अर्थ आदि सक्तिके बरोबर मेरीबनाईगोराईहोय सोएकबुद्धि है ताकोअनेकविचारमैं लगाई किंवा सतसत्तासों साँचतासोंकिंवा सत्तासों औबुद्धीसों विवेक

कढ़िएज्ञानसौं एकगुराईबनाइबेहेत अनेककवि
चारमैंहगदए किंवाबुद्धिऔविवेकसौं एकसेक
राकरिहगकीगतिदई सोतैसीनवनपरी बनावत
बानिकप्रस्तुतअबभीवनावतहै किंवा पटतरहो
नहोगई कहीँप्रस्तुतभीपाठहै तोप्रसंगमैंहीन त
बताहीगुराईतैं केसरिआदिबनाए ९०॥ ॥मू॰
**गतिवर्नेनं दो॰ राजहंसकलहंससम अ
तिगतिमंदविलास॥ महामत्तगजराजसी
बरनहुकेसवदास ९१॥** ॥टी॰ गतिवर्ने
नं चरनचोंचअरुन सरीरसुपेत सोराजहंस आ
नकलहंस अतिसयमंदताकोविलासगतिमैं॥
औमत्तगजराजसी ९१॥ ॥**मू॰ क॰ किधौंगज
राजनिकोंराजतहैअंकुससीचरनविला
सनिकोआरससजतहै॥ वलितअनंतग
तिललितसिंगारवेलिफूलहावभावफल
फलनिफलतिहै॥ किधौंकलहंसनिकोसं
कासककेसोदासकिधौंराजहंसनिकोला
जसीलगतिहै॥ किधौंनंदलाललोललोच
नकीभ्रूंषलाकितेरीलोललोचनअलोल
अतिगतिहै ९२॥** ॥टी॰ सषीकीउक्तिनायका
प्रति तेरीगति सबकीगतिजीतनहारीहै गजकोअं
कुससीहै चरनविलासिनकौं तिनहीगजनकोआ

लसदत किंवाचरनविलासः -गतिको आपाँव धरि
बो तेर्द्कोञ्चालससजरह्योहै अथ्यंगतिजोकाहेसु
रूप दार्थहैसो चरननहींधरिवेदेत चलितजानें
हैबहुतगतिसोमानोंललित सिंगाररसकोचलोहै
ताकेलीलादिकहावसोंहैंफूल अहमनविकार
भावसोईहैफल कैकलहंसनको संकासकग
ईहै अर्थतेरीगतिदेष यहज्ञानपरतको कलहं
सकीभीऐसीगतिहै अरुराजहंसनकी गतिको
लज्यासीलागैहै कैनंदलालकेचंचललोचन वँ
धिबेकीअष्टषलासाँकरहै कैहेलोललोचनीनेरी
अचंचलगतिहै ९२॥ ॥मू॰ संपूर्नमूर्त्तिव
र्नेनं दो॰ चंद्रकलाउडदामिनीकनकस
लाकालेष॥दीपसिषाओषधिलतामाला
बालादेष९३॥ ॥टी॰ संपूर्नमूर्त्तिवर्नेनं इंदुक
लासमउडतारागन सलाकाछरी ओषधी ओलता
सी९३॥ ॥मू॰ स॰ तारासीकान्हताराायनसं
गओचंद्रकलानिसिचंद्रकलासी॥दामिनि
सीघनस्यामसमीपलगेतनस्यामतमालल
तासी॥ आधिकीओषधिसीकहिकेसवका
मकेधाममैंदीपसिषासी॥सोनेकीसाँकसी
दूरभएतैलसैउरमैंउरहारप्रभासी ९४॥ ॥
टी॰ ताराानक्षत्र चंद्रमाअस्वनी आदिभोगकरतसो

कान्हजोतारायनहैं चंद्रमा तिनकेनजीकतारासी
है चंदकलानिसिअमावसकीतामैंचंद्रकलासी है
औघनस्यामतैंहरी किंवाशृंगारमेंदामिनीसीहै औ
स्यामतनतमालमैंलतासी आधिमनुदुषकीऔषध
अरुकामकेधामभवनमैंदीपसिषा अरुदूरतें सुवरनकी
सींक सलाकासी स्यामकेउरमैंहारकीप्रभासोभासी
९४॥ ॥मू॰ छप्पै महिमोहनमोहिनीरूप
महिमारुचिरूरी॥मदनमंत्रकीसिद्धिप्रेम
कीपद्धतिपूरी॥जीवनमूरिविचित्रकिधौं
जगजीवमित्रकी॥किधौंचित्तकीवृत्तिभ
त्तिअभिलाषचित्रकी॥कहिकेसवपरमा
नंदकीआनंदसक्तिकिधौंधरनि॥आधार
रूपभवधरनकोराधाहरिबाधाहरनि ९५
॥ ॥टी॰ छप्पै महिभूमिताकेमोहन कृस्नतिनको
मोहनीकोरूपहै अरुमहिमाकीरुचिरूरीसुंद
रिहै काममंत्रकीसिद्धीहै अरुप्रेमकीपूरीपद्धतिहै
जगजीवमित्रहरिकीजीवनमूरिहै केचितकीवृत्ति
इस्थितिरूपहै केअविलाषजोहै ताकीभृत्यपोष
नहारी केपरमआनंदकीआनंदसक्तिहै नाकीधार
नहारी कैभवजिनधारनकीनोऐसे हरीकोनूंआधा
ररूपहै केहरीबाधापीडाहरनऐसीराधाहै ९५॥ ॥
मू॰ दो॰ इहिंविधिविधिबरनहुसकलकवि

अविरलछविअंग॥कहीजथामतिबरनि
कविकेसवपायप्रसंग२६॥ ॥इतिश्री
द्विविधभूषनभूषितायांकविप्रियायांनष
सिषवर्ननंनामचतुर्दशप्रभावः १४॥ ॥

टी॰ ईप्रकारतें वरनौं अविरलनिरंतर२६॥ स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजकासीराजश्रीमदईश्वरीप्रसादनारायणस्याज्ञानुगामीललितपुरनिवासीहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराष्यकवीश्वरेणविरचितायांकविप्रियायांटीकायांनषसिषवर्ननंनामचतुर्दशःप्रभावः १४॥ ॥

मू॰ अथजमकालंकारवर्ननं दोहा अव्येतसव्येतअरुजमकवरनिदुहूदेत॥
अव्येतबिनअंतरहिअंतरकोसव्येत १॥

॥टी॰ अथजमक जहांअंतरालनपरेंऔरपदसौं सोअव्येत१॥

॥मू॰ आदिजमक दोहा
सजनीसजनीरदनिरषिहरषिनचतइतमोर॥पीउपीउचातकरटतचितचहुपियकोओर २॥

॥टी॰ आदिजमक सषीवचननायकासौं केहेसजनीतूं सजनीरद मेंघकोदेषि इतनिकेमोरनचतहैं पीउजानायकताकोतें पीउआदर सहितदेषि यहबातचातिककहतहै औनेंनायकहतिहौं हरिकीओरदेषि किंवापथनपदनैंजमक द्वितीयमेंवीपसा२॥

॥मू॰ मध्यमपदजमक

दो॰ मानकरतसषिकौनसौं हरितूं हरितूं आहि ॥ मानभेदकोमूलहैताहिदेषिचितचाहि ३॥ ॥टी॰ मध्यपदजमक हेसषीतूं मानकौन सोकरतिहै तूंहरिहरितूं आहिहैकिंवा आहिपीडा मानकीदूरकर जोतूंमानकरतसोई भेदकोमूल जान किंवामानामश्री श्रीनामसोभानहीतूंकरत सोईभेदकीजरहै ताकोचित्तकोचाहसौंदेषि ३॥

मू॰ तृतीयपदजमक दो॰ सोभासोभितअंगननिहयहींसतहयसार ॥ वारनवारनगुंजरतविनदीनैंसंसार ४॥ ॥टी॰ तृतीयपदजमक अपनीसोभासौं सोभितकरैं ऐसीअंगनानकोनायकनकौं पूर्वजनमकोकरनी विनानाहीं पाइयतुहै औहयसार घुरसारमें घोडाकोहीं सतनहींपाइएहै औवारनहाथी वारनदरवाजेप्रतिगुंजरतनाहींपाइएहै बिगरदिएसंसारमें ४॥ ॥मू॰ चतुर्थपदजमक दो॰ राधाकेसवकुंवरकी वाधाहरहुप्रवीन॥नेकुसुनावहुकरिकृपासोभनवीननवीन ५॥ ॥टी॰ चतुर्थपदजमक हेप्रवीन राधा के सव कुंवरकी वाधापीडा हरो नेककृपाकरिकेजोनवीन बीन है सो बजायके सुनावहु नवीननवीन मैं जमक ५॥ ❧ ॥मू॰ आद्यंतजमक दो॰ हरिकेहरिकैचलमनहिसुनि

वृषभानकुमारि॥ गावहु कोमलगीतद्वैसुष करताकरतारि ६॥ ॥टी॰ आद्यंतजमक॥ हरिकेनाम श्रीकृष्णके केवल मनको ग्रहण करिकै हे वृषभानकुमारी गीतगावहु सुषकरता करिकै हाथके तालदैकै किंवा हरएकवेरहरिकै वर्जेबल मनहोहै तेरेवर हैं दुषी नति होहु ६॥ ॥मू॰ द्विपदजमक दो॰ अलिनीअलिनीरजवसप्रति तरुवरनिविहंग॥ हेमनमथमनमथनहरिबसैराधिकासंग ७॥ ॥टी॰ द्विपदजमक अलिनीभ्रमरी अलिभ्रमरनीरजकमलमें रहत आनविहंग अनेकवृक्षमें हैमनमथ काममनकेमथनहारहरी सोराधाकेसंगरमत ७॥ ॥मू॰ त्रिपदजमक दो॰ सारससारसनैनसुनिचंद्रचंद्रमुषदेषि॥ तूरमनीरमनीयतहंतिनतेंहरिमुषलेषि ८॥ ॥टी॰ त्रिपदजमक सारसरससहित हेसारसकमलनयनीसुनि हेचंद्रमुषी चंद्रमादेषि रमनी तिषनमें रमनीसुंदरताकारनमें हरि अपने मुषतेंनोहीको मुष्य प्रधानमानतहैं ८ ॥मू॰ पाद्यांतपादादिजमक दो॰ आपमनावतप्रानपियमानिनिमानिनिहार॥ परम सुजानसुजानहरिअपनेचित्तविचार ९॥ टी॰ पादांतपादादिजमक प्रानप्रिय आप मनावत

हे हेमानिनीमानप्रतिष्टादेषिपरमसुजानप्रवीन सु सुंदररीतितैं जानसमुद्र ९॥मू. द्विपादांतजमक दो. जिन हर्‍यो जगको मन हर्‍यो वामवामदृग चाहि॥मनसावाचाकरमना हरिवनितावनिताहि १०॥टी. जिनहरिने जगनिकोमन हर्‍योहै वामनाममायाताके वामदृगतैं चाहिकै ताहितिनको मन हरु मनसावाचाकर्मनाते वनिकरीके हेवनिता किंवाहेवामतिन कोटेढेदृगतैंचाहति मनसादितैं हरिअर्थअपनो करिवनके ताहितिनकोकिंवा हेवनिताबनतिनसों १० मू. उत्तरार्द्धज मक दो. आजुछबीलीछबिबनीछाडिछलिनकेसंग॥तरुनितरुनिकेतरमिलोकेस वकेसवअंग ११॥ ॥टी. उत्तरार्द्धजमक आजुहेछबीली छबिबनीहै यातैंछलनी छलकरिवे वारीजेहैं तिनकोसंग छोडके किंवाछलनकेसंग हेतरुनी तरुवृक्षकेतरे मिलिकेसव कुसकेसवअंग सौं ११॥ ॥मू. त्रिपादजमक दो. देषिप्रवाल प्रवालहरिमनमथमथरसभीन॥षेलनव हसुंदरिगई गिरिसुंदरीदरीन १२॥ ॥टी. त्रिपादजमक प्रवाल नवीनपत्रदेषि प्रवालउत्तम जोबालस्त्री सोहरिविषैं मन कौंकरि मनमथकाम रससोभीन. षेलिवेकौं हेसुंदरी हरिगएहैं गिरिसुंदरी कंदरामैं १२॥ ॥मू. दो. परमानंदपरमानंद हिदेषलिवनउतकंठ॥पदअबलाअबलागि

हैमनहरिहरिकेकंठ १३॥ ॥टी॰ परमउ
त्कृष्टआनंदसौं परकोमानआदरकोदेनहारजोस्या
मतिन्हैदेषतिहै वनकेउतकंठनिकट यद्द्जोआवि
लासोंअवलागेगीमनकोहरिकैं हरिकेकंठमौं दे
षतवनउतकंठमैंजमकनाहीं यातैंत्रिपादजमक
जानिए १३॥ ॥मू॰ दो॰ जूझिगयोसंग्राममैं
सूरजुसूरज देषि॥दिवरमनीरमनीयक
रिमूरतिरतिसमलेषि १४॥ ॥टी॰ काहूकोउ
क्तिसूरमाकेहितकारीप्रति केजूझगयोहै जोसमर
मैं सूरसोसूर्जेरूपहोइगयो दिवस्वर्गताकीरमनी
अपसरा रमनीयसुंदरी किंवारमनीयतजि ऐसेंषा
ठमैं स्वर्गकेअपसराकौं तजिकेजाकीमूरतिरतिस
मानलेष्यो जूझिगयो यामैंजमकनहीहै १४॥ ॥
मू॰ चारिहुचरनमैंजमक दो॰ नहीउरव
सीउरवसीमदनमदनवसभक्त॥सुरतर
वरतरवरतजैनंदनंदआसक्त १५॥ ॥टी॰
चारिहूचरमैंजमक जिनकोमन नंदनंदनमैं आस
क्तहै तिनकोनहीं उरवसीअपसराउरमैंबसीहै॥
अरुमदनकामकोमदभीनहीहै किंवाउरवसीभू
षनभीनहींचाहत अरुसुंदरतरुवरकल्पवृक्ष॥अ
न्यतरुवर समानछोडत १५॥ ॥मू॰ इनिअ
व्यपेत॰ दो॰ अव्यपेतजमकनिमनौं बरनहु

इहिँविधिजान॥ करौंव्यपेतविकल्पनाज
मकनिकौसुषदान १६॥टी॰ इतिअव्यपेतजमकसमा
स॥अथसव्यपेतजमक॥विकल्पना विसेषकीरचना १६॥ ॥
मू॰ अथसव्यपेत॰ दो॰ माधवसोधवराधिकापावहुकान्हकुमार॥पूजोमाधवनियमसौंगिरिजाकोभरतार १७॥ ॥टी॰
सव्यपेत मालक्ष्मीकोधवपति ताकोसोधवपतिकरो किंवासोधोचित्तमैं यातरहकोआननहीँ यानिमित्तमाधववैसाषमैं गिरिजापतिसिवपूजो॥ इहाँ वहुपदमैं व्यवधानतैंजानिए १७॥ ॥मू॰ आदिअंतजमक दो॰ सीयस्वयंवरमाँझजिनवनितनदेषेराम॥तादिनतैंउनसपिनसुषतजेस्वयंवरधाम १८॥ ॥टी॰ आदिअंतजमक जिनवनितनतैं किंवाजिनने वनेतनके जानकीकेस्वयंवरमैंरामदेषे तेघरवरदोई तजे १८॥ ॥
मू॰ अथपाद्यांतनिरंतरजमक दो॰ पापनसतयौंकहतहीँरामचंद्रअवनीप॥नीपप्रफुल्लितदेषियौंविरहीविरहिसमीप १९॥ ॥
टी॰ पाद्यांतनिरंतरजक पापराम अवनीप राजानामलेत ऐसेनासत जैसेनीपनाम कदंबफूलदेषि विरहीविरहिनीकेसमीप आवतविरहनासकरत १९॥
मू॰ सांतरस॰ दो॰ जैसेहुवैनचंद्रमाकमला

करसविलास॥ तैसेहीं सत्रसाधुवरकमला करनउदास २०॥ ॥टी॰ सांतरस जैसे चंद्रमा कमलकी आकर किंवा चंदकिरन कमल नाहीं प्र रसत तैमहीं साधुकमला लक्ष्मी नाहीं छुवन॥ २०॥ ॥मू॰॥ आद्यंतरजमक दो॰ परमनन्वि यौं सोभियत परम दसरश्रर धंग॥ कल्पलताजै सील सैकल्पवृक्षकेसंग २१॥ टी॰ आद्यंतरजमक प रमतन्वी कृसांगी पारवती सिवके अर्धे अंग दिपै कै सी सोभित जैसी कल्पलता कल्पवृक्ष के साथ परम तरुनि भी पाठ है॥ ॥२१॥ ॥मू॰ त्रिपादादि जमक दो॰ दानदेत यौं सोभियत दीन नर निके हाथ॥ दानसहित यौं राजहीं मत्त ग जनिकेमाथ २२॥ ॥टी॰ त्रिपदादिजमक दान के॥ समय दीनके हाथ सोभै हैं जैसे दाननाम मदजल वारे हाथीके माथा २२॥ ॥मू॰ चतु ष्पदादिजमक दो॰ नरलोक हिरापत सदा नरपति श्रीरघुनाथ॥ नरकनिवारन नाम ज गनरवानरकोनाथ २३॥ ॥टी॰ चतुष्पदा दिजमक नरलोककोरामकैसेरापत किंवा नर नाम नारायनको लोक नरमनुष्यपति रामकैसेरा षत नरकपूरजैसेंपति मानिक जतननैंरापत न रकनिवारत हैं जिनको नाम नरवानर कहूं नवा

हनपाठहै तहाँकुबेर २३॥ मू॰ इतीसुषकरजमक अ
थदुषकरजमक दो॰ सुषकरदुषकरभेदहैसुष
करबरनेजान॥ जमकसुनोकविरायअब
दुषकरकरौंबषान २४॥ ॥टी॰ दुषकरज
मक सुषकरबरनैं पाँचतेंजानलीजिए २४॥ ॥
मू॰ अथदुषकरजमक दो॰ मानसरोवरथा
पनैंमानसमानसचाहि॥मानसहरिकेमी
तकोमानसबरनेताहि २५॥ ॥टी॰ अथ
दुषकरजमक कोईउत्तमपुरुष धनवारेसौं क
हत हेमानकेसरोवरतैं अपनेमनविषैं मालषि
मी ताकोनासचाहतहैं मानसुंदरनरहसौं हरिवि
ष्णुकेमित्रकौं किंवासहरी सहितजेहरिवेस्मवसो
कैसोहैके मानसमनुष्यवाल्मीकादिजाको वर
नत २५॥ ॥मू॰ दो॰ बरनीबरनीजातक्यों
मुनिघरनीकेईस॥रामदेवनरदेवमतिदे
वदेवजगदीस २६॥ ॥टी॰ रामयज्ञमैंकाहू
भूपप्रतिद्विजबचन कैहेधरनीकेईस रामनेजोब्रा
ह्मनकोबरनीकरी सोकैसेबरनीजाय रामदेवकै
सेहैं नरकेअरुदेवकेदेवहैं किंवाऐसोधनरामहीं
देत देहिंगेआननाहीं आनकाकोईनरदेव राजा
जगमैंदेइगो रामकैसेहैं देवताकेदेव आनंद क
रनवारेजगदीस्वरदेव अर्थ आनंदतें दुषकर २६

॥मू॰ दो॰ राजराजसंगईसहिजराजराजमन
मान॥ विषविषधरअरुसुरसरीविषविष
मनउरआन २७॥ ॥टी॰ राजाकेराजाकुबेर
अरुसिवएकत्ररहतहैं राजराजमनिभीपाठहै॥
कुवेरध्यानकरत अरुद्विजराजाचंद्रमा चंद्रसेप
रहैं राजानृपमनमानत चाहत अर्थशिवनिमित्त
तपकरवरपावत विषहैगरेमें औविषधरसर्प॥
अरुसुरसरीगंगाकोविष जलविषसहित ऐसेम
हादेवमनमें हृदयमेंआनि किंवाद्नकोविषमसतुक
यहगुरुशिष्यप्रति कहत विषजलकोनाम प्रसिद्ध न
ही यातें दुषकर २७॥ ॥ मूल ॥ छंद ॥सम
नमाननाचही॥ अमानमानराचही॥ स
मानमानपावही ॥ विमानमानधावही
२८॥ ॥टी॰ ॥अथनगस्वरूपिनीछंद॥नचिबेको प्रमान
ताल ताकोमानिकेनचेहै अमानकहिएअमितं मान ज्ञान
नाद शास्त्र तामें रचत है यातें ताके समान मान पायकें
विमान रथकी रीति तें मान के दौरें है॥ मान को
अर्थ ज्ञान कियो यातें दुषकर २८॥ ॥ ॥
२८॥ ॥मू॰ दो॰ कुमतिहारिसंहारिहठहित
हारिनीप्रहारि॥ कहारिसातविहारिवनह
रिमनहारिनिहारि २९॥ ॥टी॰ सषीवचन
मानिनीनायकाप्रति कैकुमतिकों हारिछोडि हठ

जोहै ताकौं संहारदूरकरि जेसषीनो कौं कुमतिसिषा
वतीहैं तोहितहारिनीहैं तिन्है प्रहारि अर्थ मारिकै
दूरिकरि कहारिसान रिसिमतिकर वनमैंविहारक
रि हरिजोनायक ताकीजो मनहारिनि जोरात्रीताको
ओरनिहारदेषि अर्थरात्रीवितीतहोतहै हेहरिउ
रकीहारमाल किंवा हरिमनहार करतहैं ताकीओ
र निहार एकहरिकौंविहार संहारकियो यातैं दुषक
र २९॥ ॥मू० चौपाई सुरतरवरमैंरंभाव
नी॥सुरतरवरमैंरंभावनी॥सुरतिरंगीनी
करिकिन्नरी॥सुरतिरंगीनीकरिकिन्नरी
३०॥ ॥टी० सुरतरवर कल्पवृक्षके बागमें रंभाक
दलीवनीहै अरसुरतकीजो रवसब्द तामेंरंभा अप
सरा वनीहै सुरसात ताकीतरंगिनीनदी करहाथ
में किन्नरीनाम देवबाजालिए हैं फेरसुरतसोरंगी
नी करैहै किन्नरपतिनी यामें जमकसबचरनमें है
३०॥ ॥मू० दो० श्रीकंठउरवासुकिलसतस
र्वमंगलामार ॥ श्रीकंठउरवासुकिलस
तुसर्वमंगलामार ३१॥ ॥टी० श्रीकंठमहादे
वकैसेहैं उरगजोहै वासुकोसर्पलसतहै औमंगल
केअमार रासभीकहैं किंवा अमारहैं कामसौंकाम
नहीहै जाको कोककीबाधानहीहै फेरसर्वमंगला
भवानीकैसीहैं मारनाम मालावरो वरहैं फलकीमा

ताकीउपमा इन्द्रीकोंदीनहैं पुनः श्रीसोभाजुक्तहैं॥
किंवाकंठसोभाजुक्तहैउरगपाठमेंउरगकोअर्थे उर छातीविषें
गकोअर्थप्राप्तहोइकै वासुकीकहिएफूलकी वासु
कीकहिएफूलकीमालाउर विषें प्राप्तहैजाकों ३१॥
मू० स० दूषनदूषनकेजसभूषनभूषनअं
गनिकेसबसोहै॥ ज्ञानसपूरनपूरनकेप
रिपूनभावनिपूरनजोहै॥ श्रीपरमानंदकी
परमापरमानंदकीपरमाकहिकोहै॥ पातु
रसीतुरसीमतिकोअवदातरसीतुलसीप
तिमोहै ३२॥ ॥टी० अवदातसेतजोरससांत
ताकेरसीकहिएभक्तजन सोसबश्रीतुलसीनाथ
हैं अपनेबसकरतहैं दूषननामपरदूषन तिनके
दूषनराम तिनकेजसहोरहेहैं भूषनअंगनमें अरु
भूपृथ्वी ताकोंषनके सोवैहैं अरुज्ञानकरिकैपूरन
हैं अरुपूरनजोहै षोडसकलातैं परिपूरनरघुनाथ
तिनकेभावनकोजानेहैं अरुपूनजोहै पुरजोहै स
हरतिनमेंनहीजातेहैं श्रीपरमानंदपरमेस्वर तिनकी
परमाजोसोभा तेंजेपावतहैंआनंदकोपान अरुप
रकीमाजोहैलक्ष्मी किंवापरउत्कृष्टजोलक्ष्मीतीकोक
हतहैं कीकोहै पातुरपतुरियानाकीसीजोहै सोभा
सोतुरसीहैमतिको अर्थपद्दीहै ३२॥ ॥मू० अनु
प्रास छंद जोतूं सषि नकहै कछुचालहि॥

तौहौंकहुइकबातरसालहि ॥ तोकहुँरे
हुँबनीबनमालहि॥मोकहतूँमिलवैनँदला
लहि ३३॥ ॥टी० अनुप्रास अबअनुप्रासकह
तहैंजहाँपदफेरफेरआवैसोजमक अरु वर्नफे
रफेरआवै सोअनुप्रासजोतूँयावातकाहूतैँनकहै
चलावै तोमैएकवातकहौं रसकोआलघर तोकोमै
बनाईबनमालदेहुँ मोकोतूँनंदलालसौं मिलावै॥ इ
हाँवृत्तानुप्रासजानिए ३३॥ ॥मू० पुनः जैसेरवै
जयश्रीकरवालहि॥ज्यौंअलिनीजलजातर
सालहि॥ज्यौंबरषाहरषैविनकालहि॥ सौंह
गदेषनचहतगुपालहि ३४॥ ॥टी० उक्तिपू
र्वानुरागमैंनायकाकीसषीप्रति जैसेजयकीश्रीकर
वालनहीँचाहत औजयभएतरवारकौंमिलत अरु
जैसेअलिनीभ्रमरीजलजातकमलरसालआमकौं
प्रासहोतहै जैसेकोईसमैंबिनाबर्षाहोइ तैसेहमारे
द्रिगगुपालकौं देषनचाहत ३४॥ ॥मू० सवैया
स्यंदनहाँकतहोलहुषीदिनदूरिकरैसबके
दुषदंदन॥छंदनिजानीनहीजिनकीगतिनां
मकहावतहैंनदनंदन॥फंदनपंडुकेपूतनि
कीमतिकाटिकैमनमोहनिकंदन॥चंदन
चैरीकेअंगचढावतदेवअदेवकहैंजगवं
दन ३५॥ ॥टी० उक्तिकविकी स्यंदनरथहाँक

तदुषाहोत जेश्रौरकेदुषदंद दूरकरत श्रकदंदंन मैं जिनकीगतिनहींजानी तेनंदश्रहीरकेपुत्रकहाव त पंडुपुत्रयुधिष्टिर तिनकीमतिकेफंदमेंजेपरेहैं श्री मोहकेफंदकाटनेवारे चंदनचेरीकोअंगमेंचढाव त अर्थकुबजाको देवश्रदेवकहतहैं जगवंदननि नको ३५॥ ॥मू० दोहा इहिविधिश्रौरहुजा निएदुषकरजमकश्रनेक॥ बरननचित्र कवित्तश्रबसुनियोसहितविवेक ३६॥ ॥ इतिश्रीइहिविधभूषनभूषितायांकविप्रिया यांजमकश्रलंकारवर्ननंनाम पंचदशः प्र भावः १५॥ ॥ ॥ टी० इहिप्रकारनैं दुष करजमक श्रनेकहैं॥ श्रबचित्रवर्ननकरत हौं॥ १५॥स्वस्तिश्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्र सादनारायणसिंहस्याज्ञाभिगामी ललितउरनिवासी हरिज नकवीश्वरात्मजेन सरदारारव्य कवीश्वरेण निरचितायां कविप्रियायां टीकायां जमक श्रलंकार वर्ननं नाम पंचदशः प्रभावः॥ १५॥ ॥ ॥ ॥

मू० श्रथ चित्रश्रलंकारवर्ननं दोहा॥ के सवचित्रसमुद्रमेंबूडतपरमविचित्र॥ ता केबुंदककेकनहिबरननहौंसुनुमित्र १॥ ॥ टी० चित्रश्रलंकारवर्ननं जेचित्रसमुद्रमें डूबेहैं ते कविपरम विचित्रहैं ताकेबूंदकोहौं एककनिकाय

रनोहीं कहूँचित्रकवित्तभीपाठहै १॥ ॥मू० दो०
अथऊरधबिनबिंदुजुतनजिरसहीनअपा
र॥बधिरअंधगनअगनकोकीजतनहींवि
चार २॥ ॥टी० अधबिंदुजैसेवकारमें ऊरध
बिंदुजैसेबिंदु अरु अर्धेबिंदुजैसेबान अरु विसर्ग
जोआगे देतहैं इनबिन होयतो चित्रमें दोषनाहीं
फेरजतिकरि औरसकरिहीनहोयतो दोषनाहीं॥
बधिरादि दोषनमानिए औगनदुगुन दोषनमानि
ए २॥ ॥मू० दो० केसवचित्रकवित्तमेंइन
केदोषनदेख॥अक्षरमोटोपातरोबवजय
एकोलेष ३॥ ॥टी० मोटे संजोगी पातरेलघु
बकार वकारजकार यकार एसबएकजानिए॥
३॥ ॥मू० दो० अतिरतिमतिगतिएककर
बहुविवेकजुतचित्र॥ज्योंनहोयक्रमभंग
सौंबरनौंचित्रकवित्त ४॥ टी० अतिअतिसयरति
प्रीति मतिबुद्धिकीगति एककरिके अरुबहुविवेकजुतचित्त
करिकेजामेंक्रमभंगनहोइ सोबरनिए ४॥मू० अथनिरोष्ट
॥दो०पढतनलागेअधरसौंअधरबरनसौंमंड॥औ
रबर्नबनौसबैइकपवर्गकोछंड ५॥टी०अधरनामनीचे
के ओष्टकोहै तोभी भाषामें दोईको कहै हैं सो पढतमें न
लगै अरु पवर्ग न होय ५॥ ॥ मूल ॥जथा॥
कवित्त॥ लोकलीकनीकलाजलीलतसेनं॥

दलाललोचनललितलोललीलाकेनिकेत हैं ॥ सोहनकोसोचनासकोचलोकलोकन कोदेतसुषताकोसपीदूनोदुषदेतहैं ॥ केसोदासकान्हरकेनेरहीकेकोरकसेअंगरंगरातेरंगअंगअतिसेतहैं ॥ देषिदेषिहरिकोहरनताहरननैनीदेषानाहीदेषनहीहियाहरिलेतहैं ६॥ ॥टी० नाइकाकीउक्तिसषीप्रति केलोकसंसारताकीलोकमजादाओनांकोलाज ताकोनंदलाल लीलतसे हैं अरुलोचनललितहैं लोलहैं किंवालोललीलाकेनिकेतघरहैं ॥ मनमथकोसोचनहीहै अरु संकोचलोकके लोगन कोनहीहै जोउन्हे सुषदेत ताको दूनोंदुषदेतहैं कनैल ताकीकोरकलीरक्तताके रंगसदृस रंग है अंगको अरुतिस्वेतहैं अर्थ कलंकीहै देषिदेषि हरिको चित्तको हरनताहे हरननैनी अरु अनदेषे बिनहियेकों हरिलेतहैं पाठमेंओठसोंओठनहीं लगैहैयातैंनिरोष्टअंगअंगभी पाठहै ६॥ ॥मू० दोहा एकोसुरजहंबरनिएअद्भुतरूपअवर्न॥ कहिएमात्रारहितजहंमित्रचित्रआभर्न ७॥ मात्रारहितएकस्वरचित्र दूसि॥७॥ टी० ॥ मात्राहीन० एकवर्नसुररहित अक्षरतार्पमोआवर्णकहिएआभर्ण चित्र को भूषनजानिए ७॥ ॥मू०

क॰ जगजगमगतभगतजनरसबसभवभ
यहरकरकरतअचरचर॥ कनकवसन
तनअसनअनलबडवटदलवसनसज
लथलथलकर॥ अजरअमरअजवरद
चरनधरपरमधरमगनवरनसरनपर
॥ अमलकमलबरवदनसदनजसह
रनमदनमदमदनकदनहर ८॥ ॥
टी॰ नभगवानकेरस अनुराग ताकेबस अनुराग
मैं आसक्तयहअर्थ किंवा जगमेंजगमगत भगत
जनके रसबसहैं अर्थ भासतहैंभगवानसे जगम
गहोयके भवसंसार ताकोभयहरलेतहैं चरजीव
जेहैं तिनकोअचरकरदेतहैं अर्थ कर्मानुसारजेजी
व स्वर्ग नरक भोगततिन्हेंमुक्तिदेकर अचरकहिए
अचल करदेत रत्नयोडलयोश्चैव॥ इहां अचरको
अचलअर्थकियोहै कनकसोवरन ताके बसनाहीं
हैं किंवा कनकरंगवत वसनहै तनमें जिनके अर्थ
पीतांबर शिवमें बाघंबर असन अनलवड अस
नभोजन बडाअग्निकालकूट बडबडे दलकेबस
नाहीं अरु वटदलपत्रसोहै वसनजिनको अरु स
जलथलथलकर्योहै गंगाकरिके जिननें॥ हरीपक्ष
बाडवाअगिनजिननेपीलई अर्थ दावानलपानकि
यो किंवा अरुवटदलपैवासकियोप्रलय कालमैं

जिननैं हरइति हरअजरहैं जरारहितहैं अमरहैं मरनरहितहैं॥ अजहैं जनमरहितहैं वरदेनंदोषे चरनधरत परमधरमकेधारनकरता॥ गनमन मनसरनपर गनोगमनजाको सरनपरंपर ॥ हरीपक्ष अजरअमरजो विधिब्रह्मा ताकोंवरदेनहार औरप रमधरमकेधारनहार अमलकमलवरवदन अम लकमलवत वरश्रेष्टहैं वदनजिनको तेसहीहूरी कोभीजानिए जसकेसदनघरहोईहैं हरसिव॥तिन कोनहीहै मदमदन कामकदनकहिए हरनहारेहैं अर्थनासकरनहारे अरुमदनकदनके कर्त्ताभी हैं हर्त्ताभीहैं अर्थात रतिकोवरदान देकरकेउनप तकियो हरिकेसेहैं मदनकदनहर्त्ता हैं अर्थ प्रद्यु म्नको उत्पन्नकियो उचितअर्थ सिवपेहै अरुहरि को सबकोई करैहैं यातैंहमहूलियो ८॥ ॥मू०

एकाक्षरनाम दोहा एकादिकदैवर्णव हुवर्णोसब्दबनाय॥ अपनेअपनेबुद्धि बलसमुझतसबकविराय ९॥ ॥टी०

एकाक्षरसब्द एकआदिदैकरके बहुवर्णके स ब्द बरनौं ९॥ ॥मू० दो० गो०गो०गं०गो०गी० अ०आ०औ०धी०ह्री०भी०भा०नु॥ भू वि ष स्व०ज्वा०द्यौ०हि०हा०नौ०ना०सं०भं०मा० नु० १०॥ ॥टीका गोकहिएधेनु अरुगोजलगंऊ

हिएगंगाजी अरुगीत गोकलवत्स अरुकिरन गी
कहिएवानी अकारकहिएवासुदेव आकारकहि
एब्रह्मा श्रीलक्ष्मी धीबुद्धि ह्रीलज्जा भीभय भान
सूर्ज किंवा भाप्रकास तुवितर्क वितर्कनामसूर्ज
कोहै॥ प्रमान॥ वितर्केनार्कमार्तंडद्रूत्समरः॥ भूपृ
थ्वी वीपक्षी खआकास खधनुषगुण किंवा स्वस्व
र्ग ज्वाज्वाला द्योदिवस हीहिरन्यगर्भ निश्चय ह्मा
गंधर्व श्रोपुरुष नोगिनती नानाट्य संसंकर्षण॥
भंतारा इनको एकस्वरूप मात्रसु नुप्रस्तुत किंवा
मानो १०॥ ॥**मू॰ द्वैअक्षर दोहा रमा॰उमा॰
बानी॰सदा॰हरि॰हर॰विधि॰संग॰वाम॰॥
क्षमा॰दया॰सीता॰सती॰वाको॰रामा॰राम
॥११॥** ॥टी॰ द्वैअक्षर रमाहरिपतिनी॥उमाहर
पतिनी वानीब्रह्मापतिनी सतीपतिव्रता क्षमादया
संजुक्तजोसीता तीनदेवकेसाथ यहवाम सदासं
गमैंरहत किंवा वामनामसुंदर है वाकोअर्थ वाकौं
कीकोअर्थकीनौं रामनैंरामादस्त्रीकरी ११॥ ॥
**मू॰ त्र्यअक्षर दो॰ श्रीधर॰भूधर॰केसिहा
॰केसव॰जगत॰प्रमान॥ माधव॰राघव॰कं
सहा॰पूरन॰पुरुष॰पुरान॰१२॥** ॥टी॰॥त्र
यअक्षर लक्ष्मीधर पृथ्वीधर केसिहा केसीमारनहा
रे केशव किंवा श्रीसोभाधरनहार जगतप्रमानकर

तहीं पूरनपरब्रह्म पुरुषपुरान पुरानेरूप किंवा मा
धव राघव कंसहा कंसकेमारनहार रामायन औ
भागवत अरु अन्यपुरान मुनुतिनकेजगत प्रनान
करत किंवा इनहींमें जगतहै १२॥ ॥मू॰ चतु
रअक्षर क॰ सीतानाथसेतुनाथसत्तनाथ
रघुनाथजदुनाथब्रिजनाथदीनानाथदेवगति
॥देवदेवजक्षदेवविस्वदेववासुदेवव्या
सदेवदीनदेवदेविदेवदीनरति॥नरवी
ररघुवीरजदुवीरब्रजवीरबलवीरवीर
वीररामचंद्रचारुमति॥रागपतिरमाप
तिरामपतिराधापतिरसपतिरासपतिर
सापतिराजपति १३॥ ॥टी॰ चतुरअक्षर
सीतानाथ आदिकेसव भगवानकेनामहैं १३॥ ॥
मू॰ अथषटविंसति अक्षरादिएकाक्षरांत
वर्ननं॥ दोहा॥ अक्षरषटविंसतिसबैभा
षावरनबनाव॥एकएकघटएकलगिकै
सबदासमुनाव १४॥ ॥टी॰ अथषटविंस
तिअक्षरादिएकाक्षरांतवर्ननं॥ छब्बीसअक्षरसौं
लेकैएकएकअक्षर छोडतजाय एकअक्षररहै
१४॥ ॥मू॰ दो॰ चोरीमाषनदूधप्योढरु
नहहगोपाल॥डरोनजलथलभटकिफि
रुगरलछबिसौंलाल १५॥ ॥टी॰ कैंद्दूं

ब्रिजवधूकीउक्ति नायकासों माषन दूध घृतदूंढ तकोहठकार चोरीसौंहेगोपाल फेरतुम जलथलमैं भटकिके डरतहीनाहीं फेरछबीलोरीतिसैं म्हगर नहीं इहाँ तीनिअक्षर कवर्गके कगघ चवर्गके चार चछजरु टवर्गकेचार टठडढ तवर्गकेपाँच॥ तथदधन पवर्गकेपाँच पफबभम फेरिपाँच रेफ लकार सकार षकार छबीसअक्षरआए एकअक्ष रदोवार तीनिवारपरैनाकीगननानहीं १५॥ ॥

मू० अथ पचीसअक्षर दो० चेरीचंदनहा थकोरीझचढायोगात॥ बिहूलछितिधर डिंभसिसुफूलेवपुषनमात १६॥ ॥टी०

अब पचीसअक्षरके चेरीकहिएकुबरी नाकेहा थकोजोहेचंदन सोडिंभसिसुजोश्रीकृष्ण तिननें अपनेगातपे रीझिकेचढायो डिंभनामकपटताक रिभिसुबालकभएहैं बालकनहींहै परमेस्वरहैं छि तिधरजोकंससो बिहूलबिकलभयोहै अर्थ हमा रेप्रानहर्ताहै याहीतें कृस्नफूलेहैं अपनें वपुसरी रमैंनहींसमातहैं इहाँकवर्गकेतीनि ककारगका र घकार चवर्गकेदोइ चकार छकार टवर्गकेदो डकार ढकार तवर्गकेपाँच तथदधन पवर्गकेपाँ च पफबभम औयकाररेफ लकार बिहूल इहाँ हकार मैं लकार लकार को॥ आगिलो अ

कागदकारहै औमपद् शिशुकोद्वंनानालस्मनकार
है भाषामैं दंतोसकारलिखनहै १६॥ ॥मू० चौबी
सअक्षर दो० अघबकसकटप्रलंबहन गारधेगजचानूर॥धनुषभंजिदृढ़दैरिपु निकंसमथ्योमदमूर १७॥ ॥टी० चौबीस
अक्षर अघासुर बकासुर सकटासुर प्रलंबासुर ग
जकुवलयापीड चानूर मल्ल कठोरजो धनुष नाकोंना
रि मदकोमूलजो कंस नाकोमथ्यो इहां कवर्गके
तीनि कगघ३ चवर्गकेदो चज२ टवर्गकेदो टढ
२ तवर्गकेचार थदधन४ पवर्गकेपाँच पुनिकौं
रफुनि पफबभम५ य्योकोयकार रल तीनोंसकार
षसश॥ह्॥ ह्र॥चित्रमैं बकारवकार एकहै यातेंचौ
बीसअक्षरभए अकारस्वरहैताकी गिनती नाहीं
१७॥ ॥मू० अथ तेईसवर्न दो०॥सुधीज सुमतिनंदपुनिभोरेगोकुलनाथ॥माषन चोरीकहकैपढ़कोनकेसाथ १८॥ ॥टी०
जसोदासुधीहैं नंदजीभोरेहैं देगोकुलनाथ माष
नकीचोरी अरु झूठ कहनो कोनकेसाथ यहां मा
षनचोरीझूठहठ यहभी पाठहैकवर्गके क
गकार चवर्गकेचकारझकारटवर्गकेटकारढकारतवर्ग
के५ पवर्गकेचार पुनकोठौरफुनहैं मधुमति द
हाँयकारहै औश कारनालख्जानि॥ रे पाख्या

सकारहकारजानिए १८॥ ॥मू० अथबाईसअक्ष
रके दोहा॥हरिदृढबलगोविंदविभुमाय
कसीतानाथ॥लोकपविठ्ठलसंषधरगरुड
ध्वजरघुनाथ १९॥ ॥टी० हरिभगवानकेनाम
हैंमायकजाकेबसमायारहै विठ्ठलभीनाम भगवा
नकोहै कोईकहतहैं विठ्ठलइनके गुरूकोनामहै
ताकोभगवान करिकह्यो इहाँ कवर्गकेचार कषग
घ चवर्गकेएक ज टवर्गकेतीनि ठडढ तवर्गकेपा
च तथदधन पवर्गकेचार पबभम यरलसह॥
यह बाईस १९॥ ॥ ॥मू० अथइकईस
अक्षरके दो० जैसेतुमसबजगरच्योदियो
कालकेहाथ॥तैसेअबदुषकाटिएकर
मफंददृढनाथ २०॥ ॥टी० हेनाथजैसेतुम
सब जगतकोरचिकै कालजमताकेहाथदिए तैसे
तुमसबदुषकोकाटो हेबलिकर्मकेफंद बंधनको
काटे याकवर्गके ३ कखग चवर्गके१ज टवर्गके२
टढ तवर्गके४ तथद न पवर्गके ३॥फबम यरल
वह औतीनौं सकारतैं एकईसअक्षरभए २०॥ ॥
मू० अथवीसअक्षर॥ दो०॥ यकेजगतसमु
झायसबनिपटपुरानपुकारि॥मेरेमनमैंबु
भिरहेमधुमर्दनमुरहारि २१॥ ॥टी० विंसा
क्षर उक्तिनायकाकीसषीप्रति केसबगुरुजन॥मो

कौं समुझ्यकैयके पुराननकी सापउकारिकै परने रेमनमैंजो चुभिरहेहैं सोनाहीं निकसत मधुकै मर्दनहार मुरारिश्रीकृस्न मधुमाषन मुरहार ऐसो पाठ है तहाँमधुरमाषनषवैया मुरदैत्यकेहरैया इहाँ कवर्गके३ कषग चवर्गके२चजझ टवर्गके१ट तवर्गके५ तथदधन पवर्गके४पवभम यरसह यह२० अक्षर २१॥ ॥**मू॰ उनईसअक्षर दो॰ कौजानेकोकहिगयोराधासोंयहबात॥ करीजु माषनचोरिबलिउठतबडेपरभात २२॥** ॥ टी॰उनईस अक्षरके सषीसषीसौं कहति कै है च लिबडेपरभात कहिएभोरउठिकै कौजाने राधासौं कौननेकहीहै कैतेरेग्रहमें माषनकृस्नने चोरीकरी अर्थ तोसौं सुरतिकरी इहाँकवर्गके३ कषग॥ च वर्गके२ चज टवर्गके२ठड तवर्गके३तधन पवर्गके४ पवभम यरलसह बवउएकजानिए २२ ॥ **मू॰ अठारहअक्षर दो॰ जतनजमायोनेह तरुफूलतनंदकुमार॥ षंडतकसकतजानअबकपटकठोरकुठार २३॥** ॥टी॰ अठारहअक्षरउक्ति नामकाकीनायकप्रति वडेजतनतैंहमारेउरमें तुमनेहको वृक्षजमायो ताकौंफूलतसमै कपटरूपीकुठारतैं षंडतमैं कसकत नहि कनाहींजानत हेनंदकुमार इहाँ कवर्गके३ कग

चवर्गके१ज टवर्गके३टठड तवर्गके३तदन पव
र्गके४पफबम यरलसह अकारस्वरहै २३॥ ॥

मू॰ सत्रःअक्षर दो॰ बालापनगोरसहरेबडे
भएजितिचित्त॥तिमिकेसवहरिदेहहूजौन
मिलोतुममित्त २४॥ ॥टी॰ सत्रअक्षरके॥उ
क्तिसषीकीनायकाप्रति बालापनमैं गोरसकोचोरी
कियो त्यौं किसोरभएचित्तहरे अबतुम नमिलोगी
तो देहभीहरीजायगी हेमित्तसषीइहां कवर्गके २
कग चवर्गके२ चज टवर्गके१ड तवर्गके३ तद
न पवर्गके४ पबमम रलवसह २४॥ ॥मूल

सोरहअक्षर दो॰ तुमघरघरमिडरातअति
बलिभुकसेनंदलाल॥जाकीमतितुम्हहीं
लगीकहाकरैवहबाल २५॥ ॥टी॰ सोरह
अक्षरउक्तिसषीकीनायकाप्रति हेबलि घरघरमें
अनेकघरमैं तुमभुकनामभोक्ता सोपराएकीवस्तु
पर तुमवाकेभोक्तासे मंडरातिहो अतिसय किंवा
बलिभुकदेवता अरुबलिभुकनाम काककोहै ता
मैं हीनोपमादोषहोतहैजाकी जानंदलालकीमति
तुमहींतुमसौं लगीहै कहाकरैवहबालउनको[illegible]
लाकाकरै तिहारोदोषनहींहै इहां कवर्गके२ कग
घ चवर्गके१ज टवर्गके१ड तवर्गके३तदन पव
र्गके३ बभम रलवसह अकारस्वरयातैं गिनतीन

हीं २५॥ ॥मू॰ पंद्रहअक्षर दोहा जोकाहू पैवहसुनैढूंढतडोलतसांझ॥ तोमिगमें ब्रिजहूबिहैवाकेअसुवनमांझ २६॥ ॥

टी॰ पंद्रहे अक्षर सपीवचन नायक सों जो निज्ञागे नायकासुनिहै केसांझसमै अन्यकोढूंढत फिरत हैंतौ वाकेअँसुवनसौं सबब्रिजडूबिजैहै इहां क वर्गके२ कग चवर्गके२ जझ टवर्गके२ डढ तव र्गके२ तन पवर्गके२वम रलवसह अकारस्वर है २६॥ ॥मू॰ चौदहअक्षर दो॰ ढुंकाढां कीदिनकरौटकाटकीअरुरैन॥यामेंकैस वकोनसुषघेरकरैपिकबैन २७॥ ॥

टी॰ चौदहअक्षर सपीवचन नायकसौं दिनमें तु मढूंकानाम छिपिकेदेषतहौ अरुरातिकैं टक ल गावत यामें तुम्हैंकहासुषहै आनपिकबैनि घेरु चौवावकरती इहां कवर्गके२ करवघ चवर्ग न हीं टवर्गके२टढ तवर्गके२दन पवर्गके२पवम यरवस अकारकीगिनतीनाहीं २७॥ ॥मूल तेरहअक्षर दो॰॥कह्योऔरकोमैसुन्योम नदीनोहरिहाथ॥ वादिनतैंबनमेंफिरैको जानैकिहिंसाथ २८॥ ॥टी॰ औरकोकहोमैं भीवहीअर्थ कह्योपरायोमैंसुन्यो यहभीपाठहै प रायोकहोमैनें सुन्योहै कैयाने हरिकेहाथ मन दियो

तादिनतैं कोजानैंकिहिंकेसाथ वनमैं फिरतिहै इहाँ कवर्गके १ककार चवर्गके १जकार टवर्गकोलोप तवर्गके४ तथदन पवर्गके२ फवम रवसह २८ ॥ ॥**मू० बारहअक्षर दो० काहूबैरिनकेक हेजीजुरिगयोसनेहु॥ तोरेतैंटूटैनहींकहा करौंअबलेहु २९॥** ॥टी० बारहअक्षर उक्ति नायकाकीसषीप्रति काहूबैरिनकेकहे जीयमैं अ लेह जुस्योसो तोरेतें अबनाहीं टूटत कहाकरौं त बसषीकहीकी अबलेहु अर्थ दुषविरहसहो॥ इ हाँ कवर्गके२ कग चवर्गके१ज टवर्गके१ट तव र्गके२ तन पवर्गके१ ब यरलसह अकारनाहीं गिन्यो २९॥ ॥**मू० इग्यारहअक्षर दोहा॥ वेसबसोहैंकालकीबिसरीकेसवराज॥ मुषदेषोलेमुकुरकरकरीकलेवालाज॥ ३०॥** ॥टी० इग्यारहअक्षर उक्तिपरकीयाषंडि ताकीनायकप्रति कैकालकोजोसोहैं सो बिसारइ ई मुकुरमैंमुषकों देषी लाजकोभोजन करलयो इ हाँ कवर्गके२ कख चवर्गके१ज टवर्गनहीं तवर्ग के१ द पवर्गके२ वम रलवसह यहइग्यारह ३० ॥ ॥**मू० दसअक्षर दो० लैताकेमनमानिक हिकतकाहूपैजात॥ जबकोऊजियजानि हैतबकैहैकहबात ३१॥** ॥टी० उक्तिसषी

कीनायकप्रति नायकआनपेआमकभयानक क.
हतहै ताकोमनमानिकलैकैं काहेकों काहूंनेआन
हो कोईदेषिदै तोकाकहिहै इहाँ चवर्गको १ च च
वर्गके १ज तवर्गके २तन पवर्गके ३ पवन यलक
१० अरु या दोहामैं मणिकोणकारटवर्गकोहै वाको
लै यापाठमें वकारभीहै अरुउकारभीहै उत्तरचित्रमें
णकारनकार वकार बकार उकार वकार एक बोल
हैं यातें इनकौंकहूंगिनतहैं कहूंएकमानतकिंवा इ
तनेस्वरहैं अइउणऋलृकएओंऐऔच यातेंतें इन
कोगिनतीनाहीहै अरुकहूंप्रयोजनपाय गिनतभी
हैं ३१॥ ॥मू॰ नवअक्षर दो॰ चुंचनचुंगेंअं
गारगनजाकोकरजियजोर॥सोऊजोजारै
हिएकैसेजियेचकोर ३२॥ ॥टी॰ नवअक्ष
रउक्तिकविकी कोईराजाप्रति कैचोचनतें चको
रअँगारचुंगेहैं जाचंद्रमा केवलतें किंवा चंद्रमाके
करकिरिनकोजोरजीभेयामिकैं काहे चंद्रमाके किर
नमैंअमृतहै सोचंद्रहियकोजारैतो चकोरकैसे
जीवै इहाँकवर्गके २ कग चवर्गके २ चज टवर्ग
नहीं तवर्गके १ न यरसह यह ९ सोऊजोजारै कि
येयहपाठमें उकारसहितनवहोतहैतो अकारस
र्थ होतहै यातें यहपाठ[illegible] नहीं ३२॥ ॥मू॰ सा
ठअ[illegible]र दो॰ नैननिनेवहुने कहूकमलनै

ननवनाथ॥ बालनकेमनमोहिलेबेचेमन मथहाथ ३३॥ ॥ टी॰ अष्टाक्षर हेकमलनैनन वीननाथ थोरेभीनैनको निनैंबहुको अर्थनीचेकरो लज्यासहित बालानिके मनमोहिकरकैं बेचेहैं म नमथकेहाथ यातें इहाँ कवर्गके१क चवर्गनहीं टवर्गभीनहीं तवर्गके२ थनपवर्गके२वम लवह महष्ट भए ३३॥ ॥**मू॰ सातअक्षर दो॰ रामकाम बससिवकरेविबुधकामसबसाधि॥ वा मरामबरबसकरेकेसवश्रीआराधि ३४॥** टी॰ सातआषर॥ रामने कामकेबस सिवको करैं॥ अर्थ षटवदन उत्पत्तकराए देवतनके कार्जकेनि मित्त श्रीजोजानकीजी रामवामहैं तिनने सेवाकरके कासरससुंदरराम वर औ९ अपने बसकरे इहाँ कवर्गके१ क तवर्गके१ ध पवर्गके२ वम रसश ॥७॥ चवर्गटवर्गनहीहै केशवअरुशिवमें ताल व्यसकार वकारहै॥ सोबवजयएको लेषयह लि षिवुके यातें वकारनहीं लियो जो वकार गिनेतोत लव्यदंतीएक होयगो अकारस्वरहै ३४॥ ❀ ॥ **मू॰ षटअक्षर दो॰ कामनाहिनेकामकेस बमोहनके काम॥ बसकीनोमनसबन कोकावामाकावाम ३५॥** ॥ टी॰ अथषट अक्षर यहसब कामकामकेनहीहैं मोहनकेहैं

जिनने बसकरेहैं वामसुंदर औ वामदुष्ट इहां क
वर्गके१ क तवर्गके१ न पवर्गके२ बम नट न्ह
पठभए चवर्ग टवर्गनहीं है ३५॥ ॥मू. पंच
अक्षर दो० कमलनैनकेनैनसेनैननकोन
काम॥कौनकौनसोनेमकेमिलेनस्यामस
काम ३६॥ ॥टी० पंचअक्षर उक्तिनायकाकी
सषीप्रति॥हमारेनैन कोनकामकेहैं अर्थ कोईका
मकेनाहीं सकामजोहैंस्याम सोकौनकौनसों प्रति
ज्ञाकरिके नमिलेस्याम सकामहोकें कमलनैनजो
हैं इहांकवर्गके१ क तवर्गके१ न पवर्गके१ न॥म
ल चवर्ग टवर्ग नहींहे वेकामपाठहै सो अशुद्ध
३६॥ ॥मू. चारिअक्षर दो० वनमालीवन
मैंमिलेवनीनलिनिवनमाल॥नैनमिलेम
नमनमिलोवैननिमिलीनवाल ३७॥ ॥
टी० चारिअक्षरके उक्तिसषीकीसषीसों आजवनमा
लीजोहैंकृष्ण सो वानायकाकोंमिले वननैं कम
लकीमालापहिरे तासों नैनमनतोमिलो परवचन
नमिले अर्थ बोलीनहीं इहांतवर्गके१ न पवर्गके
२ बम ल यहचारअक्षर कवर्ग चवर्ग टवर्गनहीं
३७॥ ॥मू. तीनिअक्षर दो० लगालगीलाै
पैलगीलगेलागलेलाल॥गैलगैलगोपीन
गीपालागोगोपाल ३८॥ ॥टी० तीनिअक्ष

र उक्तिसषीकीसषीसौं तोसौं नायकसौंजोलगाल
गीहै सोलोपैंलगीहै लालनलगनलैके तोसौंलगे रा
हद्योपी॥गो इंद्रिनकेपीलगे तेरेपायनसौं किंवाको
ई बहिरंगसषी संगमैंहै तासौं नायकाकहतहै॥
सोसुनअन्य अन्यसौंकहतहै जोमैभाजौंतोनाय
कपकरिलै वेलगालगीकरके हमारेसंगमैंलगे॥
जबमैं दूरजाततब नजीकलगतहैं लागकरिकैं
अरुगेलगोपगोपीलगेहैं यातें तेरेपायलगौं तूंमे
रीगोइंद्रीनकोपाल इहांकवर्गके१ग पवर्गके१प
॥ल॥यहतीनिआषर चवर्ग टवर्ग तवर्गनहींहै॥
३८॥ ॥**मू० दुइअक्षर दो० हरहीराराहीह**
स्योहेररहीहीहार॥हरिहरिहौंहाहाररौंह
रैंहरैंहरिरार ३९॥ ॥टी० दुइअक्षरके॥ नाय
काषंडितातावी उक्तिनायकप्रति किंवा सषीप्रति
कैहरिरूपीहीराराहीनैं हरिलयो सो हेरके हो हीतें
हाररही॥पलनपीकादिकदेषिजानके सो हरेहरे
नाम धीरेधीरेहौंहाहाकरतहौं तूंधीरेधीरेकलह
कौंहर अर्थनायकसौं कहुकीजातरहे इहां हकार
और रकारयही दोअक्षरहैं कवर्गादिकनहीं ३९
॥ ॥**मू० एकाक्षर दोहा॥नोनीनोनीनोनि**
नेनोनैनोनैनैन॥नानानननानाननेनाना
नूनेनैन ४०॥ ॥टी० एकाक्षरनोनीनोनीसुं

दरीसुंदरीजो नायकाहै सोनैननिनैं ८९ एककुमार
सीसंगमैंलगीहैं जिनकेनैननैं सुंदरसुंदरलैनहैं। कहनामाकहा
ऐसीनाहीं ऐसोसमयपायनाहींनाहीं कहत नैन नकार कौ
नैन तें अरुनैननैं अथ आनन॥ वालो मुष नैं र
हाँ एक तवर्गकेनकाररमात्रहै कवर्गादिक अन्यकौ
ईअक्षरनाहीहै ४०॥ ॥मू० आधाएकाक्षर

॥दोहा॥ केकी केका कीककी कोकुका को कोक॥लोललाललालैललीलालालोल ४१॥

॥टी० आधाएकाक्षर॥ उनि विरहिनीकी सषीप्रति॥ औरनायिक नायिकाएक त्र देषिजयाहमकोषेदहोतहै तथा चंद्रादिकजेउ दीपनहैं तिनतैंनाहीं लकारओडकारऔरेफएक है॥लोलनामचंचलको अरु लोलनामचाहभरो होइ ताको केकीआदिउद्दीपन केकीजोमयूर॥ ताकीकेकावानी औकीकधुनिजो बहुतकोलाहल सौंकरै सोकाहै अर्थ बहुतदुषदायिकनाहीं अन कोकुजो चक्रवाक सोभीकाहै अरुकहूं कोको ऐसो पाठहैतहां चक्रवाकजानिए अरुकोक दादुर ना कीजोकीक कोलाहल सोकोहै अर्थ मतनोदुष ना हीं देत॥लोलकहिए चाहभरीलालकहियेकार सं गमैंलालैहैं फिरैहैं ऐसीजोललीनायकाजाकेसंगमैं पै सोलालनाइक ताकोजोलोल लीलादनै दुषदैत

है किंवा नाइकसौं मिलिबेकी चाह करतिहै ॥ इहाँ दोहाके आधेचरनमैं एककारहीहै ॥ अरु आधे चरनमैं लकारहै यातैं एकअक्षर आधेचरनमैं प रनेसे आधाएकाक्षर कह्यो ४१॥ ॥ मू॰ प्रति

पदाअक्षर दो॰ गोगोगीगो गोगगगजीजै जीजीजोहि ॥ रूरेरूरेरे रुरट हाहाहू हू हो हि ४२॥

॥ टी॰ तीनिचरनके अंतमैं एक एकअक्षरओजोचोथाचरन अक्षरनके अंतमैं औरिआप र देइतो छंदजाइ॥ प्रतिपदाक्षर गजग्राहलरत हैं तहाँ कोई गजसौं कहत है हूहूनाम गंधर्व देव ल मुनिकी श्रापसौं ग्राहभयोसो हेगज गोकहिये जलमैं गोगकहिये गोविंद गोगको औगोविंदको एकअर्थहै तासौं जोगीहै याको अर्थमैं गोकहिए गाइहै ऐसीगीकहियेबानी ताकोगोकहो प्रथमगो को अर्थकहो तेरीसहाइकरेगो वचनहै गोब्रासन हितायच जीजैजोतूं जियेचाहै जीजीयाकोअर्थ जी वकोजीव सबजीवके जीवनमूल ताकोतूंजोहि हृ दयमैंदेषे। रूरेरूरेरेरुरट अरुकौठेर रुचरन पूरन केलियेरेगज रूरेभलेजेहैं ताहिसबतेरुरेभले ऐसे जोभगवान ताकौं तूंरट वारचारिकहो कहूँरएसो पावहै तारटोरटो पुकारो हाहाबाउ यहग्राहनहीहै हूगंधर्वहै होहिको अर्थहै हूहै पहिलाचरनके अंत

मैं एकआपरओजकारहै दूसराके अंतमें दकार॥ती
सराके अंतमें टकार चौथेके अंतमें हकार ४२॥ मू०
जुगलपद एक अक्षर दोहा॥ केकीकूकें
कोककौकाकेकूकेकोक॥ काककूकेको
कोकुकोकूकेकेकीकोक ४३॥ ॥टी०न
यकविदेस गमनकरोचाहत तासमनायकाकी
उक्तिके केकीजेमयूर तेकूकतहैं कोककों कामक
लाकौं किंवा कोकसास्त्रकौं जाननहारहैं अरुकाके
काकहिकैं कूकतहैं कोकचक्रवाक अर्थ ईश्वर वि
योग काहुकोनदेय काककूककौ काकजो कौवा
तिनकी बानीकोकहा काकाकाक कानामजनच
रघैहै कोकुको कहतीहै कूकोअजा मेंमें अर्थमें दु
षीहौं कूक कूपृथ्वीकैंकूकतहैं कोकशाक्षनीला
अर्थ घनगरजत प्रमान॥ दोहा॥ हरितपीनअंकुर
वसननवलतानकेहार॥ जनुअसाढकोनीमकीदु
लहिनईसिंगार॥ यामैंचारोचरनमें एकअक्षरहै अ
रु तीनिचरनके अंतमें एकअक्षर औजोचोथाअथ
रचरनके अंतमें औरअक्षर देयतौ चित्रभंगदोष
एकाक्षरनकहावै ४३॥ ॥मू० अथ बहिर
लापिका अंतर लापिका दो० उत्तरवरन
जुबाहिरैंबहिरलापिकाहोइ॥ अंतरअं
तरलापिकायहजानैसबकोइ ४४॥ ॥

टी० बहिर लापिका अंतर लापिका ॥ जहाँ उत्तरकेच
रन कविताके बाहिरहोइ अंतरकविताके बीचमैं हो
इ तहाँ दोऊक्रमसौं जानिए ४४॥ ॥ मू० बहिर
लापिकाजथा दोहा ॥ अक्षरकोनविकल्प
कोजुवतिबसतकिहिंअंग ॥ बलिराजा
कोनेछलोसुरपतिकेपरसंग ४५॥ ॥
टी० बहिरलापिका ॥ विकल्पअक्षरवा जुवतीको
वास वामअंग अरूनाकौं छोडियेतौमनमैं बलिको
कोनेछलो उत्तरबाहिरसौं दियो वामनजीनैं ४५॥ ॥
मू० अंतरलापिका दोहा ॥ कौनजातसीता
सतीदईकौनकहँतात ॥ कौनग्रंथबरनैंह
रीरामायनअवदात ४६॥ ॥ टी० अंतरला
पिका ॥ रामायन उत्तरहै सीताकौंनजातहै रामदुखी
है तातजनकजीने कौंनकौंदई रामायन रामकोकौ
नग्रंथमैं हरनसीताको बरनौंरामायनमैं अवदात्त सु
द्धउज्जल ४६॥ ॥ मू० गूढोत्तर ॥ दो० ॥ उत्तर
जाकोअतिदुरयोदीजेकेसवदास ॥ गूढो
त्तरतासौंकहतबरननबुद्धिविलास ४७॥
॥ ॥ टी० गूढोत्तर गूढ़ गुप्तहै उत्तरजाको ४७॥ ॥
मू० सवैया ॥ नषतैंसिषलौंसुषदैकेसिंगारि
सिंगारनकेसवएकबन्यो ॥ पहिराइमनो
हरहारहिएँपियगातसमूहसुगंघसिन्यो

दरसाइसिरीकरदर्पनलैकपिकुंजरज्यौंव हुनाचनच्यौ॥सषिपानषवावनदौंकिहिं कारनकोपपियापरनारिरच्यो ४८॥ ॥टी॰ सुषदैकेषुसीकरिकै सिंगारपियजोवाके नाइकन पतैंसिषपरियंतसिंगारे अर्थ सिंगारकोईनाहींवच्यो फेरमनहरन हारपहिराए हिएमें अरु गानसमूह सर्वसरीरमैं तानेसुगंधसच्यो अंगनमें राष्योलगायो यह अर्थ फेरकरमें दर्पनलेकेसिरी सोमादरसायो अर्थनायिकाको दर्पनदिषायो॥ औकपि कुंजरकीरी तिनैं नायकबहुतनाचनच्यो॥ सषीसषीसोंकहतकि पानषवातमें किहिंकारन कोपपियापर ना इकपर कौंनारिनैं रच्यो यहेउत्तरपर नारिसोंरच्योहै आसक्त है पानषवावतमें इत्यादि आयो तादिन नाइक के पलकपर पानकी पीकलगीथी सुषदर्पेसो पहिले नहीनजरमैंआयो किंवाभूलिगई॥ कुंजरहाथीको लेषो आगेनाच्योयातैं किंवा पानकोनाम नागवेलि है वह बेलीलतासी कोमलजो नाइकाहै ताको ना गरनाइकहै किंवा बेंदीवाको नामहै ताकोनागर है ४८॥ **॥मू॰ पुनः स॰ हाँसविलासनिवा ससुकेसबकेलिविधाननिधानदुनीमें॥ दे वरजेठपितासुतसोदरहैसुषहीश्रुतवात सुनीमें॥भाजनभोजनभूषनभौनभरेजस**

पावनदेवधुनीमे॥ क्यौंसबजामिनिरोवत
कामिनिकंतकरैसुभगानगुनीमें ४९॥ ॥

टी॰ कोईसषीपूंछतहै सषीसौं हाँसके विलास तैंभ
रीहै प्रसन्नरहत॥ निवासअस्थान॥ केलिरतिके वि
धानमैं नायक प्रवीन पायोहै किंवा दुनिया संसार
मैं जितने केलिके विधानक्रियाताकी निधानहै प्रवी
नहै॥ अरु देवरजेठ पिता ससुर ताको सुतपतिसौं सं
पन्नहै दर षजाना किंवा बडीदरहै बातहैजाकी॥
अथवा मातापक्षमे पिताहै सोदर भाईहै अरु आ
पपुत्र बतीहै यहबात सुषकीकी सुषजुक्त हमनैंभ
भाजन पात्र भोजन अनेकतरहकेव्यंजन भूषनअलंका
रादिभौनघरमैंहै किंवा भाजन अनुप्रास केलियेजा
निये॥ पावन पवित्र निंदा रहित जस वामैं (भरेहैं
जैसे गंगाजी मैं अनेक जस हैं क्यौं सबजामि
भरेहै) जैसे गंगाजीमैं अनेकजसहैं क्यौं सबजामि
नि सारीरात्रीमैं कामिनि रोवतहै कंतजाको सुभआ
छो गानबषान गुनीजेइस्त्री तामैं करतहै उत्तरमैं॥
सुभगासुंदरीनहीं यहबातमैं येगुनीहैं विचारीहै
किंवा कंतकामिनिकरत यहगान गुनिनिमैं सुनौ॥
४९॥ ॥मू॰ पुनः स॰॥ नाहनयोनितनेहनं
योपरनारितिकेसबकेहूँनजोवे॥ रूपअ
नूपमभूपरभूपसोआनंदरूपनहींगुनगो

वै॥भौनभरीसबसंपतिदंपतिआपनिज्यौं सुषसिंधुमैंसोवै॥देवसोदेवरप्रानसोपू तसुकौनदसासुदतीजिहिंरोवै ५०॥ ॥

टी० उक्तिसषीकी सषीप्रति॥नायकनवीन अलना कौस्नेहभीनवीन इतने परपराई इस्त्रीको आगद्रि ष्टिभी नाहींदेत॥ फेरजाको रूपअनूपहै दृष्टीपर॥ राजासमान आनंदरूपहै नहींवाकोगुन कोई गोवै हैकहैहैछपावतहै ओहऐसोभलोहैजाकोसबजसकानहैं दुनी गोकोअर्थ॥गुनको कहनवालो वैनाइक अपने मुषसौं अरु अपनेगुनकौं कहनवालो नहींहै॥प्र सोभारीहै सीलवारोहै॥आपनी तारीफ आपनकीं करतहै॥ भौनघरमैं सब संपतिभरीहै॥दंपतिदो नौं नायकनायकाओ लक्ष्मीपति विस्नुसमानसुष रूपसिंधुमैं सैनकरत॥ देवतासद्रिसजाके देवर हैं अरु प्रानतैं प्यारो सुतहै ऐसीनायका कौनदसाकि हिंकारनतैं सुदती सुंदरहैदांतजाको सोसुदती रुद नकरतहै॥उत्तर॥नंदसासुदतीरहति हैं दौंनदका ए लरतिरहतिहैं॥किंवा प्राचीन पुस्तकनमैं दुनी पाठहै॥तहांउत्तर यहकै दूसरीतोप्रान पति कर्‍यो चाहतहै ५०॥ ॥मू० एकानेकोउत्तर दो०

एकहिउत्तरमैंजहांउत्तरगूढअनेक॥उ त्तरनेकानेकयहवरनतसहितविवेक॥

५१॥ ॥टी॰ एकउत्तरमैं अनेकउत्तर॥ गूढकहिए गुप्तको ५१॥ ॥मू॰ दो॰ उत्तरएकसमस्तको व्यस्तअनेकनमान॥ जोरअंतकेवर्णसौं क्रमहीबरनवषान ५२॥ ॥टी॰ समस्तको अर्थ मिलोरहै॥ व्यस्तजुदा अंतके बरनसौं जोरिकेक्रमहीसौं बषानिए ५२॥ ॥मू॰ छप्पै॥ कहांनसज्जनबचतकहासुनगोपीमोहित॥ कहादासकोनामकवितमैंकहियतकोहित॥ कोप्यारोजगमांहिकहाछतलागैंआवत॥ कोबासरकोकरतकहासंसारहिभावत॥ कहुकाहिदेषिकायरकँपतआदिअंतकोहैसरन॥ नहैंउत्तरकेसवदसदियसबैजगतसोभाधरन॥ ५३॥ ॥टी॰ उत्तरसबैजगतसोभाधरन अंतकोअक्षरनकारहै॥ तासौं आदिको अक्षर मिलाइकैं॥ फेर आदिको अक्षर छोडदीजिए॥ अरु आगिलकों अंतकेसौं जोरिएतो उत्तरहोइ॥१॥ सन बैन२॥ मुरली जन३॥ दास गन॥४॥ मगनादिक तन५॥ सरीर छत ६ घावलगे श्रोन ७॥ रुधिरआवै भान ८॥ सूर्जे धन॥९॥ लक्ष्मी रन॥१०॥ समर॥ आदिअंतकालमैं कौनसरनहै सबैजगत सोभाधरन॥ धरन राम ५३॥ मू॰ दो॰ मिलैआदिकेबरनसौंकेसवकाउ

च्चार॥ उत्तर व्यस्त समस्त सों सों करके अनु
हार ५४॥ ॥टी० आदिके वरनसों मिलाइकैं
उच्चारन करो सो व्यस्त समस्त सों कर कौतर है ५३
॥ ॥मू० छप्पै कोसुभअक्षर कोनजुवति
जो धनवसकीनी॥ विजयसिद्धसंग्रामरा
मकहँकोनैंदीनी॥ कंसराजजदुवंसवस
तकैसैंकेसवपुर॥ वटसौंकहियेकहानाम
जानहुअपनेउर॥ कहिकोनजुवति
जगजननकीकमलनयनिसूछमवरनि
॥सुनवेदपुराननमैंकहीसनकादिक
संकरतरुनि ५५॥ ॥टी० शंकरतरुन
यह॥ उत्तर है॥ सुभअक्षर कोन है संसुखवाचक
है कोनजुवतीइस्त्री ताकौंजो धाजेहैं सूरतिननेब
सकरीहै॥संक॥संकाइस्त्रीलिंग है॥ रामपरसुरा
मशंकरमहादेव केसवपुर मथुरा तामैं कंसके राजमैं यदुवं
सी कैसे बसेये संकरतं॥ त्रासयुक्त वटवृक्षकोनाम शंकरतरु
सूक्षमयोराकरिकैं हमसौंबरनौं जगतमैंजगतकीजननीकोन
है संकरकीतरुनीउमा सनकादिकनेवेदपुरानमैंवरनी कहिकैं
नजननिजगकीजुवति यह भी पाठ है॥ ५५॥ ॥

मू० कवित्त॥ कोलकोहै धरीधीरजधरम
हितमारेकिहिँसूतबलदेवजोरजवसों॥
जाँचैकहाजगजगदीसपहकेसोदासगा

यो कोनैंरामपदगीतसुभरबसौं॥ जसत्र्रं गअवदातजातबनतातनसौंकहीकोन कुंतीमातबातनेहनबसौं॥ वामग्रामदू रिकरिदेवकामपूरिकरिमोहेरामकोन सौंसंग्रामकुसलबसौं ५६॥ ॥टी० कुस लबसौंयहउत्तरहै॥ धरमहित धरमकेलिए धी रजधर कोलसूकररूप भगवाननेकोहैका धरीहै कूप्टथ्वी बलदेवजोरकेजब वेगसौं सूतपुराणिक कौं किहिंअस्त्रसौं मारोकुससौं संसारजोहैजगदी स ईस्वरसौं ॥ कामांगतकुसल कुसलको अर्थ कल्यान॥ सुभवर बडेसुरसौं रामायनगीतकोनैं गायो कुसलवने॥जसकरिकैंजाकेअवदात सुद्ध अंगहैं॥ वनको पांडवनकौंजात कुंतीनैं कोनबात कही॥ कुसलसौंबातकरो वामजानकी ग्राम अ जोध्या तातैं वनोवासदियो॥ संग्राममैं रामजीकौं नसौंमोहे कुसलवसौं ५६॥ ॥**मू० दोहा ए कएकतजिबरनकौंजुगजुगबरनविचार॥उत्तरव्यस्तगतागतनएकसमस्तनिहा र ५७॥** ॥टी० एकएकअापरकौं छोडतजाइ और दूसरेदूसरेसौं मिलावतजाइ॥जुदाजुदाउत्त रनिकरै॥ सोव्यस्तगतागत वाहीरीतितैं पाछेकौं फिरैसंपूरनसेउत्तरसोसमस्त ५७॥ ॥**मूल॥**

कवित्त॥ केहैंरसकेसेलई लंकाकाहे पीन पटहोतकेसोदासकौनसोभितसभामेंअ न॥भोगनकोभोगवतकोनगनेंभागवत सोहै कोन [illegible] बरन॥ कोनेंकरीसभाकोनजुवतीअजीतजगगा वैकह्यागुनीकह्याभोरैंहैभुजंगगन॥ कोहै मोहैपसुकह्याकरैतपीतपई दूजोतनूबसन कहौ नवरंगराइमन ५८॥ ॥टी॰॥उ त्तर नवरंगरायमन नव वैंर रंग गरा राय यम मन नम मय यरा राग रव वन नवरँगरायमन॥ याकीव्याख्या कितनेहैंरस नव लंकाराम केसेलई नकारकोछोडो॥अरु वकारकों आगिलोरेफमों मिलावो वरश्रेष्ठता किंवा वरवस्तु किंवा प्रथम॥ज रायके यह व्यस्त जुदोजुदोहै॥ओगतागन एक पि छिला अक्षरमिलावो आगिलो आपरगह्यो॥ का सौंपीलपटहोतरंगसौं॥सभामे कौनसोभेहैगरा॥ गरूपुरूष हरू क्षुद्रनाहीं भोगनको स्वपकोनभोगै य यअमीर भागवत श्रीभगवानको भक्तकोन॥न मनेमआदि॥जती जोगिनिनें कोनकोजोत्यो मन प्रनामके कोन वरन॥नमनमस्कारजुधिष्ठिरकी सभाकौननें बनाई॥व्यस्तआगत पीछेकौ फिरे यातैं मय॥विस्वकर्माकेपुत्रमयरह्यो जगतुठाई

रागगावतहैं भुजंग सर्प केगनकहा भरेहैं वह को
नहै पसुहरन औ सर्पमोहित करतहै॥ रवसब्द त
पी तपकहीं करत बनमें दंद्रजीतकहां बसतसम
स्तसों॥ उत्तर॥ नवरंगरायके मनमें ५८॥ ॥मू०
दोहा केसवदासबिचारिकैंभिन्नपदार
थआन॥ उत्तरव्यस्तसमस्तकोदुवोग
तागतजान ५९॥ ॥टी० पदको अर्थ भिन्नभि
न्न होइ दोइ वारव्यस्त उत्तर लगैदोयवार
र लगे ताको उदाहरन पहिलें ५९॥ ॥ मू० क
त्त॥ दासनसोंपरसोंपरमानकीवातसों
वातकहाकहिएनय॥ भूपनसोंउपदेस
कहाकिहिंरूपभलेकिंहिंनीततजेभय॥
आपुविषैंनसोंक्योंकहिएबिनकाहिभये
क्षितिपालनकेक्षय॥ न्यायकेबोल्योंकहा
जमकेसवकोअहिमेधकियोजनमेजय॥
६०॥ ॥टी० उत्तर॥ जनमैंजय जन नमें मेयजय
यज जमेमेन नयजनमेजय ॥ ❀ ॥ ॥ याको व्या
ह्हांयकारजकारएकजानिए यासों चित्रमैंदोषनाहीं दाससों
कहाकहियेजन॥ परशत्रुसोंमनकीवातकहाकहिए नमैंतुम न
म्रभएअवतोबराबरीनकरोगे परमानकीवातसों मेय गनीगमा
ईबातअर्थथोरीबात राजनकोकहा उपदेसकीजे जय करो प
। व्यस्त उलटो व्यस्त रूपकाहे सों भलोलगत

यजदानतासौं भर्त्रहरी ननिन्नासोंमैंतेमलिन भिम
वाश्नाथी पुनरा याकोअर्थजाचककोनदानदेत मैंप
तिगई है जाको ऐसेजेनरतें सोभतहैं आगेनिकोन
जैसो कविको अर्थकहो कोनसोभयउपजैजनमेजन
मसों आपनेविपयकलोकसों कहाकहिए मैंन
नरमहोकैं अर्थ मोमदिलहोके कौनयान हीन
ए छितिपालको नासहोत नयनीतमैं जनकोअ
कारसौं यकारकहो ऐसहौंयकारकोजकार॥ना
पीकोन्यायकरिकेजमकहां बोल्यो तूंजनमेजय
हो जनलोग ताकोतूं कंपाचाहत है दुपदेतहै
किंवादुषदियोहै॥ एकवार समस्तलग्यो दूस
रीबेरफेरसमस्तलग्यो कोकोअर्थ कोननेअहि
मेद जज्ञकियो याकोउत्तरजनमेजयभयो है॥
६०॥ ॥**मू० रोलाछंद॥ कैग्रहकेनधुह**
स्योप्रेमकहिपलुहतप्रभुमन॥ कहाक
मलकोगेहसुनतमोहतकिहिंमृगग
न॥ कहाँबसतसुपसिद्धकविनकोतु
ककिहिंबरनन॥ किहिसोंपेपितुमातु
कहोकविकेसवसरवन ६१॥ ॥टी०
इहाँ अंतरकीवोरसों उत्तरएतना बांचपोकिला
कवित्वसो॥ उत्तर॥ सरवन नव वर रस सरवन
व वन वरन समस्तनवरस याख्या कितने प

हैं ताकोउत्तर नव कौंकरिके मधुदैत्यको भगवा
नमास्यो वरनामबल प्रभुमन काकरिके प्रेमपा
लत रसकरिके रसनामअनुराग कमलकोघरक
हाँ सरनाम तलाव म्रिग समूह काहेतें बसहोत
रवसब्द रागको॥ शब्देनिनादनिनदध्वनिःध्वान
रवःस्वनाः इत्यमरः॥ सिद्धकहाँ सुषतेंरहत वन
उद्यान में॥ कविनकोकोगकहोतहै कोनकेबरन
नतें॥ समस्तनवरस॥ मातापिताकोसेवाकोनकरी
फेरसमस्तउत्तरसरवन सुनिपुत्र ६१॥ ❀ ॥ मूल॥

दो॰ उत्तरव्यस्तसमस्तकोदुवोगतागतजान॥
एककहिंअर्थसमर्थमतिकेसवदासबषान ६२

टी॰ इहाँउत्तर व्यस्तसौंऔसमस्तसौं दोनौंवेरगतागत एकै
अर्थहोइ ६२॥ **मू॰ सोरठा कंठबसतकोसातको**
ककहाबहुविधिकहै॥ कोकहिएसुरता
तकोकाभीहितसुरतरस ६३॥ ❀ ॥

६१ कंठइति उत्तर सुरतरस कंठमें सातको
बसत॥ उत्तर सुरनिषादआदि॥ आदितें बाँचो॥
तोभीसुरहोइ अरुअंततें बाँचोतोभी सुरहोइ॥
कोककहा कहत सुरत औरतात सुरदेवतानके
तात दयापात्र जाहिपर बहुतदयाकीजिये ताकों
तातकहिए॥ सुरतरु कहिए कल्पवृक्ष तापे देव
तनकी बहुतक्रिपाहै॥ किंवासुरतातपिताकस्य

प सुरतरुयाकोअर्थ सुरश्रेष्ठ कानीको हितक
रीकोहै सुरतरस ६३॥ ॥मू॰ सासनोत्तर दो॰
तीनितीनिसासननिकोएककहिउत्तरजान
॥सासनउत्तरकहतहैंबुधिजननाहिवषा
न ६४॥ ॥टी॰ सासनौंउत्तर तीनितीनिआज्ञा
कोएकएकउत्तरहोयसो सासनोत्तर ६४॥ ॥
मू॰ छप्पै॥ चौकचारुकरकूपढारघरिया
रबाँधघर॥सुक्तमोलकरषगपोलसींच
हिनिचोलवर॥हयकुदावदेसुरकुदाव
गुनगावरंककौ॥जानुभावशिवधामधा
वधनल्यावलंकको॥यहकहतमधुःक
रसाहिकेरहेसकलदीमानदब॥तबउ
त्तरकेसवदासदियघरीनपान्योजानक
वि ६५॥ ॥टी॰ घरीनपान्यो जानकवि चारु
सुंदरविवाहादिकेलियें चौककाहे नपूछो उत्तर
उत्तमघरी नाहीं रही॥कूपसौंपानीढास्यो॥उत्तर॥
रहटकीघरी नाहींरही॥घरियारघरमेंबांधो घरीक
टोरीकौंकहेंहैं सोनाहीं यहतीनि आज्ञाको एकउ
त्तरघरीन अब तीनिप्रश्नको उत्तरनपान्यो॥तोनें
मैंपानीनाहीं॥षगतरवारमें पानीनाहीं॥ निचोल
वस्त्रसींचपानी नाहीं॥ अब तीनिप्रश्नको उत्तरजान
नाहीं हयघोडाकुदावजान मोमें तागतनाहीं अर

सुर कुदाव वाला बोल ॥ जैसो मारीचने प्रथम ल छिमनकहे॥ किंवा सूरजोहैं ताको कुदावदै दगादे जानजानत नाहीं॥ कू पृथ्वीमें आपनो दावदेषो॥ तैं सुरदेव तैसे बोलबोलो गुनगावरंकको॥ रंकनाम हेममैं क्रिपिन अरु मल्ल ताको गुनगाव कियाकरो किंवा भे पछारिहों मल्लको याकहु॥ जानतागत नाहीं॥ किंवा दावपेचको जानत्तानना हीं॥ जानेभाव विभावादिकजान॥ उत्तर॥ मैकविनाहीं शिवधाम धाव शिवकेधामकौंजाव॥ उत्तर॥ मैकवीनाहीं॥ हेममें कविनामविजच्छनकोहै॥ मैविजच्छननाहीं अरुकहूं सबधामधाव भी पाठहे॥ तो कविसवके घरजायहै॥ किंवा कवि सुक्राचार्जे चारदिसामें जा यहैं॥ धनल्याव रंकको॥ कविसुक्रनाहीं जो असुर केगुरुहैं॥ एककाहू मधुकुरसाहि राजासौं प्रस्नक री सो सुनसब दीमानदविगए॥ तब केसवदास उत्तरदयो चरीनपान्योजानकवि ६५॥ ॥ **मूल प्रस्नोत्तर दोहा॥ जेदैआपरप्रस्नके तेदैउ त्तरजान॥ इहिंविधिप्रस्नोत्तरसदांकहै सुबुद्धिविधान ६६॥** ॥ टी॰ प्रस्नोत्तर जो प्रस्नसो उत्तर ६६॥ ॥ **मू॰ दोहा॥ कोदंडःप्रा हीसुभटकोकुमाररतिवंत॥ कोकहिप**

टी० कोदंडग्राही सुभट है उत्तर कोदंड धनुषग्राही कौ को कुमार रतिवंत है ॥ कोकशास्त्र बोनार कामविषै जाकी प्रीति है ॥ कोकहिए सनितैं दुखी ॥ कोकचक्र वाकनके हियैं ॥ कोमलमनको संतसाधुहै उत्तर संत ६७॥ ॥मू. पुनः दो. कालकाहिए जैअलीकोकिलकंठहिनीक ॥ कोकहियेकामीसदाकालीकाहेलीक ६८॥ ॥ ॥टी० हेअली कालिकाहि पूजोगी ॥ उत्तर ॥ कालिकादेवी कोकिल निश्चयकंठहै नीक ॥ उत्तर कोकिल कोकहिये कामीसदा उ० कोकचक्रवाक ॥ कालीकाहेलीक ॥ उत्तर ॥ कालीस्यानलीक ॥ कालीलीक कलंकहै ६८॥ ॥मू. गतागत ॥दोहा॥ सूधोउलटोबाँचिए एकहिअर्थप्रमान ॥ कहतगतागतताहिकविकेसवदाससुजान ६९॥ ॥टी० गतागत॥ सूधोउलटोएकैअर्थ निकरै ६९॥ ॥मू. पुनः दोहा ॥ सूधोउलटोबाँचिए औरैऔरैअर्थ ॥ एकसवैयामैंसुकविप्रगटनदोइसमर्थ ७०॥ ॥टी० द्वितीयमैं सूधोउलटो दोय अर्थ निकरै ७०॥ ॥मू. सवैया मासमसोहसजेवनवीननवीनबजेसदसोमममा ॥ मारलतानवनावनसारिरिसातवना

वततालरमा॥मानवहीरहिमोरदमोद
दमोदरमोहिरहीवनमा॥मालवनीब
लकेसवदाससदावसकेलवनीवलमा
७१॥ ॥टी॰ नायकके पक्षकी सषीकोवचन
नायकासौं॥ तूँमाँ लच्छिमीसम सोभतहै॥ अरुसजे
हैसो तनसौंजीतउतकर्षतापाईहैताहिसहितहै किंवा वी
नासजैहै नवनवीन नवीनरीतिकोबीना बजायके औ
सहसोमसमादीप॥ दीपकराग सोमचंद्रमासमा
नउदितभयोहै॥किंवासहसोमसमायाको अर्थ
सहसाजो बराबरीसौं लोगतोहिउमा पार्वतीकी॥
समाबरोबरीकी कहतहैं तूँअधिकहै यहअर्थ॥पा
र्वती बीनानहीं बजावत तूँबजावतहै॥यातैं किंवा
उमाको उमछंदके लिये बालाकोबाल॥ सहकोअ
र्थ विद्यमानभीहै सहकहिए विद्यमानसोहै॥सो
हैमचंद्रमाहै॥अस्त नहीं भयो तूँसमासहै एकाक्ष
रकोसमे मानाम बुद्धीकोभीहै मदिरामेधयो॥सो
भावेलयोरपिदृश्ययो॥मासब्दमदिरा विषैं मेधा
बुद्धीविषैंजानिये॥चांदनीको समयोहै॥ तूँबुद्धि
मानहै समुझतहै॥तोविना तेरोनायक व्याकुलहै
मारलतानि बनावत याकोअर्थ॥मारनामपारसी
मैं साँपकोहै ताकीलतापान ताकौं बनावत॥ किं
वा मारजोकाम ताकीलतनको बनावतहार सन

वीनाहै॥ किंवा मालयको अर्थ मोतें तानकों ब
नावतिहै॥ तेरीजोहै वीनाकीसार जाकों मृदंग क
हतहैं॥ तको अर्थ ग्रहनकरतहैं॥ पकरतहैं
सुनके कामभी नाहींचलसकत हैं॥ व सहोतहै
किंवा मारकामसोजकर है॥ सोमारता द्रुति॥ ह
अप्रयुक्ति निहितार्थदोष नाहीं जानिये॥ सारिसा
तवनवत याकोअर्थ॥ रीसपीतूं सातजेहैं सार॥
सारिका वीनाकी गोंटी गुटका गोटसारसुंदरी इ
त्यादि देस देस प्रति भाषा भिन्नहै॥ ताको तूं ब
नावनहारीहै॥ ताल रमा याको अर्थ रमा लछि
मी तालभी बनावतिहै॥ याताल में अठारह ता
ललगतहैं॥ यातें बहुत कठिन॥ मो कहिये ह
मारो जो श्रीकृस्न सोकैसोहै॥ मानव मनुष्य ति
नविषैं हीराहै॥ ताकों मोददाताहै॥ किंवादना
द याको अर्थ॥ ताहि मानवहीरहि॥ मानोदान
कोतूं मोदद याको अर्थ॥ मोद आनंद को देइ॥
मोददकहावै॥ नायक को आनंद दायकहोय॥
फेरफेर दमोदर श्रीकृस्नकों तूं मोहिरहीहै॥ व
नमें किंवा हेममें॥ वन नाम घरको जलको॥ तै
घर वनकी मालछिमी है॥ केसवदास कविके ब
लतें माल बनीहै सोभैहै॥ तेरा बलना नायक तै
रे बसहै॥ तासौं तेरी क्रीडा बनीहै॥ किंवा तै बल

केसवकी बनाईजो मालासो तेरेगरेमेंहै॥ अरुबल
मातेरो दाससरीषो बसहै तातें तेरीकेलि बनी है॥
अब सुगमअर्थ लिष्यते॥ मासमकोमा लक्ष्मी ता
केसमसोभावानहै॥ सजेनवीनकोअर्थ॥ औसजे
हैनबीनवीनतोकौं अरुनवीनबजेहै सहमें सह
मिको अर्थ डरैहै॥ सोमबराबरसमादीप अर्थजामे
दीपकरागबजेहै॥ अतावीनाकीजोसारगोटी हैसो
रजोकामताको ललनको बनावतिहै॥ अरु सातसु
रबनावतिहै॥ अरुतालको रमावति किंवालक्ष्मी
ताल मानवहीर याकोतूंहीरामान॥ हीमोरकोअर्थ
मनकोंमोरलेत दमोदर श्रीकृस्नकोमोददातामोहि
रही बनमा॥ वनकोमा सोभाकोमोंहिरही है॥ माल
बनीबलकेसबदास॥ तेरेगलेकी मालाबनिरहीहै
॥ अरुसदा बसकेलिबनी बलमाकी ७१॥ ॥मू०

॥ अनिलोम सवैया॥ सेननमाधवज्योंस
रकेसबरेषसुदेससुवेससबै॥ नैनवकी
नचिजीतरुनीरुचिचीरसवेनिमिकाल
फलै॥ तैनसुनीजसभीरभरीघरधीरव
रीतसुकोनवहै॥ मैंनमनोगुरचालच
लैसुभसोबनमेंसरसीवलसै ७२॥ ॥

टी० सूधोबांचे अन्यअर्थ उलटोबाचे अन्य अर्थ॥
नायकारूठि आई ताकौं सषीमिलायोचाहति है॥

हेसषी सवयनाम सषीकोहे॥ नेहि बिना नायक कौँज्यौँ जैसेसर बान लगे तैसे लागतहे॥ छेममैं रेष नामथोरेकोभीहे॥ औकपटकोभी हे॥ रेष कहिए थोरी सुदेस सुंदर हे॥ अन्यतूँ बहुत सुंदरिहे॥ औ भी सुवेषहे अन्यपे नाइक तोहीसौँ आसक्तहे किं वा हेसवय हेसषी अन्यजे आवेहैँ तिनकोसेननि इसारेज्यौँजातरहे सरहोइ जीत्योजाइ॥ अर्थ अन नोहोइरहे सो सरसो लगेहे॥ आगेंवहीअर्थ॥ औ रतरुनोनैं विरहसौँ॥ किंवा अकिलसौँ॥जीवमैं तन होइकैं चीर वस्त्र समान माधवको रुचि कांति नै ननकौँ॥ किषो अर्थ करीहे॥ वकार चकार॥ पूरणा र्थे॥ अबकोठोर हेजैसे वस्त्र सरीर सौँ लागो रहत तैसे माधवको रुचि नैननसौँ लागीरहति हे॥ विना यका सवकाल कहिए स्याम श्रीकृस्नको नाम को फलहे॥ अर्थ अरुच॥ स्याम कहिए कारिष मेंच क॥ कृस्नसषी नायकासौँ कहति हे॥ मे नहीं सुनी हे॥ नायकको देषिबेकौँ॥जसको अर्थ॥ जैसी भांग भरीथी अन्द इस्त्रीको॥ धीरजको धारकैं कुलवधू कोरीतिकौँ ननिबाहे॥ अर्थ कुलवधू कुलरीति कौँ उदेतिहैँ॥ अब पादपूरणार्थ॥ फेर स्यामकैसे हे मैंन कामको मन प्रकासहे॥ याहिदेषि कामको प्रकास होतहे॥ गुर बडेलोगनको चालचलै है

सुभसुंदरसोवनमें॥ सरतलावकीसींवाँ अजाद प
र बैठोहै तूँचल ७२॥ ॥मूल॰ स॰॥ सैलब
सीरसमैनबसोभसुलेचलचारुगुनीमन
मैँ॥ हैबनकोसु॰ ति॰ री॰ वर॰ धीर॰ धरी॰
भर॰ भीसजनीसुनते॥ लै॰ फल॰ कामिनि
॰ बैसरची॰ चिरु॰ नीरतजीचितकोवनने
॥ वैससुवेससदेसुषरेबसकैरसज्यौंवध
माननसे ७३॥ ॥टीका प्रतिलोमपाठहै॥
नायकाप्रति सषीवचन॥ सैलगोवर्द्धन तहाँतूं रस
मैं बसीहै॥ नवसोवसुले॥ नवसोभनायककौं लै
कै॥ चलेकाकसुरकौं कहतहैं॥ अबतूं घरको च
लीहै॥ याबातकोतूं अपने मनमें अच्छीचारु विचा
र॥ गुनीहै मनमें॥ परकीयाहै यातें॥ किंवा तूं से
ल करिबे गईरही नहीं रहिगई॥ तेरीआको अर्थ॥
तिरीको अर्थ इस्त्रीसंबोधन॥ रीती हेनायकाइसोब
जो घरसोकोस है॥ हेममें वननाम घरकोभीहै॥
हेसजनी तूं याबातकों तें सुन॥ भीकहिए भयता
को भरकहिऐ भारसोतोपैपरोहै यातें॥ बरआछो
अचल जोधीर धैर्ज ताकौं तूंधर॥ किंवा हेसजनी
तूं मेरी बातसुनि॥ सलिलअर्थ॥ वनजोहैसोइकी
सहै तहाँ तिरीतरिगई॥ वरतेरी श्रेष्ठ धीर॥ जो धरी
रही॥ औभरभीको अर्थ॥ भार परो भीतकी सजनी

तैं सुन हे कामिनी तूं वेसकहिये अवस्थाजुवा नासों तूं रची है॥ चिर बहुतकालसों नाकों फलजो है॥ संजोगनी रतजी याको अर्थ जहां कोऊजीवको॥ रुतशाद्नीको अर्थ नहीं होय बिहारकरो तूं परकीयाहै चितकी वननेको अर्थ॥ जैसी तेरी चितकी अनना बनाव॥ वनततैसे फलको तूं ले॥ किंवानीरुतको अर्थ तूं जिन वोले॥ कहनाघतिहै॥ जोजीवको दाइ जीवकी प्यारी॥ ऐसी सषीको तूं वनमें बनेको अर्थ पहुंचाव संगलेजाहु॥ जीवकी ऐसी प्यारी क्यों कहिये॥ जीजेरीजोवकी नाकरै तूं॥ चौथी तुकको अर्थ॥ वेसभूषन औवस्त्र ताहिसहित है॥ किंवा सकारको जागा षंकार जानिये॥ वेषजो तेरो है सो वेस है॥ ओस कहिये सहित॥ देस परेसव॥ केसरज्यों॥ किंवा तेरो नायक को एक देस है॥ एकग्राममें रहनवालो है॥ औ षरो नजीक वसवास॥ जैसो केसर को एक षेत है ७३॥ ॥**अथकपाटबद्ध**

मू॰ दो॰ इंद्रजीत संगीतलै किए राम रस लीन॥ क्षुद्रगीत संगीतलै भए काम वस दीन ७४॥ ॥टी॰ इंद्रजीत संगीतकोलैकरिके रामके रसमें लीनभये अरु क्षुद्रई है गीतजिनके कहा क्षुद्र गाथा हैं॥ जिनकोते संगीतकी लैमों माही तैं दीनकहायेतैं कामके वसभये॥ पद दोहा कपा

दवद्धकोहै अरुगोमूत्रिकाको अरुअश्वगतिको अरुचरनगुप्त एतनाचक्रमें चलत है ७४ ॥ ॥ मू॰ गोमूत्रिका दोहा॥ इंद्रजीतसंगीतलैकिएरामरस लीन॥ क्षुद्रगीतसंगीतलैभयेकामबस हीन ७५॥ ॥टीका॥ सुगम ७५॥ ॥ मूल अश्वगतिचक्र दोहा इंद्रजीतसंगीतलै किएरामरसलीन॥ क्षुद्रगीतसंगीतलैभए कामबसहीन ७६॥ ॥टी॰॥ सुगम॥ ॥ मू॰ चरणगुप्त॥ दो॰॥ इंद्रजीतसंगीतलैकि एरामरसलीन॥ क्षुद्रगीतसंगीतलैभए कामबसहीन ७७॥ ॥टीका॥ सुगम॥ ॥

कपाटबद्ध॥

इं	द्र		द्र	क्षु
जी	त		त	गी
सं	गी		गी	सं
त	लै		लै	त
कि	ए		ए	भ
रा	म		म	का
र	स		स	ब
ली	न		न	ही

अश्वगतिचक्र

इं	द्र	जी	त	सं	गी	न	लै
कि	ए	रा	म	र	स	लो	न
छु	द्र	गी	त	सं	गी	न	लै
भ	ए	का	म	व	स	री	न

चरणगुप्त

इ	जी	सं	त	कि	रा	र	ली
द्र	म	गी	लै	ए	म	स	न
छु	गी	सं	त	भ	का	व	री

गोमूत्रिकाचक्र

इं	द्र	जी	त	सं	गी	न	लै	कि	ए	रा	म	र	स	लो	न
छु	द्र	गी	त	सं	गी	न	लै	भ	प	का	म	व	स	री	न

रा	का	रा	ज
मा	स	मा	स
रा	धा	मी	त
सा	ल	सी	सु

राकाराजजराकारा मासमास· समासमा
॥राधामीत·तमीधारा· सालसीसु· सुसील

सा ७८॥ ॥टी० श्रीकृस्नको वच विरह मैं हमारी जो राधा मीतहै ताकौं राका जो पौरनमासी ताको जो राजा चंद्र है॥ प्रमान॥पूर्णो राका निसाकरं इत्यमरः॥ सो ज रावन हार है किंवा जरा ज्वरजोहै ताकोस्वरूपहै किंवाजराव्रु ढाईकोस्वरूप है मासमासमैं श्रीसमा कहिए वर्षवर्ष समान करतहै श्रीतमीजोराति सोधारा कृपानादिककी धारताकीजो साल सालिबो सोसुकोअर्थ अच्छीतरह होतुहै श्री राधाजी कैसी हैं ताको अर्थ सोजोराधा सुसीलहैं जाके चरित्र चारअ क्षरफेरकेपढे तुक पूरी होतहै॥ एक राज फिरिकैं पढैं जरा कारा भयो ऐसे जानिये ७८॥ ॥ ॥

गतागत

राका	राज	जरा	कारा
मास	मास	समा	समा
राधा	मीत	तमी	धारा
साल	सीसु	सुसी	लसा

द्विपदी

रा	दे	न	दे	ग	प	सु	र	म	धा
म	व	र	व	ति	र	ध	म	द	रि
वा	दे	गु	दे	ग	प	कु	र	ह	धा

त्रिपदी

राम	वन	देव	तिप	सुध	नम	धा
दे	र	ग	र	र	द	रि
वाम	वगु	देव	ति१	कुध	नह	धा

मूल दोहा त्रिपदी॥रामदेवनरदेवगति परसुधरनमद्धारि॥वामदेवगुरदेवग तिपरकुधरनहदधारि ७९॥ ॥टी० यह त्रिपदी है॥तीनिघरके चक्रमें एकएक अक्षरकों छांडिकैं लिखे॥आदिपंगतिके अक्षरऔ वीचकीपंगति के अक्षरनिसों मिलायके पढै॥ऐसही अंतकी पंगति केअक्षर॥ बीचकीपंगति सो मिलायकै पढै॥ यह दोहामैं श्रीरामजीको वर्नन है॥रामदेव कैसे हैं हैंतौ परब्रह्म परंतुनरदेवराजाकीगतिहै॥फेरकैसे हैं परसुधरहैं॥अर्थ॥ परसुरामजी जिनकेआगे मदजोहै गर्व ताको धरनहार नहींभए॥परसुधर कैसे हैं॥वामदेव जोमहादेव सोजाके अस्त्रविद्याके गुरू हैं॥फेर परराम कैसेहैं देवतनिमें गतिहै॥अर्थ॥देवतन में जानहैं कुधरनराजाको नामहै परसत्रुके कू पृथ्वी ताकेधरनवाले जेहैं राजा॥तिन सबको हदमर्जादा ताकेधरनवाले हैं॥किंवा रामजी कैसेहैं॥वामदेवहूहै॥गुरदेवहूहैं॥ गतपर श्रेष्टगति हैं॥ कुपृथ्वीकेधरन हैं ॥ मर्जादा धरन हैं॥ किंवापरकुधरन॥परसत्रु ताको कू पृथ्वी ताके

हद्दसि बान ताको धरन है ऐसे जानिए ७८॥ ॥❧॥

त्रिपदी

राम	नर	गति	सुध	मद
देव	देव	पर	रन	धारि
वाम	गुरु	गति	कुध	हद

चरनगुप्त॥

५ ४ ३

रा	ज	त	अं	ग	र	स	बि	र
स	अ	ति	स	र	स	स	र	स
र	स	भे	व॥	प	ग	प	ग	प्र
ति	दु	ति	व	ढ	ति	अ	ति	व
य	न	व	म	न	म	ति	दे	व॥
सु	व	र	न	व	र	न	सु	सु
व	र	न	नि	र	चि	स	रु	चि
र	रु	चि	ली	न	त	न	म	न
म	ग	ट	न	वी	न	स	ति	न

६ (left) २ (right) १ (right)

७ ८ ९

मू०॥ चरनगुप्त॥ दोहा॥ राजतअंगरसवि रसअतिसरससरसरसभेव॥ पगपगप्रति दुतिवढतिअतिवयनवमनमतिदेव न०॥ ॥टी० यह चरनगुप्त दोहा है॥ नवरंगराय के अंगरसमें प्रीतिमें॥ मानहूमें अतिराजत है॥ यह

किरस फेरकैसीहै सरसवेसजे नृत्यवारी ॥ नायकाहैं तिनतैं सरस उतकर्ष है ॥ वोरसकी जो भेव भेद ता कोजानैहै ॥ औपगपगप्रति जेतनीवार पगधरनहैं तितनी अतिद्रुतिवढत है ॥ औनवजाको वयउनग तिहै ॥ जाको मनऔ मति देवतामैंहै पद्मिनीहै यह अर्थ ८०॥ ॥ मूल ॥ चरनगुप्त ॥ दो॰ ॥ सुव रनवरनसुसुवरननि॰रचितरुचिररुचि लीन ॥ तनमनप्रगटप्रवीनमतिनवरँग रायप्रवीन ८१॥ ॥ टी॰ सुवरनके वरन रंगसौं याकौ वरन रंगसुको अर्थ सुंदर है ॥ औ सु वरन सौं रचित भूषन औजरीके वस्त्र ताकी रुचि कांति ॥ ताहि विषैं लीनमिल्योहै तन जाको ॥ कैंवा जाके तनकी रुचि तिनसौं मिली है ॥ फेरजाकेन नमैं नवीन मति नवीन बुद्धि प्रगटत है ॥ एक्या सी कोठमैं नवनवकी पंगति करदोऊ दोहा लि षो ॥ नवरंगराय प्रवीन यह फेर मैं ॥ निकसत है ॥ ८१॥ ॥

॥ इतिचरनगुप्त ॥

॥ समाप्त ॥

रा	जतिश्र	ग	रसवि	र
स र ति	श्रतिस सभेव॥ डुतिव	र प ढ	ससर गपग तिगति	स म व
य	ननय	न	मतिदे	व
सु व र	बरन रनन रुचिली	व र न	रनसु चितरु तनम	सु चि न
प्र	गदप्र	वी	नगति	न

मू० अथ चक्रबंध दोहा ॥

मुरलीधरमुषदरसिमुषसं मुषमुषश्री धाम॥ सुनिसारसनैनीसिषैंजीसुषपूजे काम ८२॥ ॥टी० सषीवचन नायकासों तेरेमुषके सनमुषठाढेहैं ए मुरलीधर तिनकों मुष तूं देषि॥ मुषश्रीधामजेहैं कामादिक तिनमें मुष्य हैं॥ अर्थ श्रेष्ठहै॥ हेसारस कमलनैनी॥ प्रमान॥सारसंसरसीरुहं इत्यमरः॥ तूं मेरीसीष सिक्षा ताकों तूं सुन॥ तेरेजीको काम सुषपूरन होयगो॥ किंवा॥ जीवमैं सुषहोय कामपूजै॥ हेममैं मुषनामउपाय

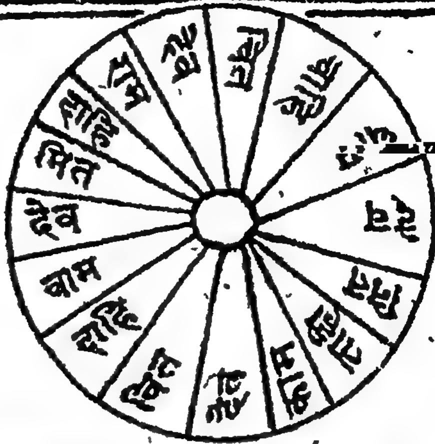
को॥ प्रारंभको श्रौ श्रेष्टको चक्रबंधश्रौ श्रावर्त्तनिबंध याकौं कहतहैं॥ ८२॥ ॥ श्री ॥

चक्रबंध



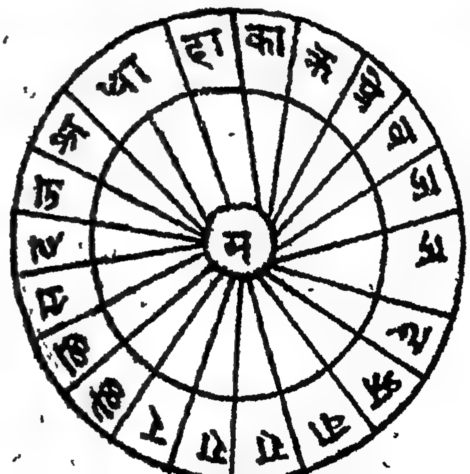
सर्वतोमुष॥ मूल॥

मू॰ कामदेवचितदाहि॥ वामदेवमितदाहि॥ रामदेवचितचाहि॥ धामदेवनितनाहि ८३॥ ॥टी॰ कामदेव तोरे चित्तकौं दाहत है यातैं वामदेव महादेवको मित्र करि जोजारिदेहि॥ रामदेवकौं चित्तमैं चाह॥ धामदेव नाको पावैगो॥ सोरह दलके चक्रमैं लिषे॥ नाम सर्वतोभद्र॥ जहाँसौं पढे तहाँसौं तुकांत मिले ८३॥



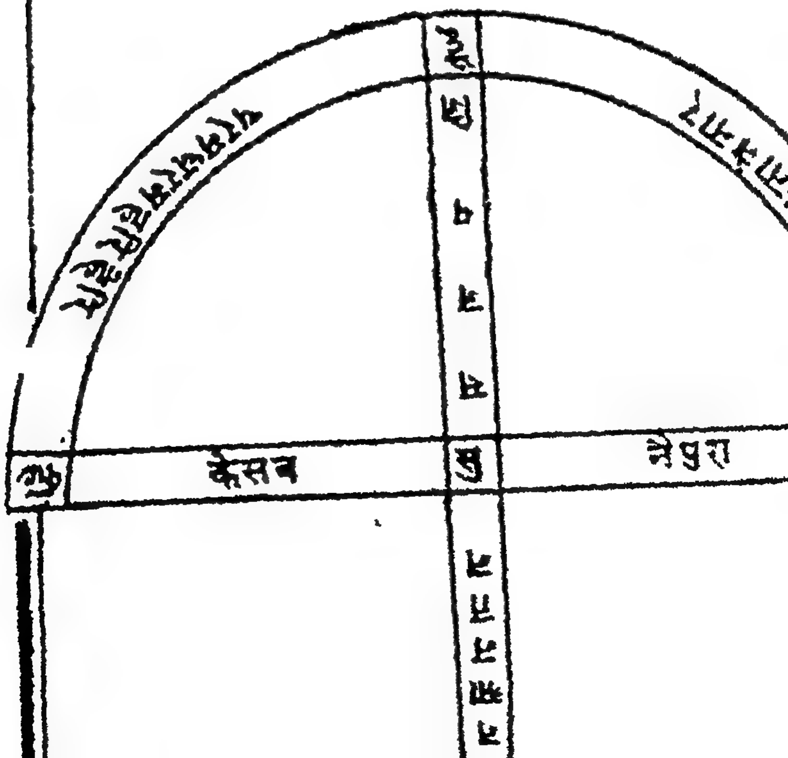
अथकमलबंधको मू० दो० रामरामरमवे
मक्षमसमदमजमश्रमधाम॥दामकाम
मप्रेमवमजमजमदमश्रमवाम ८४॥

अथकमलबंधकी टीका लिष्यते॥ उक्ति कविकी॥
रामरारम॥ अर्थ रामराम मैं रमन क्रीडाकर॥
तैं क्षेम कल्यान॥ क्षमिहै अर्थ ह्वैहै तेरे घरमैं
अरु सम दम जेहैं जोगकी क्रियाते श्रमके
हैं॥ अरु दाम काम क्रम अर्थ लोभ काम क्रोध
नको प्रेम दम दमन कर॥ किंवा जमनाम संज
मकोभी है॥ संजम कर विषयको॥ मतिभो
८४॥ ॥



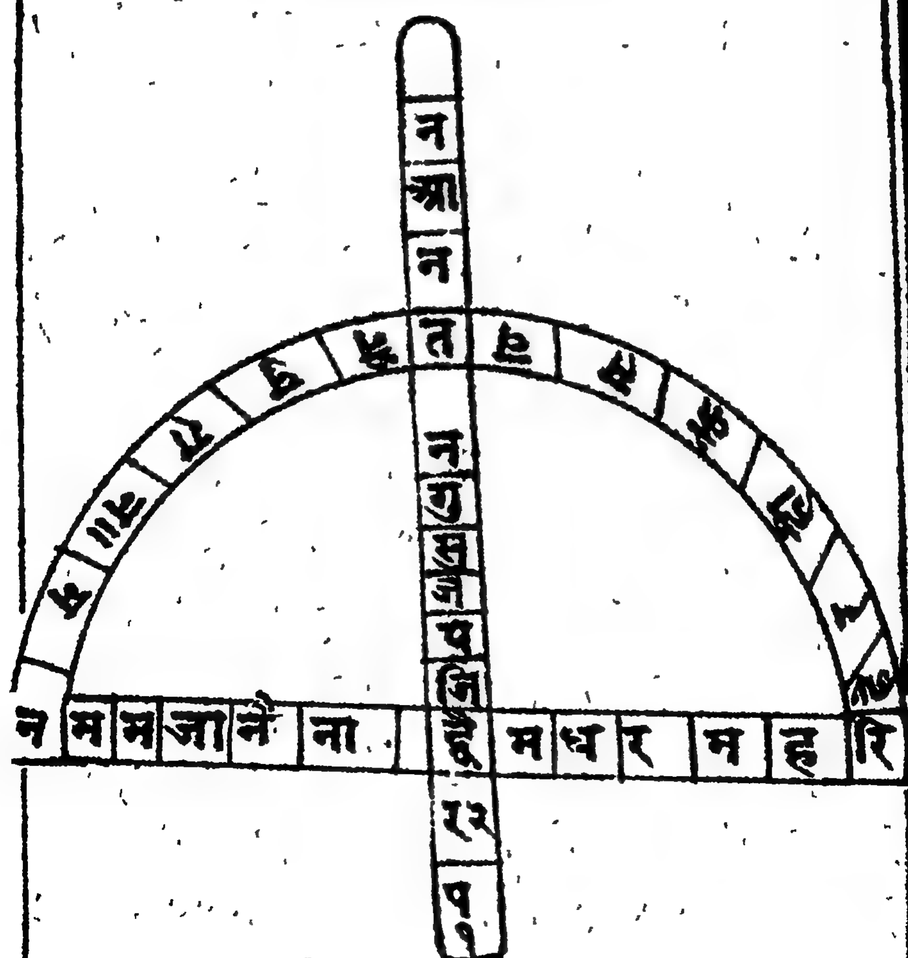
अथ धनुषबद्ध मूल दोहा परमधरम
रिहरहीकेसवस्तुनैपुरान॥ मननमनउ
नैनारहैजियजससुनतनत्र्पान ८५॥

धनुष बद्ध॥दो॥



अथ ॥ धनुष की टीका लिष्यते॥ उक्ति कविकी॥ एक धरम एक परम धरम॥ सोयह हृदय मैं हरीको हेरनौं॥ कान से पुरान सुननौं॥ अरु मनमैं मनन जाननौं॥ दोय दुलीको॥ भक्ति औ विरक्तता॥ आन जियतैं सुजस नाहींसुनत॥ किंवा मनमैं नजान ना रहै॥ एकहू जानै॥ अर्थ आपनी जानै ८५॥ ॥

द्वितीयधनुषबद्ध



सर्वतोभद्र

सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
न	र	ली	न	न	ली	र	न
न	र	ली	न	न	ली	र	न
सी	मा	क	ली	ली	क	मा	सी
ता	र	मा	र	र	मा	र	ता
सी	ता	सी	न	न	सी	ता	सी

ताको कामधेनभी कहत हैं॥

अथ सर्वतोभद्र॥मू॰॥श्लोक॥सीतासीन नसीतासी तारमाररमारता॥सीमाकली लीकमासी नरलीननलीरन ८८६ ॥ ॥ ॥

अथ सर्वतोभद्रकी टीका लिष्यते॥ काहूपूछी कैसी ताजैसीहैं तैसी और दूसी है॥उत्तर॥नन नहींहैं॥न हींहैं॥तारा सुग्रीवकी दूसी ऐसीनाहीं है॥मारकहिये माला॥ताके उपमा इस्त्रीकौं देतहैं॥ सोभी ऐसी नहीं किंवा तारागन की मालाऐसी नहीं है॥रमालछिमीभी नाहीं॥किंवा मार काम ताकी इस्त्री रति सोभी नाहीं॥चित्रभंगके लिये रतिकौं रता कहो॥ सीनाकलीमा को अर्थ॥ काकहिए सुष॥आनंदताकीसीवांम्रजाद॥जा नौं॥लीको अर्थ लीनीहै॥ सुगम अर्थ॥ सीवां म्रजाद॥

सुदयाकी॥ ताकीजो कली ताकी लीक राह ताकीमा सोभासी है॥ नरलीन याकोअर्थ॥ नरअवतार जिन नैं लियो॥ ऐसे श्रीराम तिनमैं॥ तामैं हैं लीन रहत हैं॥ किंवा तिनमैं आसक्तहैं॥ श्रीरामजी कैसेहैं॥ नली हैं॥ लंकामैं नलवानर संगमैं रहे॥ जाके नरहैं सो नली॥ किंवा नावक को नीर नलमैं होयके चलैहै॥ सो राषत रन मैं॥ यह सर्वतो भद्र चित्र चौंसठको ठामैं सूधो उलटो लिषो जातहै॥ यह जानलीजिये॥ ८६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

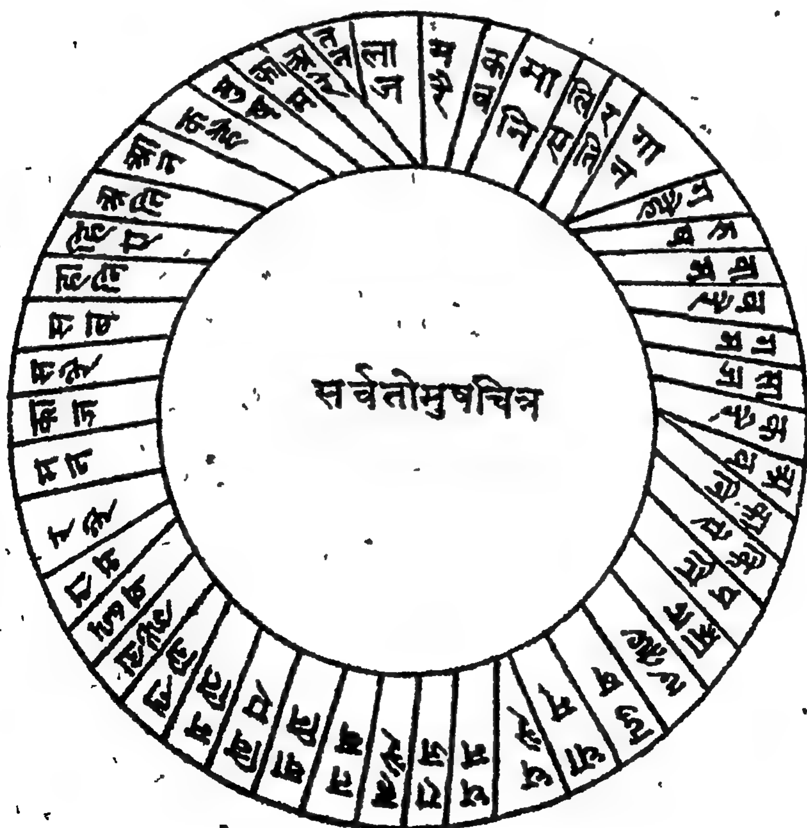
अथपरवतबंध

							१							
							या							
							म							
							य							
						रा	गे	सु						
					तौ	हि	तु	चौ	र					
				टी	का	म	मं	नो	ह	र				
			है	अ	भ	या	मी	त	अ	मी	त			
		नि	को	दु	ष	दे	त	द	या	ल	क	हा		
	व	त	ही	न	द	या	स	त्म	क	हो	क	हा	कू	
ठ	मैं	पा	व	त	दे	षो	वे	ई	जि	नि	रे	षी	क	या
							स							

मूल पर्वतबंधचित्र॥ सवैया॥ यामयपा गेसुतौहितचौरटीकामम नोहरहैअभ या॥ मीतअमीतनिकौंदुपदेतदयालक हावतहीनदया॥ सत्सकहाकहौंझूठम पावतदेषोवईजिनरेषीकया॥ यामजै तुममीतसबैससबैसतमीमतगेममया ॥८७॥ ॥ अथ परवतबंधकीटीका॥ उ क्ति मित्रकी मित्रप्रति॥ जानायकासौं मय क हिये नायकामय तुमहोयरहे हो रागकं॥ किंवा जानायकामैं तुमरागे हौ॥ किंवामयमदिरा ता केबस होयकैंरागे॥ सो तुम्हारेहितकी चोरटी है चुरावनहारी है॥ तुमतें रूपीरहतिहै॥ यातैं॥ ता सौं अनुरागिन्रोअच्छो नाहीं॥ औ कामजो है सो तो मनको हरनहार हई है अभय॥ फेर काम कै सो है॥ मीतकामी॥ अमीतजोगी॥ दोईकौंदुपदा ता है॥ कामीको विरहमें॥ अरु दयाल कहावत है अरु दयातैं हीनहे॥ किंवा दयालकोभी हीन द याकरिदेत॥ रतिआदिकमें॥ तूं हमतैं सत्यकहो॥ यह स्त्रीयादिक मिथ्या पदार्थ हैं॥ ता ईस्वरकौं देषो॥ जिननैं रेषी है कायासरीर॥ रेषीहै नामकरी है॥ हेमीत तुम नायकाके संगमें सुपदकीठौर सकार है॥ चित्र पूरणार्थ सबजाम पहरमें तुम

जगेहौ॥नायका तुम्हारी समान वैस है॥ औ तमीरा त्रीमें जागेहौ॥किंवा तुम तमीके पानहोहु॥ग्लान क्यौं नहीं मनमैं आनौं॥ जिन ईस्वरकी माया दया॥ गेयहै गानकरिबेकौं जोग्य है॥गजादिकपै दयाक री सोई मतिहै इष्ट और अनिष्टहै॥ कोई याको छत्रबंध कहतहैं॥कोई परवत बंधकहतहैं ८७

अथ सर्वतोमुषचित्र को मूल॥



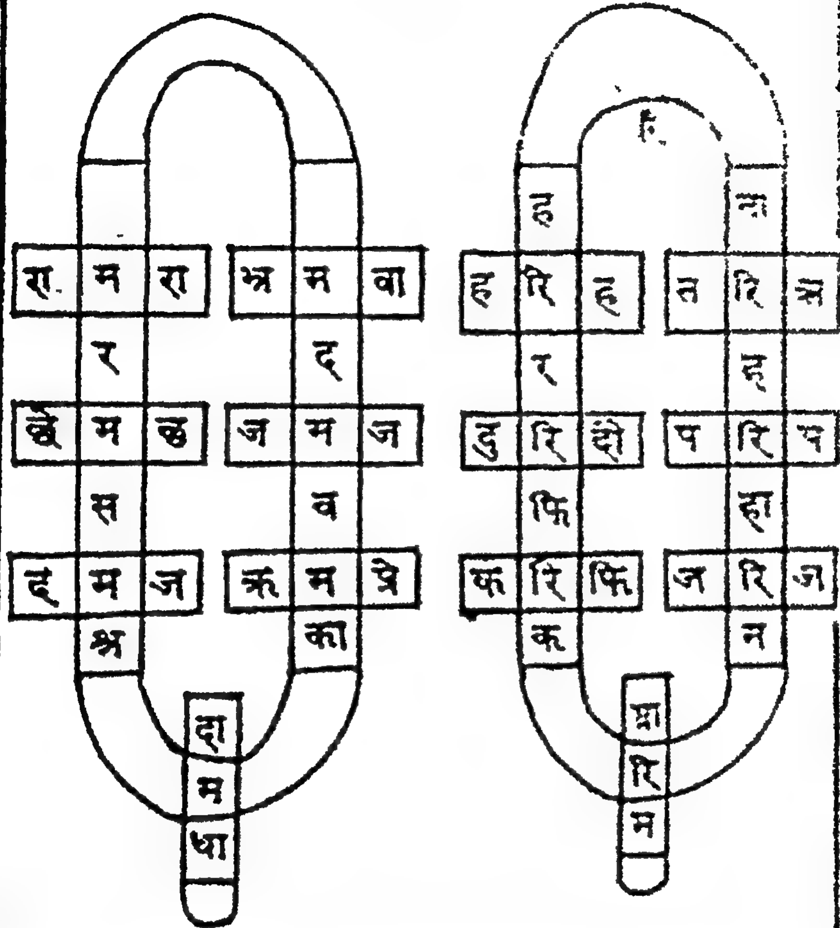
सवैया

मू॰ काम॰ अरै॰ तन॰ लाज॰ मरै॰ कव॰ मा
नि॰ लिए॰ रति॰ गान॰ गहे॰ रूप॥ वाम॰ व
रै॰ गम॰ साज॰ करै॰ अब॰ कानि॰ किए॰ प
ति॰ आन॰ दहै॰ दुष॥ धाम॰ धरै॰ धन॰ रा
ज॰ हरै॰ तव॰ बानि॰ विए॰ मति॰ दान॰ लहै॰
दुष॥ राम॰ रटै॰ मन॰ काज॰ सरै॰ सब॰ हा
नि हिए॰ अति आन॰ कहै॰ मुष ८८॥

अथ सर्वतोमुष चित्रकी टीका लिष्यते॥ कोऊकाहू
को उपदेस करतहै ज्यौंतूं अपने मनसौं रामकौं ना
म रटै रटै॥ तौ तेरो सव काज सरै॥ सिद्ध होइ आन
को नाम मुषसौं कहै तूं हृिदय में अतिहान नक
सान जानतहै॥ काम जोहै सो तनसौं अरै हटै ला
गै कबहू को रति मानलिए॥ काहूसौं रति किए॥ न
ब लोग जेहैं ते गानकौं प्रसिद्ध कथन रूपनौर न
हत हैं॥ अर्थ यानैं परइस्त्रीसौं रति करीहै॥ तव
तूं सुनिकै लाजतैं मरैहै॥ गन नाम हेम में प्रथम
कोभी है॥ पहिलेतौ वामा इस्त्रीको वरै अर्थ॥ अंगी
कार करै॥ फेरिवाको साज भूषन वस्त्र वाकोभी क
रै॥ फेरिलोग जानिजाय अब तव इस्त्रीके कुल का
निके लिए जौ इस्त्री आपनी कुलकानिकौं करै अर्थ

मै कुलवधू हौं॥ औरके पास क्यौं करि जाउगे॥ तब
वाके पति जारसौं अपने प्रानकौं दुषसें दहै॥ अ
बरावे॥ फिरिधाम में घरमैं जो धनकौं धरै॥ राषै॥
तब धनकौं राजा हरिलेतहै॥ हेमतिदान बुद्धि के
दाता तूं औरनि कौं बुद्धिदेत हौ॥ वानि विए याको
अर्थ॥ विए कहिए दूसरी वानिसौं दूसरी तरहसौं
राम भजन विना काकुस्वर सौं जानिए॥ तूं सुषको
लहै पावै नहींपावै यह अर्थ॥ सूरदास भगवंत
भजन बिन सुष तीनिलोकनहीं॥ कामसौं औ अरै
सों औ तनसौं औ लाज सौं चारिहु तुकमैं॥जहा
सौं पढै तहांई तुकांत मिलै यह सर्वतोमुष च
क्र है॥ चक्राकार लिषतहैं॥ याकोचित्र॥ ८८॥ ॥

अथहारबंध

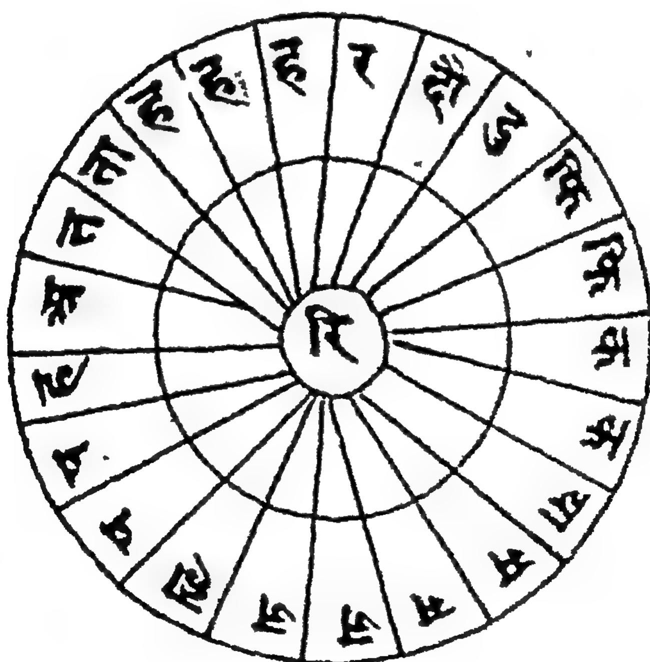


हारबंध॥कमलबंध॥मूल दोहा॥ हरिह रिहरिररिदौरिदुरिफिरिफिरिकरिकरि आरि॥मरिमरिजरिजरिहारिपरिपरिह रिअरितरितारि ८९॥ ॥पुनः ॥ दो॰ ॥ रामरामरमछेमछमसमदमजमअमधा म॥दामकामऋमप्रेमवमजमजमदम

श्रमवाम ८०॥ ॥ टीका ॥ यह दोहाह्ना रवंध कमलबंध पर लगत है॥ कोई पुरुष काहू पुरुस सौं उपदेस करत है॥ हरिजो है चाह॥ अरु हरिकहिये विषय ताको चाहकौं तूं दूरि करि॥ अर्थे तजिदेइ॥ हरि जो भगवान ताको रट रटो भजन करो॥ फिरिफिरियारि कहिए हठ करि दौरि दूरि तीर्थ जो है भगवान के तहाँको॥ घरतैं हठ करिके जाहु॥ किंवा घरके लोगतैं दुरिछपिकेजाहु॥ मरि मरि बहुतश्रम करिकैं किंवाजन्मांतर लेकरिके॥ अर्थेएक जन्ममैं सिद्ध नहीँहोती॥ जरिजरि कहिएतपस्यामैंजरिकैं॥ किंवामरीजो मृत्यु ताको तूंमार॥ गुरुहू लघु करिके पढे लघु गुरु करिकैं पढे॥ औमृत्युकोजो जरिहै विकर्म ताकौं तूंजारि किंवा मृत्युकेजर मूलकौं जारि॥ फेरि हारिमैं परोतीर्थ करत मैं थकिजाहुगे॥ औ अरि वैरीजेहैं कामक्रोध लोभ मोहादिक ताकौं तूं परिहरि छोडिदेइ औतूं भीतरि और कोभी उपदेसकरिकैं तारि ८९॥ ॥ ॐ ॥

दूसरेकी टीका॥ कवि उपदेस करत दासरथी औ बलिराम मैं रमनकर अर्थ ध्यानकर॥ क्षेमकल्यानमैं क्षम समर्थ॥ सम सांत दम बाह्य इंद्रीरोकनो जम नियम जोग क्रिया सो सब श्रम के धाम घर हैं॥ औदाम द्रव्य ताकी कामना ताकोजो क्रम.

एकतैं सन सत्तैं सहस्र इत्यादि ॥ ना कोम ॥ उमिल मनमैं मतिराषै ॥ जमजम कै वाम इत्यो त्रिवें सुषमानत है ॥ भूलकेताभ्रमको दमदम मनिकरै ॥ राम राम औ हरिहरि यह दोदै दोहा एक दें सो काहूने बनायके लिष्यो है औ कितनें अपर श्लोकभी बनायके लिषो यहोहा हारबंध औ कमलबंधपर लगत है ८०॥ ॥ ॥



इतिहारवंधकमलबंध

॥समाप्त॥ ॥

अथ मंत्रीगति चित्र॥

मूल

मू• सवैया॥ रामकहौन
स्जानहिएमतिलाजस
बैधरिमौनजनावत॥ना
मगहोउरमानकिएकृत
काजतबैकरतौनबता
वत॥ कामदहेहरआन
हिएँव्रतराजजबैभरिमौ
नअनावत॥जामवहैषर
पानपिएघृतआजअबै
हरिकौँनमनावत९१॥

टीका॥उक्तिगुरुकी शिष्यप्रति
रामकहौहेनर हिएमैंजानकैं
॥ मतिलाजसवेको अर्थ॥ और
जेमतिहैंजोगादिकके तेमौन
साधिकेलज्या जनावतहै कै
रामईकहो अरु कैपुस्तकमैं
मृत्यु पाठहै॥ तहाँ ऐसो अर्थ॥
कै अपने जीवमैं मृत्युजानिकै
कै एकदिनमरैगे॥ तबका व्य
वस्थाहोयगी॥ अरु कहूं मृत

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भी पाठ है तहाँ विघ्न निमित्त अकारको लोप ॥ अन्त जानिए ॥ रामको नाम अमृत है यह अर्थ ॥ सबै विषयसों लाज राखो ॥ अर्थ होना कुछ मति कहो ॥ दुसरी तुकको अर्थ ॥ नामगहो उर मानिकिए ॥ नाम गहो उरके पानि कला लए हैं ॥ अरु कहूं मानकिए भी पाठ है ॥ जो तुम कृतकरमी पाप को किए हो ताकों उरमें मानके केसरन और नाहीं तब पीछे और काज कों करो ॥ किंवा जब उरमें मानिकको उँजेरो व्है है ॥ तब ध्यानादिक सब काज तुम्हारे बनिहैं उरके प्रकासतें ॥ जब नाम तुम ह्रिदय में ल्यावोगे तब अनायास हरमहादेवके नामके आसक्त हैं ॥ ते ह्रिदय में आयके कामकों जराय देंगे जैसें वृत्तराज जब होय है व्रतको अर्थ रची ॥ किंवा राज्य वृत्य हम राजा को दियो पाइंगे ॥ तब भयको भरन अनावत ॥ नहीं आवत है किंवा भरभोनमें अनावत अरलान करत किंवा राजको भर भरन पोषन करो जबे जयताई ॥ भो कहिए जमराजसों डर नहीं मनमें आवत है ॥ आपहर वलो वहावो माहीरी तितें षरषरे पानपिए घृतसंतोषतें ॥ आजके दिन अबे याही छुन हरको कोंन नहीं मनावत है कितने चित्र ऊपरतें बनायके लोगनने लिषि दए जैसे यह कवित्त प्राचीन पोथिनमें नाहीं मिलत है

ऐसे जानलीजिए ९१॥ ॥ ❀ ॥ ❀ ॥

अथडमरूवद्ध

अथडमरूवद्ध चौकीबंध मूल॥ नरसर
वरश्रीसदातनमनसरसस्रुरवसिकरन
नरकसिविरसुसकलसुषदुषहीनजी
रन॥नरमनजीवनहीनरदयस
यसतिमतिहरन॥नरहतमतिमयज
केसवदासश्रीवसकरन ९१॥ ।

य	जगतकेसव	दा
द स श्व द र नि	मतिमतहर · नरसरश्रीस न नवजीनमर · रकसिवरसु	त न म न स र
ही	षदुषसुलक	स

टी॰ हेममें नरनाम मनुष्यको औ अर्जुनको॥नर मनुष्यकेसोहै॥सरवर करनहारहै॥श्री सोभावा नहै सदातनमें॥अरु मनतें सरस सुरदेवता व सीकरन किंवा नररूपजो भगवान सो कैसेहैं॥ संपूर्ण जो श्रीसोभा सदाजाके अंगमें रहतहै॥ मनजाको सरसहै॥ऐसी सोभाहै औ सुर वसकरन हार औरजोसुषहै तेनरकके सिविर डेराहै दुष दाताहैं हीनहैं॥जीवन मरन करावन हार गन्न केजोभमैं मस्यो जातहै॥ अरु आगे जम दंडदेत है॥नर निरदय सदय मनहै जीव नहिं॥वव्ह नु ह ईस्वरहै॥अवकीगेर वकार पाद पूरणार्थ॥मन केसोहै मति जोबुद्धि ताकोजोमति॥इछताको हर नवाजोहै हेनरजगत संसार हतमत मयहै॥पाव कीमारी बुद्धि मयहै॥यातें भगवानके सरन दोऊ यहकेसवदासकहतहैं ८९ इतिचित्रसंपूर्ण॥

मू॰ दोहा॥कामधेनुदै आदि औकल्पवृक्ष परिजंत बरनतकेसवदासकविचित्रकवि त्तअनंत १ इहिंविधिकेसवजानिएचि त्रकवित्तअपार॥ वरननपंथवना यमैंदीनौंबुद्धिअनुसार २ सुवरनजति तपदारथनिभूषनभूषितमान॥कवि

प्रियाहैकविप्रियाकविकोजोवनजान
३ पलपलप्रतिअविलोकिवोसुनिवोगुनि
वोचित्त॥कविप्रियाकोरक्षिएकविप्रिया
ज्योमित्त ४ अनलअनिलजलमलिन
तेविकटप्रलतैंनित्त कविप्रियाज्यौंरक्षि
एकविप्रियाज्योंमित्त ५॥केसवसोरहभ
भावसुभसुवरनमयसुकुमार॥कविप्रि
याकेजानिएयहसोरहसिंगार ६॥इति
श्रीमद्विविधभूषनभूषितायांकविप्रिया।
यांचित्रालंकारवर्ननंनामषोडषः प्रभावः
समाप्तः १६॥ ॥इतिमूलसमाप्त॥ ॥
टीका कामधेनदे आदियहजो षटदोहाहैं॥सो
केसवदासकेनहीहैं॥प्राचीनपुस्तकमें नाहीमि
लत याते यह दोहानको तिलक हमनेंनाहीं
कियो॥ दोहासरदारकविकृत विषमपद
नकीव्याख्याकीनीकविसरदार॥ वहैनरा
यनसिष्यमम हरिजनकरीसुविचार १॥
कासीकोपतिकामतरुईश्वरभूपविचार
कविप्रियातातेतिएसुलभकरीसरदार
२॥संमतउनइससैबहुरएकादसकी।
साल कातिकसुदिनोमीससोसुलभक
रीकबिबाज ३॥सुकविसुकोविदआद

रैतैायहृनिजकअनूप॥नाहींतीयामिसव
सोउरकविताकोरूप ४॥नारायनदत्तका
विक्रुतअस्फुट॥कवित्त॥चूनरीचटकचूग
चूरीचुभीचाषेचषचोरैचित्तचोकाचपला॥
ज्योंदमकततहै चंपकलीचंद्रकलाचोंम
राचरचञ्चुनीचंदनचमेलीचोवागातरा
मकततहै चरनचपायचाजहजतनरायु
नजूचैंोकेतचकतचौकमोडडमकतहैं
चंचलचलाकचामीकरचंचलासीचा॥
रुचहचहीचाहचंद्रमासीचमकतहैं ५
टीका चपलाबिजुरी औचंचलालक्ष्मीको
नामहै ५॥ ॥कवित्त॥आयरसरा
यसुषसरसबढायचायजातहौंविदेसक
ह्योगातसोंजगायगात सोसुनिउदासह्वै
निरासआसप्रानतजिभरतिउसांससुधि
वासकीनबोलीबात दिलकोदरदकोा
नकहतनरायनजूहरदसमानहीसेजर
दजरदगात लोटलोटलपटकपाटचा
टषायहायसुसुकिसुसुकिसीसपट।
किबिताईरात ६॥सवैया नैननमूदि
उसांसनआवतहावउठोंयैरहैनपरीहैं
बूडतमोतैंकहाजुनरायनसीरीभई।

रहीएकघरीहै॥ पीरीपरीभरीभारीविथा
तनचित्रलिषीसोविचित्रपरीहै देषेविना
नंदलालतुहैंवहजोवतबालमरीसोडरी।
है ७॥ उत्तमनारीकरैनितगारिकोंजोकहूं
पीयनकैपरतीको साधुकोसूधोसुभावज
षेतैंअसाधुकोहोतसदांमनफीको वैन।
गुनीगोविचित्रगायनमूरषहीयनलाग
तनीको दानीजबैकछूदानकोदेतफुलै।
अतिपेटभंडारीहीजीको ८॥स्वस्तिश्रीम
न्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरी
प्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभि
गामीबलितपुरनिवासीहरिजनकविक्य
रत्नाजेन सरदाराख्यकवीश्वरेणविर[illegible]
तायांकाशिराजप्रकासिकायांकविप्रिया
यांटीकायां चित्रालंकारवर्णनंनामषो
डशः प्रभावः १६ समाप्तः दोहा॥ नारा
यणकविसिष्यमम जाइटछामाबाद॥
छपवायोसुचितेसाधिकेंछमियोसुकविगु
नाह १॥ शुभंमस्तु॥ ॥


साहित्य शोध
परि. सं.

सुंदरीतिलक

श्रीयुत परमउदार बाबूहरिश्चन्द्रकी
आज्ञानुसार
पण्डितमन्नालालने इसग्रंथकों बडेपरिश्रमसे
संग्रहकरके
अपने वाराणसीसंस्कृतयन्त्रालयमें
छापा निश्चेहैकि जोपरमरसिकहैं वे
इसअनूठीकविताकों पढकर अत्यंत
हर्षितहों
क्योंकि यहअनोखीकविताअवको
अनोखे अनोखे
ग्रंथोंका सारांस निकालकर
मुक्ताहारकीतरैंसे पिरोईगईहै

Sundari Tilak

A New Poem by Pandit Mannalal

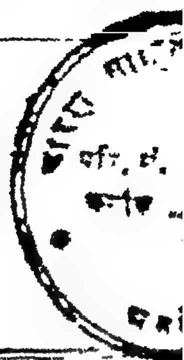
Lithographed at his own Press
Benares.

प्रगटहोकि

एकदिन सहृदय रसिकजनोके समाजमे रसि
कसिरोमणि श्रीबाबूहरिश्चन्द्रजी कुछप्राचीन
कविताकी चरचाकररहेथे उसीकालमे रसिकों
मे परस्पर इसबातकाविवाद प्रारंभहुवा कोई
बोलउठाकि सवैयाठाकुरसेअच्छी किसीकीनहीं
बनी कोईकहनेलगाकि बोधाकीकिससेकमहै
इसीभांति कोईसंभु औनृपसंभुकी प्रसंसाकरने
लगा इसमे एकसकस कहउठाकि घनआंनद
कीसवैयासेतो रसटपकापडताहै इसीतरैं
सवरसिकोंकेरुचिकी परस्परविचित्रतादेखक
र बाबूसाहबने ऐसाविचारकियाकि एकग्रंथ
ऐसा संग्रहकियाजाय जिस्मेनवीन औप्राचीन
दोनोसमयके कविजनोकी अत्यन्तरसीलीक
विता जोकेवलसवैयाछंदमेहो चुनकेलेलीजा
य औ मुद्रितकीजाय इसकार्य्यकेहेतुबाबूसा
हबनेमुझसेआदरपूर्वक कहाकि आपइसवस्तु
के वडेरसिकहैं हमारेइसमनोरथकों पूराकी
जिये सोउनकीआज्ञानुसार मैनेयहग्रंथ निज
मित्र हनुमानकविकी सहायतासे संग्रहकर
के अपाने वाराणसीसंस्कृतयन्त्रालयमे रसिक
जनोके आनंदकेलिये मुद्रितकिया निश्चैहैकि
सवरसिकलोग इसअलौकिकसुधाकों आदर
सेपानकरैंगे औहमारेइसपरिश्रमपरप्रसन्नहो
गें पण्डितमन्नालाल

॥श्रीगणेशायनमः॥

सुंदरीतिलक



॥श्रीआनंदकंदनंदनंदनायनमः॥

॥सवैया॥

छहरैंसिरपैंछबिमोरपखाउनकीनथकेसुकतायहरैं।फ
हरैपियरोपटवेनीइतेउनकीचुनरीकेझवाझहरैं॥रसरंग
भिरेअभिरेहैंतमालदोऊरसख्यालचहैंलहरैं॥नितऍ
सेसनेहसोंराधिकास्यामहमारेहियेमेसदांठहरैं॥१॥स
राहैंसुरासुरसिद्धसमाजजिन्हैंलखिलाजतहैंरतिमार॥न
ह्मामुदमंगलसंगलसैंविलसैंभवभारनिवारनवार॥त्रिय
जैंत्रिलोकनिकाईकेओकसुदेवमनोभवरूपअपार॥सदां
दुलहीवृषभानसुतादिनदूलहश्रीब्रजराजकुमार॥२॥दो
ऊदुहूंपहिरावतचूनरीदोऊदुहूंसिरबांधतपागैं॥दोऊदुहूं
केसिंगारतअंगगरेलमिदोऊदुहूंअनुरागैं॥संभुसनेहनमैं
यरहैरसख्यालनमेसिगरीनिसिजागैं॥दोऊदुहूंनमैंना न

करैंपुनिदोऊदुहूंनमनावनलागैं॥ ३॥ ॥ विहसैदु
तिदामिनिसीदरसैतनजोतिजुन्हाईउईसीपरै॥ लषिपा
यकीअरुनाईअनूपललाईजपाकीजुईसीपरै॥ निकरै
सींनिकाईनिहारैंनईरतिरूपलुभाईजुईसीपरै॥ सुकुमार
तामंजुमनोहरतासुखचारुताचारुचुईसीपरै॥ ४॥ विद्रु
मऔरबँधूकजपागुललालगुलाबकीआभालजावति॥ दे
वजूकंजखिलेंहटकेहटकेभटकेखटकेगिरागावति॥ पाव
धरैअलिठौरजहाँतेहिंओरतेंरंगकीधारसीधावति॥ मानोम
जीठकीमाटढुरीएकओरतेंचादनीवोरतिआवति॥ ५॥ रा
धिकाकान्हविरंचिरचीसबलोकनकीसुखमासबलैलै॥
अंगकेरंगनकेढिगजातव्हैजातहैसंभुसवैरंगमैले॥ लाल
नसौंपरवालनसौंवँधीलालनजानिपरैवहिगैलै॥ पायँधरै
जितहींवहवालतहींरंगलालगुलालसोफैलै॥ ६॥ कौहरकौं
लजपादलविद्रुमकादुतनीजोवँधूकमेकोतिहै॥ रोचनरोरी
रचीमेहदीनृपसंभुकहैमुकतासमपोतिहै॥ पायधरैढरैई
गुरसोतिनमेमनिपायलकीघनीजोतिहै॥ हाथहैतीनलौंच
रिहूओरतेंचांदनीचूनरीकेरंगहोतिहै॥ ७॥ चालिसोआईन
ईदुलहीलखिबेकोंजबेकोउचाववढावति॥ सूहीसजीसि
रसारीजबैतबनाइनआपनेहाथओढावति॥ भीतरभौनतें
वाहिरलौंहिजदेवजुन्हाईकीधारसीधावति॥ साँझसमेससि
कीसीकलाउदयाचलतेंमनोघेरतिआवति॥ ८॥ जाहिरेजा
गतिसीजमुनाजबबूडैवहैउमहैवहवेनी॥ त्यौंपदमाकरहीर
केहारनगंगतरंगनकीसुखदेनी॥ पायनकेरंगसोंरंगिजा
तिसीभाँतिहीँभाँतिसरस्वतीसेनी॥ पैरैजहांईजहांवहवालत
हाँतहाँतालमेहोतत्रिवेनी॥ ९॥ आईहुतीअन्हवावननादनि

सौंधेलियेकरसूधेसुभाइन॥ कंचुकीछोरधरैउबटैनकों ईंगुरसेरंग कीसुखदाइन॥ देवजूरूपकीरासिनिहारनिर पतेंसीसलौंसीसतेंपायन॥ ह्वैरहीठौरहीठाढीरगीसौंहसैं करठोढीदियेठकुराइन॥ १०॥ ❊ ॥ लखिसासुहिहागभ्र यरहैननदीलखिज्योउपजावतभीनहि॥ सोतिनसौंसनहेन चितोतिजेठानिनसौंनिजठानतिप्रीतहि॥ दासिनहूंसोंउदास नदेववढावतिप्यारेसोंभीतिप्रतीतहि॥ धायसोंपूछतियानें विनेकीसखीनसोंसीखेसुहागकीरीतहि॥ ११॥ निजचालसों औरजेवालतिन्हैकुलकीकुलकानिसिखावतीहै॥ ननदीओ जेठानीहसोंवैतऊहसीओवनहींलौंवितावतीहै॥ हनुमान ननेकौनिहारैंकहूंहगनीचेकियेसुखपावतीहै॥ वडभागिनीपी केसुहागभरीकवौंआँगनहूंलौंनआवतीहै॥ १२॥ ❊ ॥ न हरैंउवैंअंगअनंगहूकीमदजोवनकेभहरातफिरै॥ वडडीअं खियाँनतिरीछेंचितेंसषियाँनलखेंलहरातिफिरै॥ कहिठा कुरयानिखरीपरवरीथिरसीनरहैथहरातिफिरै॥ सिरओढ नीडारैंकसैंछतियापहिरैंफरियाफहरातिफिरै॥ १३॥ लरिकौ ईकेखेलछुटेनवनायअजौंनमनोजकेवानलगे॥ चतुराईचं छूकचढीचितमेतरुनीनकेवेनसुहानलगे हरिकोंहकहों केहैंकोनकेहैंएवखानकछूकदिलानलगे॥ अवनोतिरिकेच लिजानलगेहगकानलगेललचानलगे॥ १४॥ नेकहूकाने नसीखभलीभलीभाँतिसिखावतिधायसुजानरी॥ खेलनि हैंगुडिपानकोखेललखेंसंगमेसजनीसुखदानरी॥ पैतुल सीतियकेअंगमेफलकीतरुनाईइतेकतोआनरी॥ नैनन गेकछूपैनेसेहौंनगहीअधरानकछूमुसुकानरी॥ १५॥ दे खियेदखियाग्वालिगँवारिकीनेकुनहींथिरतागहनींहै॥ अ

नदसौंरघुनाथपगीपगींरंगनसोंफिरतैरहतीहैं॥ छोरसों छो
रतखौनाकोछूकरिऐसीवडीछविकोंलहतीहैं॥जोवनआ
इवेकीमहिमाअँखियोंमनोकाननसोंकहतीहैं॥१६॥ लाव
तमैनसुगंधलख्योसवसौरभकीतनदेतदसीहै॥अंजन
रंजनहूंविनस्यामवडेवडेनैननरेखलसीहै॥ऐसीदसारघु
नाथलखैंइहिंआचरजैमतिमेरीफसीहै॥लालीनवेलीके
ओठनमेविनपानकहांतैंधौंआनिवसीहै॥१७॥ एअलिया
वलिकेअधरानमेआनिचढीकछूमाधुरईसी॥ज्यों पदुमा
करमाधुरीत्योंकुचदोउनपैंचढतीउनईसी॥ज्योंकुचत्यों
हीनितंवचढेकछूज्यौंहीनितंवत्यौंचातुरईसी॥जानीनऐसी
चढाचढिमेकेहिंधौंकटिवीचहीलूटिलईसी॥१८॥ मनोह
रअंगकीभाठीरचीसिसुताईजराईअनंगकलार॥ भनैरघुनाथ
संभुजूदीपतिज्वालअँगारसेराजतलालकेहार॥ लसैंसि
खारज्यौंधूमकीधारधस्योतरैंभाजननाभीसुढार॥ कमाव
लीकंचनकुंभउरोजनितैंमनोच्वैचलीआसवधार॥१९॥
॥ ❋ ॥ स्वेदकोभेदनकोऊकहैव्रतआँखिनहूंअँसुवानको
धारो॥त्यौंपदमाकरदेखतीहौतनकोननकंपनजातसम्हा
रो॥व्है धौंकहांकोकहायोंगयोदिनद्वैकहीतैंकछूख्यालह
मारो॥काननमेवसीवांसुरीकीधुनिप्राननमेवस्योवांसु
रीवारो॥२०॥ सखितैंहूंहुतीनिसिदेखतहीजिनपैंवैभईही
निछावरियां॥ जिनपानिगह्योहुतोमेरोतवैसवगायउठींव
जडावरियां॥अँसुवांभरिआवतमेरेअजौंसुमिरेउनकीपग
पाँवरियां॥ कहिकोहैंहमारेवेकौनलगैंजिनकेसंगखेलीही
भाँवरियां॥२१॥ देखियेआनिकछूदिनतैंउरतैंउठेव्याधि
केअंकुरवारे॥कीजियेवेगिउपायनतोदुखपायहैंआगेभ

येपरभारे॥ हौप्रियसेचकप्रानतुम्हेंसुन्यवदेहअनोखेविरंचिसँवारे॥ वीरअधीरक्योंहोतिखरीअरीपीरजहैंगेंविलोकनहारे॥२२॥ छातीनितंवलखेदुलहीकेसखीनहूंकीमनसाललचानी॥ ऐसीनवेलीकेनायकहूजेरीआपुमेंमैसवयोंवतरानी॥ सुंदरजोवनरूपसराहतसुंदरीऔविनहीमैंलजानी॥ दीठिवचायसखीनहूकीनिजदेहकोंदेखिउहोमुसकानी॥२३॥ गौनेकेद्योसकहेमतिरासरसैलिनकोजुरिकेगनआयो॥ कंचनकीविछियापहिरावतप्यारीसखीपरिहासवढायो॥ पीतमश्रौनसमीपसदात्रजैंयोंकहिकेपहिलेंपहिरायो॥ कामिनीकोलचलावनकोंकरऊंचोकियोपैचल्योनचलायो॥२४॥ दिसिपूरवपछिमदाहिनेवायेंअधोरधसंकनमेलीफिरै॥ सखिसोतिकेपीछेलगैछनजेसैंगुराथिनीकेसँगचेलीफिरै॥ टहरेंवहरेंनहिंसेवकयोंखरपोननिज्योंवनवेलीफिरै॥ मनमोहनकेडरमैघरमैंअलवेलीअकेलीअकेलीफिरै॥२५॥ अवतेहूंकनेतिहिंभांतिकीआतेंकठोरहियेकीभईतौकहा॥ हरिनीकोंचहैंहरिसंगखेलायोअवूझमैवुद्धिगईतौकहा॥ विधिअंसियेजोरचिराखीअलीविसवासिनीआडलईतौकहा॥ सेवकाईभलीहमैसोतिहीकीदयातोहिदईनदईतौकहा॥२६॥ सुखआकरमानैनिसाकरकोंनदिवाकरतेंअनुरागीरहैं॥ तजिलाजकेव्याजपरोसिनहूंकोंजेगनिनतेंज्वरजागीरहैं॥ कविसेवकरूठिसहेलिनसोंसुठिसासुकेप्रेममपागीरहैं॥ हितआनिकेवानिपरीधौंकहानितसोतिकेसासनलागीरहैं॥ ॥२७॥ लाईलिवायपतमासोवतायभुरायकैदूतिकाकुंजनमाहीं॥ धायगहीहरिचंदजवेनछपीवहचंदमुखीपरछांहीं॥ अं·

कमेलेतलल्योछलकैवलकैतबआपछोडायकेवाहीं ॥ हाथनसोंगहिनीवीकह्योपियनाहींजूनाहींजूनाहींजूनाहीं ॥२८॥ नवकुंजनबैठेपियानदलालजूजानतहैंसबकोकला ॥ दिनमैतहाँदूतीभुरायकैलाईमहाछबिधामवला ॥ जवधायगहीहरिचंदपियातबवोलीहिछला ॥ मोहिलाजलगेवलिपावपरोंदिनहींहहाऐसीनकीजैलला ॥२९॥ वैरिनिमेरीकितैगईवेकरछोडिउन्हैकिनदेखनतूंदै ॥ योंकहिकेउचकीपरजंकतेंपूरिरहीदृगवारिकीवूंदै ॥ जोरनदेतिनहींमुखसोंमुखछोरनदेतिननीवीकीफूंदै ॥ देवसकोचनसोचनतेंमृगलोचनीलोचनखलकेमूंदै ॥३०॥ लैपरजंकनिसंकनवेलीकोंअंकमेलायलगेगहिघूमन ॥ ऊरुनसोंकसिकैकविसंभुसुजानकोंभेटिलगेमुखचूंवन ॥ झुकिझूमन ॥ गूंजनलागोगरोगरवीलीकोलगीघूमन ॥३१॥ ॥ विथुरीअलकैंरुलकैंस्रमवारिसखीकोगहैंकरहालतसी ॥ दृगनींदभरेंमुखऊंचीउसाससुगंधदसोंदिसिचालतसी ॥ गहैंपियपैरिसयालतसी ॥ तियजागिचलीरतिमंदिरबसैतिनकेउरसालतसी ॥ ३२ ॥ जामिनजागीजगाईहैलालननीदलखोअंखियामेरहीभरि ॥ सेजसंवारनपाईनफेरिकेघेरिकैआलसआनिरहीपरि ॥ सोदनदेहजूसोभालखोरघुनाथखरेपलिकाकेतरेहरि ॥ ऐसीलसैविधिनेथिरकैमनोराखीहैवारिदमैविजुरीधरि ॥ ३३ ॥ ॥ लौंल्याईसखीनखतेंसिखभूखनसाजत्नुनीको ॥ यैंहुलल षिप्रानपियाजिमिजोतमिलेंमनहोतमुनीको ॥ लाज

गडीमुखखोलैन बोलै कियो रघुनाथ उपाव दुनीको ॥ बो॰ ?
रंगैनदैंहि एकलगे जिमि स्त्रूँम के आगेसयान गुनीको ॥ ३४ ॥
जादिन चाहक हूँ रतिकी सुकछूपति कों पतियान न गोहै ॥
त्योंपद्माकर आननमे रुचि कानन भौंह कमान न गोहै ॥
देति तियान छुवै छतियाव तियान मे तो मुसुकानि नगोहै ॥ थी
तमे पान खवाइ वेकों परजंक के पास लो जान लगीहै ॥ ३५
॥ ❀ ॥ मुखचुंवनमे मुखलैजो भजे पियके मुखमे मुखना
योचहै ॥ गलवाहीं गोपालके मेलतहीं मुखनाहीं कहै मननै
नकहै ॥ नहिं देति नेवाज छुवेछति यों छतिया मे लगाय नैना
गीरहै ॥ कररेवचतसेजकी पाटीगहै रतिमे रतिकी परिपाटीन
है ॥ ३६ ॥ आईजो चालि गोपालघरै ब्रजबाल विसाल मृणा
लसीवाहीं ॥ त्योंपद्माकर सूरतिमे रतिमे रति छैनसकैप
रछाँहीं ॥ सोभितसंभ्रुमनो उरऊपर मोजमनो भवकी मनमा
हीं ॥ लाज विराजि रही अखियांन मे प्रान मे काहू जुवान मे
नाहीं ॥ ३७ ॥ खेलनकों वनकुंजनमे सुनि पुंज सखीन के
संगगईरी ॥ सामुहें भेट भई रिषिनाथ लख्यो मनमोहन
मैनमईरी ॥ छांडेन लाज छपायके अंचल घूंघुट ओट नि
छौंडी भईरी ॥ मीजति हाथ हिएं पछिताति सुपीटि मैदीवि
दईनदईरी ॥ ३८ ॥ झांझरियां झनकैंगी खरी खनकैंगी चुरी
तनकी तनतोरे ॥ दासजू जागती पास अली परिहास क॰
रैगी सवे उठि भोरे ॥ सौंहति हारी हौं भागि नजाहुंगी आदुं
हौं लालतिहारे ही धोरे ॥ केलिकी रैनि परी है घरी कनदूं
करिजाहु दई केनिहोरे ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ अरविंदके भ्रमसुचं
दहूके न मिलिंदनकी उपमासे करै ॥ दुतिदं तनकी दुनिदा॰
मिनिकी दुतिदाडिमहूं की दमासे करे ॥ छकि छैलके संगप

रेरतिरंगछ्वीलीतियानछमासेकरै॥ मसकीनकेजोरज
गासेकरैसिसिकीनकेसोरतमासेकरै॥ ४०॥ बाजैंचुरीबि
छुवाघुघुरूसुखस्वासकढेज्यौंसुगंधफकोरसौं॥ ऊंचेउरो
जलगेथहरैखुलिकेसनेवाजरहेचहुंओरसौं॥ मोलदि
लेतिसोहागभरीचितवैजबलाजभरीहगकोरसौं॥ सौगुनो
स्वादबढावतिसुंदरिवारसमेसिसिकीनकेसोरसौं॥४१
अतिप्रेमकीरासिबढीउरमेसुखनाहीकढैगुनऔगुनो
सो॥ फिरिह्वैगईद्वीठिहसौहीलजोहीसवादबढोचितचौ
गुनोसो॥सुखचुंबनकेनिजचुंबनदेपरिरंभनमेभयोनौ
गुनोसो॥ बहुरूपकीवेलि कीकेलिसमैसिसिकीनमेह्वै
गयोसौगुनोसो॥ ४२॥ श्रीधरभावतेप्यारीप्रवीनकेरंगभ
रेरतिसाजनलागे॥ अंगनअंगअनंगनतैंअपनेअपनेस
बकाजनलागे॥किंकिनीपायलपैजनियांबिछुवाघुघुरू
मिलिगाजनलागे॥ मानोमनोजमहीपतिकेदरबारमरात
बवाजनलागे॥४३॥ कटिकिंकिनीनेकुनमोनगहेचुप
व्हैकेचुरीनसौंमागतीहैं॥ सबदेषतदेवअनोखनए
बिछियानकीजीभैंनलागतीहैं॥सुकिसारिकातूतीकपो
तीपिकीअधरातकलौंअनुरागतीहैं॥ छनएकछमाकरि
देखोइतैघरहांईहहाअबैजागतीहैं॥४४॥ बिपरीतिर
चीरतिदंपतियोंजहांछायरहेबगलाखसके॥कविचंद
दुहूंनकेमोदबढ्योकहिसोकबिंदकथानसके॥सुख
चूमतिभांवतीभांवतेकोअरुदेतिउरोजनकेमसके॥ र
सकेउपजावतपुंजखरेपियलेतपरेरसकेचसके॥ ४५॥
बिपरीतिरचीरतिराजिवनैनसोराधिकाराजतितापलमे
॥रूपकैपलकैंबिथुरीअलकैंअरुहारछुरैमुकतागलमे॥

कविसुंदरझाँईदोऊकुचकीझलकैंडुमिस्यामउरस्थलनें॥
छुतियातरखुंवनदैमकरध्वजमानोतिरैजमुनाजलमैं॥४६॥
सेजसमीपसधीरुचिदंपतिकुंजकुटीव्रजभूपरऱी॥कवि
आलमकेलिरचीविपरीतिमनोजरसैढगदूपररी॥सर
सीरुहआननतैंश्रमबुंदपरैंतेजसोमतिसूपररी॥बरसैं
बरसानेकीगोरीघटानदगाँवकेसाँवरेऊपररी॥४७॥श्री
मनमोहनैराधेमिलीविपरीतिरचीरतिकीपरनाली॥ह
रहेनविहारसमैकविराजपगेरसमैवनमाली॥सोंधेस
नीसुथरीबिथुरीझलकैंअलकैंहरिकेउरआली॥मानों
कुटुंबसमेतसहेतफिरैजमुनाजलपैरतकाली॥४८॥
दमकैदुतिलोलतस्योननकीमुसुकातमैगोलकपोल
निपैं॥छबिकेसरिकीछहरैतननतैंकढिबाहिरसेन
निचोलनिपैं॥विपरीतमैवेनीरमैललनालटैयोंहैलुरैं
दृगलोलनिपैं॥मनोफंदसेहैमखतूलकेडारेअदे
रीमनोजममोलनिपैं॥४९॥केलिकरैविपरीतस
मैहरिमंदभयेघुघुरूसुरभूपर॥वेंदीजरायकीछूटी
ललाटतैंटूटिपरीहरयैंदरिजूपर॥वल्लभनेकवरीकर
छोरविराजतयौंदृगचंचलदूपर॥पूँछिपसारिमनोफ
निराजमुयोमनि‾काजमयंकेकेऊपर॥५०॥कहिकैर
सकीवतियाँलहिकैरतिकेसुखकौमनरंजनसौं॥विपि
रीतिमचायरही वहुचायभरीगहिगींवँसुपंजनसौं॥क
णिदेवकहैइमिवेनीकोछोरलुरैलगिनैनसुअंजनसौं॥
लखुआयअलीअनुरागरईमनुखेलतिनागिनिखंजन
सौं॥५१॥करिकैविपरीतिथकीललनापियकेढिगयोंग
तिभायरही॥रूपकींपलकैंहनुमानकहैरतिकेमनदू

कौंलुभायरही॥ लटएकलुरीमुखतैंकुचपैंसुभयौंस्र
मस्वेदगिरायरही॥मनुव्यालिनिचंदतैंलैकेपियूष
गिरीसकेसीसचढायरही॥५२॥ रतिरंगछकीचषमूंद
तिज्यौंज्यौंत्यौंत्यौंमनमोहनचोपतसे॥कविवेनीहहा
करिहौंसीकेहैंसजगावतजागैंनकोपतसे॥करमंडित
मोतिनकेगजराहगमीडतआँननओपतसे॥अरिकौ
लनकौंपकरेमनोतारेकलानिधिभूपतिसौंपतसे॥५३
भोरभयेतकियासौंलगीतियकुंतलपुंजरहेवगराय
कै॥कंजनसेकरकेतलऊपरगोलकपोलधरेअलसाय
कै॥आननपैविलसैरदकीछविश्रीपतिरूपरह्योअतिछाय
कै॥मानहुंराहुसौंघायलव्हैविधुपौढोहैपंकजकेदल
आयकै॥५४॥ कामकलाकरिकैवनितापलगांपरपौ
ढिरहीअलसायकै॥त्यौंपदुमाकरस्वेदकेवुंदरहेसुकत्त
हलसेतनछायकै॥ विंदुघनेमहँदीकेलसैंकरताकर
पैंरह्योआननआयकै॥सोयोहैचंदमनोअरविंदपैंइं
दवधूनकेवृंदविछायकै॥५५॥ प्रातसमैरतिमानिभ
टूधुनिगंगसिखीकीहियेखटकीहै॥ चायभरीअलसा
यनितंविनिवातनमोहनसौंअटकीहै॥उन्नतकेकरजोर
तवांहवढीछबियौंमुखकेतटकीहै॥कंजसनालकेकुंड
लमेमनोसीखतचंदकलानटकीहै॥ ५६॥ अलसौंहैं
सेअंगलजोहैंसेनैनकछूकखुलेसेमुदेवरहैं॥ परिपी
ककीलीकैंकपोलरहीरिखिनाथअनूपमताघरहैं॥
नखरेखउरोजनपैंफलकैंछलकैंछविस्यांमुकतालर
हैं॥ धरेसीसकलासससिकीजुतगंगमनोहरदोऊमनो
हरहैं॥ ५७॥ सखिभोरउठीविनकंचुकीकामिनिकान्ह

रतेंकरिकेलिघनी ॥ कविब्रह्म भनै छवि दिखनहीं न्हि
जातिनहीं सुखतें बरनी ॥ कुच अग्र नखक्षतनाह दिके
सिरनायनिहारतियाँ सजनी ॥ सासिसेखरके सिरतें मु
मनो निहुरै ससिलेत कला अपनी ॥ ५८ ॥ छूटे लटै
टकैं सिर हौने व्है फैलिरह्यो मुख स्वेद को पानी ॥ सोहै न
एन खदाग उरोजन ओठनकी छवि है सुरझानी ॥ पौढी
पियाके गरे भुजमेलिकै केलि कै प्यारी नेवाज अघानी ॥
नाहकी बाँह दियें तकिया सुखसो वै तिया छतियाँ लपटा
नी ॥ ५९ ॥ साम तें भोर लौं प्यारे जगाई जगे वे कन्यो न कछू
फिरनाधे ॥ सोवत ही मिसु खेलनके कर दोऊ लै फूलकी
मालसों बाँधे सेजही मे अंगिरातिज ह्यातिअनेक समा
से सतावतिराधे ॥ आधे खुले दृग आधे मुदै अखरान्तहै तें
कढै आधे ही आधे ॥ ६० ॥ छतियाँ छतियाँ सों लगाये दोन
दोऊ जी मे दुहूँ के समाने रहें ॥ गई बीति निसा पे निसान भ
ई नये नेहमे दोऊ बिकाने रहें ॥ पटखोलै ने वाजन भोर भये
लखिवौ सकौं दोऊ सकाने रहें ॥ उठिजे बेको दोऊ डराने
रहें लपटाने रहें पटताने रहें ॥ ६१ ॥ बाँह दुहूँ की दुहूँ को
सीसे दुहूँ हियसों हियगाढे गहे हैं ॥ दूसरी बाँह दुहूँ दुहूँ
पर दोऊ नेवाज जू ने हन देहैं ॥ सो है दुहूँ के मिले मुखचंद दु
हूँनके स्वेदके बुंद बढे हैं ॥ खोइकै दोऊ मनोज बिथा अनअं
कसमोइकै सोइ रहे हैं ॥ ६२ ॥ दीपकजोति मलीनी भई म
निभूषन जोतिकी आतुरिया है ॥ दासन कौं लकली बिक
सी निजमेरी गई लगि आँगुरि पाहै ॥ सीरी लगै मुखचं
लतेऊ कपूरकी धूरिनसों गुरिया है ॥ पौढे रहौ पटतान लै
लाल नहिं वो लौं अवै चिरिया चुरिया है ॥ ६३ ॥ ॥ ॥

जौंउविचच्छनवेगिविचारविचित्रितगायचरैवोकरौ ॥
सुखदानसुजानसवैघरकौञ्जनपालनप्यासवुझैवोक
रौ॥ सरदारसदाञ्चितचारुचढौंवढीआँखिनआनरि-
झैवोकरौ॥हितहेरिहमारहमारेहहाइहिवेरमेंवाल-
मऐवोकरौ॥ ६४॥ आजुकहातजिवैगीहौभूषनऐसे
हीअंगकछूअरसीले॥ बोलतिबोलरुखाईलिऐंमति-
रामसनेहसुनेतैंसुसीले॥क्योंनकहौदुखप्रानपिया
अँसुवानरहेभरिनैनलजीले॥कौनतिन्हैंदुखदैजिन
केतुमसेमनभाँवनछैलछबीले॥ ६५॥ रैनजगेतुम
काहूकेसाथलहेरतिचैनभएअतिआरसी॥सवरेओ
वरह्योरमिभौंरसोमेरेंहियेमेगडावतआरसी॥नेकुन
आवतिलाजअजौंहनुमानवहैतियनैननआरसी॥वा
तैंवनावतकाहेलखोकिनहाथकेकंकनकोंकहाआ
रसी॥६६॥ भोरभएँमनभाँवनआएवनीविनडोरनहीं
उरमालहै॥प्रानपियारीरहीहैनिहारिनरूषेईवैनक
हैनरसालहै॥नेकुललाढिगवैठनदीन्होतियाएतनेहीं
मेंकीन्होनिहालहैं॥वाँहँगहीजवहींतवपैभईभौंहैंति
रीछौंभएदृगलालहैं॥६७॥ घूमतनैनकढैमुखवे-
ननझूमतनीदभरेअलसाने॥ अंजनओटमहाउरभा
लमरूकरिसंभुपरोपहिचाने॥गोदगहीतिनहींजिं
नतैंसवरैनविनोदकरेमनमाने॥ पाँयनजायपरोत्ति
नहींकेरहेजिनकेहरिहाथविकाने॥६८॥ भोरहीं-
न्यौतिगईतीतुम्हैंवहगोकुलगावकीग्वालिनीगोरीं
॥ आधिकरातिलौंवेनीप्रवीनकहाढिगराखिकरीव
रजोरी॥आवेहँसीमोहिदेषतलालनभालमेदीन्होम

हावरघोरी॥ एतेवडेब्रजमंडलमेनमिलीकाहूनानं हूंरंचकरोरी॥ ६९॥ देवजूजोचितचाहिएनाहनीने हनिबाहिएदेहहस्योपरै॥ जोसमुझायसुझाइएराह अमारगमेपगधोखेंधस्योपरै॥ नीकेमेफीकेव्हैआं सूभरोकतऊंचेउसाससगरोक्योंभस्योपरै॥ रावरोरू पपियोअखियानभस्योसोभस्योउवस्योसोढस्योपरै ॥७०॥ आएकहूंरतिमानिलख्योतियकेअसुवानकी धारचलीव्है॥ देखिकह्यारघुनाथकह्योतौकहीसकु चैंइमिचातुरताछै॥ रावरेकोमुखचंदचितैएकुनोदि निआखैंअनंदमहाभ्वै॥ हीमेनवंदसकीकरिफूलनैं ऊपरव्हैमकरंदचल्योच्वै॥ ७१॥ भोरहीआएकहूंतसखी रतिकीसिगरीलगीअंगनिसानी॥ प्यारीकेआंसूनसें दुखतैंलखिबूझीयोंप्यारेकह्यौउरआनी॥ लाजतेंउत रआयोनऔरकहीतवयोंरघुनाथसयानी॥ कीन्होर खटोमनमोसोंसुदेखिचल्योअंखियानकीजीभतेंपा नी ॥७२॥ कितकौंढरिगोवहढारअहोजिनमोतनआं खिनढोरतहे॥ अरसानिभरीवहबानिकसोंसरसानि केआनिनिहोरतहे॥ घनआंनदमीतसुजानसुनोतव तौसबभांतिनभोरतहे॥ मनमाहंजोतोरनहींकीह तीविसवासीसनेहक्योंजोरतहे॥ ७३॥ कहियेनक छूरहियेगहिमौनअरीसजनीइनऐसीकरी॥ परतीति देकीन्हीअनीतिमहाबिषदीन्होदिखायमिठासडरी॥ उतकाहूसौंमेलरहोनकछूइतबेलिसीहांसबभांति वरी॥ घनआंनदजानसुजानकीखानिभुराईहना रेइवैरपरी॥७४॥ अबयौंउरआवतहैसजनीइनसौं

सपनेहूँनवोलियेरी ॥ अरुजोनिलजैव्है मिलैंतौ मिलैं
मनतैंगंसगूंजनखोलियेरी ॥ दृगदेखनकीकछूसौंहूं
नहींतिनगोहनभूलिनडोलियेरी ॥ घनआंनदजानि·
महाकपटीचितकोनपरोजनछोलियेरी ॥७५॥ तव
तोदुरिदुरिहीतमुसकायवचायकैऔरकीदिठिहूं·
से ॥ दरसायमनोजकीमूरतिऐसीरचायकैनैननमे
सरसे ॥ अवतौउरमाहिंवसायकेमारतएजूविसासी
कहांधौंवसे ॥ कछूनेहनिवाहनजानतहेतौसनेह·
कीधारमैकाहेधसे ॥ ७६ ॥ साललहैउरमेहंसिवोलिवो
आनुकीयेलखिकेझिझकारियां ॥ नीरनदीकरिजारि·
यांहारियांआखैंहमारीविचारीदुखारियां ॥ कौनसी·
वातनवीनकेकीजियेसोचपरेखोपरेनसुमारियां ॥ ने
कुनलाजतहैमिलतैंअवदेषिकेभाजतहोवलिहारियां
॥७७॥ हमकोंतुमएकअनेकतुम्हेउनहींकेविवेकवना
यवहो ॥ इतआसतिहारीतिहारीउतैविभिचारीकोने
मकवैनिवहो ॥ मनभावेममारखसोईकरोअनुरागल·
ताजिनवोयदहो ॥ घनस्यामसुखीरहोआंनदसोंतुम
नीकेरहोउनहींकेरहो ॥७८॥ हमकोंतुमएकअनेकतु
म्हेउनहींकेविवेकविकानेरहो ॥ इतचाहतिहारीतिहा
रीउतैविभिचारीसनेहमेसानेरहो ॥ हमतोअवऔरकी
औरैभईउनहींकोंप्रियाजिजजानेरहो ॥ अरसानेरहोस
रसानेरहोहरसानेरहोतरसानेरहो ॥ ७९ ॥ तुमरेहूलिये
भजलीथिनमेफिरिकेविनदेखेंतईतौतई ॥ नहिंकाहू
किरवोरिहैयामेकछूदईमोहिव्यथाजोदईतौदई ॥ हतुमा
नइतीविनतीहैसुनोनिठुरैंनिसिमेरीगईतौगई ॥ उ

नहींकौंलगावोललाछतियाँ हमकोंवदनामीभईनाभईं॥८०॥रावरेनेहकोंलाजतजीअरुगेहकेकाजसवैविसराये॥डारदयोगुरुलोगनकोडरगाँवचवायमेंनावधराये॥हेतकियोहमजोतौकहातुमतोमतिरामसवैविसराये॥कोऊकितेकउपायकरौकहूंहोतनहेंआपनेपीउपराये॥८१॥ गुनऔगुनकाकहियेकितैंभपनोतनआपजरानेपरो॥ सवगाँवमेंगैरमेंगोकुलमेंगुरुलोगनदेखिलजानेपरो॥सरदारविचारविनावनकेवनकेविनकाजविकानेपरो॥ विनजानेअजानेसुजानेहमेंकरिप्रीतिमहापछितानेपरो॥८२॥ सीखनमानीसयानीसखीनकीयौंपदुमाकरकीअननैकी॥प्रीतिकरीतुमतेंवजिकेसुविसारिकरीगुनप्रीतिघनेकी॥रावरीरीतिलखीइमिसाँवरेहोतिहैसंपतिज्यौंसपनेकी॥साँचहूताकोनहोतभलोजोनमानतहैकहीचारिजनेकी॥८३॥ पापीपियासेसदाँहीरहैदृगपागेनमेंकहूं पानिपपीको॥घेरिरहेनभएचहुँघाँघरसोंईकरैंउपहासकितीको॥नाहकहीं वदनामभईनभयोपरमेसमनोरथजीको॥जौकहूअंकमेलागतीरीतोकलंकहूलागिवोलागतोनीको॥८४॥ रोजनआइयेजोमनमोहनतौयहनेकमतोसुनिलीजे॥मेनहमारेतिहारेवसैंसोकहोविनदेखेंसुकैसेकेजीजै॥ठाकुरलालपियारेसुनोविनतीइतनीपैंअहोचितदीजे॥दूसरेतीसरेंपाँचयेंसातयेंआठयेंतोभलाआयवोकीजे॥८५॥ छलछोरिकैदौरिमिलेतवतौअवओरनहौंचितलावनों है॥रसलोभअधीनभयेअवतौकछूलालचदैविरमा॰

वनोहै॥ कविठाकुरबाँहगहीसोगहीपुनिमुहतलौं
पहुंचावनोहै॥यहनेहकीनावचलाईसोतौपरखेय
कैपारलगावनोहै॥८६॥रसिकैरसरीतकीगैलनमा
हिंअनीतकोपंथनगाहियेजू॥अबतोछलछंदकीवा
नितजोहँसिबोलिकेचित्तउमाहियेजू॥रसियाकरजो
रिकरौंबिनतीकछूऔरहमैनहिंचाहियेजू॥यहप्रे
मकीआरवैलगीसोलगीपैकुलीनज्यौंओरनिबाहि
येजू॥८७॥ हमचोरीतिहारीकरीनकछूचितचोरकि
तैकतरानलगे॥यहनीतिनहींहैअनीतिमहाकरिप्र
तिकहाइतरानलगे॥मुखरावरोप्यारेबिलोकेबिना
अंगअंगसबैपतरानलगे॥रिसकेहमसौंसतरा न
लगेहंसिऔरनसौंबतरानलगे॥८८॥प्रीतिकरीतु
मतैंहमनेनिसिवासररूपतिहारोसराहत॥बूझिप
रीबिपरीतकछूहितुऔरकियोइतरीतिनिबाहत॥
एहोहरीइनबातनतैंतुमकाहेकौंमेरोहियोनितदाह
त॥ पन्नगकीमनिकीनीतुम्हैतुमपन्नगकीकेचुरी
कियोचाहत॥८९॥ जिनकेहितत्यागिकैलोककीलाज
हिसंगहीसंगमैफेरोकियो॥हरिचंदजूत्यौंमगआव
तजातमैसाथघरीघरीघेरोकियो॥जिनकेहितबात
सहीजगकीतिननेकुकह्योनहिंमेरोकियो॥हमैव्या
कुलछोडिकैहायसखीकोऊऔरकेजायबसेरोकि
यो॥९०॥तबतोबहुभाँतिभरोसोदियोअब हीहमला
यमिलावतीहैं॥हरिचंदभरोसेरहीउनकेसखियांजे
हमारीकहावतीहैं॥अबतेऊदगादेजुदाव्हैगईउल
टोमिलिकैसमुझावतीहैं॥ पहिलैंतौलगायकैआग

सवैजलकौंअवआपुही धावतौहैं॥९१॥ जानिसु जान
मैप्रीतिकरीसहिकैजगकीवहुभाँतिहँसाई॥ त्योंहरिचंद
जूजोजोकह्योसोकर्योचुपव्हैकरिकोटिउपाई॥ सोऊन
हींनिवहीउनसोंउनतोरतवारकछूनालगाई॥ सांचीभ
ईकहनावतिवाअरीउंचीदुकानकीफीकीमिठाई॥९२॥
जानतिहीसवमोहनकेगुनतौपुनिप्रेमकहालगिकीनो॥
त्यौंहरिचंदजूत्यागिसवैचितमोहनकेरसरूपमेंभीनो॥
तोरिदई उनप्रीतिउतैअपवाददईजगकोहमलीनो॥ हाय
सखीइनहाथनसौंअपनेपगआपकुठारमेंदीनो॥९३॥
छाँडिपतिव्रतप्रीतिकरीनिवहीनहींतोनसुनीहमलोक
मौनभयेहरनोहींपर्योसहनोहींपर्योजोकह्योकछुको
ऊ॥ सांचीभईकहनावतिवाकविठाकुरकानसुनीहुती
जोऊ॥ मायामिलीनहिंराममिलेदुविधामेंगयेसजनी
सुनोदोऊ॥९४॥ जानतीअपनेनहींहोतपरायेपिया
यहवेदनगाई॥ सोपरहेलिकैप्रीतिकरीगुरुलोगनमेंकु
लकानिगँवाई॥ ठाकुरतेनभयेअपनेअवकौनकोंदोसल
गाइयेमाई॥ दूधकीमाखीउजागरवीरसोहाथमेंआँ
खिनदेखतखाई॥९५॥ जाकेलियेंगृहकाजतज्योनसि
खीसखियानकीसीखसिखाई॥ वैरकियोसिगरेव्रजगाँ
वसोंजाकेलियेंकुलकानिगँवाई॥ जाकेलियेंघरवाहि
रहूँमतिरामरहेहँसिलोगचवाई॥ ताहरिसोंहितएक
हीवारगँवारिमैतोरतवारनालाई॥९६॥ एघरदांईन
गाँइनकेढिगसाँवरेरावरेकेगुनगाए॥ जानेकछूनस
यानपएकरिहैंसँगमैविसवासवढाए॥ दोसदैकौनसौं
रोसकरौंअपसोसहियेकेमिटैंनमिटाए॥ मैंनिजहाथ

नहीं ब्रजनाथ दियो तुम्हे भूलिकै हाथ पराए ॥९७॥ कासौं
कहा मै कहौं दुख यौं मुख सूखत हौ है पियूष पियेतें ॥
त्यौं पदमाकर या उपहासकी त्रास मिटै न उसास लियेतें
॥ क्यां पै व्यथा यह जानि परी मनमोहन मीत सौं मान किये
तैं ॥ भूलिहू चूक परै जो कछू तें हि चूक की हूक ना जाति
हियेतें ॥९८॥ ॥ अनुरागसों खेलिके फागुन्यक्यों र
ह्यो कंत इकंत कहूं टरिकै ॥ पहुंचौ दोऊ सौतें समीप त
हां दुरि अंजन आंगुरी मे करिकै ॥ यह पेच कियो तह
छैल छबीले कछू छलरीति हिए धरिकै ॥ मुह एक के
दीन्ही गुलाल मुठी लई एककी तौलौं भुजा भरिकै ॥९९॥
सगनौल वधू लिए दोइ अटापर बैठे विलोकत जोन्हभरी
॥ रघुनाथ गुलाव को धोखो बनाय मगाय कै वारुनी पास
धरी ॥ पियो आपु औ केहू ठप्यायो उन्हे सरसार कै एकहि
नीदभरी ॥ तिय एक सौं काम कलार चिकैसब रातिलला
रसलूटिकरी ॥१००॥ ॥ जाय नहीं कुल गोकुल मे
अरु दूनी दुहूं दिसि दीपति जागे ॥ त्यौं पदमाकर जो ई सु
नेज हंसो तह आनद मे अनुरागे ॥ एदई ऐसो कछू करुब्यो
त जो देखे अदेखिन के दृग दागे ॥ जामे निसंक व्है मोह
नकों भरियै निज अंक कलंक न लागे ॥१०१॥ देख्यो च
हूंनि सिबासर हूं पै न देखि बेकी कछू जानति घातैं ॥ भैधौं
कहां तें गई औ हि और गई परि मेरी धौं दीठिकहां तें ॥ क्या
हि दिया चहै है तातक हूं मोहि मै सखि तो हि सिखावति
यातैं ॥ तूं गुरु लोगन सौं न करै किन कान्ह सौं मेरई क्या
ह की बातैं ॥१०२॥ ॥ गुंजहरा रखि नाथ गरैं कढि
कुंजन तैं छबिपुंजन छाइगो ॥ मंद हंसी है वसीकरसी

सरसीरुहलोचनलोलनचाइगो ॥ सुन्दरीसजीजिरदंप
गरीलियेंफूलछरीइतआँचकआइगो ॥ त्यौंनिरखेनिज
रूहगकोपियरेपटकोलिपरेमैंसमाइगो ॥ १०३ ॥ गोलवे
छैलकहैजितहींतहींवंसीवजावतहीचहैटकहै ॥ गोहनों
नेहभरीकहैकामिनीदामिनीसींलुटिजानविवेकहै ॥ दे
खतीदेखनिमेखनलावतीलेखतीयाजगठाकुरए
कहै ॥ होतिनिहालमहासोवडीअँखियानसोंनाहि
निहारतनेकहै ॥ १०४ ॥ मोरपखानतिरामकिरीटम
नोहरमूरतिसोंमनलैगो ॥ कुंडलडोलनिगोलकपो
लनिबोलनिनेहकेवीजनिवैगो ॥ लोलविलोचनकोर
निसोंमुसकायइतैअरुरायचितैगो ॥ एकघरीघन
सेतनसोंअँखियानघनोघनसारसोदैगो ॥ १०५ ॥ को
हैअरीवहगैलचलोगयोवेनुवजावतसाँवरोसोहै ॥
सोहैसदाअंगअंगविभूषनश्रीरसुधासवकोमनमोहै
॥ मोहिवतावहियेंहितकेवलिगाँवओठाँयजहाँअव
जोहै ॥ जोहैसोहैसकुनुभोरीभटूजनिमोंकिकरोरवकोजा
नियेकोहै ॥ १०६ ॥ अंवरपीतकसेंकटिसुंदरमेनहूँजा
हिविलोकिलजोहै ॥ साँवरीसीरहीसोहनीमूरतिहे
रतकोजुवतीनहीमोहै ॥ मोसोंवतावसखीहितके
अरीतूँहनुमानजोराखतिछोहै ॥ नेकुचितैइतैतैक
रिमोहिगमोरीइतैसोकोजानियेकोहै ॥ १०७ ॥ चंदनखे
खौरिलिलाटविराजतिमोरपखासिरऊपरसोहै ॥ कुं
डललोलकपोललसैमुरलीकीवजावनिमैनमोहै ॥
मोहिविलोकिविलोकिहँसैचितचोरवडेवडेनैननजो
है ॥ पूछतिगोपवधूभगवंतयासोंवरोसोजमुनातट

कोहै॥१०८॥साँवरोरंगअनंगसोअंगहैगायँनकेसंग
जातउग्रानै॥योंगुनदेवजूहेर्योअचानककावकदौं॰
सुखदैगयोप्रानै॥ज्योंनसुहातकछूनिनदेखँरिकासौं
कहौंकोउजीकीनजानै॥आयगोकान्हसमायगोनैन
निनायगोचेटकगायगोतानै॥१०९॥ एकवहैमुखदे॰
खोईभावतवादिसवैमिलिमाडतीराहो॥कीजेकहाव
सहैन कछूसिगरीमिलिडाहनआईतौडाहो॥मोहिन
काजकछूकुलकानिसौंजाहिनिर्वाहनीहैसोनिवाहो
॥मरैतौमाईवहैउरआनिरह्योगडिगैयनकोचरवा॰
हो॥११०॥क्योंहूनआँखिनसौंनिरसंकहूमोहनकोत
नपानिपपीजै॥नेकुनिहारेंकलंकलगेयहगाँववसें॰
कहोकैसेकैजीजै॥होतरहैमनयोंमतिरामकहूँवन
जायवडोतपकीजै॥ह्वैवनमालहियेंलगिएअरुह्वै
मुरलीअधरारसलीजै॥१११॥देखिहमैसवआपुस
मेंजोकछूमनआवतसोकहतीहैं॥एघरहांईलोगौं
ईसवैनिसिद्योसनेवाजहमैदहतीहैं॥वातैंचवावभ
रीसुनिकैरिसिलागतिपैचुपव्हैरहतीहैं॥प्रानपियारे
तिहारेलिएसिगरेव्रजकोहँसिवोसहतीहैं॥११२॥॰
साडरहीघरहीमेरहीकहिदेवदुखोनहींदूतनकोदु॰
ख॥काहूकीवातकहीनसुनीमनमारिविसारिदियो
सिगरोसुख॥भीरमेभूलेभएसखिमैजवतैंव्रजराज
कीओरकियोरुख॥मोहिभटूतवतैंनिसिद्योसचितो
तहींजातचवाइनकोमुख॥११३॥गोकुलकेकुल॰
कौतजिकैभजिकैवनवीथिनमेवढिजैये॥त्यौंपदमा
करकुंजकछारविहारपहारनमेचढिजैये॥हैंनदनं

दगोविंदजहाँतहाँनंदकेमंदिरमैंमढिजैये ॥ यौंनित चाहतएरीभटूमनमोहनैलैकैकदूँकढ़िजैये ॥ ११४ धारतहीवन्योयेहीमतोगुरुलोगनकोडरडारतही वन्यो ॥ हारतहीवन्योहेरिहियोपदुमाकरप्रेमपसार तहीवन्यो ॥ वारतहीवन्योकाजसबैवरुयौंमुखचंद निहारतहीवन्यो ॥ टारतहीवन्योघूँघुटकोपटनंदकुमा रनिहारतहीवन्यो ॥ ११५ ॥ कुललाजजँजीरनसोंजक र्योजुलमीतऊधमठानतहै ॥ तनमैंनमहावतएडकै ऑंकुसताहूकीआनिनआनतहै ॥ कुकिगूसैगुकैउग कैनरुकैपरमैसजूजोजगजानतहै ॥ पियरावरोरूप विलोकैंविनामनमैरोमतंगनमानतहै ॥ ११६ ॥ सब संकतजीगुरुलोगनकीकुलकानिकीआनिनआन तीहैं ॥ करिकोटिउपावबुझावेकोऊअपनीएकटेक हीठानतीहैं ॥ परमैसजूऔरनजानैंकछूएकनेम कोपंथपिछानतीहैं ॥ पियप्यारेतिहारेनिहारेवि नाअँखियाँदुखियाँनहींमानतीहैं ॥ ११७ ॥ नलिनीर विमध्यकोआडकरैजुगफूटैंजुराफाउडावहिको ॥ म नचुंबककीचकोलोहोभयोतहाँदूसरोरूपदिखावव हिको ॥ कविसंभुसनेहकीरीतियहीविछुरैंजलमीन जियावहिको ॥ गुनवारेगोपालकीआँखिनतैंभरू मींअँखियाँसरुझावहिको ॥ ११८ ॥ ठाडीकहाइचि तीसुचितीचलुदेखुरीकोनसीगोहनगो ॥ वहवेनुव जायरिझायहमैरीसुधेनुकदूँबनदोहनगो ॥ कविठा कुरऐसिहीजानिपरीअरीगुंजकेहारनपोहनगो ॥ के ऊदेरियोटेरियोफेरियोरीवाअहीरकोमोहनमोहनगो

॥११९॥ ग्वारिगईए
केदधिदानको॥वासोंभटूभरिभेटीभुजापुनिनातोनि॰
कास्योकछूपहिचानको॥आईनिछावरिकैमनमानि
कगोरसदैरसलैअधरानको॥वाहीदिनातेंहियेमेंग
ड्योवदहीठवडोवडरीअँखियानको॥१२०॥सारूक
ह्योदधिवेचनकौंसुदईदुखदाईकहाँतैंधौंहाँकरी॥
मोहिमिलेनृपसंभुगोपालतमालतरैंवहगैलजोसौंक
री॥मोतनताकिवडीअँखियाँनतैंकां
नघाँकरी॥काँकरीओडिलईकरतेपैकरेजेकहाँ॰
ईगडिकाँकरी॥१२१॥गायकेतानबजायकेवाँसुरीमो॰
हिकेमोहनीमोसिरदीन्ही॥ऐंठिकैपागउमेठिकैपेचनि
टेढीसीचालचलैरसभीनी॥रीझरिझायकेजातभयेम
करंदकहोसुकहागतिलीन्ही॥जौंवरीकापरना
झनसाँवरीमूरतिवावरीकीन्ही॥१२२॥
केबहुतेरोलग्योनहिंतोहिकहूँयहघावरी॥घावरीघा
यलज्ञानतहैंजिनकेनिसिवासरप्रेमसुभावरी॥भावरीभो
भौनननीदहियेंअरुझीवहमूरतिसाँवरी॥साँवरेरंग
मेहौंतोरंगीनचढेअबदूसरोरंगसोवावरी॥१२३॥वै
रवढेतेंवढेअतिहीअवकोकाहिकैकढिकौनसौंजूझे॥
जैसीभईहरिहेरतहीसुतौकोहियकीजियकीगतिवूझै
॥वाहिरहूँघरहूँमेसखीअँखियानव॰
॥साँवरोरंगरह्योउरमैंसिगरोजगसाँवरोसाँवरो
॥१२४॥अवतोजोभईसोभईसोभईहमवाहीमे
लीवोकरैं॥इनकाननकीयहवानिअरीवतरानिसुधा॰
मधुपीवोकरैं॥कविरामकहेअभिरामस्वरूपचितेचि

तवाहीमेंदीनोकरैं॥सखिवेंहीवारंगीनकेरंगरंगीयेच
वाइनैचौचंदकीनोकरैं॥१२५॥ व्रजवीथिनमेंफिरिवे
केलियेंगुरुलोगनहूंगिलिकीन्हीरवइं॥परमान्योंन
हींउनहूंकोकह्योजियऐसोकछूमतिआनिठइं॥तुम
हूंअवकासमुझावतीहौविधिनेहनुमानलिखीसोभइं
॥अवतौमनमोहनहाथसखीकुलकानिदईवदनामीलई॥१२६॥ननदीऔजेठानीनहींहंसतींतोहितूनि
नहूंकोंवखानतीमें॥घरहाँईचवावनजोकरतीं
तौभलोऔबुरोपहिचानतीमें॥हनुमानपरोसिनहूं
हितकीकहतींतौअठाननठानतीमें॥यहसींख
तिहारीसुनोसजनीरहतीकुलकानितोमानतीमें॥
॥१२७॥अवकासमुझावतीकोसमुझैवदनामीकेवीजनवोचुकीरी॥तवतौदुतनोनविचारकियोच
हजालपरैंकहकोचुकीरी॥कहिठाकुरयारसरीतिरं
गेंसवभांतिपतिव्रतखोचुकीरी॥अरीनेकीवदीजो
वदीहुतीभालमेंहोनीहुतीसुतोहोचुकीरी॥१२८॥
घरपासपरोसिनिधेरकरोअरुनावधरोव्रजगांवरीरी
॥जवढोलदयोवदनामभईतवकौनकीलाजलजोंव
रीरी॥कविठाकुरप्रेमकेफंदपरीरजरवोरिफिरौंभई
वावरीरी॥अवहोनदैवीरहंसीसोहंसीहरिंदवसीमू
रतिसांवरीरी॥१२९॥जवतेंदरसेमनमोहनजूतवतें
अंखियांयेलगीसोलगी॥कुलकानिगईसखिवाही
घरीजवप्रेमकेफंदपरीसोपरी॥कहिठाकुरनेहकेने
जनकीउरमेंअनीआनिखगीसोखगी॥तुमगांवरे
नावरेकोऊधरोहमसांवरेरंगरंगीसोरंगी॥१३०॥

तुमचाहोसोकोऊकहौहमकौंनदवारेकेसंगठईसो
ठई॥ तुमहीकुलबीनैप्रवीनैसवैहमहींकुलछांडिग९
ईसोगई॥ रसखानियाप्रीतिकीरीतिनईसुकलंककी
मोटैंलईसोलई॥ दुहिंगांवकेवासीहैंसोसोहैंसोहम
स्यामकीदासीभईसोभई॥१३१॥ इननैननिमैवहसां
वरीमूरतिदेखतिआनिअरीसोअरी॥अवतौहैनिवा९
हिवोयाकोभलैंहरिचंदजूप्रीतकरीसोकरी॥उनखंज
नकेमदगंजनसौंअंखियांयेहमारीलरीसोलरी॥अव
लोगचवावकरोतौकरोहमप्रेमकेफंदपरीसोपरी॥९
॥१३२॥ सांकरीगैलवाखोरिहमैकिनखोरिलगायखि
झैवोकरोकोऊ॥धीरजदेवधरोसोधरोअधराघरदंत
पिसैवोकरोकोऊ॥हायनहींकरिहैंकवहूंजियघायमै
लोनघिसैवोकरोकोऊ॥रूपहमैदरसैवोकरोअरसैवो
करोकीरिसैवोकरोकोऊ॥१३३॥ हमएककुराहचलीं
तौचलीहटकोइन्हैयेनाकुराहचलैं॥यहतौवलिआ
पनोसूझनोहैप्रनपालियेसोईजोपालैंपलैं॥कहिठाकु
रप्रीतिकरीहैगोपालसोंटेरकहौंसुनोऊंचेगलैं॥हमै
नीकीलगीसोकरीहमनैतुम्हैनीकीलगोनालगोतौ
भलैं॥१३४॥ नामधरोजोचहोसोकहोकछूवूझौहमै
सुतौकेचुकीहैं॥ लखिलाजतमैनजिन्हैतिन्हसौंवल
देवसनेहतौवैचुकीहैं॥ अवकामनहींससुझावन
कोमनभावेंनकौमनदैचुकीहैं॥ अपनेमगआपच९
लैंहमतौनिजजीवनकोफललैचुकीहैं॥१३५॥ चहुं
ओरसौंचौचंदकीवोकरैंनचवाइनकोडरमानतीहैं॥
अपनेअरुऔरनकेउरकीभलीभांतिनसौंपहिंचान९

तीहैं॥गतिभालकीसेवकजौभुवनौमवर्ग्रानिकीगं तिपिछाँनतीहैं॥तुमजाननीहोतौवचावैचन्नहम जाननतीहैंकीअजाननतीहैं॥१३६॥अपवादकोउ किनकीवाकरोहमनेकुनहींसकमाननींदं॥वहि छैलछवीलेकिचाहनतेद्विजप्रेमकीवारुनीछ्यानतीं हैं॥वेदकूंकिकैपावैंधरैंसिगरीअपनेकौंसदाजेव खानतीहैं॥नहिकाजभलीऔवुरीतेंकछुहमजान तीहैंकीअजाननतीहैं॥१३७॥जिहितैतजिदीनकन्हि दीकोकूलऔभूलहूंआईनजायकेरी॥कुलकानिकी आनिहूंएहीहुतीसोभईदुखदानिवजायकेरी॥अव कोनसोसोचरह्योहेसुमेरहरीभीनिसंकवनायकेरी ॥जोकलंकलग्योमोहिधायकेरीतोसुअंकहूंलागि हौंधायकेरी॥१३८॥गुरुलोगकरैंगेचवावृषनोनि नकौंस्नकिकेनहिंभाखिहौंमे॥करिहैंजोपदंडम चंडतुपैसुमरेसहरीनहिमाखिहौंमे॥वदनामजोगों वकरैंसिगरीतऊरूपसुधारसचाखिहौंमे॥व्रजराज जोआजुमिलैंसजनीइहिलाजसौंकाजनराखिहौंमे॥ ॥१३९॥लहिजीवनमूरिकोलाहुअलीवेभलीजुन चारिलौंजीवोकरैं॥द्विजदेवजूत्योंहरषायहियेंवर वैनसुधामधुपीवोकरैं॥कछुघूंघुटखोलिचितैहरि ओरनचौथिससीदुतिलीवोकरैं॥हमतौव्रजकोवसि वोईतजेअवचावचवाइनैकीवोकरैं॥१४०॥जानिकै रूपलोभायकैनैननिवेचिकरीअधवीचनौनौडी॥ फे लिगईघरवाहिरवातसुनीकैनईइनकाजकनौडी॥ क्योंकरियाहलहौंघनऔनदचाहनदीतटकौअलि

औंड़ी ॥ हायदईनविसासी सुनेकछू हैजगवाजतनेह कीडौंडी ॥ १४१ ॥ अवतौवदनामभई ब्रजमैघरहाँई चवावकरौलौकरौ ॥ अपकीरतिहोउभलेहरिचंद जूसासुजेठानीलरौतौलरौ ॥ नितदेखनोहैवहरूप मनोहरलाजपैंगाजपरौतौपरौ ॥ मोहिआपनेकामसौं कामअलीकुलकेकुलनामधरौतौधरौ ॥ १४२ ॥ नाम धरौसिगरोव्रजतौअवकौनसीवातकोसोचरहाहै ॥ त्यौंहरिचंदजूऔरहूलोगनमान्योवुरोअरी सोऊ सहाहै ॥ होनीहुतीसुतौहोयचुकीइनवातनतैंअव लाभकहाहै ॥ लागेकलंकहूअंकलगैंनहींतौसखि भूलहमारीमहाहै ॥ १४३ ॥ वहसुंदररूपविलोकिस खीमनहाथतैंमेरेभग्योसोभग्यो ॥ चितमाधुरीमू रतिदेखतहीहरिचंदजूजायपग्योसोपग्यो ॥ मोहि औरनसौंकछूकामनहींअवतौजोकलंकलग्योसो लग्यो ॥ रंगदूसरोऔरचढेगोनहींअलिसांवरोरंग रग्योसोरग्यो ॥ १४४ ॥ हमहूंसबजानतीलोककीचा लहिंक्योंइतनोवतरावतीहो ॥ हितजामेहमारोवनै सोकरौसखियाँतुममेरीकहावतीहो ॥ हरिचंदजूया मैंनलाभकछूहमैवातनक्योंवहरावतीहो ॥ सजनी मनहाथनहींहमरेतुमकौनकौंकासमुझावतीहो ॥ ॥ १४५ ॥ ॥ चोरसोमोहिपर्योपहिचानिलग्योकछू दूरितैंसेवकसोहै ॥ आनिअचानकवांहगहीमोहिजा निअकेलीमहावनमाहै ॥ आवततोहिइतैलखिकैत नदीठहियेमैकछूसकुचोहै ॥ गैंदहमारेहरेकहिकैअं चरागहिभाज्योनजानियेकोहै ॥ १४६ ॥ अलिहौंतौग॰

ईजमुनाजलकौंसुकहाकहोवीरविपत्तिपरी ॥ घन्न
रायकेकारीघटाउनईइतनेहींमेगागरिसीसधरी ॥
रपट्योपगघाटचढोनगयोकविमंडनव्हैकेविहाल
गिरी ॥ चिरजीवहिनंदकोवारोअरीगहिवांहगरीबनै
ठाढीकरी ॥ १४७ ॥ ज्यौंज्यौंचवावचलैचहुंओरधरैं
चितचावयेत्यौंहींत्यौं चोरवे ॥ कोऊसिखावनहारन
हींबिनलाजभयेविगरैलअनोरवे ॥ गोकुलगांवकौंग
तीअनीतिकहांतैंदईधौंदईअनजोरवे ॥ देखतीहौंनो
हिमाझगलीमेगहीद्दनआनिधौंकौनकेधोरवे ॥ १४८
वेनीजूयाब्रजमैवसिकैहँसिकैनचलीनभैसीसउठायो
॥ काल्हिकलिंदीकेतीरगयोगिरिटीकोलिलारकोर्नी
कोनपायो ॥ हेरिलियोहरिटेरिकह्योयहकौनकोहै
अजूमैपर्योपायो ॥ मोहिजंजालपर्योरीमहानदस
लसौंवोलतहींवनिआयो ॥ १४९ ॥ लोगलोगाइनहो
रीलगाईमिलामिलीचारनमेटतहीवन्यो ॥ देवजूचं
दनचूरकपूरलिलारनलैलैलपेटतहीवन्यो ॥ वेति
हिंऔसरआयगयेसमुहायहियोनसमेटतहीवन्यो
॥ कीह्नी अनाकनीमैमुखमोरिपैजोरिभुजाभटूभेटत
हीवन्यो ॥ १५० ॥ आयोसुहायोसुमोमनभायोकहो
सुखसासुननंदतैंभारो ॥ मोतैंजुदोकपहूंनरहोक
विदूलहमोसनप्रानअधारो ॥ कोककलानकेसौंरव
तहूंयहकिंकिनीपायलकोझनकारो ॥ सोजासख्यौ
भरमैमतिरीयहखोजाहमारेहीमायकेपारो ॥ १५१
तूंमुसुकातिकहाकनखैयनभैयनसौं इनकौंलसु
झाऊं ॥ हारहरोहरिमोजमुनातटलैगुरुलोगनना

ऊकढाऊं॥सासुसुनैननदीदुखदारुनतौघरभीतर
पैठनपाऊं॥ पानिधरैनपयोधरपैसखीईसकेसी
सकीसौंहखवाऊं॥१५२॥जाकेचरित्रऔचातुरई९
चितचेतिचितैचतुरानन्हारो॥त्यौंपदुमाकरस्वांग
सबेदसहूंअवतारकोल्यावनहारो॥देखलीहौन९
खतैसिखलौंवनिवैठोवहैमनोनंदकोवारो॥मोहि
सकेलिकेकेलिकरैसखीयावदरूपियाकंतहमारो
॥१५३॥ होतोकहाजुपैभाखतीएहमहूंतुमहूंको
कहूंअनुरागत॥जानतीएऊइहांमिलतेछतियांछ
तियानसौंकीन्हेगतागत॥त्यौंपदमाकरव्हेतिरछे
कढिजाउल्लाकरजोरियामागत॥खोरिनानंदकि
शोरतुम्हेयहखोरितोसौंकरीखोरिकौंलागत॥१५४
जोरजगीजमुनाजलधारमेधायधसीजलकेलिकीमा
ती॥त्यौंपदुमाकरपैगन्चलैउछलैजवतुंगतरंगवि
घाती॥टूटेहराछराछूटसवेसरवोरभईअंगियारंग
राती॥कोकहतोयहमेरीदसागहतोनगोविंदतौमै
वहिजाती॥१५५॥ आजुअकेलीउतावलीहौपहुं
चीतटलौंतुमआईकरारमे॥ वालसखीनकेहाहा
कियेंमनकेहूंदियोजलकेलिविहारमे॥सीतलगात
भयेसिगरेउछरीतोमरूकेकितेकहूवारमे॥ कान्ह
जौधायधरैनअलीतोवहीतीभलीजमुनाजलधार
मे॥१५६॥ गांवकेलोगधरैसवनावचवावचहूंदि
सितैउनयोहै॥ भीतरसंभुसरौंरहियेजमुनाकोन
हायवोछूटिगयोहै॥ देखतहींलगिजातकलंक
निसंकव्हैकाहूनअंकलयोहै॥गोकुलमेअरीनंदल

लाअवलानकौंचौथिकोचंदभयोहै ॥१५७॥ ॐ ॥
जवलौंघरकोधनीआवैघरैंतवलौंताकहौंन्हिनदो ने
करो॥ पद्माकरएवछराअपनेवछरानकेसंगचरैंके
करो॥अरुऔरनकेघरतैंहमसौंतुमदूनीदुनावनी
लैवोकरो॥ नितसाँझसवेरेहमारीहहाहरिगाँअंभ
लादूहिजैवोकरो॥१५८॥ पियपागेपरोसिनिकेर
समेवसमैनकहूंवसमेरेरहैं॥ पद्माकरपाहुंनीमी
ननदीननदीतजेएअवसेरेरहैं॥ दुखऔरकुकासौं
कहौंकोसुनैव्रजकीवनिताहगफेरेरहैं॥ नसखी
घरसाँझसवेरेरहैंघनस्यामघरीघरीघेरेरहैं ॥१५९
यहलातचलावनीहायदेयाहरएकपैनाहिंचलावनीहै॥ सुनीतेरीतरीफमिलाइवेकीहितनेरेसोंमा
लपुहावनीहै॥ कविग्वालचरावोलैआवोइहांपि
रिवौंधनीपोरिसोहाँवनीहै॥ मनभाँवनीदेहौंदुहा
वनीपेयहगायतुहींपेदुहावनीहै॥१६०॥ सासुरेजा
यकछूदिनतैंरह्योछाडिदियोनिजमंदिरमैंयाँ॥ दा
ऊददाऊदहैंजरसौंपरसौंलईकातिकीकीमगमैंयाँ
॥ याहीमसूसमरौंकाकरौंरिखिनाथपरौंमैंपरोसि
निपैंयाँ॥कोऊकहूंनमिलैमगमैहौंसचारहींजाति
दुहावनगैयाँ॥१६१॥ ॐ॥ ऐसेवनेरघुनाथकहै
हरिकामकलानिधिकेमदगारे॥ झाँकिझरोखेसौंआ
वतदेखिखडीभईआयकैआपनेद्वारे॥ रीझिसरूप
सौंभीजीसनेहयौंवोलीहरैंरसआखरभारे॥ठाढहो
तौसौंकहौंगीकछूअरेग्वालवडीवडीआँखिनवारे॥
१६२॥ ॐ॥ कुरोगानतीजोसिखदेतभटूदुखपाय

तीबातसुनाइबेमे॥कहीजायगीदेखिकुरीतकछूसमुझो
गीनजोसमुझाइबेमे॥कहालेउगीहाथपरायेबिकै
कहिठाकुरलोगहँसाइबेमे॥हमेकोगनेकासौपरो
जनहैबुनिबेमेनबीनबजाइबेमे॥१६३॥कहिआ
ईइहाकीकुरीतिलखैसोकहासुखबातचलाइबे
मे॥ तुमपाँचकीसातमिलायकहोइतलेहोकहा
खिसियाइबेमे॥ कहिठाकुरकोनसोंकाकहियेदुखपा
वतीहोसमुझाइबेमे॥ परोकोनपरोजनहैजूहमे
बुनिबेमेनबीनबजाइबेमे॥१६४॥ उतैआहटपाय
केसाँवरेकोइतेदेखिबेमेमनथ्यारोपगो॥मिसकै
सखियानतेंव्हैकेझुदीझुकिझाँकीझरोखेंअनंदख
गो॥ यहमेहूनिहारतहीतुलसीसमुझायबेमेकत
मोसौंजगो॥ परोकौनपरोजनहैतुमसौंकहियेक
छूतोकोहँमारीलगो॥१६५॥ ब्रजमंडलीदेखिसबै
पदुमाकरव्हैरहीयौंचुपचापरीहै॥मनमोहनकीब
हियांमेछुटीउलटीयहबेनीदिखापरीहै॥ मकराकृ
तकुंडलकीझलकैंइतहूँभुजमूलमेछापरीहै॥इन
कीउनतेंजोलगीअँखियाँकहियेकछूतोहमेकापरीहै
॥१६६॥बीतिबेहीसुतोबीतिचुकीअबआँजतीहोकै
हिंकाजलुकंजन॥त्यौंपदमाकरहालकहैंमतलालक
रोहगब्यालकेखंजन॥रेखितरंचुकीकंचुकीकेबिचहोतछि
पायेंकहाकुचकंजन॥ तोहिकलंकलगाइबेकोंल
ग्योकाँन्हहीकेअधरानमेअंजन॥१६७॥ नैनबडेब
डेनाँकीचितौनिचलाकीपढीमनोभूपरखीहै॥जाके
बिलोकतबेनीप्रबीनकहेदुतिमेनकाहूकीनखीहै॥

आईकहाँतैंहेराधेकह्योअबलोंबृजमंडलमैंननमों
॥ भाँवरीसोमगदेतफिरैसंगमोंबरीसोयहकोनस
खीहै॥१६८॥ तिनसोंकहियेयहबातवलायल्यौंगोप
नकीनहिंजानतजो॥ हमसोंइतनोछलछंदसकहाइन
साथिनीहैंइहाँवाहरीको॥ रघुनाथजोहंदसासोंसुनि
येकछूहैनछपीजगजानतसो॥ जबसोंमिलीमादरतूंउ
नसोंतबसोंघटिव्याहीकोआदरगो॥ १६९॥ अंजनदैदृ
गखंजनसेकरिकेसरिआननसोंमसतीहो॥ पानचों
आनिअहाररह्योअरुहारकेभारचलैफसतीहो॥ देख
तीहौंरघुनाथकछूदिनतैंइहिंछैलतामेंलसतीहो॥ लों
चीकहोतुम्हैमेरियैसोंतुमकोनकीआँखिनमेंबसती
हो॥१७०॥ आईहोपायँदिवायमहावरकुंजनतैंकरि
कैसुखसेनी॥ साँवरेआजसवाँस्योहैअंजननैननकों
लखिलाजतियेनी॥ वातकेबूझतहींमतिरामकहाक
रतीअबभौंहतनेनी॥ मूँदीनराखतिप्रीतिअलीय
हगूँदीगोपालकेहाथकीवेनी॥१७१॥ बानैंबनाव
तीक्योंइतनीहमहूंसोंछप्योनहिंआजरहाहै॥ मोह
नकीबनमालकोदागदेखायरह्योउरतेरेअहाहै॥ तूं
डरपैकरैसौंहैसुमेरहरीसुनुसाँचकोआँचकहा
हाहै॥ अंकलगीतोकलंकलग्योजोनअंक
लगीतोकलंककहाहै॥१७२॥ तुमजानतीहौकी
अजानसबैकरिआगिकोउत्तरधावतीहो॥ बतरा
तीकछूकीकछूहितसोंअनुरागकीआँखैंछपावती
हो॥ हमैकाहूपरीजोमनेकरिबैंकवियोधाकहैंदुख
पावतीहो॥ बदनामीकीगैलैंबचायेंचलोकुलकेपा·

हैकलंकलगावतीहौ॥१७३॥धनिहौव्रजवाखनमेतु
महौंतुमतौहमकौंभलभावतीहौं॥करतीहौदुराव
कीवातैकहाहमहूँसौंनप्रीतिलगावतीहौ॥हनुमा
नचवानचलेतौचलौहकनाहकहीतनतावतीहौ॥हि
तमानतीहौतुमराधिकाकौनदलालेसनेहसिखाव
तीहौ॥१७४॥तौहिविलोकतआवेडुतेमनभावनीसौं
वरीसूरतिसोहै॥तूंहूंनिहारैंलजौंहींन्हैजातिपैनेक
हूचाहतिनाहिंविछोहै॥जानतिहैतौवतावअलीयह
कौहनुमानभरोअतिमोहै॥भौहैमरोरिसिकौरिकैनाक
कहीअनखायकोजानियेकोहै॥१७५॥भोरहीआव
तीहौकितनैंकुलकानिकहातुमदीन्हीविसारसी॥मो
हनरूपमहामदपानकैएअँखियाँविलसैंसरसारसी
॥कंचुकीदूरकीकुचपैंहनुमानरहीयहप्रीतिपसार
सी॥तूंहीलखैकिनएरीअलीअवहाथकेकंकनकौं
कहाआरसी॥१७६॥ आगेतोकीन्हीलगालगीलोय
नकेसैछपैअजहूंजोछपावति॥तूंअनुरागकोसोध
कीयेव्रजकीवनितासवयौंठहरावति॥कौनसकौ
चरह्योहै नवाजजोतूंतरसैउनहूंतरसावति॥वाव
रीजोपैकलंकलग्योतोनिसंकव्हैकाहेनअंकलगाव
ति॥१७७॥वारहीगोरसवेचरीआजतूमायकेमूड
चढैकतमौंडी॥आवतजाततौंहोयगीसांझभटूज
मुनाभतरौंडलौंऔंडी॥एसेमेभेटतहीरसखानव्है
हैंअँखियाँविनकाजकनौंडी॥एरीवलायल्यौंजाय
गीवाजअवैव्रजराजसनेहकीडौंडी॥१७८॥झाँक
तिहैकाझरोखैलगीलगलागवेकीइहांझेलनहींफि

र॥ त्यौंपद्माकरती खेकटाछनकीमगिकोंनरक्रान्न नहींफिर॥ नैननहींकीघखाघलिकैघनैघाय्रनकों कहूंनेखनहींफिर॥ प्रीतपयोनिधिमैंधसिकैंहैंसि केकढिबोहंसीखेलनहींफिर॥ १७९॥ जिनस्यामग खानलियेतिनहींभरिलोचनचैतचैनावतीहो॥ च डरीअंखियांनचितौवतहींपरकेउरसूलसलावती हो॥ छितिपालनिछैलछलीछलिकैछिटकायमहा सुखपावतीहो॥ इनबाततनतैंवदनामिनहोदकना हकबैरबढावतीहो॥ १८०॥ नाहिनेनंदकोमंदिर ह्यांवखभानकोभौनकहाजकतीहो॥ हौंहीअकै लीतुहींकविदेवजूघूंघुटकैकिनकोंतकनीहो॥ भे टतीमोहिभटूकेहिकारनकौनकीधौंछबिसौंछक तीहो॥ काहभयोहैकहाकहौंकैसीहोकान्हकहां हैंकहावकतीहो॥ १८१॥ ॐ॥ न्योतेगएघरके सिगरेसोवेरामीकोव्याजकैआजुरहीमैं॥ ठाकुरहै वहिरीएकदासीसोराखीवरोठेविचारिकैजीमैं॥ आयेभलेखिरकीमगव्हैयहआइवोचाहतिहौं हुतीहीमैं॥ आजुनिसाभरिप्यारेनिसाभरिकीजिए लालनकेलिखुसीमैं॥ १८२॥ लोगवरातगएसि गरेतुमरातिजगेकोंचलीसबकोऊ॥ सुंदरमंदिर सूनोदुहांअबकोरखवारहैताहिनजोऊ॥ सासु कहीतवहींलखियोलहुरीदुलहीघरहींरहिसो ऊ॥ फूलिगएसुनिबातनगातसमातनकंचुकीमें कुचदोऊ॥ १८३॥ सासुबकैननदीलखिवोकरैंत्या कोंतौख्यालयहैदिनरातिहै॥ सूनोनिकेतजुनेक

दूपावैरवरीतवरीझिभरीललचातिहै॥नीरैंअटापर
पीतमैपेखितियाअतिहीं अंगैंरातिजम्हातिहै॥१
यौंकछूआनदहोतहिए अंगियाफटिकोटिकटूक
व्हैजातिहै॥१८४॥ ॥धुनिपूरिरहैनितकाननमै
अजकोंउपराजिवोईसीकरै॥मनमोहनजोहन
गोहनकेअभिलाखसमाजिवोईसीकरै॥घनआन
दसीविथैताननतैंसरसेसुरसाजिवोईसीकरै॥
किततैंवहवैरिनिवांसुरियाविनवाजेईवाजिवोई
सीकरै॥१८५॥ यहऐसोअदावभयोयाघरीघरहा
दूनकेपरिपुंजनमे॥मिसकोऊनआयचढेचित
पैंदूनकीवतियांनकीगुंजनमे॥ कविरामकहैभई
ऐसीदसागिरिलंघनकीजिमिलुंजनमे॥किमिहौं
अवजायसकौंहेदईवजीवेरिनवांसुरीकुंजनमे
॥१८६॥सुनतैधुनिधीरछुटैछुनमैफिरिनेकदूरा
रवैसचेतीनहीं॥ गुरुलोगनकेपरीफंदजऊकुल
कानितऊरहैदेतीनहीं॥ वलिकासौंकहौंमैदसा
अपनीहनुमानकहैकोऊहेतीनहीं॥ यहवैरपरी
कसवांसुरियावजिकैफिरिहासुधिलेतीनहीं॥१
१८७॥एकसमैएकगोपवधूभईवावरीनेकुनअं
गसम्हारै॥मायसुधायकैटोनासोढूढतिसासु
सयानीसयानीपुकारै॥ यौंरसखानकहैसिगरो
ब्रजआनकोआनउपायविचारै॥कोऊनमोहन
केकरतैंयहवैरिनिवाँसुरियागहिडारै॥१८८॥दूती
सकेत गईबनकोवदिप्यारीपगीहरिकेगुनगाय
मे॥गायदुहावनकौंकहिसंमुखरीखरिकानस

खीनकेसाथमे॥ केलिकेकुंजवजीमुरलीलुभिनो
पवधूकीवंधीव्रजनाथमे॥ दोहूनीहाथकीहाथे
रहीनरह्योमनमोहनीकोमनहाथमे॥१८९॥ भू
खनहारसिंगारिसबैअंगपूजनदेतचलीसखी
सांवरी॥ कामकलासीलसैविलसैद्रुलसैमन॰
मोहनकोसुनेनावरी॥ केलिकेकुंजवजीमुरली
कविद्तगईठगिसीवोहिठांवरी॥ सांवरीरूप
तिसौंअटकीभटकीसीवधूवटकीभैरेभांवरी॥
॥१९०॥ कलकाननकुंडलमोरपखाउरपैवन
मालविराजतिहै॥ मुरलीकरमेअधरामुसका॰
नितरंगमहाछविछाजतिहै॥ रसरवानलखैतन
पीतपटासतदामिनिकीदुतिलाजतिहै॥ यहवां॰
सुरीकीधुनिकानपरैंकुलकानिहियेतजिभाज
तिहै॥ १९१॥ सुनतीहौकहाभजिजाहुघरंविधि॰
जाहुगीमैनकेवानमे॥ यहवंसीनैवाजभगी
विषसौंविषसोवगरावतिप्राननमे॥ अवहीं सु
धिभूलिहौमेरीभटूभभरौजनिमीठीसीतानन मे
॥कुलकानिजोआपनीराखीचहौदैरहौअंगुरी
दोऊकाननमे॥१९२॥ फूंकिकैआईसवैवनकौं॰
हिमफूंकिकैमैनकीआगिजगावति॥ तृतीरसा
तलवेधिगईउरवेधतऔरदयानहींलावति॥
आपुगईअरुऔरनखोवतिसोतिकेकामकी
विधिआवति॥ ज्यौंवडेवंसतैंछूटीहैत्यौंवडेवंस
तैंऔरनहूंकौंछुडावति॥१९३॥ जोसिगरीत्र न
नारिनकौरघुराजछिनौछिनदेतिद्रुलामुगे॥

पीवतिहींजेहिंहोतिभईविरहागिव्यथाकोविसे
षविनासुरी॥ पूरीभईयहसौतिहमारीकरैनित
लालनकेमुखवासुरी॥पानकरैहरिकोअधरा
मृतकोनकियोत्तपबाँसकीबाँसुरी॥ १८४॥
जोसुनिकेधुनिअैसीभईहैतौतूंकाहेकोंओरउ
पावकोंधावे॥मैकहौंसोकरुतूंरघुनाथकीसौं
हजियेवहतूंजसपावै॥सौंपडसेपरफेरिडसैउ
तरैविषप्रानसरीरमेआवे॥ तातैंसखीकहुमोह
नतैंओहिटेरसोंबाँसुरीफेरिवजावे॥१९५॥ स
खिजाकोहैजेसोसुभावसुनोवहकोटिउपावक
रोनहिलै॥ कहूंकूरवसैसतसंगतिजायतोकूर
ताबाकीननेकुछिलै॥कविगोकुलजारतिहैतन
कोंसिगरेव्रजकेमनमाहखिलै॥ सोसुधानिधि
सेसुखसोलगिकेविखव्यालिनिबाँसुरियाउगि
लै॥१९६॥ ॐ॥ चंदनकीचरचानरहीनरहीअं
रीआडजोभालदईही॥मोतिनकीलरकीलरहैं
दरकीअंगियापहिरीजोनईही॥आयोनआयो
वलायल्यौंतेरीतुकाहेलरीलरिवेकोंगईही॥
वीकतहापठईजुहतीसुतोतेनसुनीसुनिहौं
हौंलईही॥१९७॥ अगंनामेवुलायघनीअगंना
केगंनापहिनायदैजोसिनीकों॥ दखिनादिलखोलि
केदीजेअलीसुवधाईसुनावसुतोखनीकों॥ क
विसेवकपाँवपरोंसबकेविधिदाहिनोआजुअदो
सिनीकों॥ तजिऔषधिमैतोअरामभईपतिआइ

गो मेरी परोसिनी को ॥१९८॥ तूं तो गई दीनुन्ना
वनलालहिमो सौं कहै कतवात विगारसी ॥ चन्नुकी
ढीली परी यह तेरी सु मो हिय रै उपजावति नारसी ॥
॥ तो हि कहा डर है हनुमान भये मन मोहन तें रसि
पारसी ॥ तूं हीं विचारि लखें न अरी अव हाय कें कंक
न कौं कहा आरसी ॥१९९॥ निसि आजु की जाहु चो फे
रि सखी तुम्ह रे पट भूखन जो वदले ॥ इहिं नेंहनुमा
न है दोस कहा कत वोलती हो भला सुंथे गन्ले ॥ हम
सौं तुम सौं कछु भेद नहीं यह जानि भरी न तहां तें च
ले ॥ अंति छोह न तैं तुम हीं सौं मिले मन मोहन सीं
त हमारे भले ॥२००॥ ॥ वलि कंज सो कोमल अं
ग गोपाल को सो ऊ सवै तुम जानती हो ॥ वह नें क
रुखाई धरैं कुम्हिलात इतो हठ कौ न पै ठानती हो ॥
कहि ठाकुर यौं कर जोरि कहै इतनें पै विनै न हिं मान
ती हो ॥ दृगवान औ भौंहैं कमान सु तो तुम कान लौं
कौ न पैं तानती हो ॥२०१॥ तनकौं तरसाय वो कौ नं
वह्यो मन तो मिलयो पय मैं जल जैसो ॥ कौन दुराव
ह्यो उन सौं जिन के तन मैं मिल यो मन ऐसो ॥ ठाकु
र की विनती सुन लीजियै कौन सुभाव पासी रह्यो प
नैं सो ॥ प्रान पियारी प्रवीन तिया चित मैं वसि घूं घु
ट घालिवो कैसो ॥२०२॥ यह चारिहूं ओर उदो सु रच
चंद की चांदनी चारु निहारि लै री ॥ वलि तो पैं अधीन
भयो पिय प्यारो तूं एतो विचार विचारि लै री ॥ कहि ठा
कुर चूकि गयो जो गोपाल तौ तूं विगरे कौं सुधारि लै
री ॥ फिरि रैहै न रै है यहै समयो वहती नदी पांय प

रवारिलेरी॥ २०३॥ रूपअनूपदईदयोतोहितौमा
नकियेनसयानकहावे॥औरसुनोयहरूपजचा
हिरभागबडेबिरलैकोऊपावै॥ ठाकुरसूमकेजात
नकोऊउदारसुनेसबहीउठिधावे॥दीजियेताहि
दिखायदयाकरिजोचलिदूरतेदेखिबेआवै॥२०४
॥अपनोहितमानिसुजानसुनोधरिकाननिदानतें
ऊकियेना॥निजप्रेमकेपोषनहारबिसारिअनीति
करोरवनढूकियेना॥हियअंदररावरोमंदिरहैतेहि
यौसीरहानलहूकियेना॥हमजोहितहीनहैंदीन
हैंतौतुमप्रेमप्रवीनव्हैचूकियेना॥२०५॥राधेसु
जानइतेचितदैहितमेकतकीजतमानमरोरहै॥
माखनतेंमनकोमलहैयहवानिनजानतिकोनक
ठोरहै॥ सांवरेसौंमिलिमोहतजेसुकहाकहियेक
हिबेकोनजोरहे॥हैघनआनंदतेरोपपीहराजोब्र
जचंदतोतेरोचकोरहै॥२०६॥बतियांनसुनाइकै
सौतिनकीछतियांनमैसालसलायलैरी॥सपनेहूं
नकीजियेमानअयेअपनेजोवनाकीवलायलैरी॥
परमेसजूरूपतरंगनसौंअंगअंगनरूपरलायले
री॥दिनचारिकतूंपियप्यारेकेप्यारसौंचामकेदा
मचलायलैरी॥ २०७॥लघुवेसकीऔ सछिनौ
छिनकीभरीभेदनमैजेनठानतीहैं॥ तिनकेगुन
रूपलोनाईविमोहनीभावनकोंधिकमानतीहैं॥
सुखऐसोनदूसरोसेवकजानैहितूतुमप्यातेंवखा
नतीहैं॥ नहिलैंमिलैपीतमसोंनिजवैहमजान
तीहैंकीअजाननतीहैं॥२०८॥ सुतुनीकोननेहल

गावनोहै फिरजोपैलगैतोनिवाहनोहै॥ अनिअं
खीहै प्रीतिकीरी तिसखीनहींरोसकोजोसमुझाव
नोहै॥ चलिचंदमुखीवृजचंदमिलोतुमकोंहनें
कासमुझावनोहै॥ दिनचारिकोरूपयापाहुनोहै
फिरतोपैरहैगोउराहनोहै॥२०९॥ बंकविलोक
निदीठिचलायरीनेहलगायकैपीठनादीजै चोरीन
हूजियेमानिकह्योअबपीतमकोंअपनायकै
लीजै॥ मोहनरूपकीवेसहीपाइकैकोनहींनाच
नकेमदभीजै॥ ऊजरीजोपैकरीकरतारतोगूजरी
येतोवारूरनाकीजै॥२१०॥ अैहैनफेरनईजोनि
सातनजोवनहैघनकीपरछाँहीं॥ ज्यौंपदमाक
रक्यौंनमिलैउठियोंनिबहैगोननेहसदाँहीं॥
कौनसयानजोकान्हसुजानसौंठानगुमानरही
मनमाँहीं॥ एकजोकंजकलीनखिली तोकहा
कहूँभौंरकोंठोरहैनाहीं॥२११॥ रूपकीचासअनू
पचढीयहप्रेममिठासपगायलैजीको॥ नैनन मैं
नसलोनीभलीसुखवैनरसालकटैअतिनीको
॥ तेरेअधीनभयोरसियाविधिक्यौंनबनायरि
झायलैपीको॥ साजिकैऊंचीदुकानअरीफिरि
राख्योकहापकवानकैफीको॥२१२॥ लागनी
नाइनबातनतैंहरिआयेहैंजानबडेनिसिभाग
री॥ भागरीवैरिनकीचरचातैंतजैगुरुमानदिया
रसपागरी॥ पागरीसोहैनपायनपैकविपारस
हैतुतोबुद्धिकीआगरी॥ आगरीलागैतिहारेहि
ठैमनमोहनकेउठिकंठसौंलागरी॥२१३॥नहीं

जोहठटेकनसोंसपनेहूं तजीसखि तैंसुतोनाधेरही ॥ नहिंकेहूंसिखायेसोमानतिहैतन तेरेमेलोय न्हाधेरहो ॥ मिलितौउठिसूधेसुभाइनहींपियके हियआसअगाधेरही ॥ रिसमेरसमे हंसीहोसमे तेरीवौसुधीचितौनकीसाधेरही ॥ २१४ ॥ रूसन हारीघनेरीहुतीपैकहांलगिरावरीकीजेबडाई ॥ रूसेसमैपियकेजियकीतियकाहूनेयाविधिपी रनापाई ॥ रीझिहौं तेरीयावूझनिऊपरतेरीसौं तैं बहुतेहौंरिझाई ॥ भांवतोभोरकोभूखोहुतोतैंभ लीकरीनैंकुहहातोखवाई ॥ २१५ ॥ तोहिनरूसि वेजोगवखायल्योंघेरकियेमतिकाहूकेलागहिं आपुनपोपहिलेतूंविचारहैकोरघुनाथकहाउ रपागहिं ॥ तोसीवहूवडभागिनिकोजिहिंकीस वसौतिलियैंअनुरागहिं ॥ देषिसरूपसनेहसराह तींप्यारेकैभागहितेरेसुहागहिं ॥ २१६ ॥ मानोम ढीदृसिरूपेकेपत्रसोंसोहतियोंदुतियोसकोदूसे ॥ सीतलमंदसुगंधवयारिवहैधनवेलीनवेलीको मूसैं ॥ कोइलिकूकतिहैरघुनाथजहांतहांवाल रसालकोचूसैं ॥ ऐसेसमाजकीचैतकीजोन्हमै कौनकहैगोभलीतुमैरूसें ॥ २१७ ॥ जलवूंदबडी वडीसोंवरसैंघननैनवियोगीकोदूसतहै ॥ मिलि फूलअनेकनसोंवलकेतनपौनफुकारकेमूसतहै ॥ रघुनाथसहायविनालखिकेअरुमेनहुक्योम नमूसतहै ॥ पियप्यारेसोंप्यारकीवालैंविसारि केऐसीसमैकोऊरूसतहै ॥ २१८ ॥ आननकीधु

नियेसुनियेस्रुतिकूकनकोयलकीधसनीहै ॥ म्यान कोचारुप्रकासवयारिनमंदसुगंधहियोमसनीहै ॥दंतनकीदुतिएरघुनाथकलानकलानिधिकोग सतीहैं॥ देखिभरीरिसप्यारीतुम्है एदसोंदिसिआ पुसमेंहंसतीहैं॥ २१९॥ वारुनीओरकीवासुन्दहै यहसीतकीईतिहैवीसविसामे ॥ रातिवडोजु गसीनसिरातिरह्योहि मपूरिदिसाविदिसामे॥ गोकुलडारिहैमैनमरोरिकैहावकहाकहैमान किसामे ॥कौनकीछांहछिपोगीछि याछतियो तजिनाहकीमाहनिसामे ॥ २२०॥ हारिगईसिग रीकहिकैहमरावरेकीजेहितूसखियांहै॥ भावन भौनतेंरूसिगयोअवओंनदहूकेजमीपरखियांहैं ॥ गोकुलमाहमैमानकरैंतेभईतियवारिविनाम खियांहैं॥ देखविलोकिवेकोंपियकेविधिकीनी मनोयेवडीअंखियांहैं॥ २२१॥ उनहाहाकरोरिन केपठईतुमतोरिसहीसरसावतीहो॥मनुहारिक रीहमहूंपेतऊसुखनेकहूनादरसावतीहो॥हनु मानमस्हसिरहीहोकहामिलिमोदनक्योंवरसाव तीहो॥ यहचैतकीचांदनीमाहिदैयामननोहने क्योंतरसावतीहो॥२२२॥ मैतौनतोहिमनावती हौंमनमोहनेतूंकवहूंजनिजोहै॥ सौतिपैजेहनों जोंहिंभलेओकहाभयोतोसोंनराखिहैछोहै॥फिनु मानकहौंसोकरैकछूतेरोतोकोहनमोपैंभरोहै ॥नेकु तोघूंघुटखोलिलखेयाकरैविनैठाढोकोजानियेकौ है॥ २२३॥ अतिखीनमृनालकेतारहुनेतेहिऊपर

पांवदै आवनो है ॥ सुई वे दलौं वे हस कीन तहां परसी
तिको डाडोंलदावनो है ॥ कवि बोधा अनी घनी नेजहु की
चढ़ि तापैं न चित्त डगावनो है ॥ यह प्रेम को पंथ करार
है री तरवार की धार को धावनो है ॥ २२४ ॥ ॥ बैठति
है मिलि संग सखी सु मुखी सब भौंति सुखी अति यों
तैं ॥ आवती हैं इत मेरे लियें इन के पिय धन्य सबै ब
तियां तैं ॥ मेरे तो बेनी प्रवीन पिया दिन हूं मे किये
ई रहैं रतियां तैं ॥ कासौं कहौं दुख मेरी भटू न हिं छूट
न देत छिनो छतियां तैं ॥ २२५ ॥ ॥ मो बिन माई
न खाइ कछू पदमाकर त्यौं भई भाभी अचेत हैं ॥ बी
रन आये लिवाइ बेकों तिन की मृदु बानि हूं मानि न ले
त हैं ॥ पीतम कों समुझावती क्यां न हीं ये सखी तूं
जु पै राखति हेत हैं ॥ और तो मोहि सबै सुख री दुख
री यहै माय के जानि न देत हैं ॥ २२६ ॥ हौं अलि आ
जु बडे तर के भरि कै घट गोरस को पग धारो ॥ त्यों क
वको धौं खरो इह्वु तो पदुमाकर मोहित मोहनी वा
रो ॥ सौं करी खोरि मे कों करी कीकरि चोट चल्यो
फिर लौट निहार्यो ॥ ता खिन तें इन आखिन तें
न टर्यो वह माखन चाखन हारो ॥ २२७ ॥ है नहि
मान्य को मेरी भटू यह सासु रो है सब की सहिबो क
रो ॥ त्यों पदुमाकर पाय सुहाग सदां स[illegible]
कौं चहिबो करो ॥ नेह भरी बतियां कहि कै नित सौं
तिन की छतियां दहिबो करो ॥ चंदमुखी कहै हौं तो
दुखी तौ न कोऊ कहैगो सुखी रहिबो करो ॥ २२८ ॥
बै पति मोहि पतिव्रत है रघुनाथ सदां प्रगटे रह है

तीहौ ॥ वैप्रभुहै अपनेमनकेउनकेमतब्हैतुम
क्यों वहती हौ ॥ त्रासकरोपरलोकहुकौ तुमतौति
यमैमतिमैमहतीहौ ॥ मोसुखकीअनुहारक
लानिधिवो हूकहैं तुमदूंकहती हौ ॥ २२९ ॥ नग
रोजनकीकलीचाहौअलीतौकहौ तेहिमैमनदै
चलोरी ॥ फिरदैहौकलंकवृथाहीसवैदुहितैपहि
लेहींवचैचलोरी ॥ तुमऔरकहूंजोकहौ गीचलैन
लिहौंहनुमानअवैचलोरी ॥ मनभायेनफूलनिलै
गेतुम्हैनसरोवरयेहमैलैचलोरी ॥ २३० ॥ ॥
तरिहौंदृगनीरहिजाइहौतीरमिलैनमिलैहरिना
वटीऊ ॥ घसिहौंघनसारपटीरमिलैमिलैवातकहौंन
वनावटीऊ ॥ यहवेनीप्रवीनहै भोरी महानकहौं
विरहानलआवटीऊ ॥ लगैसीरसमीरज्वालाकरि
जाइयेएकउसीरकीरावटीऊ ॥ २३१ ॥ संगरच्यो
सुखसंगलह्योकबहूंनभयोकसुकैपलन्यारो ॥
छोडिकेताहिचल्योपियचाहतकैसेचनैचलिवो
ऊविचारो ॥ पीतमकोअरुप्राननकोहठदेखिवे
हैअवहोतसवारो ॥ कैधौंचलैगोअगारसखीप
हदेहतैंप्रानकीगेहतैंप्यारो ॥ २३२ ॥ वातकहौंसो
कहौचलिवेकीनयोंकबहूंवहुरोउरआनवी ॥
आंसूंचलेसोचलेहीचलेदृगनीदऔभूखगईन
हिघ्रानवी ॥ जोतुमजानकहौगेअचानकदेवजू
यौंनिहिंचैकरिमानवी ॥ ढूंढिहौप्यारेकहूंनलौं
प्रानसुयातनतैंउडिजातनजानवी ॥ २३३ ॥ ज्वाल
तैंजोरजुन्हाईकेडारिहैचारौंदिसाविखसीवरनैहै

देखतहीं हगदेहैं अचानक ओंचतैं कोटिकनाच नचैहै॥ मोमुहकीकवहूतुमसौं समताईनपाई रह्योरिसकैहै॥ प्रानपियारेतिहारे चले अबहींयहचंदजवालव्है जैहै॥ २३४॥ बातचलीचलिवेकीजहीफिरबातसुहानीनगातसुहानो॥ भूषनसाजसकैकहिकोमदराजगयोकुटिलाजकोबानो॥ योंकरमीडतिहैवनितासुनिपीतमकोपरभातपयानो॥ आपनेजीवनकोलखिअंतसुभासुकीरेखमिटावतिमानो॥ २३५॥ आजुलौंजोनमिले तोकहाहमतोतुमरे सबभांतिकहावैं॥ मेरोउराहनोहै कछुनाहिं सबैफलआपने भागकोपावैं॥ जोहरिचंदभई सोभई अबप्रानचलेचहैंतासों सुनावैं॥ प्यारेजूहैजगकीयहरीतिबिदाकीसमैसबकंठलगावैं॥ २३६॥ गोगृहकाजगुवालनकेकहेदेखिवेकोंकहूदूरिकोखेरो॥ मागिबिदाचलेमोहनीसोंपदमाकरमोहनहोतसबेरो॥ फेंटगहीनगहीबहियांनगरोगहिगोबिंदेगौनतैंफेरो॥ गोरीगुलाबकेफूलनकोगजरालैगोपालकीगैलमेंगेरो॥ २३७॥ बातचलीयहहैजबतैंतबतैंचलेकामकेतीरहजारन॥ भूखऔप्यासचलीमनतैंअंसुवाचलेनैननतैंसजिधारन॥ हासचलीकरतैंवलयारसनाचलीलंकतैंलागीअवारन॥ प्रानकेनाथचलेअनतैंतनतैंनहिंप्रानचलैंकिहिंकारन॥ २३८॥ चोपभईदिनचारहीतैंलगेलागनपीकेविलाससुधासे॥ ऐसेहि

मेचलिवेकोंविदेसकहूँमुदतैंपियकैननिकासे॥ चंदमुखीसुनिकैविलखीउरकदै निरदानकुके अँकुरासे॥ आँसूगिरेदृगकोरनतैंभुवमोरनके मुहतैंमुकतासे॥२३९॥जैयतपीनमप्यारेविदेसकोंमोहिकहाउपदेसवतेयत॥ नैयनहैं छतियांजोकहोवतियाँचलिवेकीसुनेचिलखैयत॥ खैयतरावरेपायकीसौंहैअलीमनयाकोउपाचनापैयत॥पैयतऔधिकेऔसरजोविछुरेतेंजियैंयहलाजलजैयत॥२४०॥ पहिलेअपनायसुजानसनेहसौंक्योंफिरनेहकोंतोरियेजू॥ निरधारदैधारमझारदईगहिवाँहनकाहूकोंवोरियेजू॥घनआनदआपनेचातककौंगुनवाँधिकैमौननछोरियेजू॥ रसप्यायकेज्यायवधायकेआसविसासमैयोंविषघोरियेजू॥२४१॥
अभिलाखनलाखनभाँतिभरीवरुनीनकेरोमसुकौंपतीहैं॥ घनआनदजानिसुधाधरमूरतिचाहनअंकसुचांपतीहैं॥ टकलायरहींपलकोंवडेकेसुचिसौंरुचिचोपहिगौंपतीहैं॥ जवनैंनुमआवनऔधिवदीतवतैंअँखियांमगनापतीहैं॥२४२॥ मगहेरतदीठिहेरायगईजवतेंतुमआँवनऔधिवदी॥ वरसौकितहूघनआनदप्यारेवढावतहोइतसोचनदी॥हियराअतिसेउदवेगकीआँचचुचातआँसुनमैनमदी॥ कवआइहौऔसरजानिसुजानवतीरलौंवैसतौजातिलदी॥२४३॥प्रानपरवेरू परेनलफैलखिरूप

त्वु गाजो फ़दे गुनगाथन॥ क्यौं हति येहितपालसु
जानदयाविन व्याधवियोगके हाथन॥ सालत वा
नसमान हिये सुलहे घनआनदजे सुखसाथन॥
देह दिखाय दई मुखचंदलगो अब औधिदिवाकर
आथन॥२४४॥ कित कौं ढरि गो वह ढारअहो जिहि
मो तनआखिन ढोरत है॥ अरसानि भरी वह वानि
कसौं सरसानि कै आनिनिहोरत है॥ घनआनदमी
तसुजानसुनो तबतौ सब भाँतिन भोरत है॥ मन
माहिजो तोरन ही की हुती विसवासी सनेह क्यौंजो
रत है॥ २४५॥ जिनकौं नित नीके निहारति हीं तिन
कौं अखियाँ अबरोवती हैं॥ पलपाँवडे पायनचा
यनसौं अंसुवानकी धारनधोवती हैं॥ घनआन
दजानिसजीवनकौं सपनेविन पाव तखोवती हैं॥
नखुली मुदी जानि परैं कव हूँ दुखहाई जगौं किं
धौं सोवती हैं॥ २४६॥ मल्लिगरे मृदु वेलीसी वा
हनकौ नसी चाँह न छाँहन डोलिहौं॥ कासौं सहा
सविलास ममारख हीके हुलासनसौं हँसि वोलि
हौं॥ औननप्याइहौं कौन सुधारस कासौं व्यथा
कीकथा गढिखोलिहौं॥ प्यारे विना हौं कहा ल
खिहौं सखियाँ दुखियाँ अँखियाँ जव खोलिहौं॥
॥२४७॥ सखिजा दिनतें परदेस गये पियता दिन
तैं तनछीजत है॥ निसवासर भौन सुहातनहीं
सुधिआय उसासनलीजत है॥ अबऔर खनाव
वनैनकछू अनुभौ इतनो सुखकीजतु है॥ उन
कीअनुहार निहारिसखी ननदीमुख देखिकैजीज

तु है ॥२४८॥ बरुनीन ब्है नैनन भिके मिलि मैन नो
खंजन मीन पैं जाले परे ॥ दिन औधि के कै मैगनो रा
जनी अँगुरीन के पोरन छाले परे ॥ कहि ठाकुर का
सौं कहा कहिये हमै प्रीति करे के कसाले परे ॥ जिन
लालन चाह करी इतनी तिन्है देखिबे के अबलाले
परे ॥ २४९॥ अबल्है है कहा अरविंद सो आननं
दु के हाय हवाले पस्यो ॥ एक मीन विचारो विध्यो ब
नसी पुनि जाल के जाय दुमाले पस्यो ॥ पदुमाकर भा
खै न भाखैं बनै जिय कैसो कछू कक साले पस्यो ॥ म
न तौ मनमोहन के संग गो तन लाज मनोज के पाले
पस्यो ॥२५०॥ पति प्रीति के भारन जाती उनै मति सौं
दुखभारन साले परी ॥ मुखसास तैं होती मलीन
सदां सोई मूरति पौन के पाले परी ॥ द्विजदेव अहो
करतार कछू करतूति नरा बरी आले परी ॥ वदना
ह कै गोरी गुलाब कली सी मनोज के हाय हवाले
परी ॥ २५१॥ साँझ के ऐबे की औधि दै आए पिनाव
न चाहत याहू बिहान हिं ॥ कान्हजू के सद यांके
निधान हौ जानो न काहू के प्रेम समान हिं ॥ दास
बडो ई बिछोह कै मान तौ जात समीप के घात न हां
न हिं ॥ कोस के बीच कियो तुम डेरो तो कोस ह्वै रा
खि पियारी के प्रान हिं ॥ २५२॥ बालम के बिछुरें ब्रज
बाल कौं व्याकुलता बिरहा दुखदानि तैं ॥ चौ पर
आ निर चीन्ह पसं मुसहेलिन साहिबिनी सुखदा
नि तैं ॥ तूं जुग फूटै न मेरी भटू यह काहू कह्यो न सि
यौं सखियानि तैं ॥ कंज से पानि सैं पासे गिरे अँसु वा

गिरिखंजनसीअँखियाँनितैं॥२५३॥संगवारीसु
नोसवकाननदैविरहागिकेह्वौंतोमरीसुखमै॥
करिचेटकचंदनवंदनरीतिनिहारियोभावतेके
रुखमै॥सुधिलैहिगँसेवकूजातहीमेरीपठाइहैं
धावनकोदुखमै॥तजिआगिसुधागुनिपीतमकी
धरिदीजियोपातीमेरेमुखमै॥२५४॥अबकौन
भरोसोकरैंइनकोलटीदीठिकेकोऊचितेगईरी॥
हँसिबोअरुबोलिबोलादुबोदूरिउसासलौंजाकी
रितेगईरी॥ नईनोखीवियोगिनीहैयेआवैनहिं
सेवकऔधिवितैगईरी॥टकलागीहलैनचलै
पुतरीतजिनैनकोंनींदकितैगईरी॥२५५॥
जाथलकीन्हेविहारअनेकनताथलकोंकरीवैठि
चुन्योकरैं॥ जारसनातैंकरीवहुवातनतारसना
सोंचरित्रगुन्योकरैं॥आलमजोनसेकुंजनमैक
रीकेलितहाँअवसीसधुन्योकरैं॥ नैननमेजेस
दारहतेतिनकोअवकाननहौंनीसुन्योकरै॥९
॥२५६॥ह्याँमिलिमोहनसोंमतिरामसुकेलिक
रीअतिआनंदवारी॥तेईलताद्रुमदेखतदुख
चलैंअँसुवाअखियानतैंभारी॥आवतिहौंजमु
नातटकोंनहिंजानिपरैंविछुरेगिरधारी॥जान
तिहौंसखीआवनचाहतकुंजनतैंकढिकुंजविहा
री॥२५७॥कहिवेकीकछूनकहाकहिमेमगजो
वतजोवतज्वैगयोरी॥उनतोरतवारनलाईक
छूतनतेंरथाजोवनरवैगयोरी॥कविठाकुर
कूवरीकेवसव्हैरसमैविसासीविसव्वैगयोरी॥

मनमोहनकोहिलिबोमिलिबोदिनाचारिकोचो दनोव्हैगयोरी ॥२५८॥ बिछुरेवलबीरपियानजा नीतिहिहेतसवैबिछुरावनेहैं ॥ हरिचंदजूत्यौं सुनिकैअपवादनऔरहूसोचवढावनेहैं ॥ कोरिकै उनकेगुनगानसदाअपनेदुखकोंविसरावनेहैं। जेहिंभांतिसौंद्यौसएवीतेंसखोनेहिंभांतिसोंव ठिवितावनेहैं॥२५९॥ मनमोहनतेंबिछुरीजनतौं तनआंसुनसोंसदाधोवतीहैं ॥हरिचंदजूप्रेमके फंदपरीकुलकीकुललाजहिखोवतीहैं ॥दुखकेदि नकोंकोऊभांतिवितैविरहागमरैनसंजोवतीहैं ॥ हमहीअपनीदसाजानेसखीनिसिसोवतीहैं किधौंरोवतीहै ॥२६०॥धिकदेहऔगेहसवैसजन नीजिहिंकेवसनेहकोटूटनोहै॥उनप्रानपियारे विनाइहिंजीवहिराखिकहासुखलूटनोहै ॥ हरि चंदजूवाततठनीसोठनीनितकेकलकानितेंछूट नोहै ॥ तजिऔरउपावअनेकअरीअवतौहमकों विषघूंटनोहै॥२६१॥ लावनचंदनऔदैंतियाकु लकेजेपियाकरिहैंघरआवन॥ आवनव्है देसुहा वनलोगकहैंगेमयारखआयेरिभावन॥ भावनमों नलगैंगेतवैव्रजनाथफिरैंगेजोआपनेपावन॥ पा वनव्हैहौतवैसजनीरजनीभरिकंठजोपाइहौं लावन॥२६२॥कोऊकनआयोउहांतेंसखीरीजा होंसुरलीधरप्रानपियारे॥ याहीअंदेसेमेवैठीहुती उहिदेसकेधावनपौरिपुकारे॥ पातीदईधरिछा तीलईदरकीअँगियाउरआनदभारे॥ पूछनयों

पियकीकुशलात्तमनोहियह्वारकिवारउघारे॥१
॥२६३॥ ॥ जामभरेदिनहेचलिवोसुनिप्यारी
निसासबरोबतरवोई॥हौंकह्योरो येनजैयेघ
रैंयहरोइबोतौसुनिहैसबकोई॥सोईनिवाजस
दांसुधिसालतिसाहसकैकेचलीपगदोई॥आ
धिकदूरिलौंजायचितेफिरिआयगरेंलपटायकै
रोई॥२६४॥ साहसकेहँसिकेरसकेमिसिमागी
बिदेसबिदामृदुबानिसौं॥सोसुनिबालगईमुरझा
यदहीबरवेलिज्यौंधीरदबानिसौं॥नैनगरोहि
यरोभरिआयोपैबोलिनआयोकछूबासुजानि
सौं॥सालैअजौंउरमाझगडीवेवडीअखियाउम
डीअसुवानिसौं॥२६५॥बहमानदसाचितचातु
रीचाहहरैहरैंनाहिंकहैहूं सकै॥झिझिकारनि
पानिनिवारनिबामुसिकानिरहीहियमैवसकै
॥मुखचुंवनहेतदुरावनकीभनैप्रेमहियैंलगि
बोगसकै॥रतिकेरसकेकुचकेमसकेजलईसि
सिकेतअजौंकसकै॥२६६॥बाकोविलोकिये
जोमुखइंदुकहूंयहइंदुलगेलबलेसमे॥बे
नीप्रवीनमहारसरसेछविजोपरसेकहूंस्याम
लकेसमे॥सोमनसोचउसासलेलैनिसिबासर
हैपरोमेनकलेसमे॥प्रानपियारीविहायकेहा
यअनाहँकआनिपरेपरदेसमे॥२६७॥भीतरतैं
उठिआवतदेखिकवेवहवालभुजाभरिलेहैं॥
सेखरकंठलगायकेपीछेतैंआँनदकेअंसुआनि
अन्हैहैं॥कंतभलेभलेवोलकेसांचेकह्योतुम

होइहमवादिनअहैं ॥ औधिगयमोभिन्याघरज्ञानन, वेदमहायओराहनेपैहैं ॥ २६८ ॥ मुख्यभावनभूषिन जाकोविलोकिनचंदकीओरचितैबोभलो ॥ अध रामृतपानकैसेचकजाकेपियूषकोंकोनदिनैबोभ लो ॥ जिन्हिलायकेअंकनिसंकदईनपरीनकोरकोमि तैबोभलो ॥ धिकताकेविनापलकोंतजिकेनविधोगनैं वैसवितैबोभलो ॥ २६९ ॥ निजदेहकेसेवनासुखधनी सुभजानित्रियाकेअराधनतैं ॥ उरमाहिरमाईरनाकों रमापतिजासुकीसेकअगाधनतैं ॥ अरधंगनीबालको वेदवद्योवलपायोनहींतुवसाधनतैं ॥ नजिन्मानन्भा नसुधातैंहिभेट्योमस्योजोवियोगकोबाधनतैं ॥ २७० ॥ लखिलीजियेसाँचनक्यौंमोहिवोरिभईमुनिसं कजोरागिनिहै ॥ नछुवैजमत्रासनिनंजगिवेके वढैतवआयुअभागिनिहै ॥ कछुकोकछुगायो पुराननिमैजोकहौंसोइबातअदागिनिहै ॥ न रबाँधिकैसेवकबूड्योवियोगीनवारिधिसेव डबागिनिहै ॥ २७१ ॥ ❀ ॥ बालमआयेविदे सतैंरातसनेहभरेगरेलायलईरी ॥ सोसरहीसौं ललाकेलगेहियकामकलाकेअनंदमईरी ॥ सौंतुककोसपनेमेभयोसुखजागतहीविपरी तिभईरी ॥ आवनलौंमनभावनकेअलिनेकिनींद नीददईनदईरी ॥ २७२ ॥ सोवतआजुसखीस पनेहिजदेवजूआयमिलेवनमाली ॥ औंचकऊ ठीमिलिवेकहँधायसोहायभुजानभुजानदैन ली ॥ बोलिउठेएपपीगनतोलनिपीवनसोंक

ह्विकूरकुचाली॥संपत्तिसीसपनेकीभईमिलि
वोव्रजराजकोआजकोआली॥२७३॥आवतमे
हरिकोंसपनेलखिनेसुककबाटसकोचनछोडी
॥आगेह्वैआडेभयेमतिरामचलीसुचितैचख
लालचओडी॥ओठनकेरसलेनकोंमोहनमेरी
गहीकरकेपतठोडी॥औरभटूनभईकछूवातग
ईइतनेहींमेनींदनिगोडी॥२७४॥मोहनआये
इहांसपनेंमुसुकातओंखातविनोदसोंवीरो॥
वैठीहुतीपरजंकमैहोंहूंउठीमिलिवेकहंकैमन
धीरो॥ऐसेमेंदासविसासिनिदासीजगाईडुला
यकिवांरजजीरो॥झूंठोभयोमिलिवोव्रजराज
कोयेरीगयोगिरिहाथकोहीरो॥२७५॥भेटत
हीसपनेंमेंभटूचखचंचलचारुअरेकेअरेरहे॥
त्योंहंसिकेअधरानहूपैंअधरानधरेतधरेकेधरे
रहे॥चौंकीनवीनचकीउरुकीमुरवस्वेदकेबुंद
ढरेकेढरेरहे॥हायखुलीपलकैंपलमैदिलमेअभि
लाखभरेकेभरेरहे॥२७६॥सपनेमेगईसखिदे
खनहोंसुन्योनाचतनंदजसोमतिकोनट॥वा
मुसिकाइकेभाववताइकेमेरोहिऐंचिखरोप
कर्योपट॥तौलगिगायभैभायउठीकविदेवव
धूनमथ्योदधिकोमट॥जागिपरीतोनकान्हक
हूंनकदंवकोकुंजनकालिंदीकोतट॥२७७॥धा
यकेअंकमैसोईनिसंकसुपंकजसीअंखियांन
गकाम्रकी॥यौंसपनेमेमिलीअपनेपियप्रेमप
नेछविहीकीछकाछकी॥ठाढेहीठाढेगहीभुज

गाढे सु बाढी बधू के हिये मैं सकाम सकी॥ देव त्यों
रतियाँ हूं गई नतिया की गई क्रितियाँ की पत्या थकी
॥२७८॥ औंचक आनि गह्यो अंचरा त्यौं नहीं न
हीं जी भलगी जपने मैं॥ हाय निसौं किमि थाम कि
यो परी हौं कछु ऐसी अयान पने मैं॥ वेनों किनै कौ
कियो अनुराग अभाग कहौं ल्हो कहौं अपने मैं॥ जा
हि वरवान तहीं निसि द्यो ससो साँवरो आनु मि
ल्यो सपने मैं॥२७९॥ संग सखीन के सोय गई पद
दे करपोढे जँजीरन जो है॥ आय गयो कित ल्है पै
को ऊ करि कौ टिकला निर्दखाय के छोड़े है॥ सैन फ
जो वरजोरी करी झकझोरी न सो दुख जात कह्यो है
॥ नैन गये खुलि नींद के साथ गयो भजि एरी न जा
निये को है॥२८०॥ सो वत नींद मैं मोहि मिल्यो छ
वि कोरि अनंग की सूरति सो है॥ अंक लई भरि कै
सजनी रसरंग तरंग न सौं करि छो है॥ जागि परी
हू तनेमत उक बिकालिका आँखिन आगे खरो है
॥ पूछन भेद न पायो कछू रजनी गई बीति को जा
निये को है॥२८१॥ जब तैं सुने देख वसे मन मैं त
व तैं फिरि भेट भई न हीं री॥ जलहीन सी मीन दुखी
अंखियाँ तलफै दिन रैन बिया मई री॥ विधि सौं अ
वै सो वत हीं सपने मै गह्यो कर मैं हूं उठी दई री॥
मन मानी भई नहीं से बक सौं तजि नैनन कौं नींद कि
तै गई री॥२८२॥ ॥ केसरिया पट केसर खौर
हिये बन्यो गुंज को हार हुरारो॥ ठाढे अटा कछु
के हरि केसर वरे अंगना तुम डीठि नटारो॥ २

आपुनकोहौजूजाछविसौंवनिठाढेविकाउसेरो किदुवारो॥ हौंतोविकाउंजोलेतबनेहंसिवोल तिहारोईमोलहमारो॥२८३॥नवलाकोविलो किरहैमुखचंदवन्योजोविभूषनसोंभलहै॥क रकंजकमालसनालदोऊसोंचप्योभुजमूलनको तलहै॥कुचतुंगसोंवेधसहैउरकोसुनैमाधुरेबे ननिकोछलहै॥नविरामगहैपलसेवकरामइ तोजगजीवनकोफलहै २८४॥ गुरुलोगनकील गीत्रासघनीसगंहीमैंचवाइनकोगनहै॥दृत मैनसोंचैनमिलैनघरीवलसेनकेआनगहेत्तन है॥कछुसेवककासोंकहाकहियेकहाकीजिये भोजुगज्योंछुनहै॥मिलिवेकीनहींवनिआवति रामभयोचहैवावरोसोमनहै॥२८५॥ जुरि दीठिचलैतोयहीसोंरमैहमैदुठवरैतोयहीहि यसों॥ कहिसेवकबोल्योचहैतोयहीहमबोलैं कछूतोनहींवियसों॥जियजैयोजोपैतोयहीमे रह्योविधिदैयोजोपैतोयहीजियसों॥ममअंक लगैतोयहीतियरामकलंकलगैतोयहीतिय सों॥२८६॥ हमकोकितकैसेकहौंनलखैंनि तऐसीव्यथाजियजागतीहैं॥नगनायगुनाय मनाअजनायवनायवहीरगंरागतीहैं॥कस कैंनसकैंकढिकैसेहूंसेवकसौंहंनपैंदिलदाग तीहैं॥परतीनकीसैनसुधासोंभरीवरछीनतें सौगुनीलागतीहैं॥२८७॥छपिकैछपामांहि सहैटमैंजाअधरारसलोनोलयोजोनहीं॥जि

नके लखि हा वन भावन कौंन लखै विरहा सों। छयो जो नहीं॥ रिसि मैं लखि कै हनुमान कहै न रिपांवन पैं विनयो जो नहीं॥ पन तीन मैं कौन कियो सुख सो पर तीन मैं लीन भयो जो नहीं॥ २८८॥ जिन के सुख इंदु विलोकन कौं दिन रैन गलीन नै फेरो कियो॥ जिन के लियें पावन पैं परि कैं सखी दूतिन को रुख हेरो कियो॥ हनुमान दियो सुख तौ सिगरो पर की मन को जु पै चेरो कियो॥ विधि की विपरीत कहौं मैं कहा अपनो दिन हायन मेरो कियो॥ २८९॥ आछे किये कुच कंचुकी मै पट मैं नट कै सैं वटा करिवे कौं॥ मोहन दूपैं किये पदु माकरं तो हग छूटि छटा करिवे कौं॥ कीजे कहा विधि की विधि कौं दियो दावन लोट पटा करिवे कौं॥ मेरो हियो कटिवे कौं कियो तिय तेरे कटाच्छ कटाकरिवे कौं॥ २९०॥ हग फेरियेना अन वोलियें सो सरसे व्है लगैं कितजी जियेजू॥ रसनायक दा चकहौ रस के सुखदाई व्है दुःखन दीजियेजू॥ घन आनद प्यारे सुजान सुनो विनती मन मानि कैं लीजियेजू॥ वसि कैं एक गाव मैं ये होर दई वित ये सो कठोरना कीजियेजू॥ २९१॥ आपु ही तें मन हेरि हरे तिरछे करि नैनन नेह के चाव मैं॥ हाय दई सो विसारि दई सुधि कैसी करौं सो कहो कित जाउँ मैं॥ मीत सुजान अनीति कहा यह ऐसी न चाहियें प्रीति के भाव मैं॥ मोहनी मूरति देखिवे कौं तरसावती हौ वसि एक ही गाँव मैं॥ २९२॥ ॐ॥ जाइन

ज्ञंत्रतैंमंत्रतैंमूरितैंजातिकहीनहींहोततथ्यादै ॥ स्वरुख्योकरैतनभूल्योफिरैमनदेखिकहैं जनबौरोजथ्यादै ॥ हायदईजनिकाहूकेहोयकहैरघुनाथभयेंहीमथ्यादै ॥ बूझैकहाअनबूझीभलीयहप्रेमव्यथाकीकथाअकथ्यादै ॥ २९३ ॥ गतिमेरीयहीनिसिवासरहैनिततेरीगलीनकोगाहिवोदै ॥ चितकीन्होकठोरकहाइतनोअवतोहिनहींयहचाहिवोदै ॥ कविठाकुरनेकुनहींदरसैकपटीनकोंकाहसराहिवोहै ॥ मनभावैतिहारेसोईकरियैहमैनेहकोनातोनिवाहिवोहै ॥ २९४ ॥ यहप्रेमकथाकहिवेकीनहींकहिवेईकरोकोउमानतहै ॥ पुनिऊपरीधीरधरायोचहैतनरोगनहींपहिचानतहै ॥ कविठाकुरजाहिलगीकसकैनहींसोकसकैउरआनतहै ॥ विनआपनेपाँयवेवाईगएकोउपीरपराईकाजानतहै ॥ २९५ ॥ वानिरमोहिनिरूपकीरासिजोऊपरकेउरआनतिहै है ॥ वारहूँवारविलोकिघरीघरीसूरतितोपहिचानतिहै है ॥ ठाकुरयामनकीपरतीतिहैजोपैसनेहनमानतिहै है ॥ आवतहैंनितमेरेलिएइतनोतौविसेखहूजानतिहै है ॥ २९६ ॥ लगीअंदरकीकरैवाहिरकोविनजाहिरकाकोउमानतहै ॥ सुखऔदुखहानियालाभजितीघरकीकोउवाहिरभानतहै ॥ कविठाकुरआपनीचातुरीसोंसवहीसवभाँतिवखानतहै ॥ परवीरमिलेविछुरेकीव्यथामिलिकेविछुरेसोईजानतहै ॥ २९७

कौनसेकेलिकेमंदिरतैंउसनीहैंभैरकुटिजानइ
भाते॥ हैंअदलेबदलेपटभूषन दोऊ लगहन·
सौंहँसिहाते॥ ठाकुरतैंहतीताछिननायलगैं:
हिवतावभटूचरचाते॥ गोकुलगैलमेंआनंदफै
लमेगोपीगोपालवतातकहाते॥२९८॥ एकहीं
सौंचितचाहियेओरलौंनीचदगाकोपरैनहीं [illegible]
को॥ मानिकसोमनवैंचिदयोअबफेरिकहापर
खाइबोताको॥ ठाकुरकामनहींउनकोचहांतू
खनमेपरवीनहैजाको॥ प्रीतिकियेमेंकछूनल
गैकरिकैएकओरनिबाहिबोवाँको॥२९९॥ छिन
आदरपायकेबैठिढिगौंअपनोरुखदेरुखलीज
तुहै॥ अपमानऔमानपरेखोकहाअपनीमति
मेंचितदीजतुहै॥ कविठाकुरकामनिकाजिंकैनि
एँकोटिउपायकरीजतुहै॥ अपनेदरमैंसुरमाढ़
वेकौंसबहीकीखुसामदकीजतुहै॥३००॥ पि·
यमोहनकोवहमोहनीरूपनिहारेबिनानहिं·
जीजतुहै॥ तिहितैंजुलटीभलीयाजगमेसिख
मानिसबैसुनिलीजतुहै॥ कहिठाकुरलालपै
देखिबेकेलियेंज्वाबनकाहुवैदीजतुहै॥ सखिका
कहिएअपनेअरुझैंसबहीकीखुसामदकीज
तुहै॥३०१॥ दिलसाँचोलगैजिहिंकोजिहिंसौं
तिहिंकौंतितकोंपहुँचावतुहै॥ बलिहैंसबुनैनु
कताहलकों अरुचातकस्वातिकौंपावतुहै॥ क
विठाकुरयौंनिजभेदसुनोअरुआवतसोमन [illegible]
वतुहै॥ परमेश्वरकीपरतीतियहीमिलै [illegible]

एताहि मिलावतु है॥ ३०२॥ सुनिकै धुनि चाह भ
ई हियमे तहाँ जैये कछू सुखपावनेरी॥ ढिगजा
यसबैसमुझी उनकी कहू तालकहू सुरगावनेरी
॥ कवि ठाकुर कूरसमाजजहाँ तिनतें कहा नेहल
गावनेरी॥ चलि देखि भटू होंहथा अटकी सुनेदू
रके ढोलसोहावनेरी॥ ३०३॥ इते रारवी चहैं कु
लकी कुलकानि उतै नदनंदनै ध्यावती हैं॥ नि
जगेलमे आनिकढै जो कहूं नझरोरवनमें कन
पावती हैं॥ कवि ठाकुर है नवनावकछू दुविधा
मिलिसाँचसचावती हैं॥ चहैं आसिकी औडर
मामनको कहो है है कहाँव निभावती हैं॥ ३०४
केसे सुचित्त भए निकसो रैहें सो विलसोसबसों
गलवाहीं॥ वेछलछिद्रमकै छलताछलिताक
तीहैं सबकी परछाँहीं॥ ठाकुर सो मिलि एक भई
रचि हैं परपंच कछू ब्रजमाहीं॥ हालचवाइन
को दहचालसो लाल तुम्है है दिखानकी नाहीं॥
॥३०५॥ कहिवे सुनिवे की कछू नइहाँ नलगी भ
लीको दुरवपावनो है॥ उनकी तो सबै मरजीक
रिकै अपने मन कौं समुझावनो है॥ कवि ठाकुर
कामनि का सिवे कों अबमंत्र यही ठहरावनो है
॥ इनचौचँदहाँ इनमे परिकै समयो यह वीरव
रावनो है॥ ३०६॥ कहिवे की रथा सुनिवे की है
सी को दयाकरिकै उरआनत हैं॥ उरपी रबडी
तजि धीर सरवी कहि कोनहिं कासों वरवानत
है॥ कवि बोधा कहै मे सवाद कहा को हमारी क

हीपुनिमानतहै॥ हमैपूरीलगीकीअभूरीलगी
यहजीवहमारोईजाननहै॥३०७॥ अवहींमि
लिवोअवहींमिलिवोयहधीरजहांमधिरवो
करै॥उरतेंउठिआवेगरेतेंफिरैचिनकौचि न
हीमधिरैवोकरै॥ कविबोधानचाँडसक्योकन
हूनितहींदुखवासीहिरैवोकरै॥ सहतेनवनै
कहतेनवनैमनहींमनपीरपिरैवोकरै॥३०८
आवतहेइतैवोलेविनासोतज्योहमकौंउतैं
जैवेपरो॥गुनरावरेकेवलदेवजितेमनकैंभव
सोसवभैवेपरो॥गतिदेखिकेहालनजानोक
छूतजिलाजसमाजवतैवेपरो॥सहजैनमती
तिपरैगीतुम्हेंअवकाहिकरेजोदिखैवेपरो॥
॥३०९॥ तनतैंमनतेंरमिकैअनतैंहमैवातन
हींवहराइयेजू॥तरसैंअखियांदरसेविनए
इन्हेंरूपसुधारसप्याइयेजू॥कविनोनिधि
कौवेजोऐसिहीतौकहालोनजरेपैलगाइये
जू॥कवहूंतौहमारेगरेलगिकेयहतापहिये
कीवुझाइयेजू॥३१०॥ यहप्रीतिकीवेलिलगा
ईजुहैतेहिंसींचिभलेसरसाइयेजू॥नितसौं
रसकारेरूपाकरिकेपगधारिसुधावरसाइये
जू॥कविकालिकायोंकरजोरिकहैमतिदेखि
वेकौंतरसाइयेजू॥इनओरवेहमारीकुनोदि
निकौंमुखइंदुललादरसाइयेजू॥३११॥पहि
लेसुखदैनकरीवतियांवहकायरश्यामननेराउ
गा॥करजोरिकहैंनहिंजोरकछूचितचोरिकैं

प्यारेचदीजैदगा॥ तुलसीनिजबोलकीयादकरो सुनुलाल मनोजकीदाहभगा॥ अपनोकरिकै करछोरियेना जनितोरियेनेहकोकांचोतगा ॥३१२॥ पठवायसँदेसहमेंसदमैसुलियोअ पनेरगमैउमगा॥ विसवासदैकीजैनिरासक हाचरचायहपाईसगाअसगा॥ कुलटाकुल लोगलगेकहिवेनहींअंकलगीओकलंकल गा॥ तुलसीतुमहींचितचेतकरो जनितोरिये नेहकोकांचोतगा॥३१३॥ गुनरूपकहाहम माहिंरह्योजिहिकेवसव्हैहठिप्रीतिपगा॥अ ननूनकहासुकहोसकृपाकिमिचित्तकोंलीन्ही उदासीलगा॥ तुलसीजुप्रबीनकहावतहौम मप्यारेतोंज्वावकीराखोजगा॥ मनभांवतें भांवतीचालचलैंजनितोरियेनेहकोकांचो तगा॥३१४॥ मोजुगनैनचकोरनकौयहरावरेरूपसुधाहीकोनैबो॥ कीजेकहाकुलकानितें आनिपर्योअवआपनेप्रेमछिपैबो॥ कुंजनमे मतिरामकहूंनिसिद्योसहूंघातपरैंमिलिजैबो ॥लालसयानीअलीनकेबीचनिवारिएह्यांरकीमलीनकोअैबो॥३१५॥ अजूनंदकेनंदन सोंहकिएकहौंनैननरावरीहौसरहै॥ संग छांहज्योंसासुफिरैअनखोंनीजिठानीदुकादु कीसौसरहै॥ कविनाथजूजानतहौहियमेवय बीतिगएकहामोसरहै॥ परकीजेकहायदगांवकेलोगगुदैंचरचानकोचौसरहै॥३१६॥ हौं

हूँ समै लखि कै उत आय कह्यो कारि हौं सब गम्बर
जीको॥ बारहीं बार नऐ पैइ तैय हमें गेक छुहैं
परोसननीको॥ चाह भरे घसि चंदन ल्यावत हौं रच
नावत मौलसिरी को॥ कोउ कहै यह जानि औं जान
तो होय ललामो हि लील कोटी को॥ ३१७॥ छिन
ठौर कुठौर कछू न गनो जित हौं तित हौं हँसि बोल
त हौ॥ हम घात परे मिलिजै वो कहूं यह प्रेम दु
रीकूत रवोलत हौ॥ चरचोइ करैं चहुँ औरन तैंन
चवाइन के चित तोलत हौ॥ हरि नाहीं भली य
ह बात करो परछाँहीं भए सँग डोलत हौ॥ ३१८
कबहूं फिरि पावन दैहौं इहाँ भजिजै हौं नहां जहाँ
सूधी सहौ॥ पद्माकर देहरी द्वार किवार लगे
ललचैहौ न ऐसी चहौ॥ वै हियाँ की कहा छदियाँ
न कहूं छुवै पावहु गेल हू लाज लहौ॥ चित चाहौ क
हूं न कहौ बतियाँ उत हीं रहौ हाहा हमै न गहौ
॥ ३१९॥ सतरैबो करो बतरैबो करोइ तरैबो क
रो करो जोई चहौ॥ पद्माकर आँनद दीबो करो
रसलीबो करो सुखसों उमहौ॥ कछू अंतर रा
खो न राखो चहौ परया विनती एक मेरी गहौ॥
अब ज्यों हियमें नित वैठीर हौ त्यों दया करि कै
ढिग वैठी रहौ॥ ३२०॥ ता छिन तैं रहै औरन भू
सु भूली कदंबन की परछाँहीं॥ त्यों पद्माकर सं
ग सखान को भूलि भुलाई कला अवगाहीं॥ ता
छिन तैं तू वसीकर मंत्र सी मेली सुकान्ह के का
नन माहीं॥ दै गलबाहीं जुना हौं करीन कनाहीं

गोपालकौं भूलति नाहीं ॥ ३२१॥ जाति हुती निज गोकुलकौं हरि आयो तहां लखि कै मग सूना॥ तासौं कह्यो पदमाकर हो अरे सांवरे बावरे तैं हमें छूना॥ आजु धौं कैसी भई सजनी उत वा विधि बोलकढ़ो ईकहूं ना॥ आनि लगायो हिये सौं हियो भरि आयो गरो कहि आयो कछू ना॥३२२॥ बैठे अकेले रहे रंगरावटी प्यारी पठाई गई तहां नाइन॥ देखत तहीं रहे रीझि लला अति वाके सरूप सुसील निकाइन॥ कै बिनती उलटो ही भई सु गही उनकौं हं परीत वपाइन॥ एजू अजू अजू ऐसी न कीजिये हाहा हमैं खिझि हैं ठकुराइन॥ ३२३॥ गेहके लोग गए कहि वाहेर सूने सकेत कें भांवती पाई॥ बेनी पिछौं हे ह्वै आनि गह्यो तिरछौं हैं चितै रदऔ शुरी नाई॥ हाहा तजो को उआनि परैगो जू छोडि दई करिकै मन भाई॥ चंचल अंचल सौं सुखपौं छिअँगोछति औंगैंन औंगैंन आई॥ ३२४॥ हेरि इतै मुसुकाय चितै करि चोपसौं भावीको सेज बिछैबो॥ लाज बडी गुरुलोगनकी पग चांपि कै केलिकै मंदिर जैबो॥ वा सुखरासि समै मति रामहरें रसना घुंघुरूकौ बजैबो॥ मादु के मैं मन भावन को मिलिबो सरवी सांच अमी को अँचैबो॥३२५॥ सो ए अकेले रहैं दिन मैं ससुरारि मैं काहु वें नाहिं सकात हैं॥ भोजनकाज जगाए ने बाज उठें रतिके लिथ केअलसात हैं॥ सारी निसाके जगे ढिग सासु केज्यौं ज्यौं लला अगिरात जम्हात हैं॥ त्यौं त्यौं इतैल

खिलाडिलीकेबडेलोचनलाजनसोंगडेजातहैं
॥३२६॥ वैठीसलोनीसोहागभरीसुकुमारिस
खीनसमाजमढीसी॥ देवजूसेजमैंआयकै
मुखपैंसुखमाऊमडीघुमडीसी॥ प्यारीकोपी
कैंकपोलनपीकेविलोकिसखीनहँसीउमडी
सी॥ सोचनसौंहैंनलोचनहोतसकोचनलाडिली
जातिगडीसी॥३२७॥ अलसातजम्हातअताप
रतेंउतरेनिसिमेकरिकेलिबडी॥ इहिंभांतिहि
रावरोरूपलखैंउरआनंदरासिहिएउमडी॥ ...
पशंभुजूकेसरियादुपटासोतौमागनिकै अगोछ
मेअडी॥ इतेहांसीजेठानीललासौंकरेंजुतेंला
डिलीलाजनजातिगडी॥३२८॥ छापक...न
वलाकोगिरैतौउठायललाधरिराखनजीकैं
॥ धोखेहूँपायधरापेधरैअजवेससरीखेहि...
नठीकैं॥ कोननहूँनसुनीअवलौंसोसखीसखी
नैननऐसीअलीकैं॥ लागेघुवोंअलवेलीकेआं
खिनधोंवैंललाकेललाईकीलीकैं॥३२९॥ ...
॥ सोईहुतीपलगोंपरवालखुलेअंचरानहिंजा
नतकोऊ॥ ऊँचेउरोजनकंचुकीऊपरलालन...
केन्चरचेदृगदोऊ॥ सोछविपीतमदेखिकै...
विलोचकहैउपमायह होऊ॥ मानोमदेजु...
तानीवनातमेसाहमनोजकेगुंसजदोऊ॥
॥३३०॥ प्रातसमैवहगोपललीचलीआवतिदी
जमुनाजलन्हाये॥ नीरसोंचीरलग्योसव दे
हमैहूनीदिपेछविओपचढाये॥ दरियाई...

कंचुकीमेकुचकीछविग्रौंछलकैकविदेतवता॰
ये॥वाजकेत्र्प्रासमनोचकवाजलजातकेपातमेगा
तछपाये॥३३१॥जगजीवनकोफलजानिपरयो
धनिनैननिकोंठहरैयतहै॥पद्माकरह्योकुल
सैपुलकैतनसिंधुसुधाकेअन्हेयतहै॥मनपै
रतसोरसकेनदमेअतिआनंदमेमिलजैयतहै॥
अवऊंचेऊरोजलखैतियकेसुरराजकेराजसो
पैयतहै॥३२२॥कोउकहेकुचकंचनकुंभसु
धारससोंभरिराषेहैओऊ॥श्रीफलसंभुसुमे
रसमानमनोजकेगेंदकहेकविकोऊ॥ मोमन
मेउपमाअसिआवतिभाखतहोपुनिहौंउनाहो
ऊ॥जीतिसवैजगऔंधिधरेहैमनोजमहीपके
दुंदुभीदोऊ॥३३३॥ठाढेरहैहगआसनकेकुटी॰
कंचु कीकेपटखोलतना॥मालसुगंगप्रवाह
वहैतिहिमेउठिनेकुकलोलतना॥कारेभयेके
रिकृष्णकोध्यानडुलायेंतेंकाहूकेडोलतना॥ए
तपसीहैगरूरभरेदुनियांतेंदयानिधिबोलत
ना॥३३४॥ ॥काननलौंअखियांहैतिहारी
हथेलीहमारीकहांलगिफेलिहैं॥मूदेहुतेंतु
मदेखतीहौयहकोरतिहारीकहांलोंसकेलिहैं॥
कान्हरहूकंहेंख्यालयहैतिनकोंहमहायनहीं
परफेलिहैं॥राधेजूमानोभलोकीबुरोअंखमू
दनोसंगतिहारेनखेलिहैं॥३३५॥आईहौदेखि
सराहेनजातहैयाविधिघूंघुटमेफरकेहै॥मै
तौयोंजानीमिलेदोऊपीछेव्हैकाननलख्योकीउ

न्हे हरके हैं॥ रंगनतेंरुचितेंरघुनाथजेन्याकरु है करताकरके हैं॥ अंजनवारेसहीदृगप्यारीकेजेन नप्यारेविनापरके हैं॥ ३३६॥ कंजसकोचेगड़ेरहे कीचनमीननवोरिदयोदहनीरन॥ दासकहैसुन हूकोंउदासकैवासदियोहैअरन्यगंभीरन॥ आ पुसमैंउपमाउपमेयव्हैनेनयेनींदतहैंकविधीरन॥ खंजनहूकोंउड़ायदये हलुके करदीन्हेअनंगके तीरन॥३३७॥ ॥ वंसीवजावतआनिकढ्यो॰ रीगलीमेंछलीकछुजादूसोडारे॥ नेकुचितैतिरछे करिदीठिचल्योगयोमोहनमूठसीमारे॥ ताघरी तेंधरीसीपरीसेजपेंप्यारीनवोलतिप्रानकेप्यारे॥ जागिहैंजीहेतोजीहैंसवेनतौपीहैंहलाहलनंद केहारे॥३३८॥ नैनकेवानचलायकेस्यामगिरा वतहोव्रजवामघनीनकों॥ आजुकरेंकलंकोन निहिकोंअरुनंदहुकोंनदकीपरनीनकों॥ नैन नजोवृषभानुसुतादुषव्है हैवड़ोदुहिंकीसज नीनकों॥ जायकेखायपरेंगीसवैवाअहीर केहारपैंहीरकनीनकों॥३३९॥ आपनेओरकी चाहेलिखीलिखिजातिकथाउतमोहनओरकी ॥प्यारीदयाकरिवेगिमिलौसहिजातिव्यथानसौं मैनमरोरकी॥आपुहीवांचिलगावतिअंगनअंको किनआनीचिठीचितचोरकी॥राधिकेराधेरहौ जकिभोरलौंव्है गईमूरतिनंदकिसोरकी॥३४० वातैंवनायवनायकहौकहियेरघुनाथजीनंद लेरैगी॥ औरनकोंऊवचीव्रजमैंसकलूहौहैंगेन

निवाहकरैगी॥ आयेभयेदिनचारइतेअ वहीं सवहीकौंकुनावधरैगी॥ तानभटूमनमोहन की वहकानपरैगीतोजानपरैगी॥३४१॥ वहिचोहटेकीचपरोटमैआजुअचानकआनिदोऊभिरिगे॥ कविवेनीदुहूनकेलालचीलोचनछोडिसकोचनकोंधिरिगे॥ ससुहानेहियेभरिभेटिवेकोंत्योंचवैयनकेचरचेजिरिगे॥ फिरिगेकरसौंकरहेरतहींकरकेमनोमानिकसेगिरिगे॥३४२ गोरेसेभायेंभुजानखुलीकुसुंभीअंगियाकीर॰हीगड़िगोहैं॥ लंकनईसीपरैकचभारमनोहरहारपरीस्योंवरोटैं॥ वेनीरंगेमेहदीपगपानि॰करेअखियांनकटाछनिचोटैं॥ लोटैनहेरीभटूघरतेंकवकेलटूकान्हपरेमगलोटैं॥३४३॥ तीरकलिंदीकेहौंउतसंभुसुखावतहीपटधोयवगारयो॥ तूंवतरातहुतीसखियानसौंआनकहूंनेंउहोपगुधारयो॥ औचकतूंहंसिआननफरिवडेवडेनैननितानिनिहारयो॥ कान्हअचेतपरयोकहरैसखिवादिनकीसु सुकानिकोमारयो॥ ३४४॥ ताहीसौंराघतप्यारवडोकछुरावरीयेचरचाजोचलावै॥ कांपतिदेहकटीलीहेआवतिकोऊतिहारोजोनामसुनावै॥ रैनदिनातुलसीसीरहैठकुराइनकोंकछूऔरनाभावै॥ सोईकथाकहवावतिजामैंकछूमजकूरतिहारोईआवै॥३४५॥ तोहिधौंदेषिगयेकितन्हैंतवतैंउन्हकोंकछूऔरनाभावत॥ मोघरआय

लटूव्है ललासव आपही वेठि कैं गावनावन॥ चित्रविचित्रवनाय ह्लैंदेति हैं।पै उनकै मनमैं न भावत॥ हाथदै लेखनी खाय तु हा हा गिनै गि रीरतमी पैं लिखावत॥३४६॥ मोहिनु गौनु मण्यां महामै तुमै रघुनाथलखैं सुखपाऊं॥ मेरेपै कीजै कृपा कछू आज तौ आपको मैं हूं हितू न सगाऊं॥ नाव सुन्यो जिहिं कोक हियेप हिलेति हिं को लिखि चित्रलै आऊं॥ देखि वकेरी मो तौ ओसर पायकैं लाल तुम्हैं वह वाल मिलाऊं॥३४७॥ हार मैं वांरि अनेकन फूलके आई लै मालिन भौन भरेमैं॥ काहूकों स्वेत दिपो उहिं काहूकों पीरा दियो रघुनाथ अरेमे॥ नीरजनीलको लैकरमैं कह्यो राधेसों यों चतुराई धरेमे॥ लीजिये हेत तिहारेमैं ल्याई हौं यो रंगको लगै प्यारो गरेमे॥३४८॥ केसरिसों पहिलें उवट्यो अंग रंगलस्यो जिमि चंप कली हैं॥ फेर गुलाबकेनीरन्हवाय पिन्हाई जो सारी सुगंध भरीहै॥ नाइन या चतुराइन सों रघुनाथ करी वस गोपलली है पारत पाटी कह्यौ फिर यों ब्रजराज सों आज मिलौ तौ भली है॥३४९॥ वे अंगुरी के छुपासिस कैं करवारसी पातरी जो मैं चढाऊं॥ नंदनंदावती जी भैउतेइ तप्यारेके नैन रुपाई व चाऊं॥ देवकीनंदन मोहिं वडो दुखको तु कह्यौ यसो फाहि लखाऊं॥ छोडि हौं गौं ववबाकि सो मै पन्हूनी न ह्यौ पहिरावन आऊं॥३५०॥ ता दिन तैं कछू और सो हात न ऐसे लटूव्है रहे मन भावन॥ कृ मो के रैं नि

तेरियैवातैंनदेतकहूंकवहूंइतआवन॥ मोत्तन दीठिकियैंरसिकीतूंलगीसिसकी नकेसोरम चावन॥काहूकहूंदुरदेखतहेहौंलगीजबतो हिचुरीपहिरावन॥३५१॥जाकेमिलापकोंसोच तहौकरिमोचतहोजूअनेकउपावन॥ताहीके धामसोंहेरघुनाथहमेंएकआईहेवामवुलाव न॥भेषधरीतियकोहियसाधजोचाहतरूपल ख्योललचावन॥साथचलौवहिवालकेलालहौं काल्हिचलौंगीचुरीपहिरावन॥३५२॥मैजवतें गोदनागईगोदिअहोठकुराइनवांहमेतेरी॥ए सीदसातवतैंयहिगांवमेंनेननपोंवोंगलीनमें फेरीं॥भेटभईजितहींरघुनाथसोंसौंहदैकेतित हींउनघेरी॥हाथसोंहाथगहेंपलद्वैरहेआंखि सोंलायकेआंगुरीमेरी॥३५३॥जैसोकछूउनः कोहैसरूपसोतैसोकछूतवहींजूपतीजो॥सूने कहेतेंवहोतकहातवहींकछूभावेतोरीझिकेदीजे आजहीमोहिमिलेरघुनाथकह्योहैकिरंगतया रतूंकीजो॥तातैंरंगोंवनआवैंगेपागतूंमाकिरु रो खैंउन्हेलखिलीजो॥३५४॥जैसेंहींपोहिध रेठकुराइनमोतीकेयेगजराचटकीले॥तैसेंः हींआयगयेरघुनाथकह्योहंसिकोनकेहैंयेफवी ले॥नावंतिहारोदियोकहिमैंतौउठायलियेसुख पायक्केढीले॥आंखिसोंलायरहेपलएकरहेप लछातीसोंछुायछवीले॥३५५॥चोपतिहारीः हौंजानतीहौंरघुनाथचुभीचितवीचसुनीजो॥

तातेहौंदेतिमिलायेतुम्हेपरमेरीकहीमैंसदी
मनदीजो॥वासपरोसवडेविसवासकोतातेंक
नावकढैसोनकीजो॥नारिनवेलीहैंवाननलें
रसकैपहिलेउनकोरसलीजो॥३५६॥मेरीहैंक
रीगलीबरसानेमेदूसरेघोसकोनेमनम्योहै
॥तातेंहौंचाहतिजानउतैसोभलोगहर्औरगआ
जुलह्योहै॥ठाढेव्हैनेकुसुनोमनमोहनधोमह
मैरघुनाथरह्योहै॥जाकोकियोतनलाजनचिनेच
लसोओहिंवामप्रनामकह्योहै॥३५७॥ हौंवृ
षभानपुराकीनिवासिनीमेरीरहैब्रजवीथिन
भाँवरी॥एकसदेसोकहौंतुमसोंपैसुनेमनभू
लोविचारउपावरी॥जोहरिचंदजूकुंजनमेंमि
लीजाहिकरीलखिकैतुमवावरी॥वूझीहैंयाने
कृपाकरिकैकहियेपरसोंकवहोयगीरावरी॥
॥३५८॥कान्हहौंचेरीवनायकैसंभुगईवृषभा
नकेभौनगोसाइन॥यासुनिकैउठिआईसबै
अरुडारीसहेलिनराधिकापाइन॥लायनि
लारविभूतिकहीइमिहौंरचिवेकछुऐसीउपा
इन॥याहिइकंतलैमंत्रजपैयहलोयसबैमनभा
कीठकुराइन॥३५९॥आवतहौंउठिआदरकै
सिगरींमिलींदोरिकीसिद्धिनिआई॥कान्हकेना
तमेहाथदियोपढिकाढूकेमाथविभूतिलगाई
॥वैठिगईमृगछालाबिछायकेराधिकेआपनै
पासवुलाई॥औनसमीपव्हैगोदमेराखिकैनासुं
इनगोसेकीवातसुनाई॥३६०॥देतीदोंघाइ

ऐसोतनहीगिरिगामतीहोकरि·गैहदननी ॥१
न्हौतौवैवीचहौलेहिछुडायसुगंधनरीफिरहैंमृ
गनैनी॥धोयतौदैहुंजोधोवनपाऊंलखीउनकी
मैविलोकनिपैंनी॥राखतलैलैलगायहियेंकब
हूंअंगियाकबहूंउपरैंनी॥३६१॥ मइलोकरि॰
डारतपीतपटैंघरजाननापैयेवुलावनोधावत
॥लालहूमैलोन्हैजातसदाअरीवारहीवारसने
हलगावत॥औरनसौंवरुलीजैधोवायहमैनृ
पसेभुजूधोयनाआवत॥तूंकलपावतिसांवरेंरं
गनसांवरोरंगनहींकलपावत॥३६२॥आज॰
हौंराखोंगीस्वायउन्हेरघुनाथकृपानिसिमेरेफ
रोगे॥मैउठिजाउंगीछोडिकैपासजगायकैसेज॰
पैपायधरोगे॥धायहौदेतिसुभायकहेकछूभौं
हचढायलखेंनडरोगे॥लाजभरीहेसकेगीन
बोलिनिसकनवेलीकोंअंकभरोगे॥३६३॥एक
हीसेजपैराधिकामाधवेधाइलेसोइसुभायस
लोने॥प्यारेमहाकविकान्हकोमध्यमेप्यारीक॰
होयहवातनहोने॥न्हैहौनसांवरीसांवरेकेसं॰
गवावरीतोहिसिखाईहेकोने॥सोनेकोरंगक
सौटीलगेपैकसोटीकोरंगलगेनहिसोने॥३६४
कारेमहाअनियारेअमोलहैंकौलजिन्हेंलखि
लागतफीके॥वादिहिवाकेकहोतुमजायहं॰
मारेतौराखनहारहैंजीके॥आरसीलेतुमदो॰
उएकेंतन्हेदेखतक्योनधौंकोनकेनीके॥ऐसे
वडेकहानेनतिहारेहैजेसेवडेहैंहमारीसखीके॥

॥३६५॥ आई है साझी कौ नीरन फूलती रावनि ठाई। सखी छविरासतें॥ वेगि उनै चलि दे मो चल्यायकर है रघुनाथ लग्यो मन जासतें॥ भौरन कौ रुनिभीर रही अरु भीर चकोरन की जिहि आसतें॥ भीतर बाग के सोभित होति है मालती वासतें प्या गेंग्र॰ कासतें॥३६६॥ फैले सुगंध रहै चहुँ घा अलि पुंज घिरी मनि मालजुही सी॥ फूलभरी अंग पूरो परा॰ गपरैरस रूप की चारु फुही सी॥ गोकुल रसीद री है तयार मे के चतुरापन चावछु ही सी॥ देखि ये तौ चलि बागमे लालन के सीलसे बहसौं नजु ही सी॥३६७॥ आधिक सिद्धि करी ही किए तें मे आय गये धौं कहाँ तें कन्हाई॥ कौन की आँगी है मो तें कही मै उन्हें सहजे ही तिहारी बनाई॥ छीनलई कर तें रघुनाथ मे सोर कियो कितनी अन॰ खाई॥ छाती सौं लाय वे ह्वै गये ना दिन दे गये आज तौ सी कैले आई॥३६८॥ आपुदई तनी टोकि वे कौं हरि भोर ही आय गये धौं कहाँ तें॥ कौन की॰ आँगी है मो तें कही सुनि रावरे की हठि लीन्हीं हा तें॥ गोकुल फूलि पसी जिउ ठेवडी बारलौं ला य रहे हियरा तें॥ भी जिगई ही सुखावत मो हिं अवा र भई ठकुराइनिया तें॥३६९॥ आजु कहूं पिरकी सौं सुनो हरिकी सुखजोति गलीन मे बाढी॥ गोकु लनाथ विलोकि लई छवि ता दिन तें विरहागिनि डा ढी॥ हासी विचारि कै रावरे की यह मोसौं विनै की परंपरा काढी॥ बाही झरोखके पास कृपा करि कै

कबहूं फिरहौं हिगी ठाढी॥३७०॥ करपांयनकी
छबि जाकी लखें छबि जाति है कंज अदागनतें॥
कहि जात कछू न कलाधरतें मुख पै दुति दूनी सु
हागनतें॥ हंसि मो हे हियो हनुमान लला सुठि सो
है भरी अनुरागनतें॥ कलना विधि की सखियां है
मनो ललना तुम को मिली भागनतें॥३७१॥ इत
फूलन को विनिवो ठहरायले वायले दूती मिला
य दई॥ नंदलाल निहारि निहाल भये वर चंपक
माल सी बाल नई॥ करतें छुटि भागी दुरी पग द्वै व
लि पै न चली कछु चातुरई॥ हरि हेरेन पावत भौंव
ती सं भुकुसुंभ के खेत हेरायगई॥३७२॥ राधिका
के परबाल से हाथ न लाल रही घिरि लाल लुनाई॥
देखत हीं वनिआवत कान्ह कहा करि ये कवि संभु
बड़ाई॥ लाली लसै अगुरीन के वीच तहां नख
चंदन की छबि छाई॥ कोपन की अरुनाई मे आ
नि मिली मनो बीचिन बीच जुन्हाई॥३७३॥ ❋ ॥
संग सखी के गई अलबेली महा सुषसों वनबाग
बिहारन॥ वाढे वियोग विलास गये सब देखत
हीं वे पलास की डारन॥ जानि वसंत औ कंत विदे
स सखी लगी बावरी सी व्है पुकारन॥ द्वै चलि
है चुरियां चलि आवरी औ गुरियां जनि लाउ अं
गारन॥३७४॥ वौरे रसालन की चढि डारन कू
कति कैलिया मौन गहै ना॥ ठाकुर कुंजन पुंजन
गुंजत भौंरन को चै चुपै वो चहै ना॥ सीतल मंद
सुगंधित वीर समीर लगे तन धीर रहै ना॥५

व्याकुलकीनोवसंतवनायकेजायकेकेनसोको
ऊकहैना॥३७५॥ आयोवसंतदहनसर्वोचन
आयेनकंतनपायेसंदेसन॥ संभुकहैपथिका
येसवेअवकोऊविदेसीरहेनविदेसन॥चंद
मुखीहगतैंअंसुवाढुरिआनिपरेकुचमाहींअं
देसन॥ मानोमयंकसरोजननतैंसुकनाहलमें
लैचढ़ावेमहेसन॥३७६॥ज्योंत्यौंरह्योअव
लौंजियतूंअवआयोवसंतकछूनवसैहै॥संभु
सुगंधितसीतलमंदसमीरनिपीरगंभीरबढ़ैहै
॥क्योंठहरैगोकरैगोकहाजवकोकिलाकूकिकै
कसुनैहै॥औरनतेरोफवैगोकछूवलिसंगकु
हूकेतुहूंकहिजैहै॥३७७॥वैरीवसंतकेआवत
हींबनवीचदवागिनसीपजरैंगी॥ जोगिनसौं
वनिहैवनमालवियोगिनकेसेकेधीरधरैंगी॥गुं
जनवैअलिपुंजनकीसुनिकुंजनकेलियाकूप
करैंगी॥सूलसेफूलेपलासनकीडरिचौंडरपा
वनीदीठिपरैंगी॥३७८॥आलीसुनोवनमालीवि
योगपलासकेपुंजनकोसुखभागो॥पाननुखा
यगिरेमहिआनिलतानमेंस्यामताकोरंगरागो॥
धीरधरैंठहरातनमाधवमेनकोजालिमजोरहै
जागो॥भामिनीभौंनमेभागीचलोफिरिआगिउ
ठेगीधुंवोंउठेलागो॥३७९॥कूरिसेकोनलऐव
नवागयेकोनेजुओंवनकीहरिआई॥कोइलका
हैंकराहतिहैवनकोनेचहूंदिसिधूरिउड़ाई॥के
सीनरेसवयारिवहैयहकोनधौंकोनसोमाहन

नाई॥ हायनकोऊतलासकरैएपलासनकोने
दवारिलगाई॥३८०॥ जवतेंरितुराजसमाजरच्यो
तवतेंअवलीअलिकीचहकी॥ सरसायकेसो
ररसालकीडारिनकोंकिलकूकैफिरैंवहकी
॥ रसियावनफूलेपलासकरीलगुलावकीवास
महामहकी॥ विरहीजनकेदिलदागिवेकों
यहआगिदसोंदिसितेंदहकी॥३८१॥ येव्रजचं
दचलोकिनवाव्रजलूकैंवसंतकीऊकनलागी
॥ त्योंपदमाकरपेखोपलासनपावकसीमनो
फूकनलागी॥ वेव्रजनारीविचारीवधूवनवावरी
लोंहियेहूकनलागी॥ कारीकुरूपकसाइनेएसु
कुहूकुहूकेलियाकूकनलागी॥३८२॥ देकहि
मीरसिकारनकोंइहिंवागनकोइलआवनपावै
॥ मूदिफरोखनमंदिरकेमलयानिलआयनछोंव
नपावै॥ आयेंविनारघुनाथवसंतकोऐवोनको
ऊसुनावनपावै॥ प्यारीकोंचाहैजिआयोधमार
तौगांवमेकोऊनगावनपावै॥३८३॥ घूंघुरसी
वनधूमसीगावनगावनतोंनलगेनरवोरी॥
वौरीलतावनिताभईवौरीसुऔधिअध्यायरही
अवथोरी॥ वेनीवसंतकेआवतहीविनकेतअ
नंतसहेदुखकोरी॥ ओरीघरैंहरिआयेनजौप
हिलेंहौंजरौंजरिहैफिरहोरी॥३८४॥ मदमातीर
सालकीडारिनपैचढीआनदसोंयोविराजतीहैं॥
कुलजानिकीकानिकरैंनकछूमनहाथपरायेहिया
रतीहैं॥ कोउकैसीकरैहिजनूंहीकहेनहिंनेको

दयाउरधारतीहै॥ अरीकेलियाकूकिकंजन कीकिरचैंकिरचैंकियेडारतीहैं॥ ३८५॥ कोकिहै यहवैरीवसंतपैंआवतजोवनआगिलगावन॥ बौरतहीकरिडारतबौरीभरेत्रिपचैरीरहावन कहावत॥ होतकरेजनकीकिरचैंकरिदेनकूकोकिलबैनसुनावत॥ बीरकीसौंवनवीरहिना उडिजांयगेंप्रानअबीरउडावत॥ ३८६॥ ॥ घेरेरहैंघरहाईघनीफिरबोलेनफागुनकछूकहिजायगी॥ लालगुलालकीधूंधुरमैंसुखचंदकी जोतिकहूंलहिजायगी॥ प्रेमपगीवतियांनतेंगेछतियांनकीलाजसवैवहिजायगी॥ जोनमिलीमनमोहनेतौमनकीमनहींमनमैंरहिजायगी॥ ३८७॥ खेलियेफागुनिसंककहैआजुमयंकमुखीकहैभागहमारो॥ लेहुगुलालदुहूंकरमैंपिचकारिनरंगहियेमहंमारो॥ भावेतुम्हेसोकरोनोहिलालपेपांवपरोंजिनघूंघुटटारो॥ बीरकीसौंहमदेखिहैंकैसेअबीरतोआंखेवचायकेडारो॥ ३८८॥ बडभागसुहागभरीपतिसौंलहिफागमैंरागनछायोकरे॥ कविलालगुलालकीधूंधुरमैंचखचंचलचारुचलायोकरे॥ उरकेमिसिकैमहरायरुकैसखिमंडलकोमनभायोकरे॥ छतियांपररंगपरेतेंतियारतिरंगतेंरंगसवायोकरे॥ ३८९॥ कैसीहैढीठिलखोयहगोपकीओंभरीसिगरीब्रजबालसौं॥ काहूकिकानिनमानतिहैहठिठानतिहैचपलापनचालसौं॥ मानि

गईतवकीवढिकेरघुनाथघुमायकेफूलकीमा
लसौं॥लालकीफेटसौंलैकेगुलाललपेटिगईअ
नलालकेगालसौं॥३९०॥खेलतभागुलख्यो
पियप्यारीकौंतासुखकीउपमाकेहिंदीजे॥दे
खतहींवनिआवेभलैंरघुनाथकहाहेजोवारने
कीजे॥ज्योंज्यौंछबीलीकहैपिचकारीलेएकलई
यहदूसरीलीजे॥त्योंत्योंछवीलोछकेछविछाक
सौंहेरैहंसैनटरैषरोभीजे॥३९१॥खेलिकेफागुफिरीं
जबसौंतबसौंहगदेखिवेमैरमह्योसो॥आवतहेसु
खजोसोवकैंकछूखाहिनपीवहिंभूतचह्योसो॥ऐ
सीदसासवकीरघुनाथरह्योतपिकेअंगआगिदह्
ह्योसो॥डारिगयोनदलालसखीव्रजवालपैंमानो
गुलालपह्योसो॥३९२॥ठाढीरहौनडगौनभगौ
अवदेखौहौंजोकछुखेलतिख्यालहि॥गावन
देरीवजावनदेसजिआवनदेइतेनंदकेलालहि
॥ठाकुरहौंरंगिहौंरगसौंअँगओडिहौंबीरअ
वीरगुलालहि॥धूँधरमैंधधकीमैंधमारमेहौं
धसिहौंधरिलेहौंगोपालहि॥३९३॥लैवलवीर
अवीरकीमूँठदईअलबेलीललीहगदूपर॥त्योंव
नमालीपैंआलीचलावतिलालीगुलालकीछू
रहीभूपर॥लेपिचकारीविहारीतहौंअधिकारी
करीव्रजगोपवधूपर॥पीनपयोधरतेंउचटीसो
फरीसवकेसरलालकेऊपर॥३९४॥फागुरीआ
योसखीहमकोंविनपीतमसैनसलाकसीलागु
री॥लागुरीमेरीगुहाररतियाकछुकीजियेवेगउ

पा पउजागरी॥ जागरीरागनचहूँदिसिहान दै
कामहियैंअतिदेतहैदागरी॥ दागगेरोन धे
टिहैजबपीतमकेसँगरवेलिहौंफागरी॥३९५॥
लालगुलालवलाहककेतेंबरसैमरीकोकनचेसु
रिरंगकी॥त्यौंहींअनंतछटाछविकीनचकंच
लात्योंमनोहरअंगकी॥ लैगलबांहींअनंदवि
योवरनोकादसावहमैनउमंगकी॥ भूतनदौं
हमकौंसजनीवहफागुकीरवेलनसांवरेसंग
की॥३९६॥ गायहैंलोगलोगाईसबैजबैआन
दकोटिहियेउपजाइहैं॥जायहैंरवेलनफागसु
हागनभागभरीअनुरागनछाइहैं॥ छाइहैंबी
रअबीरगुलालनदंपतिअंगनरंगननाइहैं॥ना
यहैंकाहजोवेनीप्रवीनतौजाततप्रानविलंबल
गाइहैं॥३९७॥ रवेलतिफागुसोहागभरीसुरगं
सुरअंगनातेंसुकुमारिहै॥जैयेचलेअठिलैयेउ
तेइतेकाहूखडीवृषभानकुमारिहै॥ संभुसमृ
हगुलाबकेसीसनढारिकोकेसरगारिविनारि
है॥पामरीपाँवडेहोतिजहांतहाँकोललाफा
मरीपैंरंगडारिहै॥३९८॥ एनंदगावतेंआयेउ
हाँउतआईसुतावहकौनहूँग्वालकी॥ त्यौंपर
माकरहोतजुराजुरी दोउनफागुरचीइहिख्या
लकी॥ दीठिचलीउनकीइनपेइनकीउनपै न
लीमूठिउतालकी॥दीठिसीदीठिलगीइनकेउ
नकेलगीमूठिसीमूठिगुलालकी॥३९९॥
भालमेंलालगुलालगुलालसोगेरिगरेगजरा

अलवेलो॥ यौंवनिआनकसौंपद्माकरआए
जुरवेलनफागुतोखेलो॥ पैएकयाछविदेखिवे
केलिएमोविनतीकरिफेरिनफेलो॥ रावरेरंगरं
गीअंखियाँनमेंएवलवीरअवीरनामेलो॥४००
॥फागुकेभीरअभीरनतेंगहिगोविंदलैगईभीत
रगोरी॥भाईकरीमनकीपद्माकरऊपरनाईगु
लालकीझोरी॥छीनिपितंवरकंमरतेंसुविदा
दईमीडिकपोलनरोरी॥नेननचायकह्योमुस्कु
कायलल्लाफिरिआइयोखेलनहोरी॥४०१॥ना
तेंलगाअसरवानतेंन्यारोवैआजुगह्योवृषभानकि
सोरी॥केसरिसोंतनमंजनकैदियोअंजनआं
खिनमेंबरजोरी॥हेरघुनाथकहाकहौंकौतुक
प्यारेगोपालैवनायकेगोरी॥छोडिदियोइतनोक
हिकैवहुरोंइतआइयोखेलनहोरी॥४०२॥ ॥
ऊंचीअटापैलखैंघटादोऊदुहूनकीव्हैरहीरूप
कलासी॥ वेनीवडेवडेवुंदनतेंएकवारहींवारि
भकीनहुलासी॥चौंकिचलीविचलीगचपैलच
कीकरिहाकुचभारछलासी॥त्यौंघनस्यामगहीर
अवलाफिरकैगरेलागिगईचपलासी॥४०३॥ क
विवेनीनईउनईहैघटामुरवावनवोलतकूकनरी
॥छहरैविजुरीछितिमंडलछ्वैलहरैमनमैनभभू
कनरी॥पहिरोचुनरीचुनिकैदुलहीसंगलालकै
झूलियेझूकनरी॥रितुपावसयौंहींवितावतीहौ
मरिहौफिरवावरीहूकनरी॥४०४॥चमकैंचप
लाकमकैंजुगनूँरवभेकिनकोभयछावतहै॥पि

ककिल्लिन कोगनमोरनसोंमिलिकैअतिसोर मचा-
वतहै कविगोकुल प्यारीबिना गिरधारीकहो अब
कौन बचावत है॥ टूहिंओरलख्योछितिछोरनिते
घनधोरतसोचलेआवतहैं॥५०५॥ कूकिकेपंछिन
कीगिरीनकेऊपरभूपरकामकमानलेटूकिहै॥
कूकिहैचंदबधूनकेबुंदनफूंकिहैमंदसमीरनचूकि
है॥चूकिहैप्रानविनाघनस्यामकेस्यामघटाते
नदेखतहूकिहै॥हूकिहैदैकैहियोकरिटूकअंध्या
रीनिसामैंपियाकहिंकूकिहै॥५०६॥नईनोग्वीभ
ईहोकहातुमहीउमहीरहतीमतिदीन्होदई॥
दईकाहूकीबीरीनलेतिभटूतुम्हेयावतियांकहै
कोसिखई॥खईमैनबडोभयोकोऊकहूंछिन-
हींअतिहींरिसिपूरिगई॥गईभारमैनाहींननाती
करोलखोकैसीघनेरीघटाउनई॥५०७॥प्यारो
मनावतप्यारीनमानतिवैठिरहींकरिमीतिकीटू
टन॥कारीघटाघहरानलगीसुउठीतबचौंकि
चितेचहुंखूटन॥धायडेराघलगीपियकेहिय
सोकविदेवसुनोसुखलूटन॥मानतोछूटयोन
रूकरिकेमनतेनहींछूटतिमानकीछूटनि॥५०८
धुरवानकीधावनिमानोअनंगकीतुंगधुजाफह
रानलगी॥नभमंडलव्हैछितिमंडलछूछनजो-
तिछटाछहरानलगी॥मतिरामसमीरलगेंल-
तिकाविरहीवनितायहरानलगी॥परदेसमेंपी-
वनपायोसंदेसपयोदघटाघहरानलगी॥५०९
सजिसूहेदुकूलनविज्जुछटासीअटानचढीघ

टाजोवती हैं॥ रंगरातीसुनैंधुनिमोरनकीमद
मातीसंजोगसंजोवती हैं॥ कहिठाकुरवेपियदू
रिवसैंहमआंसुनतैंतनधोवती हैं॥ धनिवेध
निपावसकीरतियांपतिकीछतियांलगीसोवती
हैं॥४१०॥ रितुपावसस्यामघटाउनईलखिकेम
नधीरधिरातोनहीं॥धुनिदादुरमोरपपीहनकी
सुनिकेछिनचित्तथिरातोनहीं॥जवतैंविछुरेकवि
वाधाहितूतवतैंउरदाहवुझातोनहीं॥ हमकोन
तेंपीरकहैंजियकीदिलदारतोकोऊदिखातोन
हीं॥४११॥ परकारजदेहकोंधारेफिरौपरजन्य
जथ्थारथव्हैदरसो॥ निधिनीरसुधाकेसमानक
रौसबभांतिनसज्जनतासरसो॥ घनआनंदजी
वनदायकहौकछूमेरियौपीरहियेंपरसो॥ कब
हूंवाविसासीसुजानकेआंगनमोअंसुवानहूलै
बरसो॥४१२॥ भजिवेगीचलोमथुराकोंभटूवचिहै
नकोऊकरिजोरनरी॥ घिरिकारीडरारीघटानभ
रैंलटकीधुरवानकीडोरनरी॥ अतिचावचढीलू
हकैचपलावहकैवरहीनकेसोरनरी॥ वहपाछि
लोवैरसम्हारिपुरंदरचाहैअवैव्रजवोरनरी॥४१३॥
उमडेनभमंडलमेडितमेघअखंडितधारनतेंम
चिहैं॥ चमकैंगीचहूंदिसितेंचपलाअवलाकरि
कोनकलावचिहैं॥ अकुलायमरैंगीवलायममा
रखआजुउपायइहैरचिहैं॥पहिलेअववेगीहर
लाहललैफिरिकेकीकोलाहलकैनचिहैं॥४१४॥
भूमिहरीभईगैलैगईमिटिनीरप्रवाहवहा व

वह्यहै॥ कारीघटानअँधेरोकियोदिनरैननभेद कछूनरह्यहै॥ ठाकुरभौनतेंदूसरेभौनलौंजात वनेनविचारमह्यहै॥ कैसेकैआवैकह्यकरेंवीर विदेसीविचारनदोसकह्यहै॥४१५॥ घूमिघटाघ नकीगरजैंचमकैंचपलाछितछ्वैफिरैफेरी॥ सो रकरैंचहुँओरतेंमोरजुरींकरेंकेलियाकूकघनेरी॥ गोकुलसीरोसमीरलगैकेहिंभाँतिसोंधीररहैंग धेरी॥ मोहिंविनायहसावनकीनिसिभावनेंकै सेवितायहैंयेरी॥४१६॥ घेरिघटाउनईचहुँघा छिनएकमेविज्जुछटाछविछायहैं॥ श्रीपतिराय कह्यकरवीअरवीकरिकैपिकचातकगायहैं॥ कारेपिछौराउतारिदह्योअवचूनरीलालअनूप सोहायहैं॥ हौंजोसुनीघरीचारिकमेतियाआजु तिहारेपियाघरआयहैं॥४१७॥ आवतेगाढअ साढकेवादरमोतनमेअतिआगिलगावते॥ गा वतेचावचढेपपिहाजिनमोसोंअनंगसोंवैरप धावते॥धावतेवारिभरेवदराकविश्रीपतिज्यूंहिय राडरपावते॥ पावतेमोहिनजीवतेपीतमजोन हिंपावसमेघरआवते॥४१८॥ दुषदूरभयोवदि ग्रीषमकोकरिवेपिकचातिकगानलगे॥ चपला चमकैलगीचारोंदिसानिसिमेजुगुनूदरसानल गे॥ गिरिधारनपावसआवतहींवकवृन्दअका सउडानलगे॥ धुरवासवओरदेषानलगेमोर वानकेसोरसुनानलगे॥४१९॥ यहसावनसोक नसावनहैमनभावनयामेनलाजेभरो॥ जनुन

पैंचलोसुसवैमिलिकैअरुगाइबजायकैसोकहरो ॥ इंमिभाषतहैहरिचंदपियाअहोलाडिलीदेर नयामैकरो ॥ वलिफूलोफुलावोकुकोउरुकोयेहिं पाबैंपतिव्रतताबैंधरो ॥ ४२० ॥ छिनहींछिनदौरे दुरैदरसैछबिपुंजकिसोरजमासेकरै ॥ अतिदीन विनापियजानजियेबिरहीनहियेबरमासेकरै ॥ अरुदेषीभईकबहूंथिरव्हैघनकोंहरिकीउपमा सेकरै ॥ चहुंघांतैंमहातरपैविज्जुरीतमतोममेआ जतमासेकरै ॥ ४२१ ॥ चहुंओरनजोतिमगावै किसोरजगीप्रभाज्ञेवनजूटीपरै ॥ तेहितैंकरिमा नोअंगारअनीअवनीघनीइन्द्रवधूटीपरै ॥ च हुंनाचैनटीसीजराबजटीसीप्रभासोंपटीसीन छूटीपरै ॥ अरीएरीहटापटीविज्जुछटाछटीछूटीघ टानतैंटूटीपरै ॥ ४२२ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ब्रह्ममेढूंढ्योपुराननवेदनभेदसुनेचितचौगु नेचायनें ॥ देख्योसुन्योनकबौंकितहूंवहकैसो स्वरूपहैकैसेसुभायन ॥ हेरतहेरतहारिफिर्‌यौं रसखानबतायोनलोगलुगायन ॥ देख्योकहां वहकुंजकुटीतटबैठ्योपलोटतराधिकाप
पायन ॥ १ ॥ सेसगनेसमहेसदिनेससुरेसहू जाहिनिरंतरगावैं ॥ जाहिअनादिअनंतअखं डअछेदअभेदसुवेदबतावैं ॥ नारदसेसुकव्या सरटैंपचिहारेतऊपुनिपारनापावैं ॥ ताहिअ हीरकीछोहरियांछछियाभरछाछिकोंनाचन चावैं ॥ २ ॥ गुंजगरेसिरमोरपखाअरुचालग

पंदकी मोमनभावै ॥ सावरो नंदकुमारलनै
ब्रजमंडली मैब्रजराज कहावै ॥ साजैसमाज
सवै सिरताजकी लाजकी बातकही नहीं आ
वै ॥ ताहिअहीरकी छोहरियाँ छछियाँभरिछा
छकों नाचनचावै ॥ ३ ॥ वा लकुटी करकामरि
याहित राजतिहूंपुरको तजिडारों ॥ आठहूं सि
द्धि नवौ निधिके सुख नंदकी गायचरायविसारों
॥ रसखान कवैइन नैननतें ब्रजकेवनवाग त
डागनिहारों ॥ कोटिनहूं कलधौतके धामकरी
लकेकुंजन ऊपरवारों ॥ ४ ॥ मानुषहों तो वहीं
रसखान वसौं मिलि गोकुल गांवके ग्वारन ॥ जो
पसुहों तो कहा वसमेरो चरौं नित नंदकी धेनु
मझारन ॥ पाहन हों तो वही गिरिको जो कियो
जछत्र पुरंदरधारन ॥ जो खग हों तो वसेरो क
रौं वहि कालिंदी कूल कदंबकी डारन ॥ ५ ॥ ॥
॥ इति राधाकृष्णाभ्यांनमः ॥ सुभंभवतु ॥
वैसाखसुदी २ गुरुवार सम्वत् १९२९ ॥ ७ ॥

इनकविलोगौंकाकाव्यइसमेहै

वेनी	श्रीपति	बोधा
देव	गंग	मद्राज
संभु	सरदार	अलीमन
नृपसंभु	वेनीप्रवीन	मुरलीधर
द्विजदेव· राजामानसिंघ	घनआँनद	प्रेम
पद्माकर	नवीन	सेखर
हनुमान	ममारख	कालिका
ठाकुर	परमेस	हरिकेस
सुखदेवमिश्र	रसिया· नजीबखाँ	नौनिधि
तुलसी· श्रीओझाजीजोधपुरवाले	(सभासदमहाराजपटियालेके	नाथ
रघुनाथ	भगवंत	शिव
सेवक	मकरंद	अजबेस
सुंदर	कविराम·रामनाथ	तोख
मतिराम	रसखानि	दयानिधि
बाबूहरीचंद	बलदेव	देवकीनंदन
नेवाज	द्विज· पण्डितमन्नालाल	मंडन
रिखिनाथ	सुमेरसिंघ· साहेबजादे	नरेस
दास	ग्वाल	लाल
श्रीधर	छितिपाल· महाराजअमेठी	महाकवि
चंद	दत्त	गिरधरदास· बाबूगोपालचंद
आलम	रघुराज·महाराजरीवाँ	किसोर
कविराज	गोकुलनाथ	घनस्याम
ब्रह्म	नरेंद्रसिंघ· महाराजपटियाला	अनंत
मणिदेव	पारस	